चौबींसवां पुष्प

* श्री राधावल्लभो जयति *

॥ श्री हितहरिवंशचन्द्रो जयति ॥

श्री बयालीस लीला

तथा

पद्यावली

श्रीराधावल्लभीय सम्प्रदाय के-प्रवर्त्तक श्री वृन्दावन प्राकट्य-कर्त्ता
अनन्य-रस-रसिक श्री श्री हित हरिवंश चन्द्र महाप्रभुजी के
तृतीयलालजी श्री हित गोपीनाथ प्रभुजी के
परम कृपापात्र

(श्रीहित ध्रुवदासजी कृत सम्पूर्ण वाणी)

❀ जिसको ❀

श्रीराधावल्लभीय सम्प्रदायाचार्य, गोस्वामी श्रीमुकुट वल्लभाचार्यजी
महाराज बी० ए० की, आज्ञानुसार
बाबा तुलसीदास द्वारा प्रकाशित

श्री राधाष्टमी
सं० २०१०

"श्री मुकुट महल"
वृन्दावन

सजिल्द ३) रु०
अजिल्द २॥) रु०

द्वारिकाप्रसाद भगतिदा ने बम्बई भूषण प्रेस, मथुरा में छापा।

* श्री श्री हित राधावल्लभो जयति *

* श्री श्री हित हरिवंश चंद्रो जयति *

* श्री ध्रुवदासजी का जीवन चरित्र *

॥ दोहा ॥

कथा रसिक ध्रुव दास की सुनत रसिकता होइ।
तिनके पूरन प्रेम की, सरबर करै न कोइ ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

काइथ कुल देवन के बासी, परंपराइ अनन्य उपासी ॥२॥
श्री गोपीनाथ के शिष्यनि श्रेष्ट, सेवत राधा वल्लभ इष्ट॥३॥
श्री हरिवंश कृपा अति भई, बन बसिवेकी रति मति दई॥४॥
तब श्रीवृन्दावन में आए, जमुना कुंजनि लषि सरसाए॥५॥
निशिदिन जुगल केलि उर माहैं, बानी करि कछु बरन्योचाहैं॥६॥
शिवविधि शेष प्रवेश न मनकौं, कैसें कह्योजात गुन तिनकौं॥७॥
देष्यौ चाहैं इकटक रहैं, उर आवैं मुख तें नहिं कहैं॥८॥
खाँन पाँन तजि मंडल परयौ, देखौं गुन बरनौं हठ करयौ॥९॥
दिन द्वै गए तीसरो आयौ, जब राधे को हिय अकुलायौ॥१०॥
आधी रात लात शिर दई, चौंकि परयौ नूपुर धुनि भई॥११॥
बाँनी भई जु चाहत कियौ, उठि सो वर सब तोकौं दियौ॥१२॥
ऐसें कहि अंतर हित भई, ध्रुव कों मनि रति बानी दई॥१३॥
निरखी दंपति संपति सिगरी, है वैकुण्ठ कोटि तें अगरी॥१४॥
आरष पौरष ग्रंथ निहारत, कुञ्जनि नित्य विहार विचारत॥१५॥
श्रुतिस्मृतिपुरानमतभाषा, करि उपजाईजननि अभिलाषा॥१६॥
केलि रहस्य दंपतिकी बरनी, कहीजुरसिक अनन्यनिकरनी॥१७॥

प्रेम नेम सिद्धांत जु कीनौ, व्रज विनोद न्यारौ करि दीनौ॥१८॥
कुंज महल पिय प्यारी सखी, अद्भुत केलि कही जो लखी॥१९॥
नव नव लीला हिय में भासी, वे रसिकन हित सबै प्रकासी॥२०॥
सत सिंगार आदि रचि ग्रंथ, दरसायौ जीवन हित पंथ॥२१॥
नामवरनपटटहल सखिनुकी, तंत्र पुराननि मत्त सुलिखनुकी॥२२॥
कोमल बानी सबकों भावै, अक्षर पढ़त अर्थ दरसावै॥२३॥
दिसिदिसिघरघरप्रगटीबाँनी, रसिकनिअपनीनिधिकरिजाँनी२४
चारि दिशनि समुद्र प्रजंत, बाँनी पढ़ैं सुनैं सब संत ॥२५॥
बानी सुनि सुनि भए उपासिक, कर्म ज्ञानतजि भए बनवासिक२६
गुरू गुरुकुल सब भए प्रसन्न, प्रीतिरीति लखि कहे धनि धन्न॥२७॥
वन विहार कों जब प्रभु जाते, इनकी कुटी तहाँ ठहराते॥२८॥
भोग आरती भेंट जु करते, तब निज इष्ट भवन अनुसरते॥२९॥
शुद्ध पाक करि भोग लगावैं, संतनि सहित प्रशादहिं पावें॥३०॥
हरि बासर के भेद न मानैं, सर्बसु महा प्रसादहि जानैं॥३१॥
जो गुरु जन कछु चरचा ठानें, बाद न करें कहै सो मानें॥४२॥
महा नम्रता सों मन मोहैं, सहन शील को ध्रुव सम कोहै॥३३॥
दोहा–बाँनी हित ध्रुव दास की सुनि जोरी मुसिकाँति।
भगवत अद्भुत रीति कछु भाव भावनाँ पाँति ॥ ३४ ॥

(भगवत मुदितजी कृत श्री अनन्य माल से संग्रहीत)



* दो शब्द *

यह ग्रंथ "श्री बयालीस लीला" नाम का दृढ़ रसिक अनन्य नाद कुल भूषण महात्मा श्री हित ध्रुव दासजी का रचा हुआ है यह महात्मा "श्री हित नित्य बृन्दावन धाम के आदि आविष्कर्त्ता श्री नित्यविहारी श्री हित राधाबल्लभ लाल जी की नित्याह्लादिनी परम प्रिया. श्री वृज नव तरुणि कदंब चूड़ा मणि श्री श्री राधिका महारानी जी के परम प्रिय पूर्ण कृपा पात्र शिष्य श्री हरियुत वंश्यावतार दृढ़ रसिक अनन्य शिरोमणि श्री श्री राधाबल्लभीय संप्रदायके प्रवर्त्तक गोस्वामी श्री श्री हित हरिवंश चंद्रवर्य्याचार्य्य महा प्रभुजी महाराजके चार पुत्र १ श्री हित वनचंद्र प्रभु जी २ श्री हित कृष्णचंद्र प्रभु जी, ३ श्री हित गोपीनाथ प्रभु जी ४ श्री हित मोहन चंद्र प्रभु जी इनमें तृतीय पुत्र श्री हित गोपीनाथ प्रभु जी के परम प्रिय कृपापात्र शिष्य थे" इस ग्रंथ के गुण, वार्ता, माधुर्य्यादिक अकथनीय हैं उनको सहृदय प्रेमी दृढ़ रसिक अनन्य पाठक महाशय ही अच्छी तरह से जान सकते हैं, इसके श्रवन मनन से श्री राधावल्लभ लाल नित्यदांपत्य किशोरी किशोर जू की रूप माधुरी की छटा की झलक अवश्य ही हृदय में झलकने लगती हैं और प्रेम प्रवाह में प्लावित कर देना तो साधारण धर्म ही है। कारण कि महात्मा श्री हित ध्रुवदासजी महाराज ने संवत् १६०० में अपने श्री गुरुदेव श्री गोपीनाथ प्रभुजी की आज्ञा से श्रीदेववन नगर (देववंध) से श्री वृन्दावन धाम में आकर निवास किया और श्री श्री हिताचार्य्य महाप्रभुजी के चरण कमल प्रताप वल

भजन भावना में मत्त दाम्पत्य की नित्य लीला के दर्शन सुख को प्राप्त हुए तब हृदय में यह अभिलाषा उत्पन्न हुई कि जो जो लीला के दर्शन का सुख मुझे प्राप्त होता है वह मुख से उच्चारण करूँ, यह विचार कर अत्यंत भाव भरे अभिलाष युक्त होय श्री हित रास मंडल में जाय रास लीला के ध्यान में मत्त भये तीन दिवस तक महा उन्मत्त प्रेम दशा में बैठे रहे तब परम करुणामय भक्त वत्सल जगत् गुरु भगवान श्री हिताचार्य्य महाप्रभुजी निज सहचरी वपु सो प्रिया प्रीतम सहित दर्शन दिये, श्री राधिका महारानी जी ने अपने चरण कमल इनके मस्तक पै धर प्रसन्न होय कृपा कर वाणी प्राकट्य को वरदान दै निज समाज सहित अंतर हित भई तब यह वाणी कृपा दत्त प्रगट भई ॥

श्री वृन्दावन में श्री रासमंडल में जहां श्री हित हरिबंश चन्द्र वर्य्याचार्य्य महाप्रभुजी महाराज की नाम सेवा मूर्ति विराजमान है जिसके दक्षिण ओर के वट वृक्ष में श्री श्री नाद कुल रसिक शेषर श्री सेवक जी (श्री दामोदरदास जी) महाराज जैसे सदेह लीन हुए थे उसी प्रकार वाईं ओर के वृक्ष में यह महात्मा श्री ध्रुव दास जी महाराज भी सदेह लीन हुये हैं।

सब सज्जन, श्री श्री राधावल्लभ लाल जीके दृढ़ रसिक अनन्य श्री हित मार्गीय प्रेमियों से यही प्रार्थना है कि इस ग्रंथ को श्रवण मनन निदध्यासन कर श्री श्री हित राधावल्लभ लाल जी का हृदय में साक्षात्कार करके प्रकाशक के श्रम को सफल करेंगे।

श्री श्री नाद कुल व श्री श्री विन्दु कुल तथा दृढ़-रस रसिक अनन्य भक्तों का
दासानुदास बाबा तुलसीदास द्वारा प्रकाशित

श्रीध्रुवदासजी कृत, बयालिस लीला की सूचीपत्र

श्री ध्रुवदासजी कृत पद्यावली की सूचीपत्र

॥ इति श्री बयालिस लीला व पद्यावली का सूचीपत्र समाप्त ॥

॥ श्री हित राधावल्लभो जयति ॥



श्रीमद् राधावल्लभीय सम्प्रदायाचार्य **श्री हरिवंश-वंशावतंश निकुञ्ज वासी १०८ श्री गोस्वामी श्री मधुसूदन वल्लभाचार्य जी महाराज** श्रीधाम वृन्दावन तथा दहगाँव (गुजरात) जिनके वचनामृत से अनेक जीव प्रभु चरणानुरागी हुए, जिन्होंने अपनी प्रेम लक्षणा-भक्ति, सेवा, शृङ्गार से 'जीवन धन' लाड़िलीलाल को आजीवन विविध लाड़ लड़ाये तथा जिनके निकुञ्ज महोत्सव में १५१ श्री मद्‌भगवत सप्ताह श्रवण कर अनेक जीवों का कल्याण हुआ—उन्हीं की स्मृति में सादर समर्पित।

आविर्भाव श्री वृन्दावन
माघ शुक्ला १५ सं० १६२८

निकुञ्जवास श्री वृन्दावन
चैत्र कृष्णा १ सं० २००८

चित्र "श्री मुकुट महल" वृन्दावन, द्वारा प्रकाशित।

॥ श्री हितहरिवंशचन्द्रोजयति ॥

॥ श्री हित राधावल्लभोजयति ॥

❀ अथ बयालिस लीला ❀

(श्री ध्रुवदास जी कृत)

जीव दशा लीला की जै जै श्री हित राधे

॥ चौपाई ॥

जीव दशा कछु इक सुनि आई ❀ हरिजस अमृत तजि विष खाई ॥
छिन भंगुर यह देह न जानी ❀ उलटी समुझि अमर ही मानी ॥
घर घरनी के रँग यों राच्यो ❀ छिन छिन में कपि नट लौं नाच्यो ॥
करी न कबहूं भजन सँभारी ❀ ऐसे मगन रह्यौ व्यौहारी ॥
बय गई बीति जात नहिं जानी ❀ ज्यों सावन सरिता को पानी ॥
द्वै स्वांसा या घट में चलैं ❀ जो बिछुरै तौ फेरि न मिलैं ॥
माया सुख में यौं लपटानो ❀ विषै स्वाद सर्वस ही जानो ॥
कृष्ण भक्ति सों कबहुं न रांच्यौ ❀ महा मूढ़ बड़े सुखते बांच्यौ ॥
काल समय जब आइ तुलानी ❀ तन मनकी सुधि सबै भुलानी ॥
रसना थकी न बोल्यो जाई ❀ बार बार मन में पछिताई ॥
जम किंकर जब दई दिखाई ❀ महा भयानक अति दुखदाई ॥
रञ्च न श्याम भक्ति उर आई ❀ या दुख में अब कौन सहाई ॥
रोम रोम पीड़ा दुख पाई ❀ हरि केहरि बिनु कौन छुड़ाई ॥
ताको नाम न लियो अभागे ❀ कबहूँ सोवत सुपन न जागे ॥
अब मुख नहिं निसरत हरिबानी ❀ पित्त वाय कफ घेर्यौ आनी ॥
एक नाम त्रैलोकहि तारै ❀ जो न लेहिं सो जनमहिं हारै ॥

दोहा–कैसें हूँ हरि नाम ले, खेलत हँसत अजान ।
ऐसे हूँ को देत हैं, उत्तम गति भगवान ॥
जो कोउ सांची प्रीति सों, हरि हरि कहत लड़ाइ ।
तिनको ध्रुव कह देहिंगे, यह जानी नहिं जाइ ॥
सब धर्मनि पर जगमगें, कृष्ण नाम शिरताज ।
जैसे बन के मृगनि में, गाजत हैं मृगराज ॥

पापी एक अजामिल भयो ❀ अधम बीज तिन नरु निर्मयो ॥
सुत मिस नाम नरायन लयो ❀ सो पापी बैकुण्ठहिं गयो ॥
ऐसे बहुत पातकी तरे ❀ हरि हरि कहत पाप सब जरे ॥

दोहा–कृष्ण नाम लीन्हों न जिन, कीन्हों बड़ो अकाज ।
धर्म मृगनि पाछे लग्यो, छांड़ि नाम मृगराज ॥

दान पुन्य नृग नृप बड़ कियो ❀ सो लइ अन्ध कूप में दियो ॥
धर्मनि में अरुझाइ भुलाने ❀ विधि परपञ्च सबै जग जाने ॥

दोहा–कोटि धर्म व्रत निगम रटि, विधि सों करैं बनाइ ।
एक नाम बिनु कृष्ण के, सबै अविधि ह्वै जाइ ॥

कोटि धर्म जो कोउ करि आवै ❀ कृष्णनाम बिनु गति नहिंपावै ॥
नामहि सौं जिन बांध्यो नातो ❀ जगके सुख तें सो भयो हांतो ॥

दोहा–मिथ्या लालच जगत सुख, सबहिं दुःख को धाम ।
इक रस नित आनन्द मय, सत्य श्याम को नाम ॥

कवित्त–हेम को सुमेर दान रतन अनेक दान, गज दान अन्नदान भूमि दान करहीं । मोतिन के तुलादान मकर प्रयाग न्हान, ग्रहन में काशी दान चित्त शुद्ध धरहीं ॥ सेजदान कन्या दान कुरुक्षेत्र गऊ दान, इतने में पापनि को नेकहू न हरहीं ।

कृष्ण केशरी को नाम एक बार लीन्हे ध्रुव, पापी तिहुं लोकन के छिनमाहिं तरहीं ।

दोहा—भक्त छत्र जिहि शिर फिरै, ताको राज प्रमान ।
कर्म धर्म किंकर भये, सेवत रहे सुजान ॥
सुरपति पशुपति प्रजापति, वैभव रहे निहारि ।
ऐसो तेज प्रताप तहँ, सकत न कोऊ सँभारि ॥

॥ सवैया ॥

व्रत तप निगम नेम यम संजम करहु कलेश कोटि किन भारी ।
इन में पहुँच नाहिं काहू की परे रहत ज्यों द्वार भिखारी ॥
जोग यज्ञ फल मेंड़ करत हैं तीरथ सब कर लीने झारी ।
धर्म मोक्ष कोउ पूछत नाही इन मग सिद्धैं कौन विचारी ॥

दोहा—सांख्य धर्म संन्यास जे, कहे पुरानन माहिं ।
भये अधीन सब नाम के, भक्तिहि देखि लजाहिं ॥

॥ सवैया ॥

भजन महल तें निकसत नाहिंन हरिपद प्रीति रही उर लागि ।
कामरु क्रोध मोह मद मत्सर ये सब गये रसातल भागि ॥
इक छत राज न भय काहू को नित आनंद रह्यो उर छाइ ।
अर्थ कामना और वासना ये सब मन ते गये नसाइ ॥

दोहा—सर्वोपरि श्री भागवत, परम धर्म स्वच्छन्द ।
जाके उर आवै नहीं, सोई अति मतिमन्द ॥
सब धर्मनि में भ्रमें जिन, जुगल चरन चित लाइ ।
जैसे दुख परदेश को, घर आये तें जाइ ॥
जो चाहत है नित्य सुख, अरु मन को विश्राम ।
हित ध्रुव हित सों भजन रह, पल पल श्यामाश्याम ॥

॥ इति श्री जीव दशा लीला [illegible] ॥

॥ अथ वैद्यक ज्ञान लीला ॥

॥ चौपाई ॥

वैद एक पंडित अति भारी ❁ ठाढ़ो सब सों कहत पुकारी ॥
जैसो रोग होइ है जाको ❁ तैसी औषधि देहों ताको ॥
यह सुनि एक गयो तेहि नेरे ❁ ऐसो बल औषधि को तेरे ॥
मेरे विथा बढ़ी अति भारी ❁ कहि मोसों कछु शोच विचारी ॥
तेरे रोग कहा है भाई ❁ ताकी औषधि देउँ बताई ॥
पापहि कर्म अधिक मैं कीन्हे ❁ महा दुखी तेहि रोगके लीन्हे ॥
विषय विषम विषतन रह्योछाई ❁ भव भुवंग ते लेहु छुड़ाई ॥
धरि यह देह कछू नहिं कीन्हो ❁ कृष्णचरन चित कबहुँ न दीन्हो ॥
विषै स्वाद में रह्यो लुभाई ❁ झूँठे सुख में आयु गमाई ॥
दुख पायो जहँजहँ चित दियो ❁ अबहौं पावत अपनो कियो ॥
ऐसे मोह जाल में पर्यो ❁ यह माया ने सर्वस हर्यो ॥
जिनको हौं समुझत हौं अपने ❁ ते तो भये रैनि के सपने ॥
गज तुरङ्ग सेवक सुत नाती ❁ जागि परे ते दिया न बाती ॥
दोहा—एते पर समुझौ रह्यो, समुझत नहिं मन मोर ।
देखि-देखि नाचत मुदित, विषै बादरनि ओर ॥
बूड़त मोह सिंधु की धारा ❁ काढ़ि दया कर कर मोहिं पारा ॥
हौंअति दीन महादुखपावत ❁ लोगकुटुम्ब कोउ न मुँह लावत ॥
जे जे सुख जोवत हे मेरो ❁ तिनमें कोउ न आवत नेरो ॥
मेरी बात सुहात न काहू ❁ तातैं उपजत है उर दाहू ॥
भयो बलहीन बुद्धि हूँ नाठी ❁ तहाँ सहाय भई कछु लाठी ॥
झूँठे कुटुम्बहि में रँग भीनो ❁ सांचे प्रभुसौं चित नहिं दीनो ॥
कहँ लगि कहौं मूढ़ता अपनी ❁ ढांपि लियो माया की चपनी ॥

दोहा–नैंन गये अरु श्रवन हूँ, और गये मुख दन्त ।
बुद्धि घटी तन गति लटी, तृष्णा को नहिं अन्त ॥

टूटी खाट न छाँड़ी भावै ❀ सुत के सुत नातीन खिलावै ॥
यहै रुचै मुख नाम न आवै ❀ जैवो जम के घर ही भावै ॥

दोहा–मन लाग्यो अति झूठ सों, तजि साँचहि सुख मूल ।
छांड़ि सुधा के सुख फलहिं, जाइ गही विष शूल ॥

ज्यों-ज्यों तन अति जीरन भयो ❀ त्यों त्यों लोभ रोग बढ़ि गयो ॥
अब तुम जतन करो चित लाई ❀ ताते कछु इक हियो सिराई ॥
तबहिं वैद तासों यों कही ❀ करो जतन दुख जैहै सही ॥
इन्द्री निग्रह जो पथ करही ❀ तिय इमली ते मन पर हरही ॥
लोभ खटाई मोह मिठाई ❀ दही क्रोध के निकट न जाई ॥
इतनी कहि जु अनुग्रह कीन्हों ❀ ताको कर आपुन गहि लीन्हों ॥
नारी देखत सीस डुलायो ❀ रह्यो अपथ्य कियो मन भायो ॥
रङ्क मनोरथ करन विचार्यो ❀ हरिसो मीत न कबहुँ सँभार्यो ॥

दोहा–विषै जूप खेलत रह्यो, कबहुँ न मानी हारि ।
पियो जु मदिरा मोह की, सब सुधि दई बिसारि ॥

मत्त भयो अप वपु न सँभारत ❀ छिन छिन विषै धूरि सिर डारत ॥
त्रिगुन मोहकी लगिनी हिवाता ❀ ताते उपज्यो है सनिपाता ॥
तिनमें दोइ अधिक बढ़े तन में ❀ तम रज बसत निरंतर मनमें ॥
तिनको और जतन नहिं कोई ❀ श्री शुकदेव कह्यो है सोई ॥
करि विश्वास बचन सुनि मेरो ❀ रोग रहै नो सुनहीं तेरो ॥
नृप रोगी बोल्यो सुनि साईं ❀ तैं तो मेरी देखन पाई ॥
अब मैं शरन गही है तेरी ❀ राखि लाज सब बात की मेरी ॥
तुम बिन गुनी कुनी सब जानै ❀ करि उपाइ जोई मन मानै ॥

दोहा–पंडित शोचि बिचारि कै. करन लग्यो उपचार।
जेसे बेगहि जाइ तरि. भव दुस्तर संसार॥

जड़ वैराग वृक्ष की लावहु ❀ सोंठ संतोषहि आनि मिलावहु॥
मिरच तीतिक्षिन करुना चीता❀ निस्पृह पीपर मिलवहु मीता॥
कोमलता सब सोंज गिलोई ❀ मधुवानी सों लेहु समोई॥
हरर आमरे शुचि अरु दाया ❀ तातें निर्मल ह्वै है काया॥
असगँध आसन दृढ़ कै करो ❀ चितामनि चिंता परिहरो॥
मुसलि सौंफ अजवाइनजीरा ❀ ज्ञान ध्यान जप जोगमें धीरा॥
सांत मृगांग विना सुख नाहीं ❀ सांच लौंग मिलवहु ता माहीं॥
भगवत धर्म धातु सब लीजै ❀ नाम सुधा रस की पुट दीजै॥
ये औषधि सब आनि मिलावौ ❀ ग्यान ओखली माहिं कुटावौ॥
हिय हांडी में आनि चढ़ावौ ❀ चेतन वह्नी करि औटावौ॥
निर्मत्सर चपनी ढकि लैयै ❀ श्रद्धा करछी फेरत जैयै॥
हस्त क्रिया जबहीं बनि आवै ❀ जो कबहूँ सत्संगति पावै॥
पुनि लै प्रेम चखक में करै ❀ भूमि गरीबी में लै धरै॥
प्रात कृपा बल जलसों पीवै ❀ रोग जाइ अरु जुग जुग जीवै॥

दोहा–नारदादि प्रहलाद ध्रुव, कीनों यहै विचार।
या जुग में या रोग को, सिद्ध यहै उपचार॥
अवतरिहैं केते तरे, याही औषधि खाइ।
ताते विलँब न कीजिये, बेगहि करो उपाइ॥
मन के समुझन को कह्यो, अद्भुत वैद्यक ग्यान।
जनमनि के सब रोग ध्रुव, सुनतहि करैं पयान॥

॥ इति श्री वैद्यक ज्ञानलीला की जै जै श्री हित हरिवंश समाप्त॥

॥ अथ मन शिक्षा लीला ॥

दोहा—रे मन श्री हरिवंश भजु, जो चाहत विश्राम ।
जिहि रस सब ब्रज सुन्दरिन, छांड़ि दिये सुख धाम ॥
निगम नीर मिलि यक भयो, भजन दूध सम सेत ।
हरिबंश हंस न्यारो कियो, प्रगट जगत के हेत ॥
एक सोच मन में रह्यो, अरु आवत जिय लाज ।
अद्भुत मानुष देह धरि, कियो न कछु वै काज ॥
रे मन चंचल तजि विषै, ढरो भजन की ओर ।
छांड़ि कुमति अब सुमति गहि, भजि लै नवल किशोर ॥
अब लगि मन कीन्हो सोई, जो जो कह्यौ तैं मोहि ।
अब तू मेरो कह्यो करि, युगल चरन छबि जोहि ॥
मन गज तजि कै बिषै मग, चलहु भजन रस माहिं ।
(श्री) राधा बल्लभ लाल बिनु, तेरो कोऊ नाहिं ॥
रे मन अरु सब छांड़ि कै, जो अटकै इक ठौर ।
वृन्दाबन घन कुञ्ज में, जहाँ रसिक शिर मौर ॥
रे मन अलि तू छुवै जिन, विषै सुमन शठ मन्द ।
युगल चरन अरबिंद को, करहि पान मकरन्द ॥
मन पक्षी अब परै जिन, जगत मोह के जाल ।
तब तोको ह्वैहै कठिन, बढ़ि है दुःख विशाल ॥
विषै चुगा जिन चुगै मन, चुगत कछुक सुख होइ ।
फिर फांसी ऐसी परै तेहि सम दुःख न कोइ ॥
रे मन कबहूँ जाय जिन, भूलि विषै मन रङ्ग ।
मनमथ ठग मारत तहां, लिये बहुत ठग सङ्ग ॥

जब लगि मन छांड़त नहीं, सब बातनि को लोभ ।
तब लगि हिय उपजत नहीं, युगल प्रेम की गोभ ॥
सब पापन को छत्र है, लोभ ते मनहिं घटाइ ।
निस्प्रेही संतोष करि, रहे भजन चितलाइ ॥
मन तो चञ्चल स बनि तें, कीजे कौन उपाइ ।
साधन को हरि भजन है, कै सतसङ्ग सहाइ ॥
काम कामना वासना, मनते करि सब दूरि ।
(श्री)राधावल्लभलाल भजि,रसिकनि जीवनिमूरि ॥
रस बल छुटै न जो विषै, सुख नहिं पावै कोइ ।
तन छाँड़ै मन गहि रहै, दूनो दुख तहँ होइ ॥
रस बल छूटै जो विषै, तबहिं लहै सुख मूल ।
जैसे आतप को तप्यो, पावै सरिता कूल ॥
विषय करत वय बीत गई, तृप्त भयो तउ नाहिं ।
नैन अछत द्वै दीप करि, परत कूप तम माहिं ॥
यद्यपि तन जीरन भयो, छुटी न मन की रीति ।
विषरि परचो सिमटत नहीं, इन्द्रिन लीन्हों जीति ॥
पर निंदा के किये तें, आवत नहिं कछु हाथ ।
मूरख पर्वत पाप को, लै चल्यो अपने साथ ॥
भक्तनि निन्दा अति बुरी, भूलि करौ जिनि कोइ ।
किये सुकृत सब जनम के, छिन में डारत खोइ ॥
मत्सर क्रोध भरचो रहै, अरु सहाइ अभिमान ।
बिन पावक जरिबो करै, महा मूढ़ अज्ञान ॥
अब सुनि भजन कि रीति कछु, होइ महा दृढ़ धीर ।
कोऊ थाह न पावही, जहां नीर गंभीर ॥

जाके जैसो भाव है. मन में धरि विश्वास।
कर्म धर्म अरु लोक कुल. तोरै सबकी आस॥
भक्त आहिं बहु भांति के. तिन में बहुतक भेद।
बिनु विवेक मिलिबो तहां. मन पावै अति खेद॥
सब ठां मिलिबो एक सो. ज्ञानी की यह रीति।
भजनी सोई विवेक सों. करै समुझि कै प्रीति॥
खान पान तो कीजिये. रसिक मंडली माहिं।
जिनके और उपासना. तहां उचित ध्रुव नाहिं॥
रसिक रँगे जे युगुल रँग. तिनकी जूठन खाइ।
जहाँ तहाँ के पावते. भजन तेज घटिजाइ॥
इष्ट मिलै अरु मन मिलै. मिलै भजन रस रीति।
मिलिये तहाँ निशंक ह्वै. कीजै तिन सों प्रीति॥
युगुल प्रेम रस मगन जे. तेई अपने जानि।
सब विधि अंतर खोलिकै. तिनही सों रुचि मानि॥
यह रस परस्यौ नाहिं जिन. तू जिनि परसै ताहि।
तासो नातो नाहिं कछु. यह रस रुचै न जाहि॥
सँग सोई जाके मिले. भूलै ग्रह ब्यौहार।
तिहि छिन आवै हिये में. अद्भुत युगुल विहार॥
जिन के देखे पुलक तन. रोमांचित ह्वै जाहि।
सुनत मधुर तिनके बचन. नैन भरे जल आहिं॥
जिनको सहज सुभाव(परचो) ही युगुल रंगकी बात।
निशि दिन बीतै भजन में. और न कछू सुहात॥
ऐसे भक्तन के मिले. हिय अरु नैन सिरात।
मन दै नीके समुझि कै. सुनिये तिनकी बात॥

जिनके युगुल विहार की, बात चलै दिन रैन।
तिनही को सँग कीजिये, छांड़ि और सब गैन॥
बहुत मिलै सो संग नहिं, न्यारी न्यारी भाँति।
युगल प्रेम रस मगन जे, तेई अपनी पाँति॥
बहुत भाँति के मत जहां, तिनहि न समुझै संग।
नव किशोरता माधुरी, विना न अपनो रंग॥
सो०–देखो प्रेम विलास, वृन्दावन वन कुञ्ज में।
जिनके यहै उपास, ऐसो सङ्ग जु कीजिये॥
दोहा–नवकिशोर सुकुमार तन, रँगे प्रेम के रंग।
जिनके हिय में बसत ध्रुव, तिनहीं सों करि संग॥
कठिन है रसिक अनन्यता, रह तन मन इक ठौर।
राई के सम चलत ही, होत और की और॥
भजन न होई सङ्ग बिनु, भजन विना नहिं प्रेम।
छिनहूँ भजन न छांड़िये, धरिये ध्रुव यह नेम॥
महा मधुर रस प्रेम को, जिन के लाग्यो रङ्ग।
ऐसे रसिक अनन्य जे, कीजै तिन सों सङ्ग॥
और भाव जिनके नहीं, युगल विहार उपास।
सुनि ध्रुव मन बच कर्म कै, ह्वै रहु तिनको दास॥
धर्मी ऐसो चाहिये, जैसे सूर रन माँहिं।
खंड खंड ह्वै जाइ तन, फिरिके चितवत नाहिं॥
कबहूँ तौ थोरो भजन, कबहूँ होत विशाल।
मन को धीरज छुटै नहिं, गहै न दूजी चाल॥
कह अचार अपरस कहा, कह संयम व्रत नेम।
कहा भजन विधिसों बिध्यौ, जो नहिं परस्यौ प्रेम॥

भजन न करे निमित्त लै, परै सहज रस ढार ।
जैसे रोको रुकत नहिं प्रबल नदी की धार ॥
भक्त न ऐसा चाहिये, मन धीरज छुटि जाइ ।
सुख पाये फूलै अधिक, दुख पाये बिललाय ॥
रहै धीर रस भजन में, व्यापै नहिं कछु और ।
होत पवन झकझोर बहु, गिरि नहिं छांड़ै ठौर ॥
सूर सोई रन भूमि को, तजे न जब लगि प्रान ।
भजनी ऐसो चाहिये, उर नहिं आनै आन ॥
महा मधुर रस प्रेम बिन, परसत नहिं कछु और ।
ऐसे रसिक अनन्य जे, तेई मम सिर मौर ॥
कह न होइ सतसङ्ग ते, देखौ तिल अरु तेल ।
मोल तोल सब फिरि गयो, पायो नाम फुलेल ॥
और धर्म साधन भजन, फीके बिनु अनुराग ।
जैसे बागो बनत नहिं, जो न होइ सिर पाग ॥
प्रेम बिना जो कछु करै, सो नहिं लागत नीक ।
विविध भांति व्यंजन करौ, लौंन बिना सब फीक ॥
नवल किशोरी कुवँरि की, सहजहि ऐसो बान ।
ताको सङ्ग न छांड़ही, नेक सरन गहै आन ॥
प्रीतमहू के प्रण यहै, प्रीति के बस है जाहिं ।
कोटि धर्म किन करौ कोउ, तिन तन चितवत नाहिं ॥
एक प्रान मन दोइ तन, अँखियन की सी प्रीति ।
यद्यपि न्यारी रहत हैं देखत एकहि रीति ॥
बांहा जोरा चलत दोउ, रसिक लाड़िली लाल ।
देखौ ऐसी भांति छवि, चितवनि नैन विशाल ॥

औगुन करे समुद्र सम, गनत न अपनों जान।
राई के सम सजन को, मानत मेरु समान॥
ऐसे प्रभु त्रैलोक्य मनि, जिन न भजे चितलाय।
पशु पत्ती ताको सबै, मानत अपनों राय॥
तिय सुत नाती नातिनी, तिनही तन चितदीय।
(श्री)राधावल्लभ लाल जी, नेकु न आने हीय॥
परचो विषै के स्वाद में, ऐसो रह्यो लुभाइ।
तिहि रस में वय बीति गई, गह्यो काल ने आइ॥
अद्भुत युगल विहार को, जिनके रहे विचार।
सुनि ध्रुव तिनकी चरन रज, लै लै सिर पर धार॥
मन शिक्षा के कहे ध्रुव, दोहा साठ अरु चार।
युगल चंद अरविंद पद, पल पल प्रतिहि सँभार॥
मन शिक्षा के सुनत ही, ढरयो न नैननि नीर।
पाठ भजन ऐसो भयो, जैसे पढ़त है कीर॥

इति श्री मन शिक्षा लीला की जै जै श्री हित हरिवंश चन्द्रजी॥

अथ श्री वृन्दावन सत लीला

दोहा—प्रथम नाम हरिवंश हित, रटि रसना दिन रैन।
प्रीत रीति तब पाइये, अरु वृंदावन ऐन॥
चरन शरन हरिवंश की, जब लगि आयो नाहिं।
नवनिकुंज निज माधुरी, क्यों परसै मन माहिं॥
वृंदावन सत करन को, कीन्हों मन उत्साह।
नवल राधिका कृपा बिनु, कैसे होत निवाह॥
यह आशा धरि चित्त में, कहत यथा मति मोर।

बृन्दावन सुख रङ्ग को, काहु न पायो ओर ॥
दुर्लभ दुर्घट सबनि ते, बृन्दावन निज भौन ।
नवल राधिका कृपा बिनु, कहिधौं पावै कौन ॥
सबै अङ्ग गुन हीन हौं, ताको यतन न कोइ ।
एक किशोरी कृपा तें, जो कछु होइ सो होइ ॥
सोउ कृपा अति सुगम नहिं, ताको कौन उपाव ।
चरन शरन हरिबंश की, सहजहि बन्यौ बनाव ॥
हरिबंश चरन उर धरनि धरि, मन वच कै विश्वास ।
कुँवरि कृपा ह्वै है तबहि, अरु बृन्दावन बास ॥
प्रिया चरन बल जानि कै, बाढ़्यौ हिये हुलास ।
तेई उर में आनि है, वृन्दा बिपिन प्रकास ॥
कुँवरि किशोरी लाड़िली, करुनानिधि सुकुमारि ।
बरनो बृन्दा बिपिन को, तिनके चरन सँभारि ॥
हेममई अवनी सहज, रतन खचित बहु रङ्ग ।
चित्रित चित्र विचित्र गति, छबि की उठति तरङ्ग ॥
बृन्दावन झलकनि झमक, फूले नैन निहारि ।
रवि शशि दुतिधर जहां लगि, ते सब डारे वारि ॥
बृन्दावन दुतिपत्र की, उपमा को कछु नाहिं ।
कोटि २ बैकुण्ठ हू, तेहि सम कहे न जाहिं ॥
लता २ सब कल्पतरु, पारिजात सब फूल ।
सहज एकरस रहत हैं, झलकत यमुना कूल ॥
कुंज २ अति प्रेम सों, कोटि २ रति मैन ।
दिनहिं सँभारत रहत हैं, श्री वृन्दावन ऐन ॥

पाठान्तर हित पद निज उर धरनि धर ।

विपिनराज राजत दिनहिं, वरषत आनंद पुंज।
लुब्ध सुगन्ध पराग रस, मधुप करत मधु गुंज॥
अरुन नील सित कमल कुल, रहे फूलि बहुरङ्ग।
वृन्दावन पहिरे मनो, बहु विधि वसन सुरंग॥
हितसों त्रिविध समीर बहै, जैसी रुचि जिहिकाल।
मधुर २ कल कोकिला, कूजत मोर मराल॥
मण्डित यमुना वारियों, राजत परम रसाल।
अति सुदेस सोभित मनो, नील मनिन की माल॥
विपिन धाम आनन्द को, चतुरई चित्रित ताहि।
मदन केलि सम्पति सदा, तेहि करि पूरन आहि॥
देवी वृन्दा विपिन की, बृन्दा सखी सरूप।
जेहि विधि रुचि होइ दुहुनकी, तेहि विधि करत अनूप॥
छिन २ वन की छवि नई, नवल युगल के हेत।
समुझि बात सब जीय की, सखि वृन्दा सुख देत॥
गावत वृन्दा विपिन गुन, नवल लाड़िली लाल।
सुखद लता फल फूल द्रुम, अद्भुत परम रसाल॥
उपमा वृन्दा बिपिन की, कहि धौं दीजै काहि।
अति अभूत अद्भुत सरस, श्रीमुख बरनत ताहि॥
आदि अन्त जाको नहीं, नित्य सुखद बन आहि।
माया त्रिगुन प्रपञ्च की, पवन न परसत ताहि॥
वृन्दा बिपिन सुहावनों, रहत एक रस नित्त।
प्रेम सुरङ्ग रंगे तहाँ, एक प्रान द्वै मित्त॥
अति स्वरूप सुकुमार तन, नव किशोर सुखरास।
हरत प्रान सब सखिन के, करत मन्द मृदु हास॥

न्यारो है सब लोक तें, बृन्दावन निज गेह ।
खेलत लाड़िली लाल जहँ, भीजे सरस सनेह ॥
गौर श्याम तन मन रँगे, प्रेम स्वाद रस सार ।
निकसत नहिं तिहि ऐनते, अटके सरस विहार ॥
बन है बाग सुहाग को, राख्यो रस में पागि ।
रूप रंग के फूल दोउ, प्रीति लता रहि लागि ॥
मदन सुधा के रस भरे, फूलि रहे दिन रैन ।
चहुंदिश भ्रमत न तजत छिन, भृङ्ग सखिन के नैन ॥
कानन में रहे झलकि के, आनन विविविधु कांति ।
सहज चकोरी सखिन को, अखियाँ निरखि सिरांति ॥
ऐसे रस में दिन मगन, नहिं जानत निशि भोर ।
बृन्दावन में प्रेम की, नदी बहै चहुँ ओर ॥
महिमा बृन्दा बिपिन की, कैसे कै कहि जाय ।
ऐसे रसिक किशोर दोउ, जामें रहे लुभाय ॥
विपिन अलौकिक लोक में, अति अभूत रसकन्द ।
नवकिशोर इक वैस द्रुम, फूले रहत सुछंद ॥
पत्र फूल फल लता प्रति, रहत रसिक पिय चाहि ।
नवलकुँवरि हग छटा जल, तिहि कर सींचे आहि ॥
कुँवरि चरन अंकित धरनि, देखत जेहि जेहि ठौर ।
प्रिया चरन रज जानि कै, लुठत रसिक सिरमौर ॥
वृन्दावन प्यारो अधिक, यातें प्रेम अपार ।
जामें खेलत लाड़िली, सर्वस प्रान अधार ॥
सबै सखी सब सौंज लै, रँगी युगल ध्रुव रंग ।
समै समै की जानि रुचि, लिये रहत हैं संग ॥

बृन्दावन वैभव जितो, तितो कह्यो नहिं जात ।
देखत सम्पति विपिन की, कमला हू ललचात ॥
बृन्दावन की लता सम, कोटि कल्पतरु नाहिं ।
रज की तुल वैकुंठ नहिं और लोक किहि माहिं ॥
श्रीपति श्रीमुख कमल कह्यो, नारद सों समुझाइ ।
बृन्दावन रस सबन तें, राख्यो दूरि दुराइ ॥
अंश कला औतार जे, ते सेवत हैं ताहि ।
ऐसे बृन्दा विपिन को, मन वच कै अवगाहि ॥
शिव विधि उद्धव सबनि के, यह आसा है चित्त ।
गुल्म लता ह्वै सिर धरैं, बृन्दावन रज नित्त ॥
चतुरानन देख्यो कछू, बृन्दा विपिन प्रभाव ।
द्रुम द्रुम प्रति अरु लता प्रति, औरै बन्यो बनाव ॥
आप सहित सब चतुर्भुज, सब ठां रह्यो निहार ।
प्रभुता अपनी भूलि गयो, तन मन कै रह्यो हार ॥
लोक चतुर्दश ठकुरई, संपति सकल समेत ।
सब तजि बस बृन्दा विपिन, रसिकन को रसखेत ॥
सकहितो बृन्दा विपिन बसि, छिन २ आयु बिहात ।
ऐसो समो न पाइये, भली बनी है घात ॥
छांड़ि स्वाद सुख देह के, और जगत की लाज ।
मनहिं मारि तन हारि कै, बृन्दावन में गाज ॥
बृन्दावन के बसत ही, अन्तर जो करै आनि ।
तिहि सम शत्रु न और कोउ, मन बच कै यह जानि ॥
बृन्दावन के बास को, जिनके नाहिं हुलास ।
माता मित्र सुतादि तिय, तजि ध्रुव तिनको पास ॥

और देश के बसत ही, अधिक भजन जो होइ ।
इहि सम नहिं पूजत तऊ, वृन्दाबन रहै सोइ ॥
वृन्दाबन में जो कबहुँ, भजन कछू नहिं होय ।
रज तो उड़ि लागै तनहिं, पीवै यमुना तोय ॥
वृन्दा विपिन प्रभाव सुनि, अपनो ही गुन देत ।
जैसे बालक मलिन को, मात गोद भरि लेत ॥
और ठौर जो यतन करै, होत भजन तउ नाहिं ।
ह्यां(इहां) फिरै स्वारथ आपने, भजन गहे फिरै बाहिं ॥
और देश के बसत ही, घटत भजन की बात ।
वृन्दावन में स्वारथौ, उलटि भजन ह्वै जात ॥
यद्यपि सब औगुन भरयो, तदपि करत तुव ईठ ।
हित मय वृन्दा विपिन को, कैसे दीजै पीठ ॥
वृन्दावन ते अनत ही, जेतिक द्यौस बिहात ।
ते दिन लेखे जिन लिखो, बृथा अकारथ जात ॥
भजन रसमई विपिन धर, समुझि बसे जो कोइ ।
प्रेम बीज तेहि खेत तें, तब ही अंकुर होइ ॥
यद्यपि धावत विषै को, भजन गहत बिच पानि ।
ऐसे वृन्दा विपिन की, सरन गही ध्रुव आनि ॥
बसिबो वृन्दा विपिनको, जिहिं तिहिं विधि दृढ़ होइ ।
नहिं चूके ऐसो समो, जतन कीजिये सोइ ॥
कहँ तू कहँ वृन्दा विपिन, आनि बन्यो भल बान ।
यहै वात जिय समुझि कै, अपनो छांड़ि सयान ॥
छिन भंगुर तन जात है, छांड़हि विषै अलोल ।
कौड़ी बदले लेहि तू, अद्भुत रतन अमोल ॥

कोटि कोटि हीरा रतन, अरु मन विविध अनेक।
मिथ्या लालच छांड़ि कै, गहि वृन्दावन एक॥
नहिं सो माता पिता नहिं, मित्र पुत्र कोउ नाहिं।
इनमें जो अन्तर करै, वसत वृन्दावन माहिं॥
नाते जेते जगत के, ते सब मिथ्या मानि।
सत्य नित्य आनन्द मय, वृन्दावन पहिचानि॥
बसिकै वृन्दा विपिन में, ऐसी मन में राख।
प्रान तजौं बन ना तजौं, कहौ बात कोउ लाख॥
चलत फिरत सुनियत यहै, (श्री) राधावल्लभलाल।
ऐसे वृन्दा विपिन में, बसत रहौ सब काल॥
बसिबो वृन्दा विपिन को, यह मन में धरि लेहु।
कीजै ऐसो नेम दृढ़, या रज में परै देह॥
खण्ड खण्ड ह्वै जाइ तन, अंग अंग सत टूक।
वृन्दावन नहिं छांड़िये, छांड़िबो है बड़ि चूक॥
पटतर वृन्दा विपिन की, कहिं धौं दीजै काहि।
जेहि बन की ध्रुव रेनु में, मरिबो मंगल आहि॥
वृन्दावन के गुननि सुनि, हित सों रज में लोट।
जेहि सुख को पूजत नहीं, मुक्ति आदि सत कोट॥
सुरपति पशुपति प्रजापति, रहे भूलि तेहि ठौर।
वृन्दाबन वैभव कहो, कौन जानि है और॥
यद्यपि राजत अवनि पर, सबते ऊँचो आहि।
ताकी सम कहिये कहा, श्रीपति बंदत ताहि॥
वृन्दाबन वृन्दा विपिन, वृन्दा कानन ऐन।
छिन छिन रसना रटो कर, वृन्दाबन सुख दैन॥

वृन्दावन आनन्द घन, तो तन नश्वर आहि।
पशु ज्यों खोवत विषै रस, काहि न चिंतत ताहि॥
वृन्दाबन वृन्दा कहत, दुरित वृन्द दुरि जाहिं।
नेह बेलि रस भजन की, तब उपजै मन माहिं॥
वृन्दावन श्रवननि सुनहि, वृन्दावन को गान।
मन बच कै अति हेत सौं, वृन्दावन उर आन॥
वृन्दावन को नाम रटि, वृन्दावन को देखि।
वृन्दावन सों प्रीत करि, वृन्दावन उर लेखि॥
वृन्दा विपिन प्रनाम करि, वृन्दाबन सुख खानि।
जो चाहत विश्राम ध्रुव, वृन्दाबन पहिंचानि॥
तजि कै वृन्दा विपिन को, और तीर्थ जे जात।
छांड़ि विमल चिंतामणी, कौड़ी को ललचात॥
पाइ रतन चीन्हों नहीं, दीनों कर तें डार।
यह माया श्रीकृष्ण की, मोह्यो सब संसार॥
प्रगट जगत में जग मगै, वृन्दा विपिन अनूप।
नैन अछत दीसत नहीं, यह माया को रूप॥
वृन्दावन को यश अमल, जिहि पुरान में नाहिं।
ताकी बानी परौ जिनि, कबहूँ श्रवननि माहिं॥
वृन्दाबन को यश सुनत, जिनके नाहिं हुलास।
तिनको परस न कीजिये, तजि ध्रुव तिनको पास॥
भुवन चतुर्दश आदि दै, ह्वै है सबको नास।
इक छत वृन्दा विपिन घन, सुखको सहज निवास॥
वृन्दावन इह विधि बसै, तजि कै सब अभिमान।
तृण ते नीचो आप को, जानै सोई जान॥

कोमल चित सब सों मिलै, कबहुँ कठोर न होइ।
निस्प्रेही निर्वैरता, ताको शत्रु न कोइ॥
दूजे तीजे जो जुरै, साक पत्र कछु आय।
ताही सों संतोष करि, रहै अधिक सुख पाय॥
देह स्वाद छुट जाहि सब, कछु होइ छीन शरीर।
प्रेम रङ्ग उर में बढ़ै, विहरै यमुना तीर॥
युगल रूप की झलक उर, नैन रहै झलकाइ।
ऐसे सुख के रङ्ग में, राखै मनहिं रँगाइ॥
आवै छवि की झलक उर, झलकै नैननि वारि।
चिंतत साँवल गौर तन, सकहि न तनहिं सँभारि॥
जीरन पट अति दीन लट, हिये सरस अनुराग।
विवस सघन वन में फिरै, गावत युगल सुहाग॥
रस में देखत फिरै बन, नैननि बन रहै आइ।
कहुँ कहुँ आनँद रंग भरि, परै धरनि थहराइ॥
ऐसी गति ह्वै है कबहुँ, मुख निसरत नहिं बैन।
देखि देखि वृन्दा विपिन, भरि भरि ढारै नैन॥
वृन्दाबन तरु तरु तरे, ढरै नैन सुख नीर।
चिंतत फिरै आबेस बस, सांवल गौर शरीर॥
परम सच्चिदानंद घन, वृन्दा बिपिन सुदेश।
जामें कबहूँ होत नहिं, माया काल प्रवेश॥
शारद जो शत कोटि मिलि, कल्पन करै विचार।
वृन्दावन सुख रङ्ग को, कबहुँ न पावै पार॥
वृन्दाबन आनन्द घन, सब तें उत्तम आहि।
मोते नीच न और कोउ, कैसे पैहों ताहि॥

इत बौना आकाश फल, चाहत है मन माहिं।
ताको एक कृपा बिना, और यतन कछु नाहिं॥
कुँवरि किशोरी नाम सों, उपज्यो दृढ़ बिस्वास।
करुनानिधि मृदु चित्त अति, ताते बढ़ी जिय आस॥
जिनको वृंदा विपिन है, कृपा तिनहि की होइ।
वृंदाबन में तबहिं तो, रहन पाइ है सोइ॥
वृन्दावन सत रतन की, माला गुही बनाइ।
भाल भाग जाके लिखी, सोई पहिरै आइ॥
बृन्दाबन सुख रङ्ग की, आशा जो चित होइ।
निशि दिन कंठ धरे रहैं, छिन नहिं टारै सोइ॥
बृन्दाबन सत जो कहै, सुनि है नीकी भाँति।
निसदिन तेहि उर जगमगै, वृन्दाबन की काँति॥
बृन्दाबन को चिंतवन, यहै दीप उर बार।
कोटि जन्म के तम अघहि, काटि करै उजियार॥
बसिकै बृन्दा विपिन में, इतनो बड़ो सयान।
युगल चरण के भजन बिन, निमिष न दीजे जान॥
सहज विराजत एक रस, वृन्दावनं निज धाम।
ललितादिक सखियन सहित, क्रीड़त श्यामाश्याम॥
प्रेम सिंधु वृन्दा विपिन, जाको अंत न आदि।
जहां कलोलत रहत नित, युगल किशोर अनादि॥
न्यारो चौदह लोक तैं, बृन्दावन निज भौन।
तहां न कबहूँ लगत है, महा प्रलय की पौन॥
महिमा वृन्दा विपिन की, कहि न सकत मम जीह।
जाके रसना द्वै सहस, तिनहूँ काढ़ी लीह॥

एती मति मोपै कहा, शोभा निधि वनराज ।
ढीठौ कै कछु कहत हों, आवत नहिं जिय लाज ॥
मति प्रमान चाहत कह्यो, सोऊ कहत लजात ।
सिन्धु अगम जेहि पार नहि, कैसे सीप समात ॥
या मन के अवलंब हित, कीन्हो आहि उपाय ।
वृन्दावन रस कहन में, मति कबहूँ उरझाय ॥
सोलह सै ध्रुव छयासिया, पून्यो अगहन मास ।
यह प्रबन्ध पूरन भयो, सुनत होत अघ नास ॥
दोहा वृन्दा विपिन के, इकसत षोड़श आहि ।
जो चाहत रस रीति फल, छिन २ ध्रुव अवगाहि ॥

॥ इति श्री वृन्दावनसत की जै जै श्री हितहरिवंश जी ॥

॥ अथ श्रीख्याल हुल्लास लीला ॥

दोहा—दोहा ख्याल हुलास मन, कछु इक कीने आहि ।
प्रेम छटा जेहि उर चढ़ी, सो ध्रुव समुझै ताहि ॥
प्रीति समान न और सुख, दुखहू होत अपार ।
मिलिवो सुख दुख बिछुरिवो, यह कीनो निरधार ॥
बिन देखे तलफत रहै, क्यों पावै चित चैन ।
बदन रूप जल पान को, प्यासे हैं दोउ नैन ॥
अब सुन इक इक घरी तौ, कलपन की सम होत ।
तिहिं दुख लिखवे को कहूँ, नहिं कागद नहिं दोत ॥
कठिन पीर पिय बिरह की, लगे प्रेम के बान ।
अबतो चाहत है चल्यो, रहि न सकत इहि प्रान ॥

महा प्रेम निज मधुर अति, सबतें न्यारो आहि।
तहां न मिलिबो बिछुरिबो, जीवत रूपहि चाहि ॥
यह रस नित्य बिहार बिनु, सुन्यो न देख्यो नैन।
एक प्रीति वय रूप दोउ, बिलसत इक रस मैन ॥
नैना तौ अटके जहां, तहां न बिछुरन होइ।
इक रस अद्भुत प्रेम के, सुखहि लहै दिन सोइ ॥
नवल विमल रस प्रेम को, जिनके सहजहि ढार।
तिनके हिये चलत रहे, सुख प्रवाह की धार ॥
युगल प्रेम रस माधुरी, तहां न अटके चित्त।
चखत फिरै माया फलनि, तहां रहै दुख नित्त ॥
जहां जहां चित लागि है, तहां तहां दुख राशि।
जब लगि मन परि है नहीं, युगल प्रेम की पाशि ॥
युगल रूप तन विपिन जहँ, तहां न अटकै जाइ।
देखि विषै विष छिनक सुख, तिहिं ठां रह्यो लुभाइ ॥
मूरख मन समुझत नहीं, नवल रूप निधि पाय।
फीको छिल्लर विषै को, तहां धसत है धाय ॥
सोऊ कर आवत नहीं, बनत न एकौ बात।
बिचही दुख पावत फिरत, दुहूँ ओर ते जात ॥
जहां जहां चित दीजिये, तहां तहां दुख मूल।
तहां न अरुझै जाइ के, सदा रहै सुख फूल ॥
अनत अटक नाहिन भली, यह समुझै सब कोइ।
लहै न मनको जो रुचै, फिर फिर दुखही होइ ॥
और विषै रस पाइये, सोऊ दुख करि जानि।
तहां न दीजै चित्त ध्रुव, यह कह्यो मेरो मानि ॥

अबतौ ऐसी चित्त धरि, युगल चरन रँग राँचि।
महामाधुरी केलि गुन, छिन छिन गाय अरु नाचि॥
सुनि ध्रुव ऐसी चाहिये, छांड़ि जगत की रीति।
युगल चरन कोमल सुरँग, तिनही सों करि प्रीति॥
अब तौ आहि यहै भली, सबतें मोह मिटाय।
रसिक अनन्यनि संग गहि, श्यामा श्याम लड़ाय॥
अबतौ करनो है यहै, वृन्दावन करि वास।
युगल चरन छवि रंग रँगि, सबतें होइ उदास॥
तन मन कै वन सेइये, या पर नहिं मत और।
विहरत जहँ सुकुमार दोउ, अद्भुत श्यामल गौर॥
सो०—सुनि लै मेरी बात, युगल चरन चित लाइये।
जो चूक्यो यह घात, फिर पाछैं पछिताइहै॥
दोहा—अबतौ वय सब बीति गइ, अरु जु रही सोउ जात।
द्यौस न कछु वै करि सक्यो, अब जिनि खोवै रात॥
पंगु होइ सब ओर तें, अटकैं शिवि छबि माहिं।
तबहीं तो पावै सुखहि, और विषै छुटि जाहिं॥
अब कै देही मनुज की, पाई है केहुँ भाग।
युगल चन्द पद कमल सों, कीजै ध्रुव अनुराग॥
समुझत नहिं देखत सुनत, घटत नाहिं ललचानि।
जैसे खोटे तुरँग की, मिटत न मनकी बानि॥
सुख तौ सोई जानिबो, इक रस रहै दिन साथ।
सो सुख दुख सम जानिये, होइ पराये हाथ॥
नख शिख लौं भूषन जिते, अंगनि छबिहि निहार।
सुख सींवां माधुर्य्य रस, छिन छिन यहै बिचारि॥

जाके यह सम्पति सदा, सोइ धनी जग माहिं।
ताको माया काल की, पवनहु परसत नाहिं॥
कुंज भवन रचना रुचिर, सेज सुरङ्ग अनूप।
तापर बैठे देखि ध्रुव, अद्भुत सहज सरूप॥
जाके नैननि झलकि रहैं, गौर श्याम अभिराम।
तिनही ध्रुव यह देह धरि, पायो है बिश्राम॥
रूप सिंधु में पैठि ध्रुव, जो मन सकहि सम्हारि।
प्रेम रतन तब कर परै, विषया विष दै डारि॥
ज्ञान भजन जो करहु बहु, कौन करै बकबाद।
विविध भांति बिंजन करौ, लोन बिना नहिं स्वाद॥
प्यार बिना नहिं सोहही, करौ भजन बहु ग्यान।
दीपक बहु इकठौ रहै, होत न भान समान॥
बहुत भांति लै चतुरई, करौ भजन की बात।
रंच प्रेम की छटा बिनु, सब नीरस ह्वै जात॥
पानिप मोती की जैसी, ऐसो भजन सनेह।
जाके उर झलकत रहै, तिनहि धरी ध्रुव देह॥
करत भजन बिधिसों विध्यो, अरु अचार बहुतेर।
प्रेम छटा की झलक बिनु, होत है सब अंधेर॥
प्रेम छटा रञ्चक नहीं, विधि को भजन अपार।
स्वादी स्वाद न पावही घृत बिनु ज्यों ज्यौनार॥
प्रेम आंच के लगत ही, ढरकि चलत मन मैन।
हियो छकै तन पुलकि ह्वै, भरि भरि ढारै नैन॥
अपरस ग्यान समान यम, भजन धर्म आचार।
पाहन कबहुँ न होत मृदु, परयो रहै जलधार॥

बहु रँग माया बिपिनबन, तहां फिरै सुखमानि ।
ऐंचि खेंचि या मन मृगहि, गहि मनमंगहि आनि ॥
मनतें चञ्चल नाहिं कछु, नेक न कहुँ ठहरात ।
तबही तौ ध्रुव होत बस, परै प्रेम की बात ॥
बिचल्यौ फिरै भली नहीं, प्रेम गली छुटि जाइ ।
रहै एक ही ठौर लगि, युगल चरन चितलाइ ॥
प्रेम रङ्ग सों रँगे जे, नहिं आनत उर आन ।
अद्भुत युगल बिहार रस, तेई करहिं पान ॥
घाइल कबहूँ नहिं भयो, नवल नेह के तीर ।
अटक बिना ध्रुव खटक नहिं, कह जानै पर पीर ॥
चढ़िकै मैन तुरङ्ग पै, चलिबो पावक माहिं ।
प्रेम पंथ ऐसो कठिन, सब कोउ निबहत नाहिं ॥
परचो न रूप प्रवाह में, परस्यो नहिं उर नेह ।
सुनि ध्रुव तिन या जगत में, धरी बादही देह ॥
प्रेम प्रकार अनेक बिधि, तिन में उत्तम भांति ।
अद्भुत चरित दुहूनि के, जिन के उर झलकांति ॥
प्रेम भानु के उदय ते, मिटत है भ्रम सब केर ।
खंड खंड ह्वै जाइ ध्रुव, माया मोह अँधेर ॥
जहँ प्रीतम तेहिं देश की, प्यारी लागत पौन ।
प्रेम छटा जाने बिना, यह सुख समुझै कौन ॥
नव किशोरता माधुरी, दम्पति रूप निहारि ।
तेहि सुख के ध्रुव निमिष पर, ज्ञान मुक्ति सब वारि ॥
जाको हीयो सरस नहिं, क्यों समुझै रस रीति ।
बिनु अनुभव जानै कहा, कैसी होत है प्रीति ॥

मन न मिल्यो तन निकट है, तहां कहां सुखहोइ।
बिनु गुन मन मनियां कहौ, कैसे लीजे पोइ॥
ज्ञान बिना पशु हू कछू, समुझत प्रीति को रङ्ग।
मोह बँध्यो पाछे फिरत, तजै न कबहूँ सङ्ग॥
ज्ञान सहित नर देह बर, भरतखराड में होइ।
जो नहिं समुझै प्रेम रस, ताको रहिये रोइ॥
प्रेमी मलिन न होइ ध्रुव, जाको उज्जल हीय।
इक रस जाके उर बसै, रसिक लाड़िली पीय॥
अब ध्रुव ऐसी चाहिये, सबहीं तें मन फेर।
कै रसिकन को सङ्ग गहि, युगल चन्द छबिहेर॥
दोहा ख्याल हुलास के, तहँ प्रबन्ध कछु नाहिं।
आगे पाछे हैं भये, जो आये उर माहिं॥
उलटो पन्थ है प्रेम को, तहां रह्यो मन हारि।
यशहू सुनि लागत बुरो, मीठी लागत गारि॥

॥ इति श्री ख्याल हुल्लास लीला को जै जै श्री हित हरिवंश चन्द्र जी॥

॥ अथ भक्त नामावलि लीला ॥

दोहा-श्री हरिबंश नाम ध्रुव कहतही, बाढ़ै आनँद बेलि।
प्रेम रङ्ग उर जगमगै, युगल नवल रस केलि॥
निगम ब्रह्म परसत नहीं, जो रस सबते दूरि।
कियो प्रगट [1]हरिबंश जू, रसिकनि जीवन मूरि॥
(श्री) [2]बनचंद चरनअंबुज भजु, मनक्रम वचनप्रतीति।
वृन्दाबन निज प्रेम की, तब पावै रसरीति॥
[3]कृष्ण चन्द के कहतही, मनको भ्रम मिटिजाइ।
बिमल भजन सुखसिंधु में, रहै चित्त ठहराइ॥

(श्री) ४गोपीनाथ पद उर धरे, महा गोप्य रस सार।
विनु बिलम्ब आवे हिये, अद्भुत युगल विहार॥
पति कुटुम्ब देखत सबै, घूंघट पट दये डारि।
देह गेह बिसरयो तिनहिं, ५मोहन रूप निहारि॥
धीर गँभीर समुद्र सम, सील सुभाव अनूप।
सब अँग सुन्दर हँसत मुख, अद्भुत सुखद सरूप॥
शुक नारद उद्धव जनक, प्रहलादिक सनकादि।
ज्यों हरि आपुन नित्य हैं, त्यों ये भक्त अनादि॥
प्रगट भयो जयदेव मुख, अद्भुत गीत गोविंद।
कह्यो महा सिंगार रस, सहित प्रेम मकरन्द॥
अरिल-पद्मा वति जयदेव प्रेम बश कीन्हे मोहन।
अष्टपदी जो कहे सुनत फिरै ताके गोहन॥
दोहा-श्रीधर स्वामी तौ मनो, श्रीधर प्रगटे आनि।
तिलक भागवत कियो रचि, सब तिलकनि परवांनि॥
रसिक अनन्य हरिदास जू, गायो नित्य विहार।
सेवा हू में दूरि किय, विधि निषेद जञ्जार॥
सघन निकुंजनि रहत दिन, बाढ्यौ अधिक सनेह।
एक बिहारी हेत लगि, छांड़ि दिये सुखगेह॥
रङ्क छत्रपति काहु की, धरी न मन परवाह।
रहे भीजि रस भजन में, लीने कर करवाह॥
बल्लभ सुत बिट्ठल भये, अति प्रसिद्ध संसार।
सेवा विधि जिहि समै की, कीनी तेहि व्यौहार॥
राग भोग अद्भुत विविध, जो चहिये जिहि काल।
दिनहिं लड़ाये हेत सों, गिरधर श्री गोपाल॥

४-श्रीनंदनंदन औतार। ५-श्रीमोहनचंदजी श्रीराधावल्लभ नित्य बिहारी।

गौड़ देश सब उद्धरयो, प्रगट कृष्ण चैतन्य।
तैसेहि नित्यानन्द हू, रस में भये अनन्य॥
पावतही तिनको दरस, उपजै भजनानन्द।
बिनही श्रम छुटि जाइ सब, जे माया के फन्द॥
रूप सनातन मन बढ़्यौ, राधा कृष्ण अनुराग।
जानि विश्व नश्वर सबै, तब उपज्यो बैराग॥
विष समान तजि विषै सुख, देश सहित परिवार।
वृन्दाबन को चले यों, ज्यों सावन जलधार॥
तृन ते नीचो आपकों, जानि बसे बन माहिं।
मोह छांड़ि ऐसे रहे, मनहु चिन्हारहुँ नाहिं॥
अरिल्ल–रघुनन्दन सारङ्ग जीव, तिन पाछे आये।
कृष्ण कृपा करि सबै, आनि निज धाम बसाये॥
दोहा–भजन रसिक रघुनाथ जी, राधाकुण्ड स्थान।
लौंन तक्र व्रज को लियो, परस्यो नहिं कछु आन॥
बन्दन करिके चितवनि, गौर श्याम अभिराम।
सोवत हू रसना रटै, राधा कृष्ण सुनाम॥
श्री विलास ब्रजनाथ अरु, श्रीचँद मुकँद प्रवीन।
मदनमोहन पदकमलसों, अधिकप्रीति तिन कीन॥
महा पुरुष नन्दन भये, करि तन सकल सिंगार।
सखी रूप चिंतत फिरैं, गौर श्याम सुकुँमार॥
नैन सजल तिहि रंग में, चित पायो बिश्राम।
बिबस बेगि ह्वै जात सुनि, लाल लाड़िली नाम॥
कृष्णदास हुते जंगली, तेऊ तैसी भांति।
तिनके उर झलकत रहे, हेम नील मनि कांति॥

युगल प्रेम रस अवधि में, पग्यो प्रबोध मन जाइ ।
वृन्दावन रस माधुरी, गाई अधिक लड़ाइ ॥
अति विरक्त संसार तें, बसे विपिन तजि भौन ।
प्रीति सहित गोपाल भट, सेये राधा रौन ॥
घमरडी रस में घमड़ि रह्यो, वृन्दावन निज धाम ।
वंसीबट तट बास किय, गाये श्यामा स्याम ॥
भट्ट नरायन अति सरस, ब्रजमंडल सों हेत ।
ठौर ठौर रचना करी, प्रगट कियो संकेत ॥
अरिल्ल—वर्द्धमान श्री भट्ट अरु, गङ्गल ब्रज वृन्दावन गायो ।
करि प्रतीति सर्वोपर जान्यो, ताते चित्त लगायो ॥
दोहा—भट्ट गदाधर नाथ भट, विद्या भजन प्रवीन ।
सरस कथा बानी मधुर, सुनि रुचि होत नवीन ॥
गोविंद स्वामी गङ्ग अरु, विष्णु विचित्र बनाय ।
पिय प्यारी को यश कह्यो, राग रङ्ग सों छाय ॥
मनमोहन सेवा अधिक, कीनी है रघुनाथ ।
न्यारी ये रस भजन की, बात परी तेहि हाथ ॥
गिरधर स्वामी पर कृपा, बहुत भई दई कुञ्ज ।
रसिक रसिकनी को सुयश, गायो तेहि सुख पुञ्ज ॥
विट्ठल बिपुल बिनोद रस, गाई अद्भुत केलि ।
बिलसत लाड़िलीलाल सुख, अंसन पर भुज मेलि ॥
बिहारीदास निज एक रस, ज्यों स्वामी की रीति ।
निर्वाही पाछे भली, तोरी सबसों प्रीति ॥
मत्त भयो रस रङ्ग में, करी न दूजी बात ।
बिन बिहार निज एकरस, और न कछू सुहात ॥

भर किशोर दोउ लाड़िले, नवल प्रिया नव पीय।
प्रगट देखियत जगमगे, रसिक व्यास को हीय॥
कहनी करनी करि गयो, एक व्यास इह काल।
लोक वेद तजिके भजे, (श्री) राधावल्लभ लाल॥
प्रेम मगन नहिं गन्यो कछु, वरना बरन बिचार।
सबनि मध्य पायो प्रगट, लै प्रसाद रससार॥
सेवक की सर को करै, भजन सरोवर हंस।
मन बच कै धरि एक बृत, गाये श्री हरिबंश॥
वंश बिना हरि नाम हूँ, लियो न जाके टेक।
पावै सोई बस्तु को, जाके है व्रत एक॥
कहा कहौं नहिं कहि सकत, नर बाहन को भाग।
श्री मुख जाको नाम धर्यो, निज बानी अनुराग॥
अति अनन्य निज धर्म में, नाइक रसिक मुकुन्द।
बसे बिपिन रस भजन के, छांड़ि जगत दुख द्वंद॥
परम भागवत अति भये, भजन माहिं दृढ़ धीर।
चतुर्भुज बैष्णवदास की, बानी अति गम्भीर॥
सकल देस पावन कियो, भगवत यशहि बढ़ाइ।
जहां तहां निज एक रस, गाई भक्ति लड़ाइ॥
परमानन्द किशोर दोउ, सन्त मनोहर खेम।
निर्बाह्यो नीके सबनि, सुन्दर भजन को नेम॥
छांड़ि मोह अभिमान सब, भक्तन सों अति दीन।
वृन्दाबन बसिकै तिनहिं, फिर मन अनत न कीन॥
लालदास स्वामी सरस, जाके भजन अनूप।
बरन्यो अति दृढ़ अक्षरनि, लाल लाड़िली रूप॥

अधिक प्यार है भजन सों, और न कछु सुहात।
कहतसुनतभगवनयशहि. निसिदिन जाहि विहात॥
बाल कृष्ण गति कह कहों, कैसेहु कहत बनैन।
रूप लाड़िली लाल को, झलमलात तेहि नैन॥
अति प्रवीन पंडित अधिक, लेश गर्व को नाहिं।
कीनी सेवा मानसी.निसि दिन मन तेहि माहिं॥
ग्यानू नाहर मह्ल की. देखी अद्भुत रीति।
हरिवंश चंद।पद कमल सों.बाढ़ी दिन दिन प्रीति॥
कह कहों मोहन दास रति. ताकी गति भई आन।
व्यासनन्द अंतर सुनत. तजे तहीं छिन प्रान॥
विट्ठलदास मुरलीधरनि,(चरण)पद सेये सबकाल।
तैसेहु दास गोपाल जी, गाये ललना लाल॥
सुन्दर मन्दिर की टहल,कीनी अति रुचि मानि।
सफल करी संपति सकल, लगी ठिकाने आनि॥
अंगी कृत ताको कियो, परम रसिक शिरमौर।
करुनानिधि बहु कृपा करि, दीनी सनमुख ठौर॥
बड़ो उपासक गौड़िया, नाम गुसांई दास।
एक चरन बन चन्द बिनु, जाके और न आस॥
नेही नागरि दास अति, जानत नेह की रीति।
दिन दुलराई लाड़िली, लाल रँगीली प्रीति॥
व्यासनन्द पद कमल सों, जाके दृढ़ विश्वास।
जेहि प्रताप यह रस कह्यो, अरु बृन्दावन बास॥
भली भांति सेयो बिपिन, तजि बन्धुन सों हेत।
सूर भजन में एक रस, छांड़यो नाहिन खेत॥

बिहारी दास दम्पति युगल, माधो परमानन्द ।
बृन्दावन नीके रहे, काटि लाज को फन्द ॥
नीकी भांति मुकुन्द की, कैसेहु कहत बनैन ।
बात लाड़िली लाल की, सुनि भरि आवत नैन ॥
मन बच करि विश्वास धरि, मारि हिये के काम ।
मात पिता तिय छाड़ि कै, बस्यो बृन्दावन धाम ॥
अंत काल गति कह कहों, कैसेहु कही न जाति ।
चतुर दास बृन्दा बिपिन, पायो आछी भांति ॥
चिंतामनि बातनि सरस, सेवा माहिं प्रवीन ।
कहत सुनत भगवत यशहि,छिनछिन उपज नवीन ॥
नागर अरु हरिदास मिलि, सेये नित हरिदास ।
बृन्दावन पायो दुहुन, पूजी मन की आस ॥
नवल कल्यानी सखिन की, मन हो अति अनुराग ।
लाल लड़ैती कुँवरि को, गायो भाग सुहाग ॥
भली भांति बृन्दाअली, अति कोमल सुसुभाव ।
कृपा लड़ैती कुँवरि की, उपज्यो अद्भुत चाव ॥
कीने रास बिलास वहु, सुख वरषत संकेत ।
रचना रची कल्यान रुचि, मँडनी दास समेत ॥
सेवा राधारमन की, भक्तनि को सनमान ।
सांते बसि यमुना कियो, तेहि समनहिं कोउ आन ॥
हुते उपासक अधिक ही, या रस में हरिदास ।
निशि दिन बीते भजन में, राधा कुण्ड निवास ॥
वरसाने गिरिधर सुहद, जाके ऐसो हेत ।
भोजन हूँ भगतन विना, धरयो रहत नहिं लेत ॥

नन्ददास जो कछु कह्यो, राग रंग सों पागि।
अच्छर सरस सनेह मय, सुनत श्रवन उठै जागि ॥
रमनदास अद्भुत हुते, करत कवित्त सुढार।
बात प्रेम की सुनत ही, छुटत नैंन जल धार ॥
बावरो सो रस में फिरै, खोजत नेह की बात।
आछे रस के वचन सुनि, वेगि विवस ह्वै जात ॥
कह कहों मृदुल सुभाव अति, सरस नागरी दास।
बिहारी बिहारिन को सुयश, गायो हरपि हुलास ॥
परमानन्द माधो मुदित, नवकिशोर कल केलि।
कही रसीली भांति सों, तिहि रस में रह्यो झेलि ॥
सेयो नीकी भांति सों, श्री संकेत स्थान।
कह्यो बड़ाई छांडिके, सूरज द्विज कल्यान ॥
खरगसेन के प्रेम की, बात कही नहिं जात।
लिखत ललित लीला करत, गये प्रान तजि गात ॥
तैसेहि राघोदास की, बात सुनी यह कान।
गावत करत धमार हरि, गये छूटि तन प्रान ॥
(यह) बरन भक्त अद्भुत भयो, और न कछू सुहात।
अंगन की छबि माधुरी, चिंतत जाहि बिहात ॥
रोमांचित तन पुलकि ह्वै, नैन रहे जल पूरि।
जाके आशा एक ही, (श्री) बृन्दावन की धूरि ॥
कह कहों महिमा भाग की, भई कृपा सब अंग।
बृन्दावन दासी गह्यो, जाइ सखिन कौ संग ॥
लाज छांड़ि गिरिधर भजे, करी न कछु कुल कान।
सोई मीरा जग बिदित, प्रगट भक्ति की खान ॥

ललितहु लाई बोलि के, तासों हो अति हेत।
आनँद सों निरखत फिरैं, बृन्दावन रस खेत॥
नृत्तति नूपुर बांधि के, गावति लै करताल।
बिमल हियो भक्तनि मिली, त्रिन सम गनि संसार॥
बंधुनि बिष ताको दियो, करि विचार चित आन।
सो बिष फिर अमृत भयो, तब लागे पछितान॥
गंगा यमुना तियनि में, परम भागवत जानि।
तिनकी बानी सुनत ही, बढ़ै भक्ति उर आनि॥
(कुभन)कृष्णदास गिरिधरनि सों,कीनी सांची प्रीति।
कर्म धर्म पथ छांड़ि कै, गाई निज रस रीति॥
पूरनमल यशवंतजी, भूपति गोबिंद दास।
हरीदास इन सबनि मिलि, सेये नित हरिदास॥
परमानंद अरु सूर मिलि, गाई सब बृज रीति।
भूलिजात विधि भजन की, सुनि गोपिन की प्रीति॥
(माधौ) रामदास बरसानियाँ, ब्रज बिहार के खेल।
गाये नीकी भाँति सों, तेहि रस में रहे भेल॥
सूरदास अति प्रीति सों, कवित रीति भलि कीन।
मदनमोहन अपनाय के, अंगीकृत करि लीन॥
जिन जिन भक्तन प्रीति किये,ताके बस भये आनि।
सेन हेत नृप टहल किये, नाम कि छाई छानि॥
जगत विदित पीपाधना, अरु रैदास कबीर।
महा धीर दृढ़ एक रस, भरे भक्ति गंभीर॥
जगन्नाथ वत्सल भगत, कीनों यश विस्तार।
माधो भूखो जानि के, लाये भोजन थार॥

एक समै निसि सीत सों, कापन लाग्यो गात।
आनि उढ़ाई तेहि समय, अपने कर सकलात॥
बिलु मंगल जब अंध भयो, आपुन कर गहे आइ।
भक्तनि पाछे यों फिरत, ज्यों बछरा संग गाइ॥
रामानँद अंगद सोभू, हरि व्यास अरु छीत।
एक एक के नाम सों, सब जग होत पुनीत॥
रङ्का बङ्का भक्त द्वै, महा भजन रस लीन।
इन्द्रासन के सुखनि कों, मानत त्रिन सों हीन॥
नरसी हू अति सरस हिय, कहा देऊँ समतूल।
कह्यो महा सिंगार रस, जानि सुखनि को मूल॥
दीनी ताको रीझि के, माला नन्द कुमार।
राखि लियो अपनी शरन, बिमुखनि मुख दै छार॥
जहँ जहँ भक्तनि को कछू, परत है संकट आनि।
तहँ तहँ आपुन बीच ह्वै, धरत अभै को पानि॥
भक्तनराय भक्त सब, धरें हिये दृढ़ प्रीति।
बरनी आछी भाँति सों, जैसी जाकी रीति॥
रसिक भक्त भूतल घने, लघुमति क्यों कहे जाहिं।
बुधि प्रमान गाये कछू, जो आये उरमाहिं॥
हरिको निजयश ते अधिक, भक्तनि यश पर प्यार।
यातें यह माला रची, करि ध्रुव कंठ सिंगार॥
भक्तनि की नामावली, जो सुनिहै चित लाइ।
ताके भक्ति बढ़ै घनी, अरु हरि होइ सहाइ॥
एकबार जिन नामलिय, हित सों ह्वै अति दीन।
ताको सङ्ग न छांड़ही, ध्रुव अपनो करि लीन॥

ऐसे प्रभु जिन नहिं भजे, सोई अति मतिहीन ।
देखि समुझि या जगतमें, बुरो आपनो कौन ॥
अजहूँ सोच विचार कै गहि भक्तनि पद ओट ।
हरि कृपाल सब पाछिली, छमिहैं तेरी खोट ॥

इति श्री भक्त नामावली लीला की जै जै श्री हित हरि वंश ॥

अथ बृहद बावनपुरान की भाषा लीला।

दोहा—बावन बृहद पुरान की, कछु इक कथा बनाइ ।
भक्तनि हित भाषा करी, जैसे समझी जाइ ॥
एक समै भृगु पिता सों, प्रश्न करी यह आनि ।
करि प्रणाम ठाढ़ो भयो, आगे जोरे पानि ॥
एक अशङ्का उर बढ़ी, चित्त रह्यो बिस्माइ ।
सर्वोपरि सर्वज्ञ तुम, हमहिं देहु समझाइ ॥
नारदादि शुक से जिते, किये भक्त सब गौन ।
जाची रज बृज तियन की, यह धौं कारन कौन ॥
सुनहु पुत्र समझी न तैं, रह्यो भूलि ब्रह्म ज्ञान ।
सर्वोपरि ये हरि प्रिया, इनकी कौन समान ॥
बहुत बरष हम तप कियो, इनकी पद रज हेत ।
सो रज दुर्ल्लभ सबनि को, हमहूँ बनी न लेत ॥
और तियन में गनहु जिन, ये श्रुति कन्या आहि ।
कियो अधीन पिय सांवरो, प्रेम चितवनी चाहि ॥
अबलगि तैं समझो नहीं, ब्रज को रङ्ग रसाल ।
जो दिन बीते रस बिना, बादि गयो सब काल ॥
ब्रह्म ज्ञान में रहे भ्रम, और न कछू सुहात ।
छाड़ि रसमई अमृत फल, जाचत सूखे पात ॥

ज्ञानी खोजत ज्ञान में, भजनी भजन अपार।
ते हरि ठाढ़े रहत हैं, व्रज देविन के द्वार ॥
एकभक्त वन्दन करत, नहिं चितवत तिन ओर।
व्रज वनितनि के पगनि सों, लावतमुकुट किशोर ॥
निगमनिअस्तुति रुचति नहिं, करत हैं तत्व विचारि।
जैसे भावत हेत सों, व्रज देविन की गारि ॥
अजहूँ खोजत लहतनहिं, ऋषिमुनि जनकी पांति।
द्वार द्वार व्रज सुन्दरिन, फिरत चक्र की भांति ॥
सब भक्तनि के सिरनि पर, हरि ईश्वर नन्दलाल।
व्रज में सेवक ह्वै रहे, अद्भुत प्रेम की चाल ॥
एक भजन विधिसों करत, नीके मानत नाहिं।
जैसे व्रज युवती तिन्हें, ठेलि पगनि सों जाहिं ॥
फिरत किशोर चकोर ज्यों, बरसाने की ओर।
घर घर प्यारो लगत है, परे प्रेम की डोर ॥
चित्र सारी चितवत रहत, जैसे घन तन मोर।
चहूँ ओर ग्रीवां फिरत, ज्यों प्रति चन्द्र चकोर ॥
जबहिं द्वार वृषभान के, आये नन्दकुमार।
तेहि छिन गति औरै भई, रही न देह सम्हार ॥
हाइ हाइ सब कोउ करै, अद्भुत रूप निहारि।
कहा भयो या कुँवर को, देत प्रान सब वारि ॥
तनक भनक श्रवननि परी, रहि न सकी अकुलाइ।
झांकी सखियन सङ्ग तजि, कुँवरि झरोखा आइ ॥
लाज छांड़ि अति प्यारसों, चितई कछु मुसक्याइ।
सैननिमें अति चतुर पिय, रहे चरन शिर नाइ ॥

अङ्ग अङ्ग प्रति फूल भइ, आनन्द उर न समाइ।
भाग मानि पहिंचानि करि, चले लाल सिर नाइ॥
सर्वोपरि राधा कुँवरि, पिय प्रानानि के प्रान।
ललितादिक सेवत तिनहिं, अति प्रवीन रसजानि॥
पहिली पैरी प्रेम की, कीन्ही ब्रज बिस्तार।
भक्तनि हित लीला धरी, करुना निधि सुकुमार॥
रच्यो रास कोउ बची नहिं, आइ मिली ब्रजनारि।
प्रेम फाग खेली तहां, सब सङ्कोच निवारि॥
ऋषिमुनि योगिन के लिये, कबहुँ न लखे ब्रजचन्द।
गहि लीन्हें ब्रज सुन्दरिन, डारि प्रेम को फन्द॥
जोइ जोइ ब्रज बनिता कहैं, सोइ सोइ लेतहैं मानि।
नाचत ज्यों कठ पूतरी, तिनके आगे आनि॥
बहुत भांति लीला चरित, तैसेइ भक्त अपार।
अपनी अपनी रुचि लिये, करत भक्ति बिस्तार॥
और चरित बहुभांति के, कीन्हें हैं जग केत।
दूजो कारन नाहिं कछु, ते सब भक्तन हेत॥
अर्जुन पूछ्यो कृष्ण सों, मेरे एक सन्देह।
कौन भक्त प्यारो तुम्हें, यह मोसों कहि देह॥
भक्त जगत में बहुत हैं, तिनको नाहिं प्रमान।
हौं गोपिन के हिय बसों, गोपी मेरे प्रान॥
वैकुण्ठ हु ते अधिक है, मथुरा मण्डल जानि।
तामें ताहू ते अधिक, ब्रजमण्डल सुख खानि॥
अति सुदेश माया रहित, इक्कईस योजन भूमि।
तहँ सहाइ ब्रजवास की, रहत कृष्ण दिन झूमि॥

मधि राजत ज्यों मुकुट मणि, वृन्दावन रसकन्द ।
रसमय सुखमय तेज मय, झलकत कोटिक चन्द ॥
एक रङ्ग रुचि एकरस, अद्भुत नित्य विहार ।
जहाँ किशोरी लाड़िली, करी लाल उर हार ॥
निशि दिन तो पहिरे रहैं, रूपकि मनि उजियार ।
ता रस में लटके छके, रहत अधिक रस सार ॥
अङ्ग अङ्ग मन मन मिले, नैननि नैन विशाल ।
रूप वेलि प्यारी वनी, छवि के लाल तमाल ॥
जोरी दूलह दुलहिनी, मोहनी मोहन आहि ।
परत न अन्तर निमिष को, जीवत रूपहि चाहि ॥
महा मधुर रस माधुरी, नव नव वैस किशोर ।
अद्भुत रसमें मगन हैं, नहिं जानत निशि भोर ॥
नव किशोरता माधुरी, सब गुन लीन्हें सङ्ग ।
युगल चरन सेवत रहैं, रँगी प्रेम के रङ्ग ॥
नित्य लाड़िली लाल दोउ, नित बृन्दाबन धाम ।
नित्य सखी ललितादि निज, सेवत श्यामा श्याम ॥
ब्रज में जो लीला चरित, भयो जु बहुत प्रकार ।
सबको सार बिहार है, रसिकनि कियो निर्धार ॥
बृन्दावन महिमा कछू, कहत हौं सो सुनि लेहु ।
द्रुमद्रुम प्रति अरु लता प्रति, लपट्यो सहज सनेह ॥
महा प्रलय जबहीं भयो, रह्यो न वै कछु आनि ।
गिरि वन व्योम न भूमिरहि, नहिं नक्षत्र शशिभान ॥
सर सरिता सागर मिले, अमित मेघ की धार ।
तीन लोक जल चढ़ि गयो, बूड्यो सब संसार ॥

कोटि कोटि उत्पति प्रलय, होत रहत इह भाँति।
जैसे अरहट की घरी, भरि भरि ढरि ढरि जाति॥
लोक पाल लीला रचित, अब कछु दीसत नाहिं।
निगम रिचा भूली भ्रमत, तरत फिरै तिन माहिं॥
सहज बिराजत एक रस, वृन्दाबन निज भौन।
माया जल परसत नहीं, अरु माया की पौन॥
न्यारो चौदह लोक तें, वृन्दाबन निज धाम।
इकछत विलसतरहत नित, सहजहि श्यामा श्याम॥
चहूँओर बृन्दा विपिन, सेवत सब अवतार।
करत विहारि बिहार तहँ, आनन्द रङ्ग विहार॥
निगमनि सोच बिचार कै, यह ठहराई चित्त।
भजन ताहि को कीजिये, इक रस रहै जु नित्त॥
तब लागे अस्तुति करन, बाढ़्यो उर आनन्द।
जानो पूरन सबनि पर, श्री बृन्दाबन चन्द॥
एकै पुरुष किशोर है, दूजो नाहिंन कोइ।
जाकी इच्छा सहजही, यह कौतुक सब होइ॥
गावत जाको सुयश रस, आनन्द बढ़्यो अपार।
देखि कछू छवि की छटा, बृन्दा विपिन विहार॥
रूप माधुरी देखि कछु, विवस भए मुरझाइ।
बाढ़ी रुचि की चाह अति, रहे ललचाइ लुभाइ॥
काम कामना बढ़ी उर, यह उपजी अति आइ।
खेलैं ऐसे रूप सँग, वनिता को तन पाइ॥
तिन प्रति तब वानी भई, यह प्रभु लीन्हीं मानि।
प्रगट होहु बृज जाय तुम, हमहूँ प्रगटैं आनि॥

तहां सवै सुख पाइ हो, जो जो करी मन आस
हम तुम एकै सङ्ग मिलि, करि हैं रास विलास।
जाको वानी भईही, सो सखि प्रगटी आइ
वेदहु के आनन्द भयो, अद्भुत दरसन पाइ।
एक अशङ्का वढ़ी उर, चित्त रह्यो विस्माइ
कछु इक नित्य विहार रस, हमहिं देहु समुझाइ॥
प्रभु आज्ञा इक भई है, सो पहिले करिलेहु।
ता पाछे जो पूछि हो, ताको उत्तर देहु॥
सखी कियो जव चिंतवन, श्रीपति प्रगटे आइ।
प्रभु आज्ञा तिनसों भई, सृष्टि रचावहु जाइ॥
ऐसेही अवतार सब, लीन्हें तहां बुलाय।
अपनो अपनो काज तुम, कीजो समयो पाइ॥
धर्मराज सों कही तहँ, मेरो बचन सुनि लेहु।
जाके रञ्चक भक्ति है, ताहि कष्ट जिन देहु॥
भक्त छांड़ि अरु सबनि को, तेरे आगे न्याव।
हरि भक्तनि ते बिमुख जे, तिनको तू समभाव॥
पुनि फिरि वेदन सों कही, जो पूछी सुनि लेहु।
नितही नित्य बिहार करैं, यामे कछु न सँदेहु॥
नित्य सहज बृन्दा बिपिन, नित्य सखी ललितादि।
नितही बिलसत एकरस, युगल किशोर अनादि॥
नवल प्रेम सों रँगे दोउ, नितही नवल किशोर।
होत रहत उतपति प्रलय, नहिं जानत निशिभोर॥
वेदहु जाने अंश सब, मिट्यो भरम तेहि काल।
समुझे पूरन सबनि पर, नित्य बिहारी लाल॥

अपने अपने सदन को, कीन्हों सबनि पयान।
ता पाछे सोई सखी, भई जु अन्तर ध्यान॥
श्रीपति चितयां है जबहिं, पुरुष प्रकृति की कोद।
तिहि छिन उपजी हीय में, कीजै कछुक बिनोद॥
प्रथमहिं प्रगटे तीन गुन, बृह्मा बिष्णु महेश।
ता पाछे सुर असुर नर, लोक पाल सर्वेश॥
दोइ महूरत में रचे, चौदह लोक बनाय।
बाढ़ी प्रभुता पुरुषता, कापै बरनी जाय॥
बहुत भांति लीला चरित तिनको नाहिन पार।
सोई भूल्यो रम्यो फिरे, कियो चहै निर्धार॥
सबतजि युगलकिशोर भजि, जो चाहत विश्राम।
हित ध्रुव मन बच हेत सों, सेवहु श्यामा श्याम॥

इति श्री बृहद बावनपुरान लीला को जै जै श्री हित हरिवंश चन्द्रजी॥

॥ अथ सिद्धान्त बिचार लीला ॥

॥ बचनका ॥

प्रेम की बात कछु एक लाड़िली लालजू जैसी उर मे उपजाई तैसी कही। रसिक भक्तनि सों यह विनती है जो कछु घटि बढ़ि भूलि कही गई होइ तौ कृपा करि समुझाइ देनी॥ जेहि प्रेम माधुरी श्रीयुगलचन्द आनन्द कन्द नित्यानन्द उन्नत नित्य किशोर। श्री वृन्दावन निकुंज विहार रस मत्त विलास करत हैं। यथा मति किंचित ढीठो कै कही। जैसे सिन्धु तें सीप भरि लीजै॥ प्रेम नेम के लच्छन कहा। कहा प्रेम, कहा नेम, प्रेम को निज रूप चाह, चटपटी, अधीनता, उज्जलता, कोम–

लता, स्निग्धता,सरसता, नूतनता, सदा एकरस रुचि तरङ्ग बढ़त रहै। सहज सुछन्द मधुरता, मादिकता, जाको आदि अन्त नाहिं, छिन छिन नूतनता स्वाद, अरु नेम अनेक भांति हैं। कुछ इक कहैं देखिवो, हँसिवो, वोलिवो, मान ॥ निकुंजांतर किंवा निकट होइ। और कोक के विलासादिक सव प्रेम के नेम हैं ॥ जाको आदि अन्त होइ सो सव नेम जानिवो। जहां संयोग में देखत देखत विरह रहै तहां स्थूल विरह की समाई नहीं। सव रस सब शृङ्गार सब प्रेम सव नेम मूरति धरैं। श्रीकिशोरी किशोर जू को सर्वदा सेवत रहत हैं। जिन भक्तनि जैसो भाव धरि भजे तिनको तहां पूरन सुख देत हैं। प्रेम नेम के रूप अनेक हैं कहां ताईं कहे जांहि। प्रेम मई रस को सार व्योरो कियो। श्रीकिशोरी किशोर जूके प्रेम ही को नेम है। और कुछ रुचत नाहिं ताही रस में मन दीजै सदा, कै उनके रसिक उपासिकनि सौं चित लावै, सदा सङ्ग करै। ते रसिक भक्त कैसे हैं ॥ छांड़ि रसिक रसिकनी जूके प्रेम रस बिहार बिना और बात कछू रुचत नाहिं। तिन की दृष्टि में और रस कछु न आवै ॥ तेहि रसके बल सबते बे परवाह रहत हैं। और जहां तांई अवतार लीला जहां तैसिये भांति के भक्त हैं। एक भक्त ऐसे हैं सब अवतार लीला गावत हैं कछू भेद नाहिं। ते ऐश्वर्य्य महातम ज्ञान लिये हैं। एकनि के इष्ट धर्म है ये उनते सरस कहिये। काहेतें जु इहां सनेह पाइयत है। इष्ट कहिये सनेही सों ताते सनेही को छांड़ि दूसरी ठौर मन न चलै। जो चलै तौ सनेहीं नाहीं ॥ अनन्यता याको कहिये छांड़ि अपनो इष्ट और न जानै न मन चलै जो चलै तौ अनन्यता नाहीं। रसिक

ताको कहिये जो रस को सार गहै। और जहां तांई भक्त, जनक, उद्धव सनकादिक और लीला द्वारिका मथुरा आदि तिन सबनि पर अति गरिष्ट सर्वोपरि व्रज देविनि को प्रेम है। ब्रह्मादिक जिनकी पद रज बांछित हैं। तिनके रस पर महा रस अति दुर्लभ श्रीबृन्दाबनेश्वरी श्रीबृन्दाबनचन्द आनन्द घन उन्नति नित्य किशोर सब के चूड़ामनि तिन प्रेम मई निकुंज माधुरी बिलास ललिता बिसाखा आदि इन सखियन के प्रान अधार अहार यहै है। इन सखियन को प्रेम सर्वोपरि जानो, या पर और सुख न और रस, श्रीरसिकानन्द किशोर प्रेम की सीवाँ ललिता बिसाखादि सखियनिको प्रेम बिना सीवाँ जु कह्यौ न जाइ, सदा नौतन ते नौतन एक रस रहै। इनको प्रेम समुझनो अति कठिन है॥ जिन पर उनकी कृपा होइ तबहीं उर में आवै। सखियन को प्रेम सर्वोपरि बिराजमान है। काहे तें जु लाड़िली लाल जूके मननि को कोइक सुख है तासों आसक्त अवलम्ब रहीं हैं। इनको भाव धरि याही रस की उपासना में कपट छांड़ि भ्रम छांड़ि निशिदिन मन दै यहै बिचार में रहै। अनन्य होइ ताको भाग कहिबे को कोई समर्थ नाहीं। एक ने कही कि जब प्रेम उपजै तब नेम रहै कि जाइ ?। जे नेम प्रेम तेंन्यारे हैं ते जाइ, जे नेम प्रेम सों जन्त्रित हैं ते कैसे जांइ। नवधा भक्ति हूँ नेम है। जब प्रेम लच्छिना उपजै तहां प्रेम में लीन ह्वै रहै ताको दृष्टांत॥ जैसे स्वेत वस्त्र लाल रँग्यो तब वह लाल भयो वस्त्र कहूँ नाहीं गयो जैसे भरिया पात्र को आकार नेम पात्र प्रेम जो करिये अरु निबरै सो सब नेम अरु सदा एक रस रहै सो प्रेम अद्भुत प्रेम की गति ऐसी है जो देह के सुख जहां ताईं हैं ते सब

भूलि जाहिं। एक जामें प्रेम है ताही रङ्ग रँगे अरु ताके अंग संग की जितनी बात है ते सब प्यारी लागें ताके नाते। अरु ताको भावे सोई याको रुचै। एक ने कही प्रेम में अरु काम में कहा भेद है सो कहो समुझाइ देहु?। ताते जैसी यथा मति उपजी तैसी कही। और जहां तांई सुख हैं तिनपर काम रस अधिक है यापर और नाहिं। तहां श्याम जूने कही उहां के सुख की निशानी पद में काम रति सुख की निशानी। ये प्रेम के सुख रस आगे सो काम लज्जित होइ रहै। ताते सबनि काम सुख नेम में राखे। यापर प्रेम को सुख निमित्य रहित सदा एक रस है ताते प्रेम नेम के लच्छन ऊपर कहि आये हैं। जाको आदि अंत होय सो नेम जानिबो। जाको अंत नाहीं सो प्रेम सर्वदा एक रस है। सो अद्भुत प्रेम है। युगल किशोर जू को रूप जानिबो जिन प्रेम ने ये बस किये हैं सो प्रेम महा अद्भुत है ता प्रेम के एक निमेष पर और सुख कोटि कल्पनि के वारि डारिये। स्वाद विशेष के लिये भयो शुद्ध प्रेम है। जैसे खांड़ अरु जल एकत्र कियो तब खांड़ न जल शरबत भयो। खांड जल भी वाही में है। ऐसे महा मधुर रस स्वाद को शुद्ध प्रेम है प्रगट कियो जहां नायक नाइका बरनन कियो है नायक अपनो सुख चाहै नाइका अपनो रस चाहै सो यह प्रेम न होइ साधारण सुख भोग है जब ताईं अपनो अपनो सुख चाहिये तब ताईं प्रेम कहां पाइये। दोइ सुख दोइ मन दोइ रुचि जब ताईं प्रेम कहां पाइये है। दोई सुखदोई मन दोई रुचि जब ताईं एक न होइ तबताईं प्रेम कहां॥ कामादिक सुख जहां स्वारथ भये हैं तो और सुखनि की कौन चलावै। निमित्य रहित नित्य प्रेम सहज एक रस

श्रीकिशोरी किशोर जू के हैं और कहूँ नहीं। जो कोऊ कहै कि काम नेम में कहि आये तो उनहूँ की काम केलि तो गाई है। सो यह काम प्राकृत न होइ प्रेम मई जानिवो निज प्रेम मई जानिवो निज प्रेम है नेम रस सिंगार पोषक के लिये न्यारे कै कहे हैं। जो बात प्रिया जू के अङ्ग सङ्ग ते उपजै सोई प्रीतम को प्यारी लागै यह अप्राकृत प्रेम है, श्रीकृष्ण काम के बस नाहीं। जिनको रूप देखत कोटि कोटि मनोज रति सहित मूर्छित होहिं ऐसे नवल किशोर श्री वृन्दावनचन्द जू मदन सहित सबके मन माहिं राखैं तेई यहां श्री वृन्दावनेश्वरी जू के प्रेम मई अनङ्ग चितवनि रस मई भौंहन तें तरंग उपजैं तिन प्रेम मई अनङ्ग ने सहज ही ऐसे मनमोहन मोहिं राखे अपने बस किये सो साक्षात प्रेम है। श्री प्रियाजू जित चाहैं जित चलैं जासो बोलैं जो पहिरैं जो हाथ करि छुवैं ते सब बात प्रीतम के प्रान ह्वै जाहिं। इहां को नेम ऐसो है जो प्रेम शोभा पावै। एक रस समझनो जैसे ताना बाना दोऊ मिलि एक पट भयो स्वाद के लिये नेम न्यारे कै कहे हैं नेम प्रेम को साधन सो एकै जानिवो॥ प्रिया जू को अंग संग छांड़ि और ठौर मन न चलै प्रीति ऐसी है। तहां श्री जू की बानी॥ प्रीति की रीति रंगीलोई जानै। यह बात प्रेम के बिना श्री वृन्दावनचन्द को जानै को समुझै। जो बात प्रिया जू को भावै सोई इनको भावै॥ तहां श्रीजी की बानी॥ जोई जोई प्यारो करै सोई मोहिं भावै, भावै मोहि जोई सोई सोई करै प्यारे। सहज प्रेम के रस में दोऊ मत्त रहत हैं। एक रस सनेह की रीति ऐसी है जो सनेही को सुख चाहै अपनी चाह कछू नहीं। श्री प्रिया जू

बिलास करैं सब लाल जू के हेत। और लालजू जामें लाड़िली जू सुख पावैं सोई करैं अपनी चाह कछू नाहीं ॥ तहां भर केलि महा मदन के सुख रस में लाल जू के वचन ॥ तहां श्री जी की बानी ॥ विरमि विरमि नाथ वदत वर विहाररी। ताते सनेही के सुख सों आसक्त होइ सो सनेही कहिये। जैसे सखियनि की रीति दोऊ के प्रेम रस सों अवलम्बि रही है। और निमित्य बीच कछू नाहीं। श्री गुसांई श्री हरिवंश चंद जू प्रगट भये युगल केलि रस माधुरी प्रगट करिवे को। और सबनि मिश्रित गाई श्री प्रेम की आशक्तता श्री गुसाईं जू ने गाई। आशक्त कहा ? सक्त रहित आशक्त। जब ताईं मन की गति भँवर की सी चञ्चल फिरै तब ताईं आसक्त नाहीं। जब सब ठौरतें चंचलता छुटै तब आशक्त के रस में अटकै ॥ तहाँ श्री जी की बानी ॥ कहा कहौं इन नैननि की बात। ये अलि प्रिया बदन अंबुज रस अटके अनत न जात ॥ अरु ॥ चंचल रसिक मधुप मोहन मन राखे कनक कमल कुच कोरी। इत्यादि। ऐसे रसिक लाड़िली लाल जू जिनको मूरति वन्त आशक्तता सेवत रहै हैं ॥ पद श्री बिहारीदासजी ॥ आशक्त उपाशक दम्पति को सुख। दोहा पुरातन। फँद सरकावत फिरत दिन चित चंचल जु कहंत। फँद्यो जु कुन्तल बिकट लट टक टक मुख जोवन्त ॥ श्री लाड़िली लाल जू प्रेम रस मई मूरति वंत हैं। इनते उपजै सो सब प्रेम है। बिलासमई। ताते दोइ नाम रस स्वाद के निमित्य परे। प्रेम नेम जैसे तंतु का ताना बाना, न्यारो कोई नाहीं। और सोना है ताते भूषन कर्यो सो नेम भयो। सोना एक रस है सो प्रेम है ॥

॥ कुण्डलियां ॥

प्रेम मदन के सिंधु द्वै बहत रहत दिन हीय।
कबहुँ बिवस चेतत कबहुँ छिन-छिन प्यारी पीय॥
छिन-छिन प्यारी पीय मधुर रस बिलसत ऐसे।
सूक्ष्म प्रेम की बात कहो कोउ बरनै कैसे॥
यह सुख सखियनि बाँट परयो भूले ध्रुव सब नेम।
इक रस फुली फिरत सँग पाइ माधुरी प्रेम॥

प्रेम मदन के सिंधु द्वै लाड़िली लालजू के हिये बहत रहत हैं। जब प्रेम रूपी सिंधु के तरङ्ग छावै तब बिवस होहि। जब मदन रूपी सिंधु के तरङ्ग छावै तब चेतन्य होहि। बिलास के रङ्ग में परे ऐसे प्रेम नेम ओत-प्रोत है। प्रेम की क्रिया बिवसता नेम की क्रिया सावधानता यातें एक कहिये स्वाद को दोइ। कबहू खिलारी खेल बस कबहू खिलारी बस खेल। ऐसी भांति को बिहार निशि दिन करत हैं। या रस की अधिकारनी सखी हैं कै जिन भक्तनि के सखियनि को भाव है। धन्य तेई भक्त रसिक श्री वृन्दाबन निकुञ्ज धाम में श्री वृन्दावन चंद उन्नत नित्य किशोर प्रेम मई बिलास करत हैं। तामें प्रेमही को नेम नित्य है एक रस कबहु न छुटै। तहाँ की आसङ्का कोऊ जिनि करो निमित्य रहित बिहार में दोऊ मगन रहत हैं। यहाँ प्रेम नेम में कुछ भेद नाहीं स्वाद विशेष के लिये कहे हैं। जैसे रस मई फल बिनु गुठली बिन बकला होइ। तातें इनके रस बिहार में दोइ रस नाही एक प्रेम सों आसक्त हैं। निश्चय मन वच क्रम कै जानिवो। ऐश्वर्य्यता, ज्ञान, महातम विषय या रस माधुरी को आवरन है। इनतें चित्त काढ़ि माधुर्य्य रसमें देनों।

तन मन की वृत्ति जब प्रेम रस में थके तब आशक्त कहिये ॥ तहाँ श्री जी की बानी ॥ बिधयो मोहन मृग सकत चलि-नरी ॥ अद्भुत प्रेम की आसक्तता समुझनी कठिन है। जिनके मन अति सरस होहिं तिनके उर आवे। जा प्रेम रस में मान हूँ नेम है। दुहू के तन मन सहज प्रेम रस भरे हैं। नेम कहाँ रहे ठौर नाहीं। श्रीप्रियाजी के सहज स्वभाव प्रेम रस रूप जो-बन रस की गरूरता देखि लालजी व्याकुल ह्वै जात हैं। यह अवस्था देखि लाड़िली जू अपनो सुभाव भूलि जात हैं। महा प्यार सों अङ्क भरि लेहि। जो कबहू प्रिया जू अपने रस में लालजी तन न चितवै नेकहू न बोलैं तो उनकी गति मीन जल की सी होइ है। जहाँ मान सहज को यह है। जो कोऊ कहै कि मान तौ रसको पोषक है। अरु रुचि बढ़ावै सु यह प्रेम साधारण जानिवो इहांयों नांही। नित्य छिन छिन प्रीति रस सिंधु तें तरंग रुचिके उठत रहत हैं नये नये ॥ तहाँ श्री स्वामी जी को पद ॥ जब जब देखौं तेरो मुख तब तब नयो नयो लागत। अरु श्री जी की बानी ॥ करत पान रसमत्त परस्पर लोचन त्रिषित चकोर ॥ तातें प्रेम बिरह अनेक भांति है। जैसो जहाँ प्रेम तैसो तहाँ विरह है। जहाँ स्थूल प्रेम। तहाँ स्थूल विरह। जहाँ सूक्ष्म प्रेम तहाँ सूक्ष्म विरह। जो कोऊ कहै स्थूल कहा सूक्ष्म कहा ॥ सूक्ष्म प्रेम यासो कहिये जो एक सेज पर रूप देखत चन्द चकोर ज्यों नैनाचल ओट भये महा कठिन दशा होइ। अरु देह हू अपनी न्यारी नाहीं सहि सकत यह भी बिरह मानत है। तहाँ की बात श्री गुसाईं जू गाई ॥ तहाँ श्री जी की बानी ॥ श्रुति पर कंज दृगंजन कुच बिच मृगमद ह्वै

न समात। (जैश्री) हित हरिवंश नाभि सर जलचर जाँचत सांवल गात॥ अरु श्री स्वामीजी को पद॥ ऐसी जिय होत जो जिय सौं जिय मिलै तन सौं तन समाइ लेउ तौ देखौ कहा हो प्यारी। यह प्रेम अति तीव्र है जापर श्री जू के रसिक भक्तनि की कृपा होइ तब उर में आवै। ऐसे अद्भुत प्रेम में और भांति को विरह न संभवै। जो फूलनि की माला देखे कुम्हिलाइ ताको आसिवर को दिखाइवो अनीत है। भ्रमहूँ को बिरह कहत डर आवै। या प्रेम में न स्थूल प्रेम की समाई। न स्थूल विरह की समाई। न मानकी। एक रस यह प्रेम ही विरह रूप है। या रस की जिनके उपासना है तिनके हिये ठहराइ। जो कोऊ कहै कि मान बिरह महा पुरुषन गायो है सो सदाचार के लिये। औरनि के समुझाइबे को कह्यो है। पहिले स्थूय प्रेम समझै तब आगे चलै॥ जैसे, श्री भागवत की बानी। पहिले नवधा भक्ति करै तब प्रेम लच्छना आवै। अरु महा पुरुषनि अनेक भांति के रस कहे हैं। ऐ पर इतनी समुझनो कै उनको हियो कहां ठहरानो है सोई गहनी॥ तहां विहारनि दास जी को पद॥ तहां कछू न श्रम तम न गम विरह भ्रम मान लवलेश न प्रवेश न प्रसंगी। और सब प्रेम नेम या नित्य महा प्रेम रस के आगे साधन हैं यह निर्धार जानिवो। नित्य अखिण्डत एक रस सहज निमित्य रहित, महा-माधुरी निकुन्ज केलि अद्भुत रसिकानन्द दोऊ विलसत हैं। या पर न और रस, न और सुख, न और प्रेम, ऐ पर तहां को जु रससार तामें सखी ललिता विसाखादि आसक्त हैं। सार को सार प्रेम सुख यह अद्भुत महा रस प्रेम की उपासना श्री

जू प्रगट कर दई है। निश्शंक सबके कल्याणार्थ जो उर में आवै ठहराय या प्रेम की सूक्ष्म गति है। खाइ और त्रिपित होइ और ॥ तहां श्री जी की बानी ॥ जैश्री हित हरिवंशलाल ललन। मिलि हियो सिरावत मोर। यह सार को सार। विरला कोई इक जानै समुझै। साधारन प्रेम। साधारन विरह सबके मनमें आवै। भगवत भजन की विधि महातम और जहां ताई ऐश्वर्य्य लीला तिनमें समाई है। यहां श्रीजी जो रस प्रगट कह्यो ता रस उपासना में कछू न मिलै। अद्भुत उपासना सबनि ते न्यारी गति ताकी है। यह महामाधुरी रस जाके उर न आवै तासों संग न करिये। संग करनो वड़ी अज्ञानता है। और सब भजन में गोष्टी है सनेह में गोष्टी कहा। समस्त भागवत धर्मनि ऊपर यह निकुन्ज माधुरी श्री युगल-चन्द जू बिलास करत हैं। जिन यह रस समुझ्यो नाहीं तासों रस की बात करनी उचित नाहीं। जो कहै तो आपतें जाइ अन्तर परे निस्संदेह। ताते मौन होइ रहनो बहुत भलोहै। वि-जाती सों मिलवो भलो नाहीं। बिन सजाती सौं मिलि बात न चलावै। अनेक भांति भक्ति भेदनि के भेद ते सोई भक्त हैं। जैसो जाको भाव है तैसो सिद्ध होइ। ताते औरनि सों प्रयो-जन नाहीं ॥ तहां पखानो है ॥ तोहि विरानी कहा परी तू अपनी निर्वेर। आपको यो चाहिये औरन सों मत्सरता छांड़ि आपनो रस लिये रहै। और याही रस के उपासिकनि सो अन्तर खोलि संग करै। श्री व्यास जी के बचन ॥

व्यास बिवेकी भगत सों, दृढ़ करि कीजै प्रीति।
अविवेकी को संग तजि, यहै भक्ति की रीति ॥

तौ विवेकी कहा ? ॥ विवेकी तासों कहिये । भली गहै बुरी छांड़ै । अविवेकी भली बुरी कूं न समझै सब गहै सब छांड़े तातें सजाती सो मिलि बात युगल बिहार की करै बिचारै । तिनकी जूठन खाइ चरनोदक पीवै । विजाती को परस हू न करै । और वृन्दाबन चन्द एक प्रीति ही मानें हैं। कोटि भांति भावे अपरस रहौ भावे सपरस रहौ अनेक आचार करो। उनको एक प्रीति की सचाई सो काम है । तब एक ने कही आचार न करै। थोरो बहुत करै सदाचार के लिये। जब श्रीजी की सेवा पाक करै तहां आचार करै। जैसे संभवै । अपने प्रसाद पाइवे को आचार बहुत न करै । प्रसाद ही कोटि आचार को स्वरूप है । भोग लागे पाछे बहुत आचार उचित नाहीं । शास्त्र हूँ में कही है। अति आचार अनाचार समान है । रांधे अन्न विषय कछू न मानै। जो भोग श्री जी को न लाग्यो तौ सब बराबर। कहा काचो कहा पाको । वैष्णव सदाचार के लिये आचार करै । मनमें विश्वास न धरै कि याही तें कारज सिद्ध होइगो। शुद्धता के लिये करै । श्रीजी की टहल कोटि २ आचार को स्वरूप है । बहुत आचार तें हियो अति कठोर होइ जाय है । यह भजन अति कोमल है कोमल कठोर एक संग न बनै । जे सनेही भजनीक है तिनकी घटि बढ़ि क्रिया में मन न देइ। आपको बड़ी हानि हैं । बड़ो अपराध है। कोटि कोटि आचार उनके एक निमेष के रस भजन के ऊपर वारि डारिये । ब्रह्मादिक सनकादिक या बात में भूले हैं। औरनि की कौन चलावै जो यह बात मनमें न आवै तिन सब अनाचार किये । जे सनेही भक्त हैं तिनकी पदरज कोटि आचार है। साधन

सिद्ध तीरथ है ॥ श्री गुसाईं कृष्णदासजी को पद ॥ साधुचरन रज सब सुख साधन यहै मेरे मन काज सुधी को ॥ व्यासजी को पद ॥ साधु चरन रज मांझ व्यासमे कोटिक पतित समात। इत्यादि अनंत लीला अवतार अनेक तिनकी ऐश्वर्य्यता को वार पार नाहीं। ऐसेही नाना प्रकार के भक्त हैं श्रीकृष्ण लीला तीन प्रकार की। तिनहू में भेद भक्त बहुत हैं। जहांजहां जाको मन लाग्यो ते सब नीके हैं। घटि कोऊ नाहीं। आपको यों चाहिये और की घटि बढ़ि कछू कहै नाहीं। अपने रस में जैसी उपासना है तहां मन दिये रहै। जे रसिक अनन्य श्री बृन्दावन की उपासना में श्री किशोरी किशोर जूकी किशोर ताई की छबि अरु निकुंज माधुरी रस जिनके हिये बसत है। नैननि में झलकत है तिनकी चरन रज सीसपर धरिये उनको संग निशिदिन करिये जूठन पाइये अंतर न राखिये। जो ऐसे भक्तन सों कछू आचार निमित्त ग्लानि आनै तो तिन सब अनाचार कियो। यह बड़ो अंतराय है। ताते या रसके पाइबे को कछू और यतन नाहीं। बिन भक्तनि की पदरज। जो कहूं यह बात काहूके मन न आवै कहै कि कहां कही है ताकी साखि॥ श्री भागवत। श्लोक। ब्रतानियज्ञ छंदांसि तीर्थानि नियमायमाः। यथाः बरुंधेत् सत्सङ्गः सर्ब संगापहोहिमां॥ अरु श्री मुख कही कि हौं भक्तन के पाछे फिरत हौं। जो एकांती भक्त हैं तिन की चरन रज निमित्त और भी महा पुरषन यह सिद्धांत करि राख्यौ है॥ तहां श्री जू की बानी॥ जै श्री हित हरिबंश प्रपंच बंच सब काल व्याल को खायो। यह जिय जानि श्याम श्यामा पद कमल संगी

सिर नायो। अपने रस की उपासना में सावधान रहिये। भक्तन के अपराधन सों डरपत रहिये। छिन छिन भजनही को सँभारयो करै। जैसे पुतरीन सों पलकैं।

दो०—पलकनि के जैसे अधिक, पुतरिनु सों अति प्यार।
ऐसे लाड़िलि लाल के, छिन छिन चरन सँभार॥

एक ने कही कि यह लाड़िली लालजू को अद्भुत निकुंज माधुरी को रस सबतें दुर्लभ दुर्घट है तासों प्रेम कैसे उपजे कौन उपाइ कौन साधन?। मूल तो कृपा रसिक भक्तनि की जिनसों संग मन बच क्रम करि करै निशिदिन। अरु रस मई भजन के अभ्यास में रहे। और कठिन कलेश साधन सों न बनै। यह रस अति कोमल है। माखन सों माखन मिलै कठोरता न चाहिये। कठिन साधन सों शुद्ध भक्तिहू न पाइये। तो यह महा माधुर्य्य रस कैसे पावे?। सर्वोपरि साधन यह है जो रसिक भक्त हैं तिनकी चरन रज बंदै। तिनसौं मिलि किशोरी किशोरजू के रसकी बातें कहै सुनै निशिदिन। अरु पल पल उनकी रूप माधुरी विचारत रहै। यह अभ्यास छांड़ै नहीं आलस न करै। तो रसिक भक्तनिको संग ऐसो है आवश्यक प्रेम को अंकुर उरमें उपजै। जो कुसङ्ग पशु तें बचै जबताईं अंकुर रहै। तब तांईं भजन जल सों सींच्यो करै बारम्बार। अरु सतसङ्ग की बारि दृढ़कै करै तो प्रेम की बेलि हिये में बढ़ै। फूलै जड़ नीके गहै तो चिंता कछु नाहीं यहही यतन है। संग तें कृपा कृपा ते संग तब भक्ति होइ या सिद्धांत पर और कछू नाहीं। यह बात अबहू काहू के मन न आवै तें तासों कछू बसात नाहीं अपनी वह जानै। या रसको वि

अपने मन समुझाइवे को कै जिनको मन या रस में होइ तिन के हेत कह्यो। जो या विचार में रहे तो काल वृथा न जाइ। जिन को यह रस रुचै नाहीं तिनके पास न बैठे। न यह प्रसंग चलावें। जो विजाती सों गोष्टी करै तो या रसमें अंतर परै चित्त कठोर ह्वै जाइ। जैसे महा रङ्क धनको छिपाये फिरै। तैसे महा प्याररसों उरमें राखै यह भजन। अरु अभिमान छाड़ै। मान अपमान उरमें न आनै दीन होइ। जहाँ रसिक भक्तनि की मण्डली सुनै तहाँ जाइ तिनकी चरन रज शिरपर धरै। अरु उनसों मिलि काल वितीत करै निमित्त रहित भजन स्वाद लिये होइ। जैसे विषई को अपनो अपनो रस रुचै। ऐसे भजनी होइ तब बिषय नेम को भस्म करै जब प्रेम बढ़ै। जबतांई मन भ्रम्यो फिरै। कबहूँ महातम कबहूँ ग्यान। कबहूँ बिरक्तता तिनको या रस माधुरी सौं बहुत अंतराय है। जो निस्प्रेही भयो ताको जैसी कौड़ी तैसो रतन। और सब रस या माधुर्य रस के आवरन हैं। अंतराय बनाये हैं सो यह बात रसिकनि की कृपाते मनमें आवे। श्री किशोरी किशोरजू के प्रेम रस माधुरी तबहीं उर में आवै। जाके सांगोपांग उपासना सहज की होइ। सांग कहा? गुरु इष्ट मंत्र रसिकनि को संग। जब या रस माधुर्य्य के जुरै तब उपासना सिद्ध होइ वे उपासिक कहिये। जो मन नेकहूँ और धर्म में चलै तौ उपासना में भंग होइ। और श्रीवृन्दावन में जो कोई निमित्त तिथि बिधि मानै सो भली नाहीं श्री लाड़िली लालजू जहाँ नित्य बिहार करत हैं। ऐसो श्री वृन्दाबन है ताको निमित्त धर्मनि में सानै यह बड़ी चूक है। चंद्र मनिहि लै ज्यों काँच

की मनियनि मैं पोवै तो शोभा न पावई। जो वृन्दाबन की तुल्य को बैकुण्ठहू नाहीं। तौ तुच्छ धर्मनिमें मिलावे यह बड़ी अज्ञानता है। रसिक अनन्य ऐसो चहिये। धीर सुभट मन कहूँ न चलै या बात को समान॥

॥ चौपाई ॥

यह प्रबोध ध्रुव जो मन धरै ❀ सोई भलो आपनो करै॥
यह सिद्धांत सार है जानौ ❀ और कछू जियजिन उरआनौ॥
छिनछिन कालवृथा चल्योजाई❀ लाड़िली लालहिं लेहु लड़ाई॥
छांड़ि कपट मन बच चितदीजै❀अलि ज्यों चरनकमल रसपीजै॥
जिनके मन निश्चय यह आई ❀ रससुखकी निधि तिनहीं पाई॥
तिनहीं देह धरी या जगमें ❀ जाको मन लाग्यो या रँगमें॥
दोहा—यह सिद्धान्त बिचार ते, चारु बुद्धि ध्रुव होइ।
तन मन के सब भरम मल, पलमें डारै धोय॥

॥ इति श्री सिद्धान्त विचार लीला की जै श्री हित हरिवंश॥

॥ अथ प्रीति चौवनी लीला लिख्यते ॥

दोहा-नवल रँगीले लाल बिनु, को समुझै रस रीति।
सब तजि बस आपुन भये, रँगे रँगीली प्रीति॥
चूड़ामणि सब लोक के, लये प्रेम रस मोहि।
यद्यपि रूप निधान पिय, प्रिया बदन रहे जोहि॥
वरनौं ऐसे प्रेम को, जिहि बस कीनें लाल।
शुद्ध सरूप अनूप ध्रुव, अद्भुत परम रसाल॥
आदि अन्त जाको नहीं, रहत एक रस रूप।
रुचित रंग पल पल बढ़ै, सहजहि सुखद अनूप॥
नित्य नवल मृदु मधुर वर, भीने रंग सुहाग।

जामें नाहिं निमित्त कछु, सो अभंग अनुराग ॥
प्रेम नेम व्योरो कियो, जो आयो उर माहिं ।
याते न्यारे दुहुँन के, लक्षण जाने जाहिं ॥
जेहि तन बन गरजत रहें, अद्‌भुत केहरि प्रेम ।
जामें पावै रहन क्यों, गज विहङ्ग मृग नेम ॥
रहन न पावत और रस, जहां प्रेम को राज ।
सकल सुखन को दलमलै, ज्यों पंछिन को बाज ॥
मन पंछी जब लग उड़ै, बिषय बासना माहिं ।
प्रेम बाज की झपट में, जब लगि आयो नाहिं ॥
जहँ लगि लालच विषय को, सो न होय ध्रुव प्रेम ।
तासों कहा बसाइ ध्रुव, पीतल सों कहै हेम ॥
पलट परत ताकी दशा, जो सनेह रँग रात ।
और अङ्ग मिटि कै सबै, नैना ही ह्वै जात ॥
रहन देत नहिं और रस, यहै प्रेम की टेक ।
याको सहज सुभाव यह, करत दोइ तें एक ॥
भूली नहीं अपनी विषय, मिट्यो न मन तें नेम ।
तासों ध्रुव कैसे कहै, जानि बूझि कै प्रेम ॥
तन विलास जे विषय के, जो न प्रेम तें जाहिं ।
भानु उदै जो तम रहै, तो वह भानुहि नाहिं ॥
यामें नाहिंन प्रीति कछु, जो जाको आहार ।
हिम ऋतु ग्रीषमता रुचै, ग्रीषम माहिं तुषार ॥
अलि पतंग मृग मीन गज, चातक चकइ चकोर ।
ये सब झूठे नेह में, बँधे विषय की डोर ॥
जग लगि द्वै मन बीच कछु, स्वारथ को हित होय ।

शुद्ध सुधा कैसे रहे, परै जो तामें तोइ ॥
आदि अन्त जाको भयो, सो सब प्रेम न रूप ।
आवत जात न जानिये, जैसे छांह (अ) रु धूप ॥
जब बिछुरत तब होत दुख, मिलतहि हियो सिराइ ।
याही में रस द्वै भये, प्रेम कह्यो क्यों जाइ ॥
तन मन के बिछुरे नहीं, चाह बढ़ै दिन रैन ।
कबहूँ सँजोग न मानहीं, देखत भरि भरि नैन ॥
ऐसो प्रेम न कहूँ ध्रुव, है वृन्दावन माहिं ।
तिन बिच अंतर निमिष को, होत जु कबहूँ नाहिं ॥
प्रेम रूप वय घटत नहिं, मिटत न कबहु सँयोग ।
आदि अन्त नाहिन जहां, सहज प्रेम को भोग ॥
अङ्ग अङ्ग मिलि रहे सब, मनसों मन अरुझात ।
देखो अटपटि प्रेम गति, चित्त न कबहु अघात ॥
प्रेम चाल बांकी चलन, मन पग नहिं ठहराय ।
नख सिख अरुझे नेम तें, ते कैसे तहँ जाय ॥
प्रेम बातहू बात तें, सूक्षम कही न जाय ।
तन तरवर को छांड़ि के, मनहि झुलावै आय ॥
प्रेम प्रकार अनेक विधि, तिनमें उत्तम भांति ।
अद्भुत प्रीति दुहून की, जिनके उर झलकांति ॥
नेह निवाहन कठिन है, फिरयो जगत सब जोइ ।
विमल प्रीति नहिं देखिये, स्वारथ लग सब कोइ ॥
प्रीति प्रीति सब कोउ कहै, कठिन ताखु की रीति ।
आदि अंत निबहै नहीं, बारू की सी भीत ॥
प्रीति आरसी बिमल है, जो कोउ राखै जानि ।

कपट मोरचा लगतही, होत दरस की हानि ॥
जाके हिय में जगमगै, रूप दीप उजियार ।
परसे ताके जाइ नसि, दुख सुख सब अंधियार ॥
वृन्दाबन रसके रसिक, ये तौ पइयत थोर ।
जिनके हिय में बसत रहे, रसमें मधुर किशोर ॥
जो कोऊ खोजत फिरै, आवै जग अवगाहि ।
नेही दुर्लभ पावनो, और सुलभ सब आहि ॥
बंकट घाटी नेह की, अतिहि दुहेली आहि ।
नैन पगनि चलिबो तहां, जो ध्रुव बनै तौ जाहि ॥
चढ़िकै मैंन तुरंग पर, चलिबो पावक माहिं ।
प्रेम पंथ ऐसो कठिन, सब कोउ निबहत नाहिं ॥
लोक बेद संकल सुदृढ़, मन गज डारो तोरि ।
देखौ प्रेम चरित्र यह, बँध्यौ फिरै बिन डोरि ॥
मन मतङ्ग मद रस मत्यौ, धस्यो प्रेम रन धाइ ।
लोक बेद कुलकानि की, दई फौज बिचलाइ ॥
जेहि उर उपज्यो प्रेम रस, सो नित रहत उदास ।
भूल्यो हँसिबो खेलिबो, खान पान सुख बास ॥
रूप छटा अद्भुत निरखि, थकित भये सुख बैन ।
प्रान तहां पहिले गये, रोवत छांड़े नैन ॥
रूप धसक हिय धसि गयो, शिथिल भये सब अङ्ग ।
मुख पियराई फिरगई, बदलि परयो तन रङ्ग ॥
प्रेम बेलि जेहि पर चढ़ी, गई सबै सुधि भूलि ।
एक कमल ध्रुव चाह को, ताके उर रह्यो फूलि ॥
मोह्यो नहिं सुनिराग धुनि, बिध्यो न उर छबिबान ।

तिनको ऐसे समुझ तू, पाहन चित्र समान ॥
पर्यो न रूप तरङ्ग में, अर्यो न मृदु मुसिक्यान ।
रम्यो न मोहन भाइ रस, नीरस तरु सम जान ॥
प्रेम रङ्ग तन मन रँगे, कहँ समाइ सुख और ।
रोम रोम पिय रमि रह्यो, बची नाहिं कहुं ठौर ॥

॥ कुंडलिया ॥

नैननि पिय मूरति बसै, तेहि रस रहे समाय ।
ये लच्छन सुनि प्रेम के, और न कछू सोहाय ॥
और न कछू सुहाय फिरै अपनो मदमातो ।
कुटुम्ब देह सों जाइ टूटि सबही बिधि नातो ॥
जहँ २ पिय की बात सुनें खोजत (फिरै) तिन गैननि ।
छिन २ प्रति ध्रुव लेत प्रेम जल भरि भरि नैननि ॥

दो०—कहा कहौं गति प्रेम की, बढ़ी चाह की पीर ।
लोचन भूखे रूप के, भरि २ ढारत नीर ॥
को आवै बुलवैव को, को बकहै उठि जाहि ।
प्रेम चटपटी जासु उर, ग्रह बन भूल्यो ताहि ॥
भाव बढ्यो तब जानिये, यह गति होइ अनूप ।
भूलै भूख (अ) रु सैन सुख, नैन भरे रहैं रूप ॥
चित्त रहै द्रवि भूत नित, अति कोमल रस प्रेम ।
हिय में झलकत रहै यों, जैसे चांदी हेम ॥
बृन्दावन नित सहजही, आनँद, को निज धाम ।
विलसत हैं जहँ प्रेम रस, इकछत श्यामा श्याम ॥
नवलकिशोरी नव कुंवर, सहज प्रेम की रासि ।
भीने दोउ आनन्द रस, करत मन्द मृदु हांसि ॥

रूप परस्पर चितैबो, जीवनि दुहु (न) की आहि।
यह सुख समुझत हैं सखी, रहत निरन्तर याहि॥
या रस में चित दीजिये, छांड़ि और सब आस।
धन्य धन्य तेई जु नर जिनके यहै उपास॥
हित सों जाहि चिन्हार नहिं, तासों करिन चिन्हारि।
बिन ध्रुव नेही भाजनहिं, रंग न दीजे डारि॥
प्रीति चौवनी जो सुनै, उपजैगी निज प्रीति।
ताही तें ध्रुव समुझि है, वृन्दावन रस रीति॥
हित सों हिये धरे रहो, यह माला रस प्रेम।
हित ध्रुव ताके झलमलै, हिये केलि रस क्षेम॥

॥ इति श्री प्रीति चौवनी लीला की जै जै श्री हित हरि वंश॥

॥ अथ आनंदाष्टक लीला प्रारम्भ ॥

दोहा-सखी सबै उडुगन मनौ, एक बार आनन्द।
पिय चकोर ध्रुव छकि रहे, निरखि कुँवरि सुखचंद॥
ऐसी अद्भुत सभा बनी, इकछत सुख की रासि।
फूले फूल आनन्द के, सहज परस्पर हांसि॥
देखि लाल के लालचहि, लालच हूँ ललचाइ।
नवल कटाक्ष तरंग रस, पीवत हूँ न अघाइ॥
एकहि बय गुन प्रेम रस, रूप (अ)रु शील सुभाव।
अद्भुत जोरी बनी ध्रुव, देखि बढ़त चित चाव॥
या रस के जे रसिक जन, तिनकी कौन समान।
बिना मधुर रस माधुरी, परसत नहिं अछु आन॥
रसिक तबहिं पहिंचानिये, जाके यह रस रीति।
छिन२ हियमें झलकि रहै, लाल लाड़िली प्रीति॥

यह रस जिन समुझो नहीं, ताके ढिग जिनि जाहु ।
तजि सतसङ्ग सुधा रसहि, सिंधु सुतहि जिनिखाहु ॥
बृन्दाबन रस अति सरस, कैसे करौं बखान ।
जेहि आगे बैकुण्ठ को, फीको लगत पयान ॥
यह अष्टक ध्रुव पढ़ै जो, संध्या और सवार ।
ताके हिये प्रकाश रहै, मिटै त्रगुण अँधियार ॥

॥ इति श्री आनन्दाष्टक लीला की जै जै श्री हित हरिवंश जी ॥

॥ अथ श्रीभजनाष्टक लीला प्रारम्भ ॥

दोहा—ज्ञान शांत रस ते अधिक, अद्भुत पदवी दास ।
सखा भाव तिन तें अधिक, जिनके प्रीत प्रकास ॥
अद्भुत बाल चरित्र को, जो यशुदा सुख लेत ।
ताते अधिक किशोर रस,ब्रज बनितनि के हेत ॥
सर्वोपरि है मधुर रस, युगल किशोर बिलास ।
ललितादिक सेवति तिनहिं,मिटतनकबहुँ हुलास ॥
यापर नाहिंन भजन कछु, नाहिंन है सुख और ।
प्रेम मगन बिलसत दोऊ, परम रसिक सिरमौर ॥
बृन्दाबन निज सहजही, नित्य सखी चहुँओर ।
मध्य बिराजत एक रस, रसमय मधुर किशोर ॥
छैल छबीली लाड़िली, छैल छबीलो लाल ।
छैल छबीली सहचरी, मनो प्रेम की माल ॥
पञ्चबान जेहि पानि है, देखि गयो यह रङ्ग ।
तेई बान तेहि फिरि लगे, जरजर भये सब अङ्ग ॥
बिवस भयो सुधिरही न कछु, मोह्यो महाअनङ्ग ।
लज्जित ह्वै रह्यो नमित अति करत न सीसउतङ्ग ॥

यह अष्टक ध्रुव पढ़ै जो, जुगलचन्द
ताके हिये प्रकाश रहे, मिटै तिमिर

॥ इति श्री भजनाष्टक लीला की जै जै श्री हित ह.

॥अथ भजन कुँडलिया लीला

॥ कुंडलिया ॥

हंस सुता तट बिहरिबो, करि वृन्दाबन बास ।
कुन्ज केलि मृदु मधुर रस, प्रेम बिलास उपास ॥
प्रेम बिलास उपास रहै, इक रस मन मांहीं ।
तेहि सुख को सुख कहा कहौं, मेरी मति नाहीं ॥
हित ध्रुव यह रस अति सरस, रसिकन कियो प्रशंस ।
मुकतन छांड़ै चुगत नहिं मानसरोवर हंस ॥
दोहा—रस भीज्यो रस में फिरै, रसनिधि जमुना तीर ।
चितत रस में सने दोउ, श्यामल गौर शरीर ॥

॥ कुंडलिया ॥

नवल रँगीले लाल दोउ, करत बिलास अनंद ।
चितवनि मुसकनि छुवनि कच, परसनि उरज उतङ्ग ॥
परसनि उरज उतङ्ग चाह रुचि अति ही बाढ़ी ।
भई फूल अँग अंग भुजनि की कसकनि गाढ़ी ॥
यह सुख देखत सखिन के रहे फूलि लोचन कमल ।
हित ध्रुव कोक कलानमें अति प्रवीन नागरनवल ॥
दोहा—प्रेम तृषा की बेलि को, केलि अदन रस आहि ।
परम रसिक नागर नवल, पीवत जीवत ताहि ॥

॥ कुण्डलिया ॥

मदन केलिको खेलि है, सकल सुखन को सार ।
तेहि बिहार रस मगन रहे, और न कछू सँभार ॥
और न कछू सँभार, हार कर प्रान पियारी ।
राखत उर पर लाल नेकहूँ, करत न न्यारी ॥
याही रसको भजनतो नित्य रहो ध्रुव हिय सदन ।
कुञ्ज २ सुख पुञ्ज में, करत केलि लीला मदन॥
दोहा—केलि बेलि फूली रहत, चितवनि मुसकनि फूल ।
तेहि लागे छबि फल उरज, ढापे प्यार दुकूल ॥

॥ कुण्डलिया ॥

प्रेमहि शील सुभाव नित, सहजहि कोमल बैन ।
ऐसी तिय पिय हीय में, बसत रहो दिन रैन ॥
बसत रहो दिन रैन नैन, सुख पावत अति ही ।
प्रिया प्रेम रस भरी लाल तन, चितवत जब ही ॥
देखो यह रस अति सरस,बिसरावत सब नेम हीं ।
हित ध्रुव रसकी राशि दोउ,दिन बिलसत रहे प्रेम हीं॥
दोहा—एकै सहज सुभाव बन्यौ, एकै विधि सब भांति ।
एक रंग रुचि एक रस, एकै बात सुहाति ॥

॥ कुंडलिया ॥

सीसफूल झलकान छबि, चंद्रिका की फहरानि ।
ध्रुवके हियमें बसत रहो,विवि चितवनि मुसकानि॥
विवि चितवनि मुसकानि, रह्यो यों उरमें छाई ।
तिहि रस केवल मनहिं और कछुवै न सुहाई ॥
या शोभा पर वारिये कोटि कोटि रति ईश ।

रीझ रीझ नख चंद्रकनि, जब लावत पिय श्र
दोहा–सीस फूल सिखि चंद्रिका, सदा बसो मन मोर
अरु जब चितवत लाड़िली, पियतन नैननि कोर

॥ कुंडलिया ॥

ऐसे हियमें बसत रहो, नव(ल) किशोर रस रासि।
चितवनि अति अनुराग की,करत मन्द मृदु हाँसि॥
करत मंद मृदु हाँसि दोउ होत जु प्रेम प्रकास।
छके रहत मदमत्त गति आनँद मदन बिलास॥
हित ध्रुव छबि सों कुञ्जमें, दै अंशनि भुज वैसे।
मेरी मति इति नाहिं कहौं उपमा दै ऐसे॥
दोहा–नवकिशोर चितचोर दोउ, परम रसिक शिर मौर।
ऐसे हिय में मिलि रहो, बचै नहीं कहुँ ठौर॥

॥ कुंडलिया ॥

(श्री) राधाबल्लभलाल की,बिमल धुजा फहरन्त।
भगवत धर्महु जीत के, निज प्रेमा ठहरन्त॥
निज प्रेमा ठहरंत नेम कछु परसत नाहीं।
अलकलड़े दोउ लाल मुदित हँसि हँसि लपटाहीं॥
हित ध्रुव यह रस मधुर,(है) सारको सार अगाधा।
आवै तबहीं हीय (में) कृपा करैं बल्लभ(श्री)राधा॥
दोहा–महा माधुरी प्रेम रस, आवै जिहि उर माहिं।
नवधा हू तिहि रुचै नहिं, नेम सबै मिटिजाहिं॥

॥ कुंडलिया ॥

(श्री)राधाबल्लभ लाड़िली अति उदार सुकुमारि।
ध्रुव तो भूल्यो और तें तुम जिनि देहु बिसारि॥

तुम जिनि देहु बिसारि ठौर मोकों कहुँ नाहीं।
पिय रँग भरी कटाक्ष नेक चितवो मो माहीं ॥
बढ़ै प्रीति की रीति बीच कछु होइ न बाधा।
तुम हो परम प्रवीन प्राण बल्लभ श्री राधा ॥
दोहा-अतिहि मृदुल नागर नवल, करुणासिंधु अपार।
ऐसे शील सुभाव पर, ध्रुव कीन्हों बलिहार ॥

॥ कुंडलिया ॥

वृन्दाबिपिन निमित्त गहि तिथि बिधि माने आन।
भजन तहां कैसे रहै खोयो अपने पान ॥
खोयो अपने पान मूढ़ कछु समुझत नाहीं।
चन्द्रमणिहिं लै गुहै कांच के मनियनि माहीं ॥
जमुनापुलिन निकुन्जघन अद्भुत है सुखकोसदन।
खेलत लाड़िलीलाल जहँ ऐसो है वृन्दाविपिन ॥
दोहा-ह्वै अनन्य इक रस गहै, वृन्दाबन रस रीति।
बिधि निषेध मानै न कछु करै भजनसों प्रीति ॥

॥ कुंडलिया ॥

बारबार तो बनत नहिं यह संजोग अनूप।
मानुष तन वृन्दाबिपिन रसिकन सँग विवि रूप ॥
रसिकनि संग विविरूप भजन सर्वोपरि आहीं।
मन दै ध्रुव यह रंग लेहु पल पल अवगाहीं ॥
जो छिन जात सो फिरत नहिं करहु उपाइ अपार।
सकल सयानप छांड़ि भजु दुर्लभ है यह बार ॥
दोहा-भजन रंग सतसंग मिलि वृन्दावन सो खेत।
एक कृपा तें जुरै ध्रुव, याके चहिये हेत ॥

दशदोहा दश कुण्डलिया कुण्डल भजन को आहि।
बाहर पाव न दीजिये छिन छिन यह अवगाहि॥
भजन कुण्डलिया में रहो, पग बाहिर जिन देहु।
एकै जुगल किशोर सों करि ध्रुव सहज सनेहु॥

॥ इति श्री भजन कुण्डलिया लीला की जै जै श्री हित हरिवंश॥

॥ अथ श्री भजन सत लीला प्रारम्भ॥

दोहा–श्रीहरिबंश सरोज पद, जो पै सेये नाहिं।
भजन रीति अरु प्रेम रस, क्यों आवै मन माहिं॥
हरिबंश चन्द, अरबिन्द पद, यह निज सर्वसु जानि।
हित ध्रुव मिथुन किशोर सों, तिहिं बल ह्वै पहिचानि॥
सोरठा–प्रेम सहित हुलसात, सेवा श्यामा श्याम की।
कीजे मन इहि भाँति दिन दिन अति अनुरागसों॥
दोहा–प्रथमहिं मञ्जन कीजिये, सौरभ अंग लगाइ।
ता पाछे रचिपचि करै, सुन्दर तिलक बनाइ॥
तिय के तन को भाव धरि, सेवा हित शृङ्गार।
युगल महल की टहल को, तब पावै अधिकार॥
नारी किंवा पुरुष हो, जिनके मन यह भाव।
दिन दिन तिनकी चरन रज, लै लै मस्तक लाव॥
दुलहिन दूलहु छबि झलक, तहँ राखै दोउ नैन।
भाव तरङ्गनि मन रँगै, सुनत मधुर मृदु बैन॥
लाल लड़ैती केलि कल, अद्भुत प्रेम विलास।
तिनहीं के रँग रँगि रहै, सब ते होइ उदास॥
मन की दृढ़ता हेत लगि, कही भजन की रीति।

सुनै हिये के श्रवन दै, तब उपजै मन प्रीति ॥
(श्री) राधा बल्लभ रूप रस, करहु नैन मग पान ।
प्रेम सहित निज केलि गुन,करि रसना दिन गान ॥
गद्गद सुर नैना सजल, दम्पति रस रहै भीन ।
इहि गति वृन्दा विपिन में, फिरै प्रेम तन लीन ॥
नील पीत अञ्चल झलक, नैननि में रहै नित्त ।
जावक युत नख चरन युग, सदा बसो ध्रुव चित्त ॥
सोरठा—चलत रहो दिन रैन, प्रेम वारि धारा नयन ।
जाग्रत अरु सुख सैन,चितै चितै विवि कुँवर छबि ॥
दोहा—करत टहल बन्दन अधिक, रंच प्रेम मन ज्यौंन ।
तेतौ सब ऐसे भये ज्यों, सालन बिन लौंन ॥
हित ध्रुव निरखत नेकु नहिं, वैभव ताकी ओर ।
रंच प्रेम में अपुनपो, हारत नवल किशोर ॥
साधन करत अनेक जो, कोटि कोटि जुग जाहिं ।
तऊ न आवत प्रेम बिन, रसिक कुँवर मन माहिं ॥
एक प्रेम पैयत कुँवर, करहु जतन बहुतेर ।
मन बच निश्चय जानि यह, एक ग्रन्थ सो फेर ॥
नैनन झलक्यो प्रेम जल, भई न तन गति और ।
तेहि उर कहो कैसे लसै, परम रसिक शिरमौर ॥
नवकिशोर इक प्रेम बस, नाहिंन और उपाइ ।
अनेक चतुरई करो किनि, बातें कोटि बनाइ ॥
मनकी गति यों चाहिये, भयो रहैं दिन दीन ।
रसिकनि की पद रज तरें, लुठत सदा ह्वै लीन ॥
सहजहि जल अरु प्रेम को, एक सुभावहि जानि ।

चलत अधिक तेहि ठांवको, पावन जहाँ निवांनि ॥
देखो अद्भुत प्रेम फल, सबते ऊंचो आहि ।
सीस करै जब चरन तर, तब पहुँचे कर ताहि ॥
वैभव सुख ध्रुव जहां लगि, छत्रधार सत अर्व ।
प्रेम गरीबी सहज पर, वारिडारि ध्रुव सर्व ॥
जबलगि मन चंचलभयो, फिरत विषय सुख माहिं ।
तबलगि दंपति चरनसों, होत प्रेम छिन नाहिं ॥
मन गति चंचल सबनितें, उपजत छिन सतरंग ।
आवत तबहीं हाथ जो, रसिकनि को होइ संग ॥
भयो न रसिकनि संग जो रँग्यो न मन रँग प्रेम ।
पारस बिन परसे कहो, होत लोह ते हेम ॥
जब लगि मन गज खुभत नहिं, प्रेमपङ्क में आइ ।
तबलगि पांचो ऋषिनु के, सुखमें रहत समाइ ॥
सोरठा—रसिकनि के रहु संग, रे मन आन बिचार तजि ।
नैननि को लै रंग, मिथुन रूप रस रंगि कै ॥
दोहा-रे मन रसिकन संग बिनु, रञ्च न उपजै प्रेम ।
या रस को साधन यहै, और करो जिनि नेम ॥
दम्पति छबि में मत्त जे, चाहत दिन इक रंग ।
हितसों चित चाहत रहो, निशि दिन तिनको संग ॥
झूलत झूमत फिरै दिन, घूमत दम्पति रङ्ग ।
भाग पाइ छिन एक जो, पैयत तिन को सङ्ग ॥
सेवा अरु तीरथ भ्रमन, फलत है कालहि पाइ ।
भक्त संग छिन एक में, लेत भक्ति उपजाइ ॥
जिनके हिये बसत रहैं, (श्री) राधा बल्लभ लाल ।

तिन की पद रज धोई ध्रुव,पीवत रहु सब काल ॥
महा मधुर सुकुमार दोउ, जिनके उर बसे आनि ।
तिनहूं तें तिनको अधिक,निश्चय करि ध्रुव जानि ॥
जिन के जाने जानिये, युगल चन्द सुकुमार ।
तिन की पद रज सीस धरि, ध्रुव के यहै अधार ॥
सो०–तृन सम ह्वै जाहिं, प्रभुता सुख त्रैलोक की ।
उपजै जो मन माहिं, अद्भुत रंचक प्रेम जब ॥
दोहा–मन बच धरै अनन्य व्रत, करत भजन रस रीति ।
तेई भावत श्याम मन, हित ध्रुव मानत प्रीति ॥
पिय प्यारी के पद कमल, निशिबासर करि ध्यान ।
रेमन भजन अनन्य में, मिलबहु मति कछु आन ॥
(श्री) राधा बल्लभलाल से, परम रसिक शिरमौर ।
ते पद छाड़े मूढ़ मति, खोजत फिरै कछु और ॥
ज्ञान धर्म व्रत कर्म में, देत है मन अज्ञान ।
करत आस तंदुलनि की, कूटत है तुस धान ॥
(श्री)राधा बल्लभ लालयश, जिहि उर नाहिं सुहात ।
देखौ ते नर मन्द मति, करत आप अपघात ॥
सञ्जम व्रत सतमख करत, वेद पाठ तप नेम ।
इन करि हरि पैयत नहीं, बिनु आये उर प्रेम ॥
कर्म धर्म मत अमित कै,त्यागि सांख्य विधि योग ।
माया उदधि प्रवाह में, दियो बहाइ सब लोग ॥
तहां जु नौका कर परै, भक्ति विमल रससार ।
तिहि पर भक्तनि कृपा बल, चढ़त सुलभ ह्वै पार ॥
जे अनुसरत हैं ज्ञान पथ, निवटत बिरला कोइ ।

तेहि साधन को फल यहै, मुक्ति जीव की होइ ॥
कर्म श्राद्ध में कुशल जे, पितर लोक ते जाहिं ।
भक्त गनत नहिं मुक्ति को, और लोक किहि माहिं ॥
कर्म धर्म में करहु जिनि, भगवत भजन मिलाइ ।
सिंह शरन गहि मूढ़ मति,स्यार शरन कित जाइ ॥
बड़ी मूढ़ता गही जिय, लई लोक की लाज ।
पाछो गर्धव को गह्यो, चढ़े बड़े गजराज ॥
विधि निषेध के बंद हैं, और धर्म मृग मानि ।
केहरि पुनि निर्वन्ध है, भगवत धर्महि जानि ॥
यदपि विषय इन्द्रियन बस, भक्त अनन्य जो होइ ।
कर्मठ कोटि जितेंद्रियन,तेहि सम सर नहिं कोइ ॥
श्रुति पुरान बिधि स्मृति बहु,अलप आयु यह काल ।
लेहु सार गहि हंस जिमि,बिमल भजन नँदलाल ॥
रीति भजन की यहै, ध्रुव छाड़ै सब की आस ।
युगल चरन की शरन गहि,मन में धरि बिश्वास ॥
भक्तहि अंतर को रचे,(सब) नाना बिधि के फंद ।
चित्त भ्रांत सब दूर करि, करो भजन आनन्द ॥
नानाबिधि सब भजन के,तिनहिं भजत सब कोइ ।
जो है जाकी भावना, सिद्ध सोइ पै होइ ॥
भुवन चतुर्दश नाहिं सुख, भक्तन पद सम तूल ।
माया कौतुक जो कछु, सो है सब दुख मूल ॥
सो दिन कबहूँ आइ है, मन दुर्बासना जाहि ।
सरस चित अहर्निशि फिरो,सघन विपिन बन माहिं ॥
भक्त प्रकार अनेक विधि, मन मन औरे बात ।

(जे) भीजे विपिन बिहार रस, तिनहिं न और सुहात ॥
जे सेवत वृन्दा विपिन, युगल कुंवर रस ऐन ।
ते बैकुंठ सुखादि तन, चितवत नहिं भर नैंन ॥
नौतन वैस किशोर छबि, बसत है जिहि उर नित्त ।
पौगँड बाल लीलादिहूँ, भावत नहिं तेहि चित्त ॥
सकल भजन के माहिं है, हित ध्रुव यह रस सार ।
युगलकिशोर सु नव कुंवरि, करत हैं विपिन बिहार ॥
नवल प्रिया छवि बसत रहौ, इहि विधि नैननि माहिं ।
निकसत सघन लतान ते, धरे कंठ पिय बाँहि ॥
नीलांचल रह्यो अरुझि कै, कनक लतनि सों आहि ।
या छबि सों कब निरखि हौं, पिय निरवारत ताहि ॥
नवल कुंज नव सहचरी, नवल खगादि कुरंग ।
सब नवलनि में नवल दोउ, करत केलि सुख रंग ॥
अद्भुत सुख रस सार में, कब ह्वै है मन लीन ।
ध्रुव अँखियां तहँ यों रहौ, ज्यों जल में गति मीन ॥
यह बिधि गति ह्वै है कबहुँ, और न कछू सुहाइ ।
बृन्दावन सुख रङ्ग में, रहै चित्त ठहराइ ॥
सकल बात घटतैं घटो, मनकी वृत्ति अनेक ।
वृन्दा विपिन बिहार रस, यहै बढ़ौ उर एक ॥
बिवस दशा विहरत रहौं, अद्भुत सुखहि बिचारि ।
नैन सजल ह्वै कै ढरैं, शोभा विपिन निहारि ॥
जिनके मन ध्रुव रचि रहे, वृन्दावन सुख रङ्ग ।
तेहि सुख को जानत सोई, डोलत भये मतङ्ग ॥
हित ध्रुव जब लगि प्रान हैं, आनहु जिनि कछु चित्त ।

परम रसिक विवि कुँवर वर, हिये लड़ावहु नित्त ॥
ऐसे रसिक किशोर तजि, भजत मन्द मति आन ।
कौन देह खोवत वृथा, समुझत नहिं कछु हान ॥
जे नर बृन्दाविपिन तजि, अनतहि मन लै जात ।
कञ्चन तजि गहि कांच को, फिरि पाछे पछितात ॥
धावत वृन्दा विपिन तजि, जे जन आन विचारि ।
अतिही दुर्लभ ठौर यह, तातें कढ़ियत मारि ॥
दुर्लभ बृन्दा बिपिन है, राख्यो सवतें गोइ ।
तेहि ठां पावै रहन क्यों, भाग हीन जो होइ ॥
करत हैं विविध बिहार तहँ, परम रसिक शिरमौर ।
बृन्दाबन बिनु चित्त में, आनहु जिनि कछु और ॥
जे नर निंदत मंद मति, वृन्दावन को बास ।
सुपनेहुँ परस न कीजिये, तजि ध्रुव तिनको पास ॥
दुर्लभ निधि देखत सुनत, सो आवत उर नाहिं ।
जिन धर्मनि में कष्ट बहु, हठ ठानत मन माहिं ॥
पांचौ इन्द्री साधि कै, योग मौन व्रत लीन ।
देखौ भजन अनन्य बिनु, बाद बृथा श्रम कीन ॥
ह्वै आवे या देह तें, कैसेहुँ दोष बिशाल ।
जो है एक अनन्य व्रत, तजत न ताहि गोपाल ॥
ज्यों घरनी है अति बुरी, पति नहिं छांड़त वाहि ।
देखतही पर पुरुष तन, तजत तिही छिन ताहि ॥
जिन अटके मनपद कमल, जेहि छिन रहत है प्रान ।
देखियत पशु विहरत मनों, जीवत मृतक समान ॥
विवि किशोर छवि रङ्ग जो, नैननि भीजे नेह ।

अरु मन भयो न मैन सों, तो निश्फल गई देह ॥
बिन अर्पे जे जो कछू, ते लागत हैं खान।
देखौ तिहि अपराध को, कहँ लगि कहौं प्रमान ॥
जलहूँ भूलि न पीजिये, बिन लीन्हें निज नाम।
ऐसी जो उपजै हिये, तो पावै सुखधाम ॥
(श्री) राधा बल्लभलाल को, रुचि सों जेवावहु नित्त।
सो जूठन लै पाइये, और न आनहु चित्त ॥
सुनि ध्रुव धर्मी आन सों, कबहुँ न कीजै वाद।
सबते दिनहि निशंक ह्वै, लीजै महा प्रसाद ॥
रे मन लागत भोग जब, कीजै तव न बिचारि।
सब प्रसाद लै पाइये, ब्यौरो भेद निवारि ॥
जो है मन बिश्वास ध्रुव, तब सुधरे सब बात।
नातर माया पंथ में, फिरत जु टक्कर खात ॥
ज्यों चातिक स्वाती बिना, परसत नहिं जल और।
दृढ़ता यों मन चाहिये, फिरै न बहुते ठौर ॥
विच बित्र दुख सुख देह के, ह्वै आवत अनियास।
भजन पंथ ते डिगहु जिन, मनमें राखि हुलास ॥
बिपति काल ब्योहार में, माया मोह समीर।
डुलवत बहु बिधि चित्त को, टिकै सोइ जो धीर ॥
प्रभुता संपति के भये, मन इन्द्रिन वस होइ।
परम धीर बिनु कैसेहूँ, राखि सकै नहिं कोइ ॥
परतहि प्रेम प्रवाह में, रहत सरस दिन चित्त।
दुख सुख संपति विपति के, तृन सम पैयत क्त्ति ॥
अल्प बुद्धि कल्पत कछू, भक्तनि चरन प्रताप।

इहि बिधि जो मन अनुसरै, जाहिं विविधि तनताप ॥
सो०—भक्तनि सों अभिमान, प्रभुता भये न कीजिये ।
मन वच निश्चय जान, इहि सम नहिं अपराध कछु ॥
दो०—सकल आयु सत कर्म में, जो पै बितई होइ ।
भक्तनि को अपराध इक, डारत छिन में खोइ ॥
और सकल अघ मुचन को, नाम उपाइ है नीक ।
भक्त द्रोह को यतन नहिं, होत वज्र की लीक ॥
निंदा भक्तनि की करै, सुनत है जे अघराशि ।
वे तो एकहिं संग दोउ, बँधत भानु सुत पाशि ॥
भूलि हुँ मन दीजै नहीं, भक्तनि निंदा ओर ।
होत अधिक अपराध यह, यो सत जानहु थोर ॥
सेवा करत में भक्त जन, होइ प्राप्त जो आइ ।
सो सेवा तजि वेगिही, अरचहु तिनको जाइ ॥
भक्तनि देखै अधिक हो, आदर दीजै प्रीति ।
यह गति जो मनकी करै, जाइ सकल जग जीति ॥
जात अभिमान न कीजिये, भक्त जननि सों भूलि ।
सुपच आदि दै होइ जो, मिलिये तिनसों फूलि ॥

॥ कुंडलिया ॥

बहु बीती थोड़ी रही, सोऊ बीती जाइ ।
हित ध्रुव वेगि बिचारि कै, बसि वृन्दावन आइ ॥
बसि बृन्दाबन आइ, लाज तजि कै अभिमानै ।
प्रेम लीन ह्वै दीन आपको, तृण सम जानै ॥
सकल भजन को सार सार तू, करि रस रीती ।
रेमन देखि बिचारि रही, कछु इक बहु बीती ॥

सोरठा–वृन्दावन रस रीति, रहै बिचारत चित्त ध्रुव ।
पुनि जै है वय बीति, भजिये नवल किशोर दोउ ॥
दोहा–दुर्लभ मानुष देह यह, पैयत कैसेहुँ भांति ।
सोई खोयो कौन नग, बाद भजन बिनु जाति ॥
बिषया जल में मीन ज्यों, करत कलोल अग्यान ।
नहिं जानत ढिग काल बक, रह्योताकि धरि ध्यान ॥
ज्यों मृग मृगियनि सङ्ग में, फिरत मत्त मन बांधि ।
जानत नाहिंन पारधी, रह्यो काल सर सांधि ॥
निशिवासर कर कतरनी, लिये काल कर वाहि ।
कागदसम भई आयु हो, छिन छिन कतरत ताहि ॥
जेहि तन को सुर आदि दै ईछत रहै दिन आहि ।
सो पायो मति हीन है, वृथा गँवावत ताहि ॥
रे मन प्रभुता काल की, करहु जतन ह्वै ज्योंन ।
तू फिरि भजन कुठार सों, काटत ताही क्योंन ॥
पुरुष सोई जो पुरीष सम, छाड़ि भजै संसार ।
बिपिन भजन गहि ह्वै दृढ़, तजि कुटम्ब परिवार ॥
सुख मैं सुमरै नाहिं जो, (श्री) राधा बल्लभ लाल ।
तब कैसे मुख कहि सकत, चलत प्रान जेहि काल ॥
ढीठौ (ह्वै) करि विनती दियो, कंचन कांच बताइ ।
इन में जाके मन रुचै, सोई लेहु उठाइ ॥
सोरठा–तब पावै रस सार, शुद्ध भजन आवै हिये ।
यातें कह्यो विस्तार, भजन नशेनो प्रेम की ॥
दोहा–यह रस तौ अति अमल है, रहौ विचारत नित्त ।
कहत सुनत ध्रुव भजन सत, दृढ़ता ह्वै है चित्त ॥

॥ इति श्री भजन सत लीला की जै जै श्री हित हरिवंश ॥

अथ शृंगार सत लीला की तीन शृंखला

प्रारम्भ ।

दोहा—श्रीहरि वंश नाम ध्रुव, चिंतत होत जु हिये हुलास ।
जो रस दुर्लभ सबनि तें, सो पैयत अनियास ॥
व्यास नन्द पद कमलबल, सकल सुखन को सार ।
रचि कीन्हों शृङ्गार सत, अद्भुत प्रेम विहार ॥
बांधी ध्रुव गुन शृंखला, प्रथम चालीस अरु तीन ।
दुतीय चालिस अरु तीसरी, द्वै पर चालिस कीन ॥
प्रथम शृंखला माहिं कछु, कह्यो लाड़ली रूप ।
निरखि लाल सखि रहे छकि, सो छवि अतिहि अनूप ॥
छिन छिन नेह कटाच्छ जल, सींचत पिय हिय ऐन ।
भाग पाइ जो कबहुं, ध्रुव या सुख सों लगैं नैन ॥

॥ सवैया ॥

कैसो फव्यो है नीलांबर सुन्दर मोहि लिये मन मोहन माई ।
फैलि रही छवि अङ्गनि कांति लसै बहु भांति सुदेश सुहाई ॥
सीस को फूल सुहाग को छत्र सदा पिय के मन को सुखदाई ।
और कछू न रुचै ध्रुव पीय कों भावै यहै सुकुमारि लड़ाई ।

॥ कवित्त ॥

(श्री) राधिका वल्लभ प्यारी फुलवारी मांझ ठाढ़ी, फूलकारी सारी तन शोभित बनाव की । लोचन विशाल बांके अनियारे कजरारे, प्रीतम के प्रान हरैं हेरनि सुभाव की ॥ चूरी मखतूल नील मनिन की कर वनी, वेसर सुदेश उर अँगिया कटाव की ।

कुन्दन की दुलरी अरु मोतिनु के हार हिये, हित ध्रुव चारुचौकी लसत जड़ाव की ॥

जरकसी सारी तन जग मग रही फबि, छविकी छलक मनो परी है रसालरी । उज्वल सुरंग अनियारी कोर नैननि की, सीस फूल बेंदी लाल सो है बर भालरी ॥ रतन जटित नीलमनि चौकी झलमलै, हित ध्रुव लसै उर मोतिन की मालरी । पानिप अनूप पेखै भूली है निमेषै देखै, मन्द मन्द बेसर के मुक्ता की हालरी ॥

फबि रही सारी मृदु केसरी सुरङ्ग रङ्ग, भीजी है फुलेल स्वच्छ सोंधे मोद में सनी । खुल रही तामें आली अँगिया जंगाली गाढ़ी, दमकत कंठ लर मोतिन की ह्वै बनी ॥ मृगमद बेंदी लसै प्रीतम के मन बसै, वेसर झलक छवि बरषत है घनी । मुसकनि मन्द सुख रंग के तरंग उठै, सोहने रसीले नैन सैन में बिकेधनी ॥

तन सुख सारी मिही भीजी है फुलेल माहिं, तामे लाल अँगिया सुदेश कसनी कसी । सोंधे सगबगे वार बन्यो है सादो सिंगार, मुख पर डारौं वारि कोटि कञ्ज औ ससी ॥ चंचल छबीले बड़े सोहने रसीले नैन, चितै नेक अलबेली अंचल लै मन्दहँसी । हित ध्रुव बस भये देखत ही रह गये, थिरकनि वेसरि की प्रीतम के मन बसी ॥

काकरेजो सारी तन गोरे कैसी शोभियत, पीत अतरौटा सो दुरंग छवि न्यारी है । मुख की पानिप अति चंचल नैननि गति, देखै ध्रुव भूली मति उपमा को हारी है ॥ बेंदी लाल नथ सो है बन्यो मोती मन मो है, वसभये पिय सुधि देह की विसारी है । गहे द्रुम डारी एक रहि गये ताकी टेक, ऐसे वेस जब ते किशोरी जू निहारी है ॥

सुरँग कसूँभी सारी पहिरे रँगीली प्यारी, आली अलबेली भाँति रंग माहिं ठाढ़ी है। केसरी सुरंग भीनी सोंधे सगबगी कीन्हीं, सोहै उर अँगिया कसनि अति गाढ़ी है॥ फैलि रही अरुनाई तैसी ध्रुव तरुनाई, मानो अनुराग रूप में झकोर काढ़ी है। बदन झलक पर परी है अलक आइ, देखि पिय नैनन ललक अति बाढ़ी है।

॥ सवैया ॥

सारी सुरंग सुही अति झीनी सुगन्ध सों भीनी महा सुखदाई।
रची चुनि प्रान समान सुजान ने फूलनि मोद हू ते मृदु माई॥
भूलि रही मतिकी गति हेरत जानत ही उपमा ध्रुव पाई।
रँगी पिय प्यारे के रँग मनो ऐंकि अँगनि रूप तरंगनि छाई॥
सारी हरी ने हर्यो मनलाल को मोहनी सोहनी के तन सोहै।
अँगिया लाल सुरँग बनी लहि गातहि रंग खरो मन मोहै॥
रूपकी राशि सबै गुन आगरि या छबि की उपमा कहो को है।
राजत है ध्रुव कुंज बिहारनि सो छबि लाल पलो पल जो है॥

॥कबित्त॥

हँसनि में फूलन की चाहन में अमृत की नखसिख रूप ही की बरषा सी होति है। केशनि की चन्द्रिका सुहाग अनुराग घटा, दामिनी की लसनि दशनि ही की दोति है॥ हित ध्रुव पानिप तरंग रस छलकत ताको मानो सहज सिंगार सींवां पोति है। अति अलबेली प्रिये भूषित भूषन बिनु, छिन-छिन औरै और बदन की जोति है॥

छबिसों छबीली खरी प्रीतमके रस भरी, कोटि कोटि दामिनी न नख छबि पावहीं। चन्द कोटि मन्द होत मोतिन की कहाँ

जोति, नेक ही की चितवनि ढरे लाल आवही। देखत है रुचि लिये मुख शोभा चित दिये, परम प्रबीन प्यारो रुचि लै लड़ावही। हित ध्रुव छिन छिन मैन के तरंग बढ़ै, प्रेम के हिंडोले चढ़े मदन झुलावही॥

गोरी मृदु अँगुरिन मेहँदी को रंग फब्यो, अतिही सुरंग कञ्ज दलनि लजावही। मनिन के बहुरंग हरित जँगाली छल्ले, जिहि पोरी जैसे बनै पिय पहिरावही। चितै छबि कर गहे नैनन को छ्वाइ छ्वाइ, चूँमि चूँमि माथे धरि आनि उर लावही॥ हित ध्रुव निशिदिन याही रस रहे पगि, जेही अंग मन परै तिहि सचुपावही॥

कंचन के वरन चरन मृदु प्यारी जू कै, जावक सुरंग रँगे मनहि हरत है। हित ध्रुव रही फबि सुमिलि जेहरि छबि, नूपुर रतन खचे दीप से बरत है। रीझि रीझि सुंदर करनि पर पट धरै, आरसी सी लिये लाल देखिबो करत है॥ नख मनि प्रभा प्रति बिंब झलमले कञ्ज चंदनिके यूथ मानों पायन परत है॥

दोहा—अद्भुत पद पल्लव प्रभा, मृदु सुरंग छबि ऐन।
छिन छिन चूमत प्यारसों, रहत लाल उर नैन॥

॥ कबित्त ॥

फूलि फूलि रहे सब फूल फुलवारी में के, रीझि रीझि छबि आइ पाइनि में परी है। लाड़िली नवेली अलबेली सुख सहजही निकसि निकुञ्ज तें अनूप भांति खरी है॥ नख शिख भूषन लावण्यही के जगमगें, दीठ सों छुवत सुकुमारताहू डरी है। हित ध्रुव मुसकनि हेरत बिकाइ रहे, दामिनी की दुति अरु हीरन की हरी है॥

कुञ्जनि के आंगन में जहाँ जहाँ पग धरें, छवि के बिछौना से बिछाये तहाँ जात हैं। रंग भरी लाड़िली निपट अलबेली भांति, अलबेले लोचन न कहूँ ठहरात हैं। नईनई माधुरी को सार है सुभाइन में, मुकनि मानो शुभ्र फूल बिगसात हैं। सोंधे की सी बास ध्रुव फैलिरही पहिलेही, रूपनिधि पानिप के पुञ्ज बरसात हैं।

अलबेली चितवनि मुसकनि अलबेली, अलबेली चलन ललन मन हरयो है। वृन्दाबन मही सब भई छवि मई आली, पग पग पर मानो रूप झरपरयो है॥ कनक वरन भये पत्र फूल द्रुमनि के, आभा तन रही छाइ कुन्दन सों ढरयो है। हित ध्रुव ऐसी भांति झलकत तन कांति, चितवत पिय चित नेकहूँ न टरयो है॥

देखत छबीलो जू की छबि छके छबि निधि, ऐसी छबि देखि आली दृग नहिं टारिये। अलबेली चितवनि हँसन ललन पर मानो सुख पुञ्ज रंग के प्रवाह ढारिये॥ छिन २ नई २ छबिकी तरंग छटा, विवस करत प्रान कैसेकै सँभारिये। हित ध्रुव प्यारी जू के चरन चिह्ननि पर, कोटि २ रति द्युति मोहनीसी वारिये॥

थिरकन बेसरि के मोती की अनूप भांति, प्रीतम के नैना देखि अतिही लुभाने हैं। तेहि छबि की समान देवे को न कछू आन, याहीते बिहारीलाल आपुही बिकाने हैं॥ परे रूप सिंधु मांझ जानत न भोर सांझ, हित ध्रुव प्रेमही के रंग रससाने हैं। प्यारी जूके मिलिवे की तृपित न होत क्योंहूँ, कोटि २ युग एक सुख में बिहाने हैं॥

बड़े बड़े उज्जल सुरंग अनियारे नैना, अंजन की रेख हरे

हियरो सिरात है। चपलाई खञ्जन की अरुनाई कंजन की, उजराई मोतिन की पानिप लजात है॥ सरस सलज्ज नये रहत हैं प्रेम भरे, चंचल न अंचलमें कैसेहूँ समात हैं। हित ध्रुव चितवनि छटा जेही कोट परै, तेही ओर बरषासी रूपकी ह्वै जात है॥

कोलपत्र सारी बनी सोंधेही के मोद सनी, चितै रहे स्याम धनी मानो चित्र ऐन हैं। आंगी नील रही फबि कहि न सकत छबि, मोतिनकी झलकनि अति सुखदैन है॥ चितवनि मैन मई मुसकनि रसमई, कोकिलाहूं वारिडारी ऐसे मृदुबैन हैं। हित ध्रुव अंग अंग सबै सुखसार मई, मनके हरनहार बांके दोऊ नैन हैं॥

रूपे जलमें तरंग उठत कटाछनि के अंग अंग भौंरनि की अति गहराई है। नैनन को प्रतिबिंब परयो है कपोलनि में, तेई भये मीन तहां ऐसी उरआई है॥ अरुन कमल मुसकानि मानो फबिरही, थिरकनि बेसरिके मोतीकी सुहाई है। भयो है मुदित सखी लाल को मराल मन, जीवन युगल ध्रुव एकठाँव पाई है॥

चलनि छबीली जू की चितवत छके पिय, कहि न सकत कछू आज औरै भांति है। अलबेली रूप पुञ्ज कुञ्जतें निकसि जब, चंद कोटि मंद होत ऐसी तन कांति है॥ देखै हंसी मोरी मृगी तेई तहां मोहि रही, झनक मनक सुनि भूलि सुधि जांति है। हित ध्रुव फूलनि की माला शीश हेली सब ऐसे रहि गई मानो चित्रनि की पांति है।

दोहा—अद्भुत छबि की माधुरी, चितै विवस ह्वै जांहि।
यहै सोच पिय प्रेम को, रहत प्रिया मन मांहि॥

॥ कबित्त ॥

छबिके छिपाइबे को रसके बढ़ाइबे को, अंग अंग भूषण बनाये हैं बनाइके। देखैं नासापुट बेह प्रीतम भये बिदेह,याही हेत बेसर बनाइ धरी चाइके॥ रोम रोम जगमगै रूपकी पानिप अति, सकैं न सँभारि हँसि चितई सुभाइके। हित ध्रुव बिवस लटकिजात छिनछिन, यातें सखी शोभा सब राखी है दुराइके॥

ऐसी है ललित प्यारी लालजूकी प्रानप्यारी,डीठहू न ठहरात कैसे कै निहारिये। जाकी परछाईं पर कोटि कोटि चंद अरु, दामिनी भामिनी काम कोटि कोटि वारिये॥ काजर की रेख जहां पानन की पीक भारी,और सुकुमारताई कैसे कै बिचारिये। सहज ही अङ्ग अङ्ग रूपसार मोद मई,हित ध्रुव प्राण न्योछावरि करि डारिये॥

अनियारे नैनसर बेध्यो मन प्रीतम को, बिथकित चकित रहत बल हीने हैं। काजरकी रेख जहां रही फबि निसिरैन तरफ गिरत सखी अंक भरि लीने हैं॥ रसिक किशोर पिय महासूर प्रेम रन,नैननतें नैना तौऊ न्यारे नहिं कीने हैं। हित ध्रुव प्यारी सुकुमारी रीझि देखै गति अति सुकुमार महा प्रेम रँग भीने हैं॥

प्यारी जूकी मुसकनि बीजुरीसी कौंधिजाति, प्यारे जूके उरतैं न रेखासी टरति है। भरिभरि आवैं नैन कैसेहू न पावैं चैन, बानकीसी अनी हिये खरक्यो करति है॥ लाड़िली नबेली अलबेली खानि माधुरी की, सहज सुभाइन में सर्वसु हरति है। हित ध्रुव नये नये छबिके तरङ्ग देखैं, रीझिशीश चन्द्रिका पगन को ढरति है॥

हारनि के भार भारी ऐसी सुकुमारी प्यारी, रसिक रँगीले-लाल कीन्हीं उर हारसी। छबिके तमाल लपटानी रूप बेलि मानो, हँसन दशन फूल फूले सुख सारसी॥ नखशिख जगमगै रोम रोम प्रति बिंब, लसतहै ऐसे जैसे आरसी में आरसी। हित ध्रुव इहि बिधि देखै सखी चित्र भई, चहूँ कोद रही झूमि कंचन की डारसी॥

अति अलबेली भांति झूलैं अलबेली प्रिये, सहज छबीली छबि नवल निहारही। सारी सुही सुरँग परति खसिखसि सखी बार बार प्यारो पिय फूल से सँवारही॥ जेही ओर अङ्ग पट भूषन खिसत पिय, तेही ओर सुरि सुरि प्रान ज्यों सँभारही। हित ध्रुव प्रीतम के नाहिं और दूजी गति, छिन छिन तिनही के सुखही बिचारही॥

॥ सवैया ॥

रूप रसीली हँसीली छबीली रँगीली रँगीले के प्रानते प्यारी।
सुलज्ज सुरंग सुनैन बिशालनि सोभित अञ्जन रेख अनियारी॥
महामृदु बोलनि मोतीकी डोलनि मोललिये ध्रुव कुञ्जबिहारी।
रहे सुख पाय न और सुहाइ भये सब नेहके देह बिसारी॥

॥ कवित्त ॥

सोने तें सुरङ्ग गोरी सोधे सों सुवास अति, मृदुताई पर वारौं जेतिक सुमनरी। रूपही को रूप जग मगत सकल बन, आरसी को आरसी लसत ऐसो तनरी॥ फैली रही छवि प्रभा जहांलों बिराजे सभा, हित ध्रुव चितै लाल भये हैं मगनरी। प्राननि के प्रान और नैननि के नैन मेरे, रीझि रीझि वार वार कहै छ्वै चरनरी॥

कौन भांति कौन क्रांति कौन रूप कौन नेह, कौन एक

है सुभाव कहा आली कहिये। कौन माधुरी तरङ्ग हाव भाव कौन रंग, कौन सुख पानिप विलोकत ही रहिये॥ कोककला रंगमई योवन की जोतिनई, रही है बिचारि मति उपमा न लहिये। हित ध्रुव ऐसी प्यारी मृदुताई वारिडारी, रीझि पिय छ्वावत चरन नैनन हिये॥

छबि ठाढ़ी करजोरें गुन कला चौर ढोरें, द्युति सेवैं तन गोरे रति बलि जाति है। उजराई कुंज ऐन सुथराई रची सैन, चतुराई चितै नैन अतिही लजाति है॥ राग सुनि रागिनीहूँ होत अनुराग बस, मृदुताई अंगनि छुवति सकुचाति है। हित ध्रुव सुकुमारी पुतरीनहू ते प्यारी, जीवत देखै बिहारी सुख बरखाति है॥

रूप की नौलासी प्यारी नाना रंगके सुभाइ, भाइनि की मृदुताई कही न परति है। नैननि के आगे लाल लिये रहै निशिदिन, एको छिन मनतें न क्योहूँ बिसरति है॥ भीजि भीजि जात पिय सुख के तरंगनि में, जब प्रिया बातनि के रंगमें ढरति है। हित ध्रुव प्यारे जू की जीवन किशोरी गोरी, छिन छिन प्रीतम के मनको हरति है॥

रूप की नौलासी देखैं फूल की नौलासी सखी, परी खसि नवल रँगीले जू के करतें। हाव भाव रंगनि के जगि मगि रही प्यारी, चित्र से ह्वै रहे चितै चितै प्रेम भरतें॥ अतिही बिचित्र सखी रही है सँभारि ध्रुव, जिनि धुकि परैं धरपर याही डरतें। छिन छिन प्रेमसिंधु के तरङ्ग, नानाभांति रह्यो जकि थकि मन तेहि रस परतें॥

दोहा—अङ्ग अङ्ग ढरै मैन ज्यों, रूप तेज की कांति।
चहुँदिशि थांभे रहति सखि लाल की भांति॥

॥ कवित्त ॥

रूपकी सी फुलवारी फूलिरही सुकुमारी,अङ्ग अङ्ग नानारङ्ग नबल निहारहीं । नैन कर कमल अधर हैं बँधूक मानो, दशन झलक पर कुन्दवारि डारहीं ॥ बेंदीलाल है गुलाल नासिका सुवर्न फूल,मोती बने जहां जहां जुही सी बिचारहीं । छबिही के खंजन रसीले नैन प्रीतम के, खेलैं तहां ध्रुव सखी चितै प्रान वारहीं ॥

रूप बन प्यारी तन मोरयौ है योवन तहां, सहज हरितताई पानिप अनंगरी । दशन झलक झरैं छबिके सुरङ्ग फूल, मैन सुख फल मानो उरज उतंगरी ॥ अंग अंग माधुरी श्रवत मकरन्द मानो, भुज रस बेलि नख पल्लव सुरंगरी । हित ध्रुव तेहि मधि राजे नाभि सरवर, क्रीडै तहां पिय मन मद को मतंगरी ॥

अलबेली सुकुमारी नैननि के आगे रहै, जबलगि प्रीतम के प्रान रहैं तनमें । यहै जिय जानि प्यारी रञ्चकौ न होत न्यारी, तिनही के प्रेम रङ्ग रँगि रही मनमें ॥ परम प्रवीन गोरी हाव भाव में किशोरी,नये नये छबिके तरंग उठैं छिनमें । हित ध्रुव प्रीतम के नैन मीन रसलीन,खेलिबो करत दिन प्रति रूप बनमें ॥

॥ सवैया ॥

राधिका वल्लभ लाल की प्यारी सखीन के प्रान महा सुकुमारी।
रूप की बेलि फवी फल फूल मनोज उरोज भरे रस भारी ॥
पत्र लावण्य हरे भरे रङ्गरु योवन मौरनि पानिप न्यारी।
प्रीतम नैननि चैन तऊ नहिं देखत ही ध्रुव बाढ़ै तृषारी ॥

॥ कवित्त ॥

डीठि हू को भार जानि देखत न डीठि भरि,ऐसी सुकुमारी नैन प्रानहू ते प्यारी है। माधुरी सहज कछू कहत न बनि आवै, नेकही के चितवत चकित बिहारी है ॥ कौन भांति मुख की अनूप कांति सरसाति,करत बिचार तऊ जात न बिचारी है। हित ध्रुव मन पर्‌यो रूप के भँवर मांझ, नेह बस भये सुधि देह की बिसारी है ॥

॥ सवैया ॥

भीजी नवेली चँवेली फुलेल सों फूलनि के पट भूषन सोहै।
लोइन बङ्क बिशाल सचिक्कन अंजनि की छबि प्रानन मोहै॥
रूप तरङ्गनि पानिप अंगनि प्यारी सखी ललितादिक जोहै।
भूलि रही ध्रुव तो छबि श्री अरु मोहनी मैनकी नारि धौं कोहै? ॥

॥ कवित्त ॥

कुञ्जतें निकसि दोऊ ठाढ़े जमुना के तीर, आजु सखी और भांति प्रिया रङ्ग भरी है। निशि के चिन्हनि चितै मुसकाति रस निधि, बहु बिधि सुख केलि रङ्ग रस ढरी है॥ देखैं ध्रुव छबि सींवा मृदु भुज मेलै ग्रीवा, हँसी भौंरी भोरी मृगी ठौर ते न टरी है। हरी हरी लाल लाल पीत सेत सारी तन,पहिरे सहेली सबै चित्र कीसी खरी है ॥

नवल नबेली अलबेली सुकुमारी जू को, रूप पिय प्रानन को सहज अहाररी। बिंजन सुभाइनि के नेह घृत सौंज बनें, रोचिक रुचिर है अनूप अति चाररी ॥ नैननि की रसना तृपित न होत क्यों हू,नई नई रुचि ध्रुव बढ़त अपाररी । पानिप को

पानी प्याइ पान मुसिक्यान खवाइ राखै उरसेज स्वाइ पायो सुख साररी ॥

प्रानहू ते प्यारी सुकुमारी जू को देखत, बिहारी जू के रोम रोम लोचन ह्वै जात है। ज्यों ज्यों रूपपान करै निमिष न चैन धरै, त्यों त्यों प्यास बाढ़ै अति क्यों हूँ न अघात है ॥ छबि के तरङ्गनि में झूलत किशोर पिय, हार तन हेरि हेरि खरे ललचात है। हित ध्रुव आरत में भयो भ्रम चाहतही, मिलै है कि नाहिं मन क्यों हूँ न पत्यात है ॥

॥ सवैया ॥

रहे चकि लाल चितै मुख बाल परयो तन रूप तरंगनि माहीं।
भाइ सुभाइ उठै छिनहीं छिन लालची नैनन क्यों हूँ अघाहीं ॥
योवन रंग भरे अँग अँग बिलास अनंत कहे नाहिं जाहीं।
बानिक आहि अनूप छबीली की पानिप की उपमा ध्रुव नाहीं ॥

॥ कबित्त ॥

मुख छबि कांति सो है उपमा को चन्द को है, रहे मोहिं जोहि जोहि नवल रसिक वर। शीशफूल शोभा कछु कहत न बनिआवैं, मनहुँ सुहाग छत्र झलकत शीशपर ॥ बेंदीलाल रही फबि कहा कहों नथ छबि, और सब रहे दबि जहाँ लगि दुतिधर। हित ध्रुव नैननि में अंजन बिराजै खरो, चंचल चपल मनमोहन को चित्तहर ॥

दोहा–कुँवरि छबीली अमित छवि, छिन छिन औरै और।
रहि गये चितवत चित्र से, परम रसिक शिरमौर ॥

॥ इति श्री शृङ्गार सत प्रथम शृङ्खला लीला की जै जै श्रीहित राधे ॥

॥ अथ दुतिय शृंखला प्रारम्भ ॥

दोहा—दुतिय शृंखला सुनत ही, श्रवननि अति सुख होइ ।
प्रेम रतन गुन रूप सों, मानो राखी पोइ ॥

॥ कवित्त ॥

दुलहिन दूलहु कुँवर दोऊ सहज ही, रसिक रँगीले लाल भीने रस रँगना । छवि के वसन अभरन अलवेले ताके, ठाढ़े हैं छबीली भांति कुंजन के अँगना ॥ सहज सुरङ्ग मृदु झलकैं चरन कर, रूपगुन पोइ बांध्यो प्रेमही के कंगना । हित ध्रुव सहज द्रगंचलनि गांठि परी, नयो चाव नई रुचि बढ़त अनंगना ॥

जैसी अलबेली वाल तैसे अलवेले लाल, दुहुंनि में उलही सहज शोभा नेहकी । चाहनि के अंबु दै दै सींचत है छिन छिन, आल वाल भई सेज छाया कुंज गेह की । अनुदिन हरी होत पानिप बदन जोति, ज्यों ज्यों ही वौछार ध्रुव लागे रूप मेहकी । नैननि की वारि किये हेरैं सखी मन दिये, चित्र से ह्वै रही सब भूली सुधि देह की ॥

प्यारे जू की जीवन है नवल किशोरी गोरी, तैसी भांति प्यारी जूकी जीवनि बिहारी है । जोई जोई भावै उन्हैं सोई सोई रुचै इन्हैं, एकै गति भई ऐसी रञ्चको न न्यारी है ॥ छिन छिन देखि देखि छबि की तरङ्ग नाना, प्रीतम दुहूँनि सुधि देह की बिसारी है । हित ध्रुव रीझि रीझि रहै रति रस भीजि, प्रीति ऐसी अब लागि सुनी न निहारी ॥

प्रीतम की प्रेम गति देखै भूली तन गति, बड़े बड़े नैना दोऊ आये प्रेम जल भरि । प्रिया लाल कहि लये लाइ उर जन,

चूँमि चूँमि नैना रही अधर दशन धरि। हित ध्रुव सखी सब देखत विवस भई प्रेम पट नाना रंग झलकैं सबनि परि। एक चित्र की सी खरी एक धर खसि परी, एकनि के नैनन तैं गिरैं नेह नीर ढरि ॥

नैनन के आगे प्यारी बिलपत है बिहारी; असुँवनि प्रेम जल धारा चली जाइरी। कौन प्रेम केहि फन्द परे हैं रँगीले लाल, अटपटी गति हेरे हियो अकुलाइरी ॥ हित ध्रुव चेति के किशोरी गोरी धीर धरि, नैना नेह नीर भरि लीन्हें उर लायरी। प्रेम को समुद्र फिरि गयो है सबनि पर, जहां तहां सखी धर परी मुरझाइरी ॥

॥ सवैया ॥

सेज सरोवर राजत है जल मादिक रूप भरे तरुनाई।
अंगनि आभा तरङ्ग उठै तहां मीन कटाच्छनि की चपलाई ॥
प्यासी सखी भरि अंजुल नैन पिये तें गिरी उपमा ध्रुव पाई।
प्रेम गयन्द ने डारे हैं तोरि के कंचन कंज चहूँ दिश माई ॥

॥ कवित्त ॥

सखीनि की गति हेरैं ठाड़े भये जाइ नेरे, करुना कै चितयो दुहुँनि तिन ओर री। अमी की सी धारा उर सींचि गये सबनि के, प्रेमसिंधु भौंरतें निकासी बरजोररी ॥ चहूँदिश राजै खरी महा रस रङ्गभरी, नैननि की गति बहै तृपित चकोररी। सहज तरङ्ग उठैं जलके से छिन छिन, हित ध्रुव यहै खेलि तहां निशि भोररी ॥

नई सेज नई रुचि नयो रूप नयो नेह, नेही नये अलबेले अति सुकुमाररी। नई लाज नयो रङ्ग नेह रँगी चितवनि, नई केलि को सिंगार सो है उर हाररी ॥ छिन छिन तृपा बढै पानिप अनूप चढै, मधुर विमल निज यहै प्रेम साररी। हित ध्रुव प्यारी

मानो छुई है न मनहू के, एकै रस दिन जहां विशद बिहाररी ॥

॥ सवैया ॥

सेज रँगीली रँगीली सखीन रची बहुरङ्ग सुरङ्ग सुहाई।
तापर बैठे रँगीले छबीले हँसै रस में सुख की सरसाई ॥
(स) चिकनि अञ्जन नैन लसै मेहँदी झलकै पद पान रचाई।
रूपकी दीपत तें ध्रुव कुंज फनूस सी ह्वै रही यों उर आई ॥

॥ सवैया ॥

फूलसों फूलनि ऐन रची सुख सैन सुदेश सुरङ्ग सुहाई।
लाड़िलीलाल बिलास की रासि औ पानिप रूप बढ़ी अधिकाई ॥
सखी चहूँओर बिलोकैं झरोखनि जाति नहीं उपमा ध्रुव पाई।
खंजन कोटि जुरे छबि के ऐंकि नैननि की नव कुञ्ज बनाई ॥
दोहा—नवल रङ्गीली कुञ्ज में, नवल रङ्गीले लाल।
नवल रङ्गीलो खेल रचो, चितवनि नैन बिशाल ॥

॥ कबित्त ॥

फूलनि की कुञ्ज ऐन फूलनि की रची सैन, फूलनि के भूषन बसन फूल मनमें। फूलही की चितवनि मुसकनि फूलही की, फूलि फूलि लपटात फूल के सदन में ॥ फूलनि की हाव भाव फूलनि को बढ्यो चाव, फूले फूल देखि ध्रुव उमै तन बन में। बरषत सुख फूल सुरत हिंडोरे झूल, फूलही की दामिनी लसत फूल घनमें ॥

आछी छबि सों छबीले बैठे हैं छबीली भांति, रतन निकुञ्ज माहिं बातें रति करहीं। परम प्रवीन प्यारो ताहू ते अधिक प्यारी, रसभरी चितवनि चितै चित्त हरहीं। नवल नवल भाइ बेध्यो है

नरम जाइ,आनन्द को रङ्गपाइ सुख रस ढरहीं। हित ध्रुव रीझि रीझि देबे को न कछू आहि,फिरि फिरि प्यारे लाल पाइन में परहीं॥

लाल पीत फूलनि की कुञ्ज सुख पुञ्ज मध्य, लाल पीत बागे तन दोऊ लाल पहिरैं। भूषन की द्युति प्रति अंगनि में झलकत मानों रूप सिंधुन तें उठति हैं लहिरैं। मन्द मन्द हँसि कहैं कछू रङ्ग भीनी बात, बेसरि के मोती दोऊ छबि सों थरहिरैं। हित ध्रुव रीझि रीझि रहे रति रस भीजि, अंचलनि सुधि भूलि परे सुख गहिरैं॥

प्रीतम किशोरी गोरी रसिक रँगीली जोरी, प्रेमही के रङ्ग वोरी शोभा कही जाति है। एक प्राण एक बेस एकही सुभाव चाव, एक बात दुहुनि के मनहि सुहाति है। एक कुञ्ज एक सेज एक पट ओढे बैठे, एक एक बीरी दोऊ खंडि खंडि खात है। एक रस एक प्राण एक दृष्टि हित ध्रुव, हेरि हेरि बढै चौंप क्यों हूँ न अघाति है॥

सांवरे किशोर लाल लाड़िली किशोरी गोरी, वाहां जोरी एकै संग नीके देखि पाये हैं। कञ्चन के कञ्जनि की कुञ्जनि में बैठे सखी, बीती रति केलि निशि तऊ न अघाये हैं॥ हारनि के ब्याज पिय छुयो चाहै उरजनि, प्रिया जानि अञ्चल सों तबहीं दुराय हैं। हित ध्रुव परम प्रवीन कोक अङ्गनि में, समुझि समुझि मन दोऊ मुसिकाये हैं॥

बैठे सेज एक संग भीजे रस अङ्ग अङ्ग, मनके मनोज रङ्ग मुदित करत हैं। अधिक अधीरताई देखि प्रिया मुसिक्याई, विवस किशोर पिय अङ्क में भरत हैं॥ चितै चितै नैन ओर छुवै लाल कुचकोर, भौंहन की मुरनि तें अतिही डरत हैं। हित ध्रुव ललित

कपोल नासा पुट चूमि अधरनि रस हित पाइन परत हैं ॥

दुलहिनि दूलहु किशोर इक जोर दोऊ, भूषन सहाने वागे बने अङ्ग अङ्गरी । चञ्चल नैन। विशाल अंजन वन्यो रसाल, कर पद रचे सो हैं मेहँदीको रङ्गरी ॥ सहज सहानी कुञ्ज रची है सहानी सेज लिये लाल बैठे हैं लड़ैती को उछंगरी । हित ध्रुव छिन छिन बढ़त सहानो नेह, रोम रोम उपजत छवि के तरङ्गरी ।

नवल निकुंज सुख पुञ्ज में रँगीले लाल, दुलहिनि दूलहु रसिक शिरमौररी । रति रस रंग साने ऐसे अंग लपटाने, परत न सुधि कछु कोहै श्याम गोररी ॥ महारस माधुरी को पीवत हैं ज्यों ज्यों दोऊ, बढ़त अधिक आली त्यों त्यों प्यास औररी । हित ध्रुव हेरि हेरि करत विचार सखी, कौन प्रेम कौन रूप जुरयो इक ठौररी ॥

रूपनिधि पानिप तरंगनि के चितवत, सैन रंग भरे नैन शोभित बिशालरी । आनन्द की कुंज ऐन राजत हैं प्रेम सैन, तापर रङ्गीले जगमगें दोऊ लालरी ॥ माधुरी मदन मोद मद के बिनोद करैं, लालच की राशि ललचात सब कालरी । हावभाव चतुरई छिन छिन नई-नई, हित ध्रुव रस बस कीन्हें बरबालरी ॥

॥ सवैया ॥

आनँद पुंज सुहाग की कुंज में सेज सुदेश सुरङ्ग सहानी ।
लै ध्रुव फूल अनूप दुकूल रची सुख मूल सुगंध सों सानी ॥
दूलहु दोऊ बिचित्र महा कलही कल कोककला कल ठानी ।
पै (परे) रस रङ्ग तरङ्ग अभंग भई लब रैनि विहात न जानी ॥

दोहा—अद्भुत कोक कलान की, नवल रङ्गीली केलि ।
हार जीत समुझति नहीं, बढ़त रहै रुचि बेलि ॥

॥कबित्त॥

माधुरी की कुंज तामें मोदकी लै सेज रची, तेहि पर राजै अलबेले सुकुमाररी। रूप तेज मोद के युगल तन जगमगै, हाव भाव चातुरी के भूषन सुढाररी॥ नेह नीर नैनन की सैनन में रहे भीजि, कौन रङ्ग बाढ़्यो जहाँ बोलिबोऊ भाररी। अतिही आसक्त सखी रही मोहि जोहि जोहि हित ध्रुव प्राननि को यहै है अहाररी॥

कमल निकुंज में गुलाब दल सेज रची, वागे कोलपत्र मृदु अतिही सुरङ्गरी। अंग अंग रहे भीजि सोधे ही के मोद मांझ, द्वै द्वै लर मोतिन के फौंदा बने संगरी॥ कोलपत्र वारि डारे नैन अरुनाई पर, चपलाई पर फीके खंजन कुरङ्गरी। फूले मुख देखि सखी रहिगई न्यारी न्यारी, छकी अनुराग ध्रुव सबके अभंगरी॥

फूलनि में फूले दोऊ संग सखी नाहिं कोऊ, रङ्गभीनी बतियनि कहि मुसिकातरी। आनँद के सिंधु परे नैन मैन रङ्ग भरे, हित ध्रुव रस ढरे उर लपटातरी॥ अधर अधर जोरे मिलि रही नैन कोरे, थोरे थोरे बेसरि के मोती थहरातरी। चली है उमड़ि शोभा बाढ़ी रतिपति गोभा, देखिलाल लालचहि लालचौ लजातरी॥

लाल कुंज लाल सेज लाल वागे रहे बन, राजत हैं दोऊ लाल बातनि के रङ्ग में। लालनि की लाल भूमि लाल फूल रहे झूमि, ललित लड़ैती लाल फूले अंग अंग में॥ लाल लाल सारी तन पहिरे सहेली सब, भीजे दोऊ प्रान प्यारे प्रेम ही के रङ्गमें। हित ध्रुव चितवत लोचनि सिरात तब, देखै जब प्यारी जू को पिय के उछंग में॥

जहाँ जहाँ राधा प्यारी धरति चरन पिय, तहाँ तहाँ नैनन

के पाँवड़े बनावही । महा प्रेम रङ्ग रंगे तिनही के प्यार पगे, सेवा सब अंगनि की करैं सचुपांवही ॥ मादिक मधुर पिये प्यारी को सुभाव लिये, छिन छिन भांति भांति लाड़नि लड़ा-वही । तैसियै प्रवीन प्यारी हित ध्रुव सुकुमारी, समुझ सनेह रस कराठ सों लगावही ॥

॥ सवैया ॥

नेह रँगी मद मैन छकी पिय छाती लगी जु चितै मुख ओरी।
गुनरासि किशोरी सुखाकर गोरी सुकोक कलानिके सिंधुझकोरी ॥
रङ्गत रङ्ग अनङ्ग अभङ्ग बढ़ै छिन ही छिन प्रीत न थोरी।
सखी हितकी चितकी नितकी ध्रुव सोसुख पीवति है निशिभोरी ॥

॥ कवित्त ॥

छिन छिन नई छबि पानिप रही है फबि, राधिका बल्लभ पर प्रान वारि डारिये । अंगनि झलक अरु भूषन झमक आली, देखत रँगीली भांति पलकैं न टारिये ॥ रङ्ग भीनी करै बातें बीच बीच मुसिकात, चाहन चपल चितै मोहीं सखी सारिये। प्रेम की अनूप गति भूली तहाँ ध्रुव मति, तन मन धन बुद्धि सबै बात हारिये ।

सुमिलि सुठौन अंग झलकत मैन रङ्ग, पानिप झलक बहु भांति झलकात है। हाव भाव माधुरी की मूरति रंगीली जोर, कानन लौं नैन कोर रंगही चुचात है। फूले द्रुम तर ठाढ़े प्रेम के तरङ्ग बाढ़े, हित ध्रुव मंद मंद दोऊ मुसिकात है। छबि की छलक मानो उछरि उछरि परै ऐसे, रूपआली कहो कैसे कहे जात हैं ॥

केशरी सुरङ्ग इक रङ्ग बागे दुहुँनि के यमुना के कूल कूल वाहाँ जोरी आवहीं । सखिन के यूथ साथ आवत हैं पाछे आछे

हित की निकट सखी संग लागी गावहीं ॥ कहूँ कहूँ ठाढ़े होइ देखत फूलनि छबि,मन भाये रंग लै लै प्रियहि बनावहीं । अति अलबेली भांति फिरैं अलबेले दोऊ,करत बिनोद ध्रुव जे जे मन भावहीं ॥

यमुना के कूल कूल जहां तहां फूले फूल,बांहां जोरी लटकत आवत हैं ओरहीं । सघन लतनि माहिं फूले फिरैं रंग भरे, कहूँ कहूँ ठाढ़े होइ फूलनि को तोरहीं ॥ थोरी सखी संग जहां सोऊ न्यारी होइ रही,हित ध्रुव देखि छबि पलकैं न जोरहीं । प्रेम रस राते माते छिनहूँ न होत हांतें,ऐसे मन मिलि रहे चले एक ओरहीं ॥

दोहा-एक प्रान मन एकही, एक प्रेम को चाव ।
एकै शील सुभाव मृदु, सहजहि बन्यो बनाव ॥

॥ कवित्त ॥

प्यारी के जँगाली बागो लाल के गुलाबी आली,फबि रहे जैसे मोपै कहत न आवही । मृगमद बेंदी इत बनी है सुरंग उत,हारि रह्यो मन कछु उपमा न पावही॥ कुँवरि के नथ सोहै बेसरि बिहारी जू के,कौन एक छबि बाढ़ी देखिवोई भावही । झलकत मोती लरैं कुन्दन की माल गरे,मुसकनि मंद ध्रुव सुख बरषावही ॥

अंग भरि पट भरि भूषन भवन भरि,चल्यो है उमड़ि छबि अंबु चहूँ ओररी । सखिन के नैन मीन परे हैं तरंगनि में, जानत न कहां होत आली निशि भोररी ॥ वृन्दाबन कुञ्ज कुञ्ज रह्यो पूरि सुख पुञ्ज,हँसी और मोरी मृगी भये हैं चकोररी। हित ध्रुव एक रस रसके समुद्र दोऊ,नागर अनंग केलि नवल किशोररी ॥

॥ सवैया ॥

फूलि चले दोऊ फूलनि कुञ्ज तें फूलन फूलन देखत आवैं।
धौं(मनो)छबि के विधिचंद अनन्द सों मंदहि मंद मिले सुरगावैं॥
नूपुर भूषन की झनकार सखी सुनिकै चहुँ ओर तें धावैं।
रूप सुधारस प्रेम सुरंगहि नैंन चकोररिनको ध्रुव प्यावैं॥

॥ कवित्त ॥

ललित रँगीली सेज पर दोऊ रंग भरे, हँसि हँसि लपटात सुख केलि करहीं। सहज अनन्द मोद मई तन दम्पति के,प्रेम रस मोद भीजि मृदु भुज भरहीं॥ मैन मोद के तरंग झलकत अंग अंग,लोचनि राजे सुरंग चितै चित हरहीं। हित ध्रुव सखी सब प्रेम रस मोद मातीं, रहति बिवस नैना नेह नीर ढरहीं॥

रसिक रँगीले दोऊ तहां नाहिं सखी कोऊ, हँसत मुदित मन उर लपटातरी। अधर मधुर मधुपान के विवस रहैं, जानते न रैनि दिन कहाँ धौं बिहातरी॥ रति रस सिंधु केलि तेहि रस रहे झेलि हित ध्रुव तऊ नेक नाहिन अघातरी। छिन छिन औरै और मोहनि के भाइ भेद, रीझि रीझि रस भींजि लाल हा हा खातरी॥

नवल रसिक पिय एक मन एक हिय,एकै बात है सुहात दुहुँनि के मनको। एक बैस एक जोर एक से भूषन पट, एक सी छबीली छबि राजत है तनको॥ रूपही के रङ्ग भीने लोचन चकोर कीन्हें,एकै संग चाहें ऐसे जैसे मीन बनको। हित ध्रुव रसिक शिरोमनि युगल बिनु आली को निबाहै एक रस प्रेम पनको॥

रूपकी अवधि दोऊ उपमा को नाहिं कोऊ,प्रेम सींव सुकु-

॥ अथ तृतीय शृंखला प्रारंभ ॥

दोहा—अब सुनि तीजी शृंखला, रति विलास आनन्द ।
तेहि रस मादिक मत्त रहें, विवि बृन्दावन चन्द ॥

॥ सवैया ॥

भांति भली नव कुञ्ज विराजत राधिका वल्लभ लाल बिहारी । प्रानन की मनि प्यारी बिहारनि प्यार सों प्रीतम लै उर धारी ॥ ज्यों (मनो) छबि चन्द्रिका चन्द के अंक में बाढ़ी महा छबि की उजियारी । त्यों (सखी) चहुं कोद चकोरी सखी (भई) ध्रुव पीवत रूप अनूप सुधारी ॥

केलि करैं सुकुमारी बिहारी बढ़ी छबि भारी कही नहिं जाई । लालची लाल रँगे रसाबल बिलोकि रहे ध्रुव सुन्दरताई ॥ पीवत नैन कटाक्षन माधुरी कौतुक एक न केहूँ अघाई । सो (हितै) हित हेरि लुभाय रह्यो रुचि को रुचि देखि कै आप लजाई ॥ भांति रँगीली छबीली के संग छबीलो बन्यो छबि की निधि पाई । सेज सहानी सुरंग बनी तिहि ऊपर केलि करैं सुखदाई ॥ त्यों (हिय सों) हिय लाय रहे लपटाय लसै अँग अंग में अँगनि झाई । है (मिली) ध्रुव द्वै सरिता छबि की मनों दीठि तहाँ न कहूँ ठहराई ॥

लाड़िली लाल बिलास करैं रचि सेज सुदेस सुरंग सुहाई । मंदहि मन्द हँसे रस मत्त भरे अनुराग महा छबि पाई ॥ कोक कलानि की घातनि माहिं बिचित्र बिनोद बढ़ावत माई । सखी चहुँ कोद लतानि लगी निरखैं ध्रुव प्राननि देत बधाई ॥ गोरीकिशोरी की अंगनि कांति लसै बहु भांति न जात बखानी ।

रङ्ग को रास रच्यो रतिरासि विलासि की औधिनि कुंजनि रानी॥
अंसनि बाहुँ जुरी ध्रुव मंडली नैननि निर्त्तत रैनि विहानी।
अंचलि चीर करैं श्रम जानिकै भूषन अंग तई भये गानी॥

॥ कबित्त ॥

मदन के रस मांझ मगन बिहार करैं, सुख के प्रवाह माहिं लाल मन भीनो है। श्रम जलकन मुख छबि के समूह मानो, नैन बैन सैन सर पंजर सो कीनो है॥ कहा लौं सँभारे पिय परे सेज वे सँभारि, लटकत शीश गहि लाय उर लीनो है। हित ध्रुव परम प्रवीन सब अंगनि में अधर अधर जोरि सुधारस दीनो है॥

सरस बिलास साने अंग अंग लपटानें, आरस में अरसाने नैना न अघाने हैं। जब जब छुटि जात फिरि फिरि लपटात, छांड़ि न सकत सेज ऐसे ललचाने हैं॥उठिवे को मन करैं पुनि तेहि रंग ढरैं घरी एक और जाउ कहि मुसिकाने हैं। हित ध्रुव ऐसी भांति छिन छिन सरसात, जानत न रैनि दिन केतिक विहाने हैं॥

भोर कुंज द्वार खरे अंग २ रंग भरे, अरुनाई नैननि की बरनी न जाति है। अधर अंजन लीक फबी है कपोल पीक, बसन पलटि परे शोभा झलकाति है॥ रस मसी अलबेली लटकी है लाल भर, सुंदरी की आरसी निरखि मुसिकात है। हितध्रुव ऐसी छबि देखतही रीझि रहे, प्रीतम की अखियां तो क्यों हूँ न अघाति है॥

॥ सवैया ॥

आज की वानिक लाल रँगीले की मोपै कछू नहिं जात बखानी।
लाड़िली रंग भरी सुकुमारि रही लपटाइ हिये अलसानी॥

रहे छुटि बार न हार सम्हार विहार बिनोद में रैन बिहानी। रूप बिलास सनेह निहारि सखी हित वारि पियें ध्रुव पानी ॥

॥ कबित्त ॥

भोर भये सांझ ही को धोखो है दुहुँनि मन सुपनो सो जेत कहै कहा बात है भई। ऐकि हम मिले नाहिं बैठे हैं अबहिं आये, ऐकि निशा आज कछु बीचही तें है गई॥ भूषन बसन छुटे देखै पुनि ससुझत, कौन एक भ्रम दशा उपजी है सुखमई। हित ध्रुव यहै जानैं मिल्यो अनमिल्यो मानैं, नैनन में रुचिही की प्रेम बेलि है बई ॥

नवल रँगीले दोऊ रसमें रसीले अति, सहज सुरङ्ग नये नेह अनुरागे हैं। देखि देखि प्यारो अनदेखी सीलगत मन, निमिषो न लागै नैन रैन सब जागे हैं॥ चाह भूली चाहि २ यद्यपि लड़ैती पाहि, ऐसे प्रेम रङ्ग रस मोद मद पागे हैं। तेहि सुख की निकाई ध्रुव पै कही न जाई, तृपितौ न आई उर उर जन लागे हैं॥

॥ सवैया ॥

न आदि न अंत बिलास करैं दोउलाल प्रिया में भई न चिन्हारी। है नई भांति नई छबि कांति नई नवला नव नेह बिहारी॥ रहे सुख चाहि दिये चित आहि परे रस प्रीति सु सर्वस हारी। रहै इक पास करैं मृदु हास सुनौ ध्रुव प्रेम अकत्थ कथारी॥

दोहा—नवल कुँवर दोउ रसिक मनि, उपमा दीजे कौन।
चितै चितै मुख माधुरी, ह्वै रहिये ध्रुव मौन॥

॥ सवैया ॥

पाग सुरङ्ग बनी है छबीली के भाँति अनूप सखीन बनाई।
त्यों(परयो)मन लालको प्रेमके पेंच में देखत पेंच रहे हैं लुभाई॥
बेंदी जराव की भाल दिये अरु नैंननि अञ्जन रेख सुहाई।
तैसोई नत्थ को मोती बन्यो छबि छाइ रही न कही ध्रुव जाई॥

चूंदरी लाल सुरङ्ग छबीली की ओढ़े छबीले महा छबि पाई। केशन (कच) गूँथि (सुदेश) रची रुचि मांग (अ) रु नैनन अञ्जन रेख बनाई॥ बेंदी दई हँसि लाड़िली रँग सो बेसर लै अपनी पहिराई। रूप बढ्यो मन मोद चढ्यो ध्रुव देखत नैन निमेष भुलाई॥

पाग जँगाली बनी है किशोरी के केशर रंग किशोर कै माई।
बेंदी मृगमद सोहै इतै उत लाल रसाल अनूप बनाई॥
बेसरि नथ्थ बनी झलकै ध्रुव खोज रह्यो उपमा नहिं पाई।
रूप तरङ्ग चितै मन मोद सखी चहुँकोद रही है लुभाई॥
चूंनरी लाल बनी है बिहारी के पाग बिहारन के सिर सोहै।
हैं छके (नव)नेह महारस मेह छकै सखी आइ जोई छबि जोहै॥
बेसरि पीयके नथ्थ सुतीय के बानिक रूप अनूपम मोहै।
भाँति रँगीली कही न परै सखि या छबिकी उपमा कहो को है॥

॥ कबित्त ॥

प्यारी जूकी सारी अति प्यारी लागै प्रीतम को, सोंधे भीजी अँगिया सुरङ्ग उर धारी है। नवल रँगीली जूके भूषन बिहारी लाल,पहिरत बाढ़ी फूल जात ना सँभारी है॥ जोई कछु प्रिया जूके अंगन परस होत, सोई प्रान जात होत ऐसी प्यारी

प्यारी है। हित ध्रुव प्रेम बात कैसेहू न कही जात, जानै सोई जिहि शिर मोहनी सी डारी है।

॥ सवैया ॥

उज्वज स्याम सुरंग सुहावनी लाज भरी अखियां अति सो है। प्रेम भरी रस भाइ भरी ध्रुव प्यार भरी पिय की दिशि जो है॥ बाढ़्यो (अ) नुराग सुरंग सुहाग सबै अंग प्रीतम प्रानन मोहै। भा लई (छबि) छीनि प्रवीन बिहारनि खञ्जन मीन कुरंगनि को है॥

॥ कबित्त ॥

खेलत बसंत होरी नवल छबीली जोरी, उड़त गुलाल अनुराग को सुरंग री। मृदु मुसकानि उर फूलएई फूल भये, हाव भावसोंधे भीजे सोहैं अंग अंगरी॥ नैननि की चितवनि छिरकनि प्रेम नीर, सींचत हैं पिय हिय भरी रस रंगरी। हित ध्रुव भीजे सुख वारिध विलास हास, सोई सुख देखैं सखी दिनहि अभंगरी॥

॥ सवैया ॥

खेलत फाग भरे अनुराग सों लाड़िली लाल महा अनुरागी।
तैसिये संग सखी सुठि सोहनी प्रेम सुरंग सुधा रस पागी॥
हैं(चलै)पिचकारी चितौन छबीली की प्रीतमके उर अंतर लागी।
रंग को ओर न छोर सनेह को देखि सबै उपमा ध्रुव भागी॥
सखीन की मंडली मध्य जु खेलत रङ्ग बिहारनि संग बिहारी।
लैलै नव कुंकुम रंगनि छींटत बंदन डारत नैन सँभारी॥
परै तहीं बूंद जहीं २ चाहिये ऐसे प्रवीन सिंगार सिंगारी।
बढ़्यो ध्रुव रंग तरंग अनंग सनेह की राशि रहे हैं निहारी॥

लाड़िलीलाल निकुंज में खेलत आनँद प्रेम बिलास की होरी। हैं अँखियाँ पिचकारी भरी ध्रुव प्यारसों छोड़त प्रीतम गोरी॥ मैन को खेल बढ़यो सुख पुंज बजै धुनि भूषन (की) थोरी ही थोरी। भो (भयो) छबिको छिरकाव मनो जब साँवरे ओर हँसी मुख मोरी॥

॥कवित्त॥

हँसजा बिमल नीर सुन्दर सुदेश तीर, निर्त्तत मयूरी मोर आनँद अधीररी। कमल निकुञ्ज कुंज मधुपनि होत गुंज, बरषत सुख पुंज रटै पिक कीररी॥ खेलैं तहाँ रस राशि बिबिध बिनोद हास, सुरंगित भये ध्रुव अंगनि के चीर री। बंदन डारत प्यारी छिरकै लालबिहारी, रङ्गन की बूँदे बनी सुभग शरीररी॥

सोरठा—खेलत कामिनि कंत, भीने रङ्ग अनुराग में।
अद्भुत रास बसन्त, छबिहू तहँ भूली फिरै॥

॥सवैया॥

खेलत रास दोऊ रस राशि विचित्र सुढंग कलानि मैं माई।
त्यों नई (नई)भांति नई गत लेत हैं निर्त्त हूँ रीझितहाँ बलिजाई॥
कंचन मंडल में प्रति विंबित अंगनि रूप तरंगनि झाई।
ज्यों(मनो)ध्रुव चंद उभै छवि के विधु ऊपर निर्त्तत यों उरआई॥
खेलैं मनो अनुराग के बाग में बांहु लता छवि अंसनि दीने।
चहूँ दिशि राजै सखीन के बृन्द विचित्र बनाइ सिंगारहि कीने॥
सारी सुही सब एकहि रङ्ग फबी पहिरे कर कंजन लीने।
मध्य किशोर किशोरी बने दोउ रूप सने ध्रुव रंग में भीने॥

॥कवित्त॥

माधुरी तरंग रंग उपजत छिन छिन, रोम रोम प्रति शोभा रही है लुभाइ कैं। फूलनि को छांड़ि २ आवत मधुप धाइ तन की सुबास अति रही बन छाइ कैं॥ रूप की अनूप कान्ति कैसेहू न कही जात, नख आभा पर चन्द गयो है लजाइकै। हित ध्रुव पिय मन यहै शोच रहै दिन, ऐसी सुकुमारी क्यों हूँ देखी न अघाय कैं॥

प्यारी जूकी भौंहनि की सहज मरोर मांझ, गयो है मरोरयो मन मोहन को माईरी। ऐसे प्रेम रस लीन तिलहू में भये छीन, जैसे जल बिन कंज रहै मुरझाइरी॥ धीरज न नेक धरै नैना नेह नीर ढरै, बिवस पगनि ओर ढरयो शीश जाइरी। व्याकुल बिहारीलाल चितैअङ्क भरेबाल,पाये प्रान तब ध्रुव मृदु मुसकाइरी॥

नागरी नवल गुनसीव सब अंगनि में, लेइ भाइ जानिवे को नागर प्रवीन है। रूप अरु योवन की जैसी ये गरूरताई, तैसे उत रसिक शिरोमनि अधीन है॥ नेकु मुरि बैठे जब व्याकुल ह्वै जात तब, सहजहि गति ऐसी जैसे जल मीन है। रंच हँसि चाहतही रोम२ होत फूल हित ध्रुव नेह जहाँ सदाई नबीन है॥

प्रेम के तरंगनि में प्यारी जूको मन परयो, कछुक रुखाई छबि औरै भांति भई है। मानि पिय मानि लीन्हों हियो गह-बर दीन्हों, दीरघ उसांस लेत भूलि सुधि गई है॥ प्रान प्यारे लाल जू की गति हेर फेरि मन, उरसों रही है लाइ आँखैं भरि लई है। हित ध्रुव दुहुँन को प्रेम कैसे कह्यो जात, जानत हैं वेई छिन२ प्रीति नई है॥

जौलौं प्यारी बतरात चितै २ मुसिकात, पिय हिय लपटात

तौही लगि शांति है। प्रेम नेम में प्रवीन याही रस भये लीन, जैसे जल माहिं मीन प्यारो ऐसी भांति है॥ रुचिही की बेलि नई नैननि में आनि बई, बाढ़त है रसमई फैली अति जाति है। आनँद के फूल ताहि लागे अनुराग पागे, छिन २ डहडहे औरै ध्रुव कांति है॥

जहाँ जहाँ पग धरैं माधुरी को मन हरैं, रूप गुन पाछे फिरै ऐसे सुकुमाररी। हाव भाव सिंधु के तरङ्ग उठैं अङ्ग अङ्ग, नेकही की चितवनि मोहे कोटि माररी॥ छिन छिन नई नई पानिप अनूप कांति, देखें तन झलकाति रहे न सँभाररी। हित ध्रुव चित चोर नवल रँगीलो जोर, निशि दिन सखियनि कीने उर हाररी॥

॥ सवैया ॥

लाड़िली रंग भरी सुकुमारि सिंगार सखीन अनूप करयो है।
रैन बढ़यो ध्रुव रङ्ग को खेल महासुख में रस सिंधु तरयो है॥
रहे छुटिबार टूटी लर हार सु अंग को अङ्गनि रङ्ग ढरयो है।
मैंन रची फुलवारि में मानहुँ प्रेम को वारन आन परयो है॥

सोरठा—फूल सों जब मुसिकाति, चितै लाड़िली लालतन।
को बरनै यह भांति, प्रीतम हूँ रहे भूलि तहँ॥

॥ सवैया ॥

मैंन की वेलि बढ़ी पिय हीय में फूल मनोरथ बाढ़ै अपारा।
एकहि रङ्ग सुरङ्ग रहे दिन सींचे करैं रस प्रेम की धारा॥
रीझि के चाहि रही सुकुमारी विहारी किये अपने उर हारा।
देखत ही ध्रुव या छवि को शिर नाइ लजाइ गये शत मारा॥

आज की छबीली छबि छटा चित वेधरही, कही नहीं जात कछू औरै गति भई है। नवल युगल हँसि चितवति ठाढ़ी पास, मानो तेहि ओर नई नेह वेलि बई है॥ हित ध्रुव नीर जैसे नीर भरे ढरे नैन, बोलत न कछू बैन चित्र सी ह्वै गई है। नैंना छाइ लीन्हें रूप परी तब प्रेम कूप, वाकी गति जानै सोई जेहि अनभई है॥

॥ सवैया ॥

आलिन (सखीन की) प्रानन की मनो मूरति लाड़िली लाल बनाइ सँवारे। जीवति हैं सब देखि दुहूँनि को राखत ज्यों अखियांनि में तारे॥ खान (अ) रु पान बिलास बिनोद अहार यहै तिनके सुख सारे। रूप बिलास सनेह की सीव निहारि रही ध्रुव नैन न टारे॥

रूप की राशि किशोर किशोरी रँगे रस केलि निकुञ्ज बिहारा।
मातें अनङ्ग प्रवीन सबै अँग फूल सरीखहु ते सुकुमारा॥
बसो उर नैनन में दिन रैन नशो मनके जिते आहिं बिकारा।
जांचत बात न और कछू ध्रुव देहु प्रिये रस प्रेम की धारा॥

॥कबित्त॥

सहज सुभाव परयो नवल किशोरी जू को, मृदुता दयालता कृपालता की रासि है। नेकहू न रिस कहूँ भूलेहू न होत सखी, रहत प्रसन्न सदा हिये सुखहास है। ऐसी सुकुमारी प्यारे लाल जू की प्रान प्यारी, धन्य धन्य धन्य तेई जिनके उपासि है। हित ध्रुव और सुख जहां लगि देखियत, सुनियत तहां लगि सबै दुख पासि है॥

॥ सवैया ॥

ऐसी करो नवलाल रँगीले जू चित्त न और कहूँ ललचाई।
जे दुख सुक्ख रहे लगि देह सो ते मिटिजांइ औ लोक बड़ाई॥
संगति साधु बृंदावन कानन तो गुन गाननि माँझ बिहाई।
छबि कञ्ज चरन तिहारे बसो उर देहु यहै ध्रुव को ध्रुवताई॥

दोहा—शीशफूल सिखि चन्द्रिका, सदा बसो मनमोर।
अरु जब चितवति लाड़िली, पिय तन नैनन कोर॥
इकसत बिंस (अ) रु पञ्च मिलि, भये सवैया आहि।
मन दै यह शृङ्गार सत, छिन छिन प्रति अवगाहि॥
नव किशोरता माधुरी, एक वैस रस एक।
या रस बिनु कहिये न कछु, धरिये ध्रुव यह टेक॥
रस पति रस शृङ्गार को, यह रस है शृंगार।
धन्य धन्य तेई जु नर, जिनके यहै बिचार॥
सबतें कठिन उपासना, प्रेम पंथ रस रीति।
राई सम जो चलै मन, छूटि जाइ ध्रुव प्रीति॥
प्रेम भजन बिन स्वाद नहिं, भजन कहा बिन स्वाद।
देत प्रान मृग बिवस ह्वै, सुनत कपट को नाद॥
या रस सों जे रहे रँगि, तिनकी पद रज लेहु।
जिन समुझी यह बात ध्रुव, सफल करी तिन देहु॥
भये कवित्त शृंगार के, इकसत अरु पच्चीस।
दोहन मिलि सब ठीक भये, इकसत दश चालीस॥

॥ इति श्री शृङ्गार सत को तृतीय शृङ्खला संपूर्ण की जै जै श्रीहित हरिवंश॥

—❀❀❀—

॥ अथ मन श्रृंगार लीला प्रारम्भ ॥

दोहा—हरिवंश हंस आवत हिये, होत जु अधिक प्रकास ।
अद्भुत आनन्द प्रेम को, फूलै कमल बिलास ॥
नवल किशोरी सहज ही, झलकत सहजहि जोति ।
उपमा दै बरनों तिनहिं, यह ढीठो अति होति ॥
रूप रंग को सार तन, सार माधुरी अङ्ग ।
चन्दसार को मोद मुख, कांति सार को रङ्ग ॥
ललित लड़ैती कुँवरि को, बरनो कछु इक रूप ।
पिय तन मन जो पूरि रह्यो, मोहन सहज सरूप ॥
अतिहि सोहनी मोहनी, पिय मन सुख की सीव ।
उपमा सब सेवति तिनहिं, कीन्हें नीचो ग्रीव ॥
नवल छबीली बदन मनु, आनन्द मोद को फूल ।
इक रस फूल्यो रहत दिन, पिय तन यमुना कूल ॥
कुंडल दुति अरु मुख प्रभा, राजत ऐसी भांति ।
झल मलात मिलि एकठा, मनु रवि शशि की कांति ॥
चिकुर चन्द्रिका रचि रुचिर, रची मनोहर बानि ।
मनो घटा शृंगार की, जुरी चन्द पर आनि ॥
लटकनि बेनी की ललित, फूलनि गुही सुढार ।
मनो हाँसि युत मेरु तें, उतरति रविजा धार ॥
शीश फूल रह्यो झलकि कै, तैसिये मांग सुरङ्ग ।
मानो छत्र सोहाग को, लिये अनुरागहि संग ॥
निरखि अरुन बेंदी छविहि, मति की गति भई मूक ।
मानो विधु पूज्यो सखिन, आनि फूल बन्धूक ॥

बङ्क भृकुटि कल सोहनी, अलक जुरी तहँ आनि।
मानो पिय मन मीन को, वंसी राखी वानि॥
लोइनि तो श्रवननि लगे, त्रिवि कुंडल झलकात।
मनो कञ्ज हित जानिकै, पूछन गये कछु वात॥
अंजन युत चंचल चपल, अंचल में न समाहिं।
अति विशाल उज्वल सुरँग, चुभे लाल मनमाहिं॥
सहजहि सूक्षम अलक छुटि, परी पलक पर आइ।
खंज(न) मीन मनु ग्रहनको, बिधुदई पाशि चलाइ॥
श्रवननि छवि ताटंक दुति, रहि गंडनि झलकाइ।
मनो भान आभापरी, कंज दलनि पर आइ॥
कहि न सकत नासा बनक, अधर सुरंग निहारि।
मानो शुक झुकि छकि रह्यो, मनमें कछू बिचारि॥
वेसरि की थरहनि छबि, मीन रका मनु ऐन।
पिय हिय हृदि में मीन मन, ताको चितवत लैन॥
अरुन श्याम उज्वल दशन, अति छबिसों झलकाहिं।
कंज में अलि मुक्तनि सहित, मनु रँगे बंदन माहिं॥
शोभा निधि वर चिबुक पर, श्याम बिंदु सुख देत।
रहि गयो अलि शावक मनो, कंज कली रस हेत॥
नील विंदु उपमा दुतिय, कह कहौं अतिहि अनूप।
मानो पियमन बिवस ह्वै, पर्‌यो आनि छबि कूप॥
द्वै लर मोतिन कंठ बनी, डारी सब छबि निंद।
मानो पूरण चन्द पर, प्रगट्यो दुतिया इंद॥
जलज हार हीरावली, बिच बिच मनि झलकाहिं।
मानो मैन तरङ्ग उठै, रूप सरोवर माहिं॥

रतन खचित चौकी ललित, जगमग जगमग होति ।
बिबिगिरि कञ्चन बीच मनु, छबि रबि कियो उदोति ॥
भूषन युत मृदु भुजनि को, निरखि लाल रहे भूलि ।
मानो छबि की लता द्वै, फूलनि सो रही फूलि ॥
उरज पीन कटि छीन छबि, नवकिशोर रहे चाहि ।
मानो आनँद वेलि सों, लागे सुख फल आहि ॥
आई उपमा और उर, बस किये मोहन मैन ।
मुंदे कञ्ज देखत मनो, खुले कमल पिय नैन ॥
अति सुदेश अँगिया बनी, सोंधे सनी सुरंग ।
पिय मन अलि तहँ भ्रमत रहै, तजत न कबहूँ संग ॥
नीलाम्बर छबि फबि रही, मनमें रहत बिचार ।
मानो सार श्रृङ्गार को, ओढ़े वर सुकुमार ॥
सारी पीरी जरकसी, झलकत छबि सों जोति ।
कुन्दन की बरषा मनो, कालिंदी पर होति ॥
जब सुरंग सारी सुही, पहरत भरी सुहाग ।
अंतर भरि मनु उमगि कै, प्रगट्यो पिय अनुराग ॥
राजत सुन्दर उदर पर, अद्भुत रेखा तीन ।
देखत सींवा रूप की, ललन भये आधीन ॥
शोभित नाभि गँभीर ढिग, रोमावलि अनुसार ।
मानो निकसी कमल तें, सूक्षम रेख श्रृङ्गार ॥
पृथु नितम्ब ऊपर बनी, मणि मय किंकिनि जाल ।
फिरि आई चहूँ ओर मनु, छवि दीपन की माल ॥
अति सुढार सुठि सुमिलि बनी, मणिमय जेहरि चारु ।
चलन छबीली भांति पर, मत्त मरालनि वारु ॥

पायल नूपुर की झलक, होति है मन्दहि मन्द।
मनु सावक कल हंस के, बोलत भरे अनन्द॥
चरन कमल कोमल सुरँग, मधुप लाल मन मत्त।
दृग कंजनि छूवावत रहत, कर कमलनि सेवंत॥
मेंहदी को रंग फबि रह्यो, नख मणि झलक अपार।
मनो चंद कमलनि मिले, रही न और सँभार॥
करि शृँगार दियो डीठि डर, श्यामल बिंदु कपोल।
मुसिकनि छबि बदलै मनो, राख्यो पियमन ओल॥
अपनो यश कछु रुचत नहिं, ऐसी लाल की बात।
प्रान प्रिया गुन सुनतही, अमित करन ह्वै जात॥
सब अङ्ग अद्भुत भांति कोउ, सहज रूप की खानि।
एती मति मोपै कहां, नख छबि सकौं बखानि॥
उपमा तो सब जे कही, ऐसी चित्त बिचार।
जैसे दिनकर पूजिये, आगे दीपक बार॥
रूप माधुरी सहजही, झलकत नये तरङ्ग।
उपमाहू सब सुफल भई, बड़ी ठौर के संग॥
याही ते कछु इक कही, पाइ बात को फेरि।
जैसे रति इक हेम ते, समुझै शोभा मेरि॥
अंग अंग मृदु माधुरी, अतिहि रसीली आहि।
तैसे मधुर किशोर पिय, जीवत तिनको चाहि॥
ललित लडैती कुँवरि बिनु, और न कछू सुहाइ।
नेक नैन की कोर के, लीन्हों चित्त चुराइ॥
अमित कोटि ब्रह्मांड की, प्रभुता मन लगी थोर।
करजोरे चितवत रहै, बंक दृगनि की कोर॥

देखौ बल या प्रेम को, सर्वस लीन्हों छीन ।
महा मोहन गज मत्त पिय, बिनु अंकुश बस कीन ॥
अखिल लोक की साहिबी, दीन्हीं तृण ज्यों डारि ।
छिन छिन प्रति सेवा करैं, रहे अपनपौ हारि ॥
पानी पान शृंगार सब, करत आपने हाथ ।
बँधे जु प्रेम अनंग गुन, फिरत प्रिया के साथ ॥
प्रेम खेल ऐसे भयो, जैसे खेलत यूप ।
तन मन धन सब हारि कै, भये दीन रस भूप ॥
नवकिशोर के प्रेम की, बात कही नहिं जाइ ।
सहचरि जे निज कुँवरि की, तिनके परत हैं पाइ ॥
नैन सैन चितवनि चपल, मन मुक्ता छबि ऐन ।
सखी सबै मनु हंसनी, चुगत है भरि भरि नैन ॥
पिय की प्रीति की रीति सुनि, हीये होत हुलास ।
दासी जहँ लगि प्रिया की, ह्वै रहे तिन के दास ॥
अब सुनि प्यारे लाल की, छबिहि नाहिने ओर ।
बँधे लाड़िली प्रेम सों, ऐसे रसिक किशोर ॥
कुँवर माधुरी रूपकी, सोऊ कहत बनै न ।
घटि बढ़ि कहे न जात हैं, जैसे दोऊ नैन ॥
मोहन के मोहन सबै, अंग रहे झलकाइ ।
नेक चितै मुख माधुरी, मैन गिरत मुरझाइ ॥
प्रथमहि प्रियहि शृंगार कै, पिय को करहि शृंगार ।
शोभा उभय निहार सखि, करत प्रान बलिहार ॥
इक रस रूप समान वय, दंपति नवल किशोर ।
नख शिख बानिक एक सी, छैल छबीली जोर ॥

द्वै मूरति शृंगार की, पुनि कीन्हौं शृंगार।
मिले रूप के सिंधु द्वै अब को पावै पार॥
अब सुनि रंग बिहार की, बात न कबहु अघात।
इक रस प्रेम छके रहैं, और न कछू सुहात॥
ललित रँगीली सेज पर, ललित रँगीले लाल।
राजत अद्भुत भांति सों, संग छबीली बाल॥
लाल बल्लभा लाड़िली, नवल छबीली भांति।
प्रेम प्यार के चाइ सो, प्रीतम उर लपटाति॥
सब अँग सुन्दर सोहनी, रूप राशि सुकुमारि।
महा मोहन गज सोहनी, बस किये नेकु निहारि॥
लाल रँगीली संग रँग, करत बिनोद अनंग।
कबहुँ बात हँसि जात बिच, कबहूँ भरत उछंग॥
कबहूँ कुच कमलनि छुवत, भौंह भंग ह्वै जात।
अति प्रवीन रस खेल में, चूकत नहिं कोऊ घात॥
अंत लाल पाइनि परत, मृदु मुख हाहा खात।
ऐसे बचनन सहचरी, सुनि सुनि सब बलि जात॥
विविधि भाँति रति केलि रँग, छिन छिन औरै और।
करत रँगीले लाल दोउ, परम रसिक शिरमौर॥
कमल कपोलनि पर कछू, लागी पीक सुरंग।
मनो छलक अनुराग की, उछरि परी छबि संग॥
अरिल्ल–बाढ़ी अतिही चोंप न उरहि समात है।
समुझि लाड़िली ताहि हिये लपटात है॥
नवल रँगीली केलि छबीली भांति है।
पुनि हां तिन के रस की बात कही क्यों जाति है॥

दोहा—तन तो सिंधु है रूप को, लाल नैन मन मीन।
खेलत तहँ आनंद सों, नाभि भँवर घर कीन॥
कुञ्ज कुञ्ज प्रति द्रुमनि तर, करैं बिलास सुख केलि।
फैली वृन्दा विपिन में, बेलि रंग रति केलि॥
ताके लागे फूल द्वै, कोमल सुरँग सुबास।
ईषद मुसिकनि सहज की, करत मंद मृदुहास॥
पुनि फल उरजनि सो लगे, प्रीतम कर छबि देत।
मानो कुन्दन घटनि सों, नील कमल ढँकि लेत॥
छबि निधि दुलहिनि नायका, नायक रूप निधान।
प्रेम रङ्ग तन मन रँगे, ह्वै रहे एकै प्रान॥
ललित कुँवरि बरनो कहा, नख शिख रूप अपार।
नैन कोर पाछे लगे, फिरत कुँवर सुकुमार॥
मन अटक्यो छबि अलक सों नैन बदन तन रङ्ग।
श्रवन लगे बैनन मधुर, नासा सौरभ अङ्ग॥
अंग अंग पिय के सबे, परे प्रेम के फन्द।
रुचि लै सुख जोवत रहैं, श्री वृन्दाबन चन्द॥
भई भीर छबि की तहां, और प्रीत उर माहिं।
पर्‌यो लाल मन जाइ तहँ,निकसन पावत नाहिं॥
अति उदार सुकुमार तन, रसिक शूर शिरमौर।
नैन सैन बानन छयो, छाड़ी नहिं तऊ ठौर॥
नैन श्रवन नासा अधर, चिबुक रूप की खानि।
गहि लीन्हों पिय मन सवनि,सोंप्यौ प्रेम के पानि॥
अब सुनि फल शृंगार को, नवल रङ्ग रस सार।
दुलहिन दूलहु लाल की, रति बिलास ज्योंनार॥

लाज बसन तजि न्हाइ मनु, पानी पानिप माहिं।
चाह मदन की छुधा बढ़ी, चितै नवल मुसिकाहिं॥
कुञ्ज रसोई रचि दयो, चौका सेज बनाइ।
अतिं दृढ़ चौकी प्रेम की, तापर बैठे आइ॥
हार थार बिच झलकि रह्यो, नाहिंन इंदु समान।
पहरे धोती फूल की, राजत मिथुन सुजान॥
सुन्दर रुचि की खीर भई, मिश्री मुसिकनि थोर।
डोरा दयो घृत नेह को, स्वादहि नाहिंन ओर॥
पुनि फल उरजनिकी झलक, लेत लाल मन चोर।
करजनि के जब छुवत पिय, कछू झुकनि मुखओर॥
परिरम्भन चुम्बन अधर, महा मधुर रस पाइ।
बीच सलोनी चितवनी, लेत है सुखहि बढ़ाइ॥
हाव भाव लावरायता, विंजन अंग निहारि।
उज्वल हांसि कपूर की, पुट दै रचे सँवारि॥
भौंह वंक नैनन झुकनि, कर धूनन सुख नेत।
अद्रक मिरचि अँचार ढिग, ज्यों रुचि को करिदेत॥
नैनन रसना के रसिक, जेंवत तृपित न होइ।
अद्भुत गति या प्रेम की, कहि न सकत है कोइ॥
भाजन भूषन अंग द्युति, श्रम जल छबिहि न ओर।
पलक कटोरनि के पियत, श्यामा श्याम किशोर॥
बीरी मुख अनुराग की, स्वांस पवन आनन्द।
अति सुबास मृदुहाँस चित, होत मंद ही मंद॥
पौढ़े प्रीति प्रयंक पर, ओढ़े प्यार को चीर।
गौर श्याम अंगनि मिले, ज्यों द्वै धारा नीर॥

परम रसिक रस राशि दोउ, परे प्रेम के फन्द ।
रहत भरे आनन्द में, युग चकोर बिवि चन्द ॥
सखी चकोरी अति सरस, द्वै शशि छबि रस रंग ।
पल पल पीवत दृगन भरि, होत न कबहूँ भंग ॥
हित ध्रुव सखियनि शरन गहि, ऐसे मन अनुसार ।
औरहु तिनको संग गहि, जिनके यहै बिचार ॥
रचि कीन्हीं शृङ्गार मनि, जो लै राखी शीश ।
ताके हिय में बसत रहै, श्री वृन्दावन ईश ॥
जेहै मणि शृङ्गार की, सब गुन भरि अनुराग ।
पहिरी पिय हिय प्यार सों, पोइ प्रेम के ताग ॥
अद्भुत सरिता प्रेम की, वृन्दाबन चहुँ ओर ।
नव नव रंग तरँग उठै, मदन पवन झक झोर ॥
ऐसे रसिक किशोर पिय, ध्रुव के हिय में राखि ।
अद्भुत रस की माधुरी, नैननि रचना चाखि ॥
दोहा कहे शृंगार मणि, साठि चौंतिस अरु आठ ।
प्रेमा तिहि उर झलकि रहै, जो करि है ध्रुव पाठ ॥

॥ इति श्री मन शृङ्गार लीला की जै जै श्री हित हरिवंशजी ॥

॥ अथ हित शृंगार लीला प्रारम्भ ॥

दोहा—सहज सुभग वृन्दा बिपिन, मिथुन प्रेम रस ऐन ।
सेवत शरद बसंत नित, रति युत कोटिक मैन ॥
फूली फूलनि की लता, रही यमुन जल झूमि ।
तैसिय अद्भुत झलमलै, कञ्चन मणि मय भूमि ॥
जलज थलज विकसत सहज, नील पीत सित लाल ।
हेम बेलि रही लपटि कै, सुन्दर सुभग तमाल ॥

नव निकुंज मंजुल बनी, सनी सनेह सुवास।
सुमन सुरङ्ग अनेक रँग, छाई विविधि विलास॥
अति सुरङ्ग बहु रङ्ग दल, कोमल कमल गुलाल।
रची रँगीली सखिन मिलि, सेज सुरंग रसाल॥

सो०—करत मिथुन मृदुहांस, मन मन अति अनुराग सों।
अधर दशन छविरास, रहे तंबोल रंगि भीजि सखि॥

दोहा—विपिन देश चहुँदिश बहै, सरिता श्याम सुदेश।
प्रेम राज राजत तहां, इकछत युगल नरेश॥
दुलहिनि रानी सहजही, दूलहु नृपति किशोर।
रूप छत्र शिर पर फिरै, आसन योबन जोर॥
कुञ्ज धाम सखियनि सभा, प्रजा हंस मृगमोर।
बसत निरंतर चैन सों, कीन्हें नैन चकोर॥
फुलवारी आनंद की, फूली छबि अँग अंग।
षटऋतु मालिन सुख फलनि, देति दिनहि बहुरंग॥
मैन रंग सतरंज तहँ, खेलत दोउ सुकुमार।
हाव भाव चितवनि चलनि, छिन छिन चाह अपार॥
मन नृप मंत्री चोंप सों, रचि कीन्हीं रुख चाल।
उरज गयंद तुरंग दृग, पाइक अँगुरी लाल॥
तिल कपोल पर अलक छबि, मुसिकनि कही न जात।
जब चितई पिय लाल तन, भये नैन सहमात॥
रति नागरि दै अधर रस, हेत विसात सँवारि।
आलिंगन चुंबन मनो, खेलत फेरि सँभारि॥
नव किशोर सुकुमार तन, बिलसत प्रेम विलास।
अलबेली चितवनि हँसनि, नौतन नेह हुलास॥

॥ सवैया ॥

नेह निकुञ्ज में रूप की मूरति खेलत प्रेम बिलास बिहारी ।
चोंप की चालनि नैन बिशालन चाहि रहे ध्रुव प्रीतम प्यारी ॥
रँगे रस सार दोऊ सुकुमार महा रिझवार रहे मनहारी ।
हेरत ठाढ़ी सखी सुख सींव दिये भुज ग्रीव निमेष बिसारी ॥

दोहा—सहज सरस सुंदर बदन, चंद्र बिम्ब मनो आहि ।
रूप किरन हित रसिक पिय, चख चकोर रहे चाहि ॥
सग बगे केश फुलेल में, छुटे अधिक छबि देत ।
कछु चितवनि पुनि मृदु हँसनि, प्रीतम मन हरिलेत ॥
बेंदी श्याम सुहावनी, शोभित गौर लिलार ।
प्रगट सुधाकर पर भयो, मनो रूप श्रृंगार ॥
पल उतंग उज्वल अरुन, अति सलज्ज रस ऐन ।
करनाइत लोने चपल, कजरारे कल नैन ॥
भौंहनि बिच फगुवा फब्यो, अरुन भये छबि कौन ।
बैठ्यौ है अनुराग मनु, निज श्रृंगार के भौन ॥
नासा पुट डोलत जलज, पल पल स्वांसा सङ्ग ।
यह छबि निरखत नवल पिय, होत नैन गति पङ्ग ॥
राजत बाम कपोल तिल, अलप अलक तिहि पांहि ।
डारयो मनो श्रृंगार फँद, खंजन नैनन चाहिं ॥
दशन दमक छबि कह कहौं, मुसिकनि बरषत फूल ।
अद्भुत अंगनि माधुरी, देखत भूली भूल ॥
फब्यो चिबुक पर सहजही, बिंदुका अतिहि अनूप ।
पिय सावल को मन मनो, परयो रूप के कूप ॥

॥ सवैया ॥

बैठे हैं सेज भरे रस रङ्ग रँगीली कछू मुरि के मुसिकाई।
और की और भई पिय की गति कैसेहूँ के न कही ध्रुव जाई॥
चाहत चाहत रूप प्रिया को परे सुख में जिहि ठां गहराई।
गुराई को भार भयो गरुवो मन बूड़ि गयो छबि अंबु में माई॥

दोहा—करुना करि लिये लाइ उर, देखे लाल अधीर।
लिये काढ़ि छबि भँवर तें, छ्वाइ दशन बर चीर॥
छबि मुरझानी देखि छबि, मृदुताई मृदु अंग।
चतुराई जहँ चित्र भई, चपलाई गति पंग॥
कोटिक छबि मुख कमल पर रंजित पाननि राग।
छिन छिन प्रीतम नैंन अलि, पीवत पीक पराग॥
नवल नवेली उर बनी, मृदुल चमेली माल।
सारी सोंधे सोंसनी, अँगिया फूल गुलाल॥
अलबेली चितवनि अली, रस बेली मुसिकानि।
छिन छिन प्रति बाढ़ति नई, फैली पिय उर आनि॥
मेहँदी रँग भीने बने, मृदु कर चरन सुरंग।
नख मनि दुति अति झलमलै, पानिप झलक अनंग॥
बरषत अद्भुत रूप जल, एकहि रस निशि भोर।
तृषित पपीहा तऊ पिय, चितवत मुख की ओर॥

॥ कवित्त ॥

रोम रोम रूप कांति पानिप जगमगाति, सोहनी के देखै आवै मोहन को मोहनी। हित ध्रुव माधुरी मदन मद मोद मई, अति सुकुमार तन सहजही सोहनी॥ दशन दमक देखै

दामिनी लजानी जाति, नख पटतर कोऊ को है पति रोहनी।
अतिही छबीली गोरी बरनि सकत कोरी, जाके संग फिरैं छकि
छबिनि की छोहनी॥

दोहा–रोम रोम प्रति अमित छबि, ज्यों दधि लहरि उठांति।
चखक अलप बहु प्यास पिय, तृषा मिटत किहि भांति॥
गाढ़ी के कसि कंचुकी, दरकि रही कुच कोर।
निरखत दृष्टि बचाइ पिय, नागर नवल किशोर॥
मोहे मोहन मैंन रस, अति सलज्ज मुसिकानि।
लालच्च कै लालच बढ़्यो, देखि लाल ललचानि॥
वेसरि अरुझी अलक सों, सोभा बढ़ी सुभाइ।
पिय निरवारन ब्याज कै, दई अधिक उरझाइ॥

सोरठा–सुन्दर रूप निधान, परम चतुर नागरि प्रिया।
लयो झटकि पिय पान, जानि चतुरई लाल की॥

दोहा–जो अँग चाहत रसिक पिय, इन नैनन सों छूवाइ।
सो ठां सुन्दरि पहिल ही, राखत बसन दुराइ॥
काँपत कर थरकत हियो, बनत न मन की बात।
कुशल युगल कल कोकमें, समुझि समुझि मुसिकात॥

॥ सवैया ॥

कोक बिलास कलानि में नागर नाहिं दुहूँ कोऊ घटि घातनि
नई नई भांति नई ध्रुव चौंप बढ़ी मन माहिं चितै दृग पातनि।
चाहत लाल छुयो उरहार लई सखी लाइ रँगीली जु बातनि
आनि धरै कर तो कुच यों जनु कुन्दन कुम्भ ढके जल जातनि।

दोहा–मन मन अन्तर सहज ही, बढ़ी रंग रस केलि।
उर नैनन फैली अधिक, चाह मदन सुख बेलि॥

दोउ प्रवीन नागर नवल, अपनी अपनी भांति।
फवित न जब कछु चतुरई,तब पिय हा हा खात॥
कहत बचन अति दीन ह्वै,निरखि प्रिया मुखओर।
चरन अलंकृत करन को, जांचत नवल किशोर॥
आतुरता अति दीनता, चाह चौंप अधिकाइ।
निरखि ससुझि मन नागरी, चितई कछु मुसिकाइ॥
मंजु कञ्ज पद विमल ह्वै, गहे मृदुल पिय पानि।
करत चित्र अति गहर सौं,जावक को रँग वानि॥
नखन माहिं प्रतिबिंब छबि,रही अधिक झलकाइ।
चन्द कञ्ज मिलि एक ठां, जनु पाइनि परे आइ॥
जेहि रस ढरै मन नागरी, ढरत लाल तिहि रंग।
छिन छिन प्रति चितवत रहत, भौंहनि भाइ तरंग॥
अतिहि छबीली सोहनी, प्रीतम यह उर आनि।
सुन्दर मुख पर डीठि डर, दियो दिठौना बाँनि॥
अटपटी बात है प्रेम की, बरनत बनै न बैन।
धरत चरन प्यारी जहां, लाल धरत तहँ नैन॥
यद्यपि प्यारे पीय को, रहत है प्रेम अवेस।
कुँवरि प्रेम गंभीर तहँ, नाहिन बचन प्रवेस॥
प्रिया प्रेम सागर अमल, लहरिकि लेत समाइ।
उमड़ै जो मर्जाद तजि, कापै रोक्यो जाइ॥
छबि छिपाइ भूषन बसन, राखत प्रेम दुराइ।
समुझि कुँवरकी गतिकुँवरि,ज़तननि करत बिहाइ॥

॥ कबित्त ॥

परी है कठिन अति नवल किशोरी जू को, छिन छिन नई

छबि कहाँ लौं छिपावही। जोई अंग प्रीतम के दीठि सों परस होत, नीरज से नैना नीर भरि भरि आवही॥ हित ध्रुव अधिक विवस भये जात पिय, ताही हेत सुकुमारी जतन बनावही। और अंग राखे पट भूषननि में दुराइ, लोचन चपल चल कहे में न आवही॥

दोहा–तहाँ मान कैसे बनै, अद्भुत जहँ यह प्रेम।
भीजे दोउ आसक्त रस, कहँ समाइ बिच नेम॥
जब चितवत अनुराग युत, कुँवरि नैन चख कोर।
तेहि छिन वारत प्रान पिय, ढरत शीश पग ओर॥
भये मगन छबि निरखि पिय, गये बिसरि चखचीर।
रूप सरोवर में मनौ, रहे कंज भरि नीर॥
प्रेम सुरँग रँग रचि रहे, शोभा कही न जाय।
मनो लालच पिय हीय तें, नैनन प्रगट्यो आय॥
पियमुख अंबुज की दशा, सुनि सखि कही न जात।
फूलत अधरन रस पिये, बिन पीये कुम्हिलात॥
अति प्रवीन रस नागरी, लिये कुँवर भरि अङ्क।
मनौ सुधारस प्रेम बल, कंजहि देत मयंक॥
जबहि लाल लटकत बिवस, ललना लेति सँभारि।
राखत हिय सों लाय हिय, लज्जा नेम बिसारि॥
छबिनिधि रसनिधि नेहनिधि, गुननिधि परम उदार।
रंगे परस्पर एक रँग, अद्भुत युगल विहार॥
जोबन मद नव नेह मद, रूप मदन मद मोद।
रसमद रतिमद चाहमद, उनमद करत विनोद॥

॥कवित्त॥

मधुर तें मधुर अनूप तें अनूप अति, रसनि को रस सब सुखनि को साररी। विलास को विलास निज प्रेम की राज दशा, राजै एक छत दिन विमल बिहाररी॥ छिन छिन त्रिषित चकित रूप माधुरी में, भूले सेई रहै कछु आवै न विचाररी। भ्रमहू को विरह कहत जहाँ डर आवै, ऐसे हैं रंगीले ध्रुव तन सुकुमाररी॥

दोहा—दिन दूलहु दिन दुलहिनी, परम रसिक सुकुमार।
प्रेम समागम रहत दिन, नवल निकुंज बिहार॥

सोरठा—कोक कलानि प्रवीन, नव किशोर दंपति सदा।
सुरत सिंधु सुखलीन, अति विचित्र नागर कुँवर॥

दोहा—रति नागर दोउ रँग भरे सुरत तरंगनि माहिं।
चाह चौंप मन मन समुझि चितै चषनि मुसिकाहिं॥
वर बिहार कछु श्रमित भइ प्रिया परम सुकुमारि।
रुचिर पीत अंचल लिये मृदु कर करत बयारि॥
गौर बदन पर फबि रही बिथुरी अलक रसाल।
शिथिल बसन भूषन सबै घूमत नैन विशाल॥
अति सुदेश आलस भरे अरुन छबीले नैन।
प्रेम की रैनी में मनो रँगे कंज रति मैन॥
अरुनाई विच स्यामता छवि नहिं परत बखानि।
मनौ मधुप अनुराग के रँग में बोरे आनि॥
रति विनोद जामिन जगे शिथिल अटपटे बैन।
अँग अँग अरसाने सबै सरसाने सखि नैन॥

॥ कवित्त ॥

सब निशि रंग भीने मनके मनोज कीने, भोर एक चूनरी सुरंग ओढ़े ठाढ़े हैं। अरुझे हैं नख शिख घटति न चौंप कैं हूँ, अंग अंग प्रति अति आलिंगन गाढ़े हैं॥ सौंधे भीजे सोहैं बार छूटि टूटि रहे हार, देखिवे को रूप नैंना सतगुन बाढ़े हैं। हित ध्रुव रस भसे फबि रहे रसमाते, सुरत सुरंग रंग में झकोर-काढ़े हैं॥

दोहा—रँग मगे दंपति रस मसे हित ध्रुव अद्भुत केलि।
छबि तमाल सों लपटि रही मानो छबिकी बेलि॥
सीस सीस तरे बाहुँ दै, जुरे मिथुन सुख चाहि।
निशि दिन जीवनि सखिनके यहै परम सुख आहि॥
उभै सरोवर रूप के, हंस सखिन के नैन।
अद्भुत मुक्ता चुगत दिन, चितवनि मुसकनि सैन॥
सहज रंग सुख सिंधु को, नाहिन है सखि पार।
श्रीहरिवंश प्रताप वल, कह्यो बुद्धि अनुसार॥

सोरठा—होहि सकल जो गात, रोम रोम रसना सहित।
कह्यो तऊ नहिं जात, पिय प्यारी को प्रेम रस॥

दोहा—मन बच जो गावै सुनै, हितसों हित सिंगार।
तेहि उर झलकत रहैं बिव, पद अंबुज सुकुमार॥
यह रस जिनके सुनत मन, नाहिंन होत हुलास।
सपनेहुँ परस न कीजिये, तजि ध्रुव तिनको पास॥
अस्सी दोइ दोहा कवित्त, हित श्रृङ्गार के कीन।
जाके उर में बसै ध्रुव, युगल चरण ह्वै लीन॥

॥ इति श्री हित श्रृङ्गार लीला की जै जै श्री हित हरि वंश॥

॥ अथ सभामंडल लीला प्रारम्भ ॥

दोहा—प्रथम चरण हरिवंशजी, उर धरि करौं विचार ।
जेहि प्रताप यह रस कछू, कहत बुद्धि अनुसार ॥
सर्वोपरि अद्भुत सरस, (श्री)वृन्दा विपिन विहार ।
वरनौं युगल किशोर को, मंडल सभा श्रृङ्गार ॥
कुराडल यमुना को जितो, तितो आहि बिस्तार ।
पंकति कुञ्जनि की बनी, मंजु मंडलाकार ॥
कहा कहौं वृंदा विपिन छबि,जहँ बिहरत सुकुमार ।
पत्र पत्र सेवत दिनहि, कोटि कोटि रति मार ॥
हेम लता फूलन सहित, लसत छबीली भांति ।
नैन चितै चक चौंधि रहे, शोभा कही न जाति ॥
मत्त फिरत मधुपावली, करत मधुर गुञ्जार ।
मनहु मेघ अनुराग के, गावत मंगलचार ॥
कुञ्ज कुञ्ज अति झलमले, बनत न उपमा आन ।
सोम शूर सत जोरिये, होत न तऊ समान ॥
रचना चित्र विचित्र द्युति, राजत परम रसाल ।
झालर जलजलि झलकि रहि,विच विच हीरालाल ॥
जमुना की छबि कहा कहौं, तहाँ न आनंद थोर ।
मनहू ढरयो श्रृंगार रस, करि प्रवाह चहुं ओर ॥
फूल फूल रहे फूल के, कमल सुरंग अनेक ।
हंस हंसनी फिरत विच, नृत्तत केकी केक ॥
कुंज कुंज आसन सुमन, राखी सेज रचाइ ।
भरि सुरंग मादिक विविधि, भाजन धरे बनाइ ॥

संपति इक इक कुंज की, को कहि सकै प्रमान ।
शारद जो सतकोटि मिलि, हारहि तऊ निदान ॥
मधुर मधुर गति तालसों, कूंजत विविध विहंग ।
मनो द्रुमनि चढ़ि रागिनी, गावत तान तरंग ॥
विविध भांति रह्यो फूलिकै, बृंदावन निज बाग ।
रति अरु श्रीलिये सोहनी, झारत कुसुम पराग ॥
मनि मय अवनी अति बनी, सुंदर सुभग सुढार ।
बिच कंचन को जगमगै, रतन खचित आगार ॥
फूली फूलन की लता, रही झरोखनि झूमि ।
प्रति बिंबित जहँ तहँ मनो, रची फूलनकी भूमि ॥
सौरभताई जहां लगि, अरु सुगंध रससार ।
तिनकरि वासित रहत दिन, उठत मोद उदगार ॥
अति अनूप सुख पुंज में, चितवत चित्त लुभाइ ।
रच्यो राज सत राज रति, नाना चित्र बनाइ ॥
भानकोटि तिहि सम नहीं, झलकत झलक अपार ।
भाँति भाँति रचनानई, राजत चौंसठ द्वार ॥
द्वार द्वार प्रति सहचरी, खरी भरी रस प्रेम ।
तिनके प्यारी पीय की, सेवाही को नेम ॥
मृदु मृदु दल लै जलज के, अति सुरंग रचि सैन ।
तापर बिलसत नवल दोउ, मैंन रंग भरे नैन ॥
सुरत रङ्ग सुख में सरस, दोऊ रस की रासि ।
मरम भिदी वतियनि करैं, मृदु मृदु ईषद हासि ॥
दसन चिलक सुखकी दमक, रह्यो झलकि सब भौन ।
सो रस तौ ललितादि निज, भरि पीवत दृग दौन ॥

रंगी रंग अनुराग सों, पगी दुहुनि के प्यार।
और न कछू सुहाइ मन, जीवन युगल विहार॥
सहज सुभग अद्भुत अयन, सुख बरषत चहुं कोद।
रँगमगे नवल किशोर दोउ, तामें करत विनोद॥
तेहि आगे मंडल सभा, प्रभा कही नहिं जाइ।
शोभा तहँ की देखिकै, शोभा रहति लजाइ॥
सुरँग बिछौना मृदुल अति, भांति भांति के आनि।
जो जैसो जिहिंठां बने, सखिनि बिछाये वानि॥
कंचन को रतननि खच्यो, मनि मय विविधि सुरङ्ग।
सिंहासन झलकत तहाँ, धर पर कछू उतङ्ग॥
कोमल कुसुमनि की गदी, तापर धरी बनाइ।
अति सुरंग सोंधे सनी, रह्यो विपिन महकाइ॥
मधुर मधुर खग बोलही, डोलैं छबि सों मोर।
सखिनि सहित सब दरस को, ह्वै रहे मनहुँ चकोर॥
तब आये मंडल सभा, जहां सखिनु की भीर।
भई एक गति सबनि की, बिसरे नैनन चीर॥
बनि बैठे भली भांति सों, नवल लाड़िली लाल।
मनो तमाल ढिग लसत मृदु, कञ्चन वेली बाल॥
नख शिख पानिप रूप निधि, सहज सरस सुकुमारि।
रोम रोम बरषत रहै, गुन माधुरी छबि वारि॥
(श्री) राधा बल्लभ लाल सिर, फबी चंद्रिका मोर।
सुरंग पाग सों लटकि रही, बाम भाग की ओर॥
लाल भाल पर फबि रही, बेंदी लाल अनूप।
मनो सूरति अनुराग की, प्रगट भई धरि रूप॥

नासा पुट मुक्ता फब्यो, चितै रहे दृग द्वंद ।
भाजन भरि तन छलकि परी,मनो रूप की बुंद ॥
अरुन अधर दशनावली, झलकत परम रसाल ।
हीरन की पंकति मनो, बंदन में करी लाल ॥
सांवल मुख छबि प्रभा पर, वारौं कोटिक चंद ।
जित चितवत बरषत तहीं, सहज रूप मकरंद ॥
रूप प्रिया को कहन को, कितक बुद्धि है मोर ।
तेई कुँवर चरननि लुठत, निरखि नैन की कोर ॥
जेहि मनमथ त्रैलोक सब,अपने बस कियो आनि।
सोई मैन मोह्यौ चितै, मोहन मृदु मुसिकानि ॥
मोहनी सोहनी भौंह ते, उपज्यो सहज अनंग ।
ते मोहन भ्रुव बस किये, तेहि मनोज रस रंग ॥
चितवत मोहन चित्र से, रहे भूलि छबि ऐन ।
मानो तेहि ठां मोल के, नैनन लीने नैन ॥
यह सुख देखत हैं सखी, ठाढ़ी सब गहि ठौर ।
बरषत आनँद सबनि पर,रसिकनि मनि शिरमौर ॥
लक्ष लक्ष के यूथ तहँ, अगनित अमित अपार ।
रसन कोटि जो होइ तन,कहि न सकत बिस्तार ॥
यूथ यूथ प्रति नाइका, इक इक सखी उदार ।
तिनके नाम कहौं कछू, अपनी मति अनुसार ॥

॥ सखी वर्णन-दोहा ॥

ललित बिसाखा रुचि लिये, करत भावती बात ।
रँग देवी चित्रा तहां, युगल रंग रस रात ॥
तुंग विद्या चंपकलता, इंदु लेखा गुनखान ।

सखी सुदेवी सहित ध्रुव, आठो परम सुजान ॥
इनते अंतर नेक नहिं, ज्यों छाया तन संग ।
मानो मूरति हेत की, बढ़वत पल पल रंग ॥
एक बेस छबि रास सब, भूषन बसन समान ।
एक प्रेम में रही सनि, इक मन एकै प्रान ॥
अब कछु तिनके नाम सुनि, हीयो श्रवन सिरात ।
प्रेम रंग उर में बढ़ै, अरु सब दुख मिटि जात ॥

॥ सखीन के नाम वर्णन–दोहा ॥

चन्द्रभगा चन्द्रानना, चन्द्रप्रभा चित चाव ।
चन्द्रकला अरु चंद्रिका, कोमल सहज सुभाव ॥
चन्द्रमती चन्द्रा सखी, चंपक बरनी चारु ।
चित्रङ्गा चंदनवती, चन्द्र जिता चितहार ॥
चपला चतुरा चंचला, चित्तहरा चित मैन ।
चंद्रछटा वर चंदिनी, चंद्र कान्ति रस ऐन ॥
चारु मुखी चरिता चतुर, चारु दृगी चल नैन ।
चारु मती चंपक तनी, चित्रांगी चित चैन ॥
रस रङ्गा रस रङ्गिनी, रस पुञ्जा रस रूप ।
रस भरि रसिका रसवती, रङ्गावली अनूप ॥
रतन प्रभा रस मञ्जरी, रूप मञ्जरी नाम ।
रस ऐनी रति मञ्जरी, रस रैनी रस धाम ॥
रतन मञ्जरी रति कला, राग रंग के साथ ।
रस दैनी अरु रस भरी, गहै रसालिका हाथ ॥
वृन्दा विपिन बिनोदनी, बन दीपा बन कांति ।
बन शोभा अरु बनमती, बन मोदा भली भांति ॥

बन रागा अरु बन प्रभा, बन भूषा बन केलि ।
बन विद्या बिजया जया, बन माला बन वेलि ॥
सुभगा सुमती शारदा, सारंगी रस सार ।
सुखद जयंती शशि मुखी, सरसी सखी उदार ॥
सुघर सुनन्दा सांवरी, सहज सलोनी चाहि ।
सिंदूरा शुभ आनना, शोभा की निधि आहि ॥
सरला सुमना सारिका, सो दामिनी लसंत ।
सुमुखी संग सुकुन्तला, भ्रमत भँवर रस मंत ॥
मालती माधवी माधुरी, मधुपा कै अति हेत ।
मानवती मंदालसा, मदनावती समेत ॥
मंजु केशीमनि मंजरी, मनि कुण्डला रसाल ।
मृगनैनी मधुमालती, मंजुपद्मा मनिमाल ॥
कलहंसी कटि केहरी, कलबंशी कलकेलि ।
कलनैनी कल गामिनी, कल बैनी कलबेलि ॥
कन्ज मुखी कमलावती, कनकांगी रही सोहि ।
केलिकला कृष्णावती, कुमुदा रही छवि जोहि ॥
भाँमा भाँमती भानुजा, भवन सुन्दरी संग ।
भानमती मन भावनी, भूषण भूषा अंग ॥
भद्रपदा भद्रावती, भामिनि दीपा भौन ।
भद्र सरूपा भाग भरी, उपमा दीजै कौन ॥
तानवती तारावली, भरी तमाला रंग ।
तम हरनी तरला तहीं, तान तरङ्गा संग ॥
पिकबैनी प्रेमावली, प्रेमा रस में लीन ।
परिमल पुन्या पावनी, पद्मावती प्रवीन ॥

नीरज नैंनी नन्दनी, नेह नवीना नित्त।
नांद नन्दिनी निर्मला, नवला कोमल चित्त॥
गुन माला अरु गुनवती, गुन भूषण गुन खान।
गुन कंदा अरु गुनकला, गुन भेदा गुन जान॥
चंप चँमेली केतिकी, बासंती रस ऐन।
बेलि गुलाली सेवती, सेवत हैं दिन रैन॥
रूप धरैं सब रागिनी, रँगी रंग अनुराग।
लाल लड़ैती कुँवरि को, गावत दिनहि सुहाग॥
दिवा जामिनी छहो ऋतु, ठाढ़ी रहैं करजोर।
करत जोइ तेहि छिन समुझि,जब चितवत जेहि ओर॥
गोरी गोरी सखी जे, भरी प्रिया रस गर्व।
चंदकिरनि सी चहुँ दिशन, राजत अर्वनि अर्व॥
कुञ्ज भृङ्गी सब सहचरी, मोर मराली चाहि।
जेहैं प्यारी पछ की, ते सगर्व सब आहि॥
शुक पिकबल्ली सखी सब, हंस मयूरी मोर।
लिये दीनता रहत दिन, जितक लाल की ओर॥
जुगल मिलन सुख सहजही, अद्भुत केलि विहार।
जीवन सब की एक ही, जीवत तेहि आधार॥
यह नामावलि सखिन की, सुनत रुचैगी जाहि।
प्रेम बढ़ै शोभा चढ़ै, रहै जाहि तेहि पाहि॥
रज कन उड़गन बूँद घन, आवत गिनती माहिं।
कहत जोइ थोड़ी सोई, सखियन संख्या नाहिं॥
मंडल जोरे खड़ी मनों, जुरे चकोरनि बृंद।
इकटक रही निहारि सब, विवि वृन्दावन चन्द॥

अपनो अपनो गुन जितो, हित के रस सौं सानि ।
ते सब आगे दुहुँनि के, प्रगट करत हैं आनि ॥
सखी सुधंगा नृत करैं, लिये कला सब संग ।
देखौ अद्भुत गतिनि को, होत नैन मन पंग ॥
उरप तिरप अरु हुरमई, लाग डांट बंधान ।
सरस सुलप सुन्दर चलन, मुसिकनि हरत है प्रान ॥
अति प्रवीन सब अंग में, रीझि २ दोउ लाल ।
तबहिं बोलि तेहि सखी को, पहिराई उर माल ॥
पाछे गावत रागिनी, बीना लिये मृदंग ।
एक सारँगी किन्नरी, एक सजे मुहँचंग ॥
अमृत कुराडली हुड़कई, एक गहै करतार ।
गुन सरिता उमड़ी मनों, बाढ्यो रंग अपार ॥
जितक कला संगीत की, तामें सबै प्रवीन ।
गावत निर्त्तत लेत हैं, अद्भुत गतिनि नवीन ॥
एक वैस गुन राशि सब, तैसो तिनको हेत ।
देखि छबीली छबि तहाँ, रीझि दुहुँनि सुख देत ॥
तान तरंगा निकट ह्वै, गाई बांकी तान ।
तबहिं रीझि तैहि सखी को, दये बुलाय हँसि पान ॥
सोरठा–आनँद मेघ चुचात, सुखको सर ध्रुव दिन तहां ।
क्यों आवै कहि बात, वृन्दावन विधु सभा की ॥
दोहा–पावस ऋतु आगम कियो, अपनी सेवा हेत ।
द्रुम द्रुम बोलत खग मधुर, नाम सनेह समेत ॥
श्याम सच्चिक्कन मोहनी, आई घटा अनूप ।
मानौ रह्यो बन छायके, निज सिंगार को रूप ॥

ऊँचे नीचे महल की, शिखर सिखी चहुँओर।
जहँ तहँ आनन्द रंग भरि, नृत्तत मोरी मोर॥
सुरत हिंडोरे रंग में, झूलत समय विचार।
पानिप रूप तरंग उठै, सो छवि रही निहार॥
रिमि झिम बूँदन की परनि, गावत मधुर मलार।
यह सुख देखत सुनत ही, रहत न देहँ सँभार॥
बढ़ी ओप झलकत सबै, पत्र फूल फल डार।
मानौं मंत्रनि करि बिपिन, फेरि कियो शृङ्गार॥
देखि भांति बनकी भली, रुचि में रुचिकी गोभ।
उपजी है मन दुहुँनि के, एक केलि की लोभ॥
बाहां जोरी चलत दोउ, देखन हित सब कुञ्ज।
चहूँ ओर सब सहचरी, मध्य प्रान सुख पुञ्ज॥
कमल कुञ्ज आये प्रथम, सहज रङ्ग रस ऐन।
अति सुरंग अंबुज दलनि, रची तहां सखि सैन॥
देखत रचना रुचिर अति, रीझि दोऊ सुकुमार।
बोल सखी कमलावती, पहिरायो उर हार॥
पुनि पौढ़े तिहिं सेजपर, करत हाँसि पर हाँसि।
भीजे रङ्ग अनङ्ग में, बाढ्यो हिये हुलास॥
रति बिनोद बिलसत बिविधि, उपज्यो आनँद रंग।
हँसनि दसनि अंगनि लसनि, छबिके उठत तरंग॥
लतनि ओट ललितादि निज, सुख देखत भरि नैन।
कहत बचन जे रँग मगे, सुनत श्रवन ह्वै चैन॥
ता पाछे तेहि कुञ्ज ते, आये कुञ्ज सिंगार।
नौतन भूषण बसन तन, पहिराये उर हार॥

सुरँग सहानी सेजपर, दुलहिनि दूलहु लाल।
मुसिकनि मन हरलेत है, चितवनि नैन विशाल ॥
मेहँदी को रँग बनि रह्यो, अंजन नैन सुदेस।
नवसत अंगनि जगमगै, कहि न सकत छबि लेस ॥
ललिता आनँद रँग भरी, बिवि मुख चितै अनूप।
मनहु नैन नरजा किये, तौल्यो करत हैं रूप ॥
जबहि ढरत जिहि कुंज को, तहँ की सखी सुजान।
नैननि के करि पांवड़े, न्योछावर करैं प्रान ॥
मान कुंज आये जबहि, कुँवरि भौंह भई भंग।
चितै लाल पाइन परैं, समुझि मान को अंग ॥
ऐसे रसमें हो प्रिये, ऐसी जिय न बिचारि।
तासों इतनी चाहिये, तन मन जोरयो हार ॥
कैसे के सहिजात है, नेक रुखाई भौंह।
याते नाहिंन और दुख, प्यारी तेरी सौंह ॥
मेरो तो कछुवै नहीं, तुमहीं प्राननि प्रान।
यहै बात जिय समुझिकै, चित जिन आनौ आन ॥
सोरठा—मेरे है गति एक, तुम पद पङ्कज की प्रिये।
अपने हठकी टेक, छांड़ि कृपा करि लाड़िली ॥
दोहा—मोहन के मोहन बचन, सुनि मोहनी मुसिकाइ।
प्यारो प्यारी प्यार सों, रवकि लियो उर लाइ ॥
तेहि छिन दीनों अधर रस, नवल रँगीली बाल।
तिनकी प्रीति न कहि परै, प्रेम सींव दोउ लाल ॥

॥ कवित्त ॥

प्यारी जूकी रिस ऐसी दामिनी दमक जैसी, छिन एक च-

मकि मिलत जाइ वन में। नैन नेक वङ्क करै फिरि ताही रंग ढरै, परम चतुर चित रस भरी मन में॥ उरसों लपटि रही छबि न परत कही, मानो मीन बिहरत श्याम सर वन में। हित ध्रुव मान ऐसौ बिरह न होन पावै, समुझि प्रवीन प्यारी सावधान पन में॥

दोहा—पुनि हँसि के तहां तें चले, आये कुंज बिलास।
देखत रचना रुचिर अति, बाढ़्यो हिये हुलास॥
मनि मय कनक प्रजंक पर, फूलनि सेज बनाय।
रचि राखी सखियनि जहां, अरगजा सौं छिरकाय॥
मेवा फल सब अमृत मय, चहूँ ओर धरे आनि।
भाजन भरि मधु मादिकन, बीरी राखी बानि॥
आसन मृदु बहु भांति के, शोभा कही न जाइ।
कहूँ चौंपर सतरंज कहूँ, राखी बिबिध बिछाइ॥
हँसि बैठे तेहि सेजपर, हेत सखिनु कौ जाँनि।
कहत परस्पर बैन मृदु, मैंन रंग सों साँनि॥

सोरठा—कहत बनत कछु नाहिं, सुरतरङ्ग सुख सिंधु बढ़्यो।
पैरावत तेहि माँहिं, पिय हिलाइ कुच घटनि सौं॥

दोहा—सबबिधि नागरि निपुन अति, कोक बिलास कलानि।
उपजत नव नव भाव सत, गुन रतननि की खानि॥

॥ कबित्त ॥

कोटि कोटि रसना जो रोम रोम प्रति होइ, प्यारी जू के रूप कौ न प्रमान कह्यौ जात है। अतिही अगाध सिंधु पार नहिं पावै कोऊ, थोरी बुद्धि सीप मांझ कैसे के समात है॥ छिन छिन नई नई माधुरी तरंग रंग, देखै नख चन्द्रिकनि चन्दहू ल-जात है। हित ध्रुव अङ्ग अङ्ग बरषत छबि स्वाति नैना पिय

चातिक तौ केहूँ न अघात है ॥

दोहा—रङ्ग कुंज नीकी बनी, रंगावलि चितलाइ।
दुलहिनि दूलहु हेत सो, तामें बैठे आइ ॥
रँगमगे दंपति रसमसे, भरयो हिये रस मैन।
अतिही रंगीले रंगमगे, कहत परस्पर बैन ॥
उपज्यो रंग बिनोद इक, सखियन के उर ऐन।
लाल लड़ैती व्याह को, सुख देखे भरि नैन ॥
तबहिं भाव यह बढ़ि गयो, सबके भयो बिचार।
जैसी रीति है व्याह की, करन लगीं बिधि चार ॥
कुञ्ज द्वार मण्डप रच्यो, सुमन सुरंग बनाइ।
हेम खंभ रतननि खच्यो, रह्यो मध्य झलकाइ ॥
हीरा गज मोतीन की, झालर रची सँभारि।
षट रितु मालिन फूल सों, बांधी बन्दन वारि ॥
एक सखी गाइनि भई, गावत मंगल गीत।
और बहुत बाजे लिये, मगन भई रस प्रीति ॥
मंजन की बिधि करन को, जुरी सखिनु की माल।
कोलाहल आनन्द को, बाढ़्यो है तेहि काल ॥
कञ्चन चौकी पर दोऊ, राजत भांति अनूप।
बसन उतारे सुठि बने, बाढ़्यो सतगुन रूप ॥
पट दै बिच अन्तर कियो, चतुर सखी इक सार।
चन्दन को करि उबटनो, उबटत दोउ सुकुँवार ॥

सो०—होतहि पटकी ओट, पिय के दृग व्याकुल भये।
मनो कलप सत कोट, सो छिन तो ऐसी भई ॥

दोहा—कुम्कुम तेल फुलेल मथि, सीसन ते दियो ढारि।

मानौ पानिप रूप की, उमड़ि चली मित ढारि ॥
अधिक हेत सों करैं सखी, प्रथम चारु अस्नान ।
इक गावत इक हँसत हैं, इक वारति हैं प्रान ॥
एक प्रिया तन होइकै, कहत बचन परिहाँस ।
सुनि सुनि पियके हीयते, बाढ़त अधिक हुलास ॥
सब सुगन्ध सों वासि जल, जैसो तनहि सुहाइ ।
तब सबहिन अति प्यार सों, लीने कुँवर न्हवाइ ॥
मण्डप तर आसन सुमन, राख्यो रुचिर बनाइ ।
सुरँग सहाने बसन तहाँ, ल्याईं मृदु पहिराइ ॥
एक सखी अंजन दियो, एक खवावत पान ।
इक हँसि बांधत कङ्कनो, एक करत है गान ॥
मेंहदी को रंग फबि रह्यो, भूषन छबि अँग अंग ।
मगन भई शोभा निरखि, निर्त्तति नारि अनंग ॥
सीसनि सुभग जराउ के, झलकत मौरी मौर ।
देखि छबीली भांति दोऊ, छबि भूली तेहि ठौर ॥
कुंकुम रोरी रंग लै, चित्रै अद्भुत भांति ।
किये चित्र रचि मुखन पर, अखियां निरखि सिराति॥
फूल सुनहरे सेहरै, सोभा बढ़ी नवीन ।
प्रान थार दृग दीप करि, सखियन आरति कीन ॥
सुरँग पीत विवि अञ्चलनि, जोरी ग्रन्थ बनाइ ।
चितै कुँवरि मुसिकाइ मृदु, कछु इक रही लजाइ॥
निगम छन्द तव उच्चरत, चतुर सखी द्वै चार ।
जदपि विवस हैं प्रेमरस, सब बिधि करत सँभारि॥
अरुन अरुन मनि फूल बिच, धरिबेदी सो कीन ।

पाछे पिय आगे प्रिया, भांवरि विधि सौं दीन ॥
एक मधुर मिलि गावहीं, मंगल गीत सुहाग ।
मानो बोलत कोकिला, मध्य विपिन अनुराग ।
तब ललिता हँसिकै कह्यो,दुहु विधु मुखहि निहारि॥
दूधा बाती करहु अब, पियसों मिलि सुकुँवारि ॥
सुनत सखिन के बचन ये, मुरि बैठी पट तानि ।
मानो लाजको ऐन रचि, कियो प्रवेश तहँ आनि ॥
ऊंचे चितवति नेकु नहिं, नमित करि रही नारि ।
घूंघट पट नहीं छाड़हीं, पिय कर देत हैं ढारि ॥
तब सखियनि पियसों कह्यो, सुनहु रसिकवर राइ ।
जो रस चाहत आपनो, गहो कुँवरि के पाइ ॥
अति सुरङ्ग मुख कमल तें, ललित उगारहि लेति ।
छलसों पियहि खवाइ कै, हँसि हँसि तारी देति ॥
कुँवरि चरण छबि मनि मनो, प्रीतम बंदत ताहि ।
मानो देवी प्रेम की, पियहि पुजावत आहि ॥
तेहि तेहि छिन जो सहचरी, करवावत विधिचार ।
करत कुँवरि अति प्यार सों, यहै नेह की ढार ॥
सबही बिधि आधीन पिय, पगन सीस रहे लाइ ।
तबहि लाज पट दूरि कर, चितई कछु मुसिकाइ ॥
ऐसे सुख के रंग की, क्यों कहि आवै बात ।
जद्दपि वीतत है कलप, छिन के सम ह्वै जात ॥
नित्य विहार विवाह नित, दुलहिन दुलहु लाल ।
नित्य सखी सुख सहजही, लेत रहत सब काल ॥
रस सनेह सागर बढ़्यो, नवल रंग रस सार ।

तेहि रसमें सखी मगन भई, भूली देह सँभार ॥

सोरठा—करवावत सब ख्याल, इच्छा सक्ति सखी तहाँ।
उपजावत तेहि काल, भाव सबनि के तैसोई ॥

दोहा—बैठे कुञ्ज विनोद में, करत बिनोद बिहार।
चितबनि मुसिकनि लसनि रद,सोभा निधि सुकुँवार
लालसखी को भेष कियो, उपज्यो चित यहै भाव।
पट भूषन नव कुँवरि के, पहिरन को बढ़यो चाव।
तब सेवा सिंगार की, लगे करन भली भांति ॥
जब फिरि चितवति लाड़िली,लाज सहित मुसिकाँति॥
छुटे बार सोंधे सने, पियकर पर प्रिया बार।
मनो सिंगारत रचि रुचिर, सिंगारहिं सिंगार ॥
बैनी रचि फूलनि गुही, सुन्दर सुभग सुढार।
नख सिख भूषन पट बने, अरु गज मोतिनहार ॥
नैननि अञ्जन दियो जब, रीझे सुकर निहारि।
दसनि खंड अति हेतसों, बीरी दई सुकुँवारि॥
दसन बसन रस देत है, लालहि लिये उछङ्ग।
मानो चंदहि चंद मिलि, प्यावत सुधा सुरङ्ग॥
फूले आनँद रङ्गभरि, अति सुखको रस पाइ।
नैन छ्वाइ चूंवत चरन, कबहुँ रहत उर लाइ॥
कहा कहौं या प्रेम की, अद्भुत भांति अनूप।
वृन्दावन घन कुञ्ज में, सेवत रूपहि रूप ॥
उलटी चाल है प्रेमकी, को समुझै बिन लाल।
ज्यौं ज्यौं हारै अपनपौ, त्यौं त्यौं बढ़ै विशाल ॥

॥ कवित्त ॥

प्यारी जू की सारी अति प्यारी लागै प्रीतम कौ, सोंधे भीजी अँगिया सुरङ्ग उर धारी है। नवल रंगीली जू के भूषन बिहारी लाल, पहिरत बाढ़ी फूल जात न संभारी है॥ जोई कछू प्रिया जू के अंगनि परस होत, सोई प्रान जात होत ऐसी प्यारी प्यारी है। हित ध्रुव प्रेम बात कैसेहूँ न कही जात, जानै सोई जेहि सिर मोहनी सी डारी है॥

दोहा-रैनि सुहावनी सरद की, राजत सहज सुदेस।
इक इक मनि आभा मनौ, झलकत सत राकेस॥
ऐसी रजनी देखि पिय, सजनी मन भयो मोद।
पुलिन हंसजा रह्यो बनि, कीजे रास विनोद॥
सखिनि मण्डली जुरी तब, हेत दुहुँनि को जान।
चहूँ ओर सब फिरगई, जोरि पानि सो पानि॥
मध्य रसिक दोऊ लाड़िले, सोभा रही सब हेरि।
मानो छबिके चंद द्वै, छबि कमलनि लये घेरि॥
सरस एकते एक सखि, अपनी अपनी भांति।
निर्त्तत अंग सुधंग के, दामिनिसी दमकाति॥
नवल कुँवर वर कुँवरिसौं, कहत बदन तन जोहि।
अपनीसी गति निर्त्तकी, कछुक सिखावहु मोंहि॥
नागर मनि नव नागरी. समुझि पीय को हीय।
भरी नेह आनन्द रस, अद्भुत कौतिक कीय॥
कंज दलनि पर रुचिर कल, करत निर्त्त सुकुंवारि।
तेहि छिन जहां लगि सहचरी, चकित ह्वै रही निहारि॥
जो गति नहिं देखी सुनी, उपजै नव नव भाइ।

निर्त्त जु मूर्त्तिवंत ही, सोई रही लुभाइ ॥
तिरप बांधि दल एक पर, अलग लाग जहां लीन ।
दूजो दल परस्यो नहीं, लाघवता अति कीन ॥
रीझि लाल चूंवत चरन, ऐसी चित्त विचारि ।
प्रानहार पहिले रह्यो, अब कहा दीजे वारि ॥
मोहन संग महा मोहनी, सुख बरषत है नित्त ।
चांदनिमें अति चमकि रही, चमकावत पियचित्त ॥
श्रम जल कन मुख गोरपर, चितै रहे पिय मोहि ।
मानो छवि के कमलपर, छवि के कन रहे सोहि ॥
रविजा वन परसै पवन, सौरभ घन जनु लेत ।
मंद मंद जैसी रुचै, आइ दुहुनि सुख देत ॥
श्रीमान सरोवर रस मई, झलकत निर्मल नीर ।
नव किशोर इक वैस द्रुम, रतन खचित वर तीर ॥
छत्री मध्य जराव की, मैंन फूल छवि ऐंन ।
रचि राखी अति हेतसों, सखियनि तहां सुख सैंन ॥
देखि भांति सर की भली, बाढ़ी आनंद बेलि ।
तामें दोऊ निज सखिन जुत, करन लगे जल केलि ॥
हंसि हंसि छिरकत आप में, अलवेले सुकुंवार ।
मानो वारन रूप के, विहरत वारि बिहार ॥
छुटे वार सौंधे सने, टूटि रहे उरहार ।
विवस भये खेलत दोऊ, वाढ़ी चौंप अपार ॥
अंगराग वहु भांति मिलि, ह्वै गयौ अंबु सुरंग ।
मानो सरस अनुराग के, देखियत प्रगट तरंग ॥
निकसे दोऊ भीजे वसन, सोभा कही न जाइ ।

मानो पानिप रूपकी, बढ़िके चली चुचाइ ॥
अंग अंग छवि कहा कहौं, बाढ़ी सतगुन ओप ।
उपमा दुति सब औरजे, ते सब ह्वै गई लोप ॥
पहिरे मृदु नव जरकसी, मृदु सुरंग अति बाँनि ।
सौंधे सौं रहे घमड़ि के, सौरभता की खाँनि ॥
देखत फिरत निसङ्क बन, जैसे मत्त गयंद ।
बिन अंकुस रुचि आपनी, ढुरत है सुरत स्वछंद ॥
सङ्ग लिये सब सहचरी, बिलसत लसत हसंत ।
ऐसी छवि तहां रही फबि, खेलत मनों वसन्त ॥
कुंकुम सो तनको वरन, अम्बर विविधि गुलाल ।
अधर दसन मनो फूल भये, अंबुज नैन विशाल ॥
नौलासी भुज लतनि की, आगम जोवन मौर ।
कुच गेंदुक उर फूल भई, उपमा नहिं कछु और ॥
चितवनि मुसिकनि छिरकिवौ, बाजे भूषन राव ।
देखत ऐसी मण्डली, उपजत है चित चाव ॥
इहि विधि तौ खेलत रहैं, दिनहि वसंतरु फाग ।
यह सुख जो चिंतत रहै, ताही के ध्रुव भाग ॥
कुंज कुंज सब ऐसेही, कीने विविधि बिनोद ।
ता पाछे दोऊ रंग भरे, चले महल की कोद ॥
झलकत हैं विवि चंद द्वै, सखिनु माल चहूँओर ।
मानो घेरे फिरत हैं, सब के नैंन चकोर ॥
ठाढ़े भये मंडल सभा, सोभा सिंधु अगाध ।
जैसी रुचिही सखिनु की, पुजई सबकी साध ॥
फूली अंगन मात है, भरी रंग आनन्द ।

जीवन सबके एकही, बिवि बृंदावन चन्द ॥
रचि मृदु आसन सुमन पर, बैठारे दोऊ लाल ॥
अति प्रवीन सेवा करैं, जैसी रुचि जेहि काल ॥
विविधि भांति विंजन अधिक, आगे राखे आनि ।
मधुर सलोने चरपरे, खाटे मीठे बानि ॥
हँसि हंसि स्वाद सराहि दोऊ, ग्रास परस्पर लेत ।
ललित बिशाखा तेहि समैं, वारि प्रान धन देत ॥
कछु खाये सखियनि दिये, नागर नवल प्रवीन ।
अमृत चितवनि चितैसखि,बोलि सबनि सुखदीन ॥
चतुर सिरोमनि नेह निधि, सबबिधि रूप निधान ।
पगधारे निज महल को, करि सबको सनमान ॥
मंडल सब देखत फिरत, बीते कलप अनेक ।
सहचरि यौं मानत भई, मनो भई घरी एक ॥
जब जानें सबही श्रमित, नवल भामिनी स्याँम ।
बाढ़्यौ तिनके हेत यह, नेक करैं बिश्राम ॥
भांति रंगीली सेजपर, रहे लटकि लपटाइ ।
ललितादिक निज सहचरी, तहां पलोटति पाइ ॥
एक सुनावति सारंगी, रंग भीनी लिये बीन ।
मंद मधुर सुरगावही, रुचि लिये ताँन नवीन ॥
राग रंग जुत प्रेम रस, अद्भुत केलि अनंग ।
छिन छिन आनंद सिंधु के, उठिवो करत तरंग ॥

॥ कवित्त ॥

नवल रंगीले लाल रसमें रसीले अति, छबिसों छबीले दोऊ
र धुरि लागे हैं। नैंननि सौं नैंन कोर सुख सुख रहे जोर, रुचि

कौन ओर छोर ऐसे अनुरागे हैं ॥ परे रूप सिंधु मांझ जानत न
भोर सांझ, अंग अंग मैंन रंग मोद मद पागे हैं। हित ध्रुव बिल-
सत तृषित न होत कैहूँ, जदपि लड़ैती लाल सब निसि जागे हैं ॥

दोहा—नित उठि जो गावै सुनै, मंडल सभा सिंगार।
सो ध्रुव पावै वेगही, प्रेम कृपा को हार ॥

सो०—मंडल सभा सिंगार, सोलह से इक्यासिया।
सकल रसनि को सार, हित ध्रुव बरने जथा मति ॥

दोहा—दोहा कबित्त अरु सोरठा, द्वै सत तिथि गुन बेद ।
या रंग में जे रंगि रहे, तेई पैहैं भेद ॥
द्वै सत ऊपर अष्ट दश, और सवैया चार।
अद्भुत युगल बिहार रस, छिन छिन ध्रुव उरधार ॥
दोहा द्वै सत बीस यक, वरनत युगल विलास।
सुनत सुनावत सरस ध्रुव, रसिकनि होत हुलास ॥

॥ इति श्री सभा मंडल लीला की जै जै श्री हित हरि वंश ॥ १७ ॥

॥ अथ रस मुक्तावली लीला प्रारम्भ ॥

दोहा—प्रथमहि श्री गुरु के चरन, उर धरि करौं बिचारि ।
वैस वेष सखि भाव सो, अद्भुत रूप निहारि ॥१॥
एती मति मोपै कहां, सिंधु न सीप समाइ।
रसिक अनन्यनि कृपावल, जो कछु बरन्यो जाइ॥२॥

रसिक अनन्यनि कृपा मनाऊँ ❀ वृन्दावन रसकछु इक गाऊँ ॥३॥
जो जन पंच विहार स्थाना ❀ श्रीपति श्रीसौं कह्यौ प्रमाना ।४।
रतन खचित कंचन की अवनी ❀ झलकिरहीसोभाअतिकवनी।५।
कुंदन वेलि द्रुमनि लपटानी ❀ मुक्तनि लता भरी छविपानी ।६।
जगमगात है सब वन ऐसे ❀ दामिनिकोटिलसतिघनजैसे ।७।

राजत हंस सुता छवि न्यारी ❀ रसपति रसकी मनो पनारी ।८।
बहु विधि रंग कमल कल फूले ❀ आनंद फूल जहां तहां फूले ।९।
भ्रमत मधुप सौरभ रस माते ❀ पच्छी सबै गान गुनराते ।१०।
कोकिल कीर कपोत रसाला ❀ छविसौंनिर्त्ततमोरमराला ।११।
जेहि वनकौ शिव श्रीपतिगावैं ❀ मन प्रवेश तहां कैसे पावै ।१२।
अगम अगाध सबनिते न्यारौ ❀ प्रेम खेल तेहिठाँ विस्तारौ ।१३।
दोहा–प्रेम रासि दोऊ रसिक वर, रूप रंग रस ऐंन ।
मैंन खेल खेलत तहां, नहिं जानत दिन रैंन ॥१४॥
मंडलमनिमयअधिकविराजे ❀ निरखतकोटिभानससिलाजे।१५।
तापर कमल सुदेस सुवासा ❀ षोडसदल राजत चहूँपासा ।१६।
मध्यकिशोर किशोरी सोहैं ❀ दलदलप्रतिसहचरिछविजोहैं।१७।
अतिसरूप मोहन सुकुँवारा ❀ रंगे परस्पर प्रेम अपारा ।१८।
रसिकानन्द रसिकनी संगा ❀ विलसतहैं नवकेलिअनंगा ।१९।
एक वैस रुचि एकै प्राना ❀ जीवनअधरसुधारसपाना ।२०।
अद्भुतरसनिधिजुगलविहारा ❀ सबसखियनिकेयहैअहारा ।२१।
अष्टसखीमनो मूरतिहितकी ❀ अतिप्रवीनसेवाकरैंचितकी ।२२।
आठआठ सहचरि तिन संगा ❀ रंगी निरन्तरतेहिसुखरंगा ।२३।
दोहा–नाम वरन सेवा बसन, जैसे सुने पुरान ।
ते सब व्यौरे सौं कहौं, अपनी मति अनुमान ॥२४॥
ललिता परमचतुरसबबातनि ❀ जानतहैंनिजनेहकीघातनि।२५।
पाननि वीरी रुचिर बनावै ❀ रुचिलैरचिरचिरुचिसौंख्वावै।२६।
मुखते बचन सोई तो काढ़ै ❀ जाते दुहुमें अतिरुचि बाढ़ै ।२७।
दोहा–गोरोचन सम तन प्रभा, अद्भुत कही न जाइ ।
मोर पिछकी भांति के, पहिरे वसन बनाइ ॥२८॥

॥ तिनकी सखी ॥

रतन प्रभा अरु रति कला, सुभा निपुन सब अंग ।
कलहंसीरु कलापनी, भद्र सौरभा संग ॥ २६ ॥
मनमथ मोदा मोद सौं, सुमुखी है सुख रास ।
निसि दिन ये आठौ सखी, रहैं ललिता के पास ॥३०॥
सखी बिसाखा अतिही प्यारी ❀ कबहुँनहोत संगते न्यारी ।३१।
बहुविधि रंग बसन जो भावै ❀ हितसौं चुनिकै लेपहिरावै।३२।
ज्यौं छाया ऐसे संग रहही ❀हितकीबातकुँवरिसौंकहही।३३।
दोहा–दामिनि सत द्युति देह की,अधिक प्रियासों हेत ।
तारा मंडल से बसन, पहिरै अति सुख देत ॥३४॥

॥ तिनकी सखी ॥

माधवी मालती कुञ्जरी, हरनी चपला नैन ।
गंध रेखा सुभ आनना,सौरभी कहै मृदु बैन ॥३५॥
चंपकलता चतुर सब जानै, ❀ बहुतभांतिके बिंजनवानै ।३६।
जेहिजेहि छिन जैसीरुचिपावै ❀ तैसे बिंजन तुरत बनावै ।३७।
दोहा–चंपकलता चंपक बरन ❀ उपमा को रह्यो जोहि ।
नीलांबर दियो लाड़िली,तनपर रह्यो अति सोहि॥३८॥

॥ तिनकी सखी ॥

कुरङ्गा छीमन कुंडला, चंद्रिका अति सुख दैन ।
सखी सुचरिता मंडनी, चंद्रलता रति ऐन ॥ ३९ ॥
राजत सखी सुमंदिरा, कटि काछनी समेत ।
बिबिधिभांति बिंजनकरै,नवल जुगल के हेत ॥४०॥
चित्रा सखी दुहुँनि मन भावै ❀ जलसुगंधलैआनिपिवावै।४१।

जहांलगि रसपीने के आही ❀ गोलि सुगंध बनावै ताही।४२।
जेहिछिन जैसी रुचिपहिचानै ❀ तबहीआनिकरावतिपानै।४३।
दोहा—कुंकुम कोसौ बरन तन, कनक बसन परिधान।
रूप चतुरई कहा कहौं, नाहिन कोऊ समान॥४४॥

॥ तिनकी सखी ॥

सखी रसालिका तिलकनी, अरु सुगंधिका नाम।
सौर सैन अरु नागरी, रामिलका अभिराम॥४५॥
नागबैनिका नागरी, परी सबै सुखरंग।
हितसौं ए सेवा करैं, श्रीचित्रा के संग॥ ४६ ॥
तुङ्ग विद्या सब विद्या माही ❀ अतिप्रवीन नीके अवगाही।४७।
जहांलगि बाजे सबै बजावै ❀ रागरागिनी प्रगट दिखावै।४८।
गुनकीअवधिकहतनहिंआवै ❀ छिन२लाड़िलीलालजड़ावै।४९।
दोहा—गौर बरन छबि हरन मन, पंडुर बसन अनूप।
कैसे बरन्यो जात है, यह रसना करि रूप॥५०॥

॥ तिनकी सखी ॥

मंजु मेधा अरु मेधिका, तन मध्या मृदु बैन।
गुनचूड़ा बांरुगदा, मधुरा मधुमै ऐन॥५१॥
मधु अस्पंदा अति सुखद, मधुरेछना प्रवीन।
निसि दिन तौ ये सब सखी, रहत प्रेम रस लीन॥५२॥
इन्दुलेखा अति चतुरस्यानी ❀ हितकीरासिदुहुनिमनमानी५२
कोककला घातनि सब जानै ❀ काम कहानीसरसबखानै।५४।
बसी करन निज प्रेमके मंत्रा ❀ मोहनविधिकेजानतजंत्रा।५५।
छिन२ते सब पियहि सिखावै ❀ तातेंअधिकप्रियामनभावै।५६।

दोहा—देह प्रभा हरताल रंग, बसन दाड़िमी फूल ।
अधिकारिन सबकोसकी, नाहिन कोउसमतूल ॥५७॥

॥ तिनकी सखी ॥

चित्र लेखा अरु मोदिनी, मंदालसा प्रवीन ।
भद्रतुङ्गा अरु रसतुङ्गा, गान कला रसलीन ॥५८॥
सोभित सखी सुमंगला, चित्रांगी रस दैन ।
ये तौ रहै सब बात में, सावधान दिन रैंन ॥५९॥
रंग देवी अति रङ्ग बढ़ावै ❀ नखसिखलौंभूषनपहिरावै ।६०।
भांति भांति के भूषन जेते ❀ सावधान ह्वै राखत तेते ।६१।
कमल केशरी आभा तनकी ❀ बड़ीसक्तिहैचित्रलिखनकी ।६२।
दोहा—तन पर सारी फबि रही, जपा पुहुप के रंग ।
ठाढ़ी सब अभरन लिये, जिनके प्रेम अभंग ॥६३॥

॥ तिनकी सखी ॥

कलकंठी अरु ससि कला, कमला अति ही अनूप ।
मधुरिंदा अरु सुन्दरी, कंदर्पा जु सरूप ॥६४॥
प्रेम मंजरी सों कहै, कोमलता गुन गाथ ।
एतो सब रस में पगी, रंग देवी के साथ ॥६५॥
सखी सुदेवी अतिहि सलौनी ❀ काहू अंग नाहिने औनी ।६६।
सुठ सरूप मोहन मन भावै ❀ रुचिसों सब सिंगार बनावै ।६७।
कच कबरी गूँथति है नीकी ❀ अतिप्रवीन सेवा करें जीकी ६८
अंजन रेख बनाइ संवारें ❀ रीझि मुकरलै प्रिया निहारें ६९
सारो सुवा पढ़ावत नीके ❀ सुनिसुनिमोदहोतसबहीके ७०
दोहा—अति प्रवीन सब अंग में, जानत रस की रीति ।
पहिरे तन सारी सुही, बढ़वत पल पल प्रीति ॥७१॥

॥ तिनकी सखी ॥

कावेरीरु मनोहरा, चारु कबरि अभिराम।
मंजु केशी अरु केसिका, हार हीरा छबि धाम ॥७२॥
महा हीरा अतिही बनी, हीरा कंठ अनूप।
उपमा कछु नहिं कहि सकत, ऐसी सबै सरूप ॥७३॥
कहे गौतमी तंत्र में, इन सखियनि के नाम।
प्रथम बंदि इनके चरन, सेवहु स्यामा स्याम ॥७४॥
जो यह टहल सखीनु की, रहत बिचारत नित्त।
सो पावै ध्रुव प्रेम रस, तेहि सुख सों रंगे चित्त ॥७५॥
सबैसखीइहिबिधिज्यों ज्यावै❀छिनछिन प्रतिनवलाललड़ावै७६
फूलनि कुंज अनूप बनावै ❀ लै गुलाब दल सेज रचावै ।७७।
तापर लाल लाड़िली सोहैं ❀अतिआसक्ति परस्पर जो हैं ।७८।
चितवनिमुसिकनिअतिरसभीनी❀मैनअनीमनो आगेकीनी।७९।
आलिंगन चुंबन अनुरागे ❀अद्भुत सुरत प्रेम रस पागे ।८०।
बिच बिच बतियां कहतसुहाई❀अँखियनिसोंअंखियांअरुझाई८१
तेहि सुख रङ्ग में रैंनि बिहानी❀रतिबिहारकीतृपितनमानी ।८२
अंग अंग ऐसे लपटानैं ❀गौरस्यामतहांजात नजानैं ।८३।
दौहा—रैंनि घटी रुचि नहिं घटी, अद्भुत जुगल बिहार।
तन मन अरुझे लेत हैं, अधर सुधारस सार ॥८४॥
भोर भये सहचरि सब आई❀यह सुख देखत करत बधाई ।८५
कोऊ बीन सारंगी बजावै❀कोऊ राग बिभासहि गावै ।८६
एक चरन हित सों सहिरावै❀एक बचन परिहांस सुनावै ।८७
उठि बैठे दोऊ लाल रंगीले❀बिथुरी अलकसबैअंग ढीले ।८८
घूमत अरुन नैंन अनियारे❀भूषन बसन न जात संभारै ।८९

कहूं अंजन कहूं पीक रही फबि ❀ कैसे कही जात है सो छबि।९०।
हार वार मिलि के अरुझानै ❀ निसिके चिन्ह निरखि मुसिकानै ९१

दोहा—निरखि निरखि निसि के चिन्हन, रोमांचित ह्वै जांहि।
मानों अंकुर मैन के, फिरि निपजे तन माँहि ॥९२॥

अद्भुत मिश्री मेलि मलाई ❀ अधिक हेतसों आनि खवाई।९३।
चितवत जुगल बदनबिधु ओरी ❀ मानो रसभरी त्रिषित चकोरी।९४।

दोहा—कीनी मंगल आरती, मंगल निधि सुकुँवार।
मंगल भयो सब सखिन के, यह रस प्रेम अधार॥९५॥

सखी एक ल्याई पिकदानी ❀ एक लिये झारी भरि पानी।९६।
रतन खचित कंचन की चौकी ❀ झलमलात सोभा रवि सौकी ९७
कोमल कुसमनि गदी बिछाई ❀ अति सुगंद सोंधे छिरकाई।९८
तेहि ऊपर बैठे दोऊ प्यारे ❀ जल सुगंध सों बदन पखारे।९९
सहचरि एक मुकर लिये ठाढ़ी ❀ झलकन सोभा सतगुन बाढ़ी १००
तेहि छिन कछु खैवे को लाई ❀ मादिक मधुर बात मन भाई १०१

दोहा—बहु बिधि मेवा मधुर फल, कढ़्यो दूध इकसार।
लै आई निज सहचरी, जानि कलेऊ वार ॥१०२॥

हँसि हँसि नवल जुगल कछु लयो ❀ सखियनि के मन आनंद भयो १०३
ललिता पान खवावत खरी ❀ निरखत छबि आनंद रस भरी १०६
खाइ प्याइ के जब मन मान्यो ❀ मंजन को हित सबहिं निठान्यो १०४
काहू सखी तप्त जल आन्यो ❀ काहू घोरि उबटनो बान्यो १०५
एक फुलेल अरगजा ल्याई ❀ टहल हेत सब फिरत हैं धाई १०६
दंपति सुखके रस में भीनी ❀ छिन छिन तिनकी प्रीति नवीनी १०७
एकै रस भीजी रहै नितही ❀ जानत नहिं निसि बासर कितही १०८

॥ सवैया ॥

सखी चहूँ कोद फिरैं चकडोरी सी सेवा को चाव बढ़्यो मन माही। सौंज सिंगार नई नई आनत वानत नेकहूँ हारत नाही॥ प्रेम पगी तेहि रंग रंगी निरखै तिनको तनकौं न अघाही। और सवाद लगे ध्रुव फीके रहै विवि रूप के छत्र की छाहीं ॥१०९॥

रतन कुञ्ज में आये दोऊ ❀ ललितादिक विन तहां न कोऊ ११०

दोहा–चांपि चुपरि मृदु सेज पर, न्योछावर करि प्राँन।
अति सुगंध जल उस्न सों, करवावत स्नान ॥१११॥

अद्भुत अंग अंगोछे जबही ❀ कोटि आरसी वारी तबही ११२
पुनि सिंगार कुन्ज में आये ❀ मन भाये सिंगार कराये ।११३
मन की रुचि लै सेवा करही ❀छिनछिन प्रतिऐसेअनुसरही११४
फूलन आसन रचे बनाई ❀ भोजन कुञ्ज में बैठे जाई ।११५
मनि मय चौकी राखी आनि ❀ हेमथार तापर धर्‌यो वानि ११६
झलकि रहे बहु कनक कचोरा ❀ बिञ्जन भरि२ धरे चहूँओरा ११७
मध्य अनूप खीर अति नीकी ❀ भरी कटोरी सोंधे घी की ११८
उज्जल मिश्री पीस मिलाई ❀ रसना स्वादहिकहिनसकाई ११९
एक दूध के बहुत प्रकारा ❀ कहिनसकततिनकेबिस्तारा १२०
बिविधि भांति पकवानबनाये ❀ तेसबनवलजुगल मनभाये १२१
मोहन भोग सरस घी माहीं ❀ अतिकोमलउपमाकछुनाहीं १२२
पतरी रोटी घी सों सनी ❀ वरी फुलौरी अतिही बनी १२३
खाटे चरपरे बरे सलोने ❀ घृत में नीके बने निमोने १२४
पापर कचरी गीचे नीके ❀ पावत रुचिसों प्यारे जीके १२५
सालन साक और तरकारी ❀ रसना स्वादहि लेत न हारी १२६

ोहा–जो बिञ्जन कर पल्लवनि, छुवल छबीली बाल ।
तहां ते रुचिसों लेत हैं, नवल रँगीले लाल ॥१२७॥

ापक लता चौंपसौं जेवावै ❀ललिताबातनिरुचिउपजावै १२८
ात भात सिखरन सुठि गाढ़ी ❀ग्रासलेत अतिहीरुचिबाढ़ी १२९

ोहा–हँसिहँसि दोऊ नागर नवल, ग्रास परस्पर लेत ।
ललितादिक निज सखिनुके,नैंननि को सुख देत ॥१३०॥

ूध पना सरबत रुचि कारी ❀बहुत भांतिसों तक्र संवारी १३१
हेतकीलिधिसहचरीचहूँओरैं ❀कौरकौर प्रति सबै निहोरैं १३२
ँसि २ जेवत हैं पिय प्यारी ❀तेहिछिनकौसुखकहौंकिहारी १३३
मन जानै कै दोऊ नैंना ❀रसना पै कछु कहत बनैंना १३४
यह आनन्द कह्यो नहि जाई ❀रसना कोटि होहिजो माई १३५
तब सखियनआचमनदिवायो ❀सबके नैंन प्रानसुखपायो १३६
ललिता रचिरचि बीरीकीनी❀नवलकुँवरिअरुकुँवरहिदीनी १३७

दोहा–नैंन दीप हिय थार भरि, पूरि प्रेम घृत ताहि ।

दोहा—मदन मोद आनन्द मद, मते रहत निशि भोर।
कुसल सुरत रस सूर दोऊ, नागर नवल किशोर ॥१४६॥
जबही घरी चार दिन रह्यौ ❀प्रीतम प्रान प्रियासौंकह्यौ १४७
चलहु कुँवरि देखैं बनराई ❀फूलन सोभा कही न जाई१४८
फूली लता बढ़ी तरु छांही ❀झूमिरही जमुना जलमाही१४६
सिमटी आइ सखी हितकारी ❀एक बैस अतिहीसुकुँवारी१५०
बिबिधिभांतिमधुभोजनआन्यौ❀सबसुगंधसोबास्यो पान्यौ१५१
जोई भायो सोई कछू लीनौ ❀पुनिबनदेखनकोमनकीनौ१५२
दोहा—भीने अति रस रङ्ग में, नवल रँगीले लाल।
बाहांजोरी चलत दोऊ, मत्त मरालनि चाल ॥१५३॥
जिहिं द्रुम बेलि फूल तन हेरैं❀सींचतमनो अनुरागसौंफेरैं१५४
निकसत हैं घन बीथिन माहीं❀नवलनिचोलनिपरसतनाहीं१५५
बंशी बट तट रबिजा तीरैं❀सीतल मन्द सुगन्ध समीरैं१५६
उज्जल चौक अधिक झलकाई❀मानो सोभा आनि बिछाई१५७
सखियनि सभा तहां सुखदाई❀सुखकी सींव कहीनहिजाई१५८
मध्य महा मन मोहन साई❀आनँदछबि सबपर बरषाई१५६
बैठे दोऊ ग्रीवां भुज मेले❀नैंननि खेल परस्पर खेले१६०
अपने २ गुनहि दिखावैं❀निर्त्तत एक २ मिलिगावैं १६१
दोहा—सहज रूपके चन्द द्वै, सखिन पुञ्ज चहूँओर।
मानो पीवत छवि सुधा, सबके नैंन चकोर ॥१६२॥
सखी सबै चहूंओर सुहाई❀निरखत फूली अंगनि माई१६३
एक सारङ्गी बीन सुनावैं❀एक मृदङ्ग अनूप बजावैं१६४
तिरप लेत झलकत तन ऐसे❀बहुत रंग की दामिन जैसे१६५
राग रागिनी मूरति धारैं❀सखी रूप सेवत सुखवारैं १६६

कोटि कलप जो यह सुख देखै❀रुचिन घटैछिनकी समलेखै १६७
दोहा—अद्भुत मीठे मधुर फल, ल्याई सखी बनाय।
खावत प्यारेलाल कौं, पहिले प्रिया चखाइ ॥१६८॥
ानी मुख सोभा अति बढ़ी❀पानिपमैंन दुहुँनि मुखचढ़ी १६९
ासि हिये आनंद रस भरे❀चाह चौंप रतिरङ्ग सें परे १७०
न समय की बिरियां जानी❀भोजनसौंजतबहिकछुआनी १७१
ध भात मधु अति रुचिकारी❀जलसुगन्धभरिआनीझारी १७२
ःवाइ प्याइके बीरी दीनी❀प्रेम प्यारसौं आरति कीनी १७३
मदन रंग नैंननि झलकान्यो❀मनकौहेतसखिनुजबजान्यो १७४
कलप द्रुमनि कल कुंज सुहाई❀षोड़स द्वार बने तहां माई १७५
इक इक मनि की आभाऐसी❀कोटि दिवाकर प्रभा न तैसी १७६
कोमल कमलनि के दल लीने❀अति सुगंध सौंधे सौं भीने १७७
रचि बिचित्र बर सेज बनाई❀निरखत नैंन मेंन अरुझाई १७८
दोहा— सेज सुखद रचना रची, लै मृदु कुसुमनि मोद।
तेहि ऊपर सुकुँवार दोऊ, करत बिलास बिनोद ॥१७९॥
सौंधो पान सुगंध मधु, दूध सो मिश्री छान।
भरि भरि भाजन हेम के, सखियनि राखे वाँन ॥१८०॥
सबै सौंज ग्रह धरी बनाई❀आपुनलतनिओट रहि जाई १८१
तब दोऊ बतियनि के रस परे❀आलिंगन चुम्बन अनुसरे १८२
रूप मदन गुन नेह के ऐंना❀तन मन अरुझि नैंनसौंनैंना १८३
जो रस उपजत हैं दुहुँ माँहीं❀ललितादिकनिरखतनअघाँहीं १८४
यह रस तौ समुझै नहि कोई❀जानै सो जो इनको होई १८५
दोहा—रूप तरंगनि में परी, अँखियां मीन अनूप।
सुरत सिंधु सुख झिलि रहे, साँवल गौर सरूप॥१८६॥

सेज सुरत सरिता मनौ, मज्जत दोऊ सुकुँवार।
बिवस लाल पैरत फिरैं, कुच तुम्बन आधार ॥१८७॥
अद्भुत रस मुक्तावली, मण्डल केलि बिहार।
हित ध्रुव जो गावै सुनै, पावै प्रेम अपार ॥१८८॥
साँझ भोर लौ ऐसेही, भोर साँझ लौ जानि।
हित ध्रुव यह सुख सखिन कौ, निसिदिन उरमेंआनि।१८९।
दोहा चोपई एक सत, नव्वैं अति अभिराम।
हित ध्रुव रस मुक्तावली, रसिक जननि विश्राम ॥१९०॥

॥ इति श्री रसमुक्तावली लीला सम्पूर्ण की जै जै श्री हित हरिवंश ॥१८॥

॥अथ रस हीरा वली लीला प्रारम्भः॥

दोहा—प्रथमहिं श्रीगुरु कृपातें, यह उपजी उर आनि।
बरनो रसहीरावली, जुगल केलि रसखाँनि ॥१॥
रंग भरे दोऊ लाल रंगीले ❀ रतिके रस पग रहे रसीले॥।२।
अति सुदेस वृन्दाबन माँही ❀ नवल प्रेमरस दिनवरषाँही ।३।
सुख अनूप नव कुञ्ज सुहाई ❀ छविके फूलनिसों जनु छाई ।४।
मृदु मृदु दल जलजनिकेलीने❀ अति सुगंध सोधेसों भीने ।५।
रचि बिचित्र सुखसेज बनाई ❀ तेहि ऊपर बैठे सुखदाई ।६।
जहां तहां डोलत मोर मराला❀ शुकपिकबोलतबचनरसाला।७।
फूलनिकी छबि बनत निहारैं❀ होत मधुर मधुपनि गुञ्जारैं।८।
मारुत त्रिबिध बहैरुचि लिये ❀ मदन मोद उपजावत हिये।९।
हँसत परस्पर आनन्द रासी ❀ सुखफूलनिकी मनो बरषासी१०
दोहा—भीने नेह सुरङ्ग रङ्ग, अति उदार सुकुँवार।
प्यारी तन अति प्यारसौं, रहत निहार निहार ॥११॥
देखी प्यारी अति रस ढरी ❀ तबहितलालइकबिनती करी।१२

हाहा प्रिये बात इक पाऊँ ❀ रचि अंगनि सिंगार कराऊँ।१३
आतुरता हियकी जब जानी ❀पियतनचितैकछुकमुसिकानी१४
इहि विधि की जब आज्ञा पाई❀ आनंद फूलन उरहि समाई १५
मेलि फुलेल सँवारत बारनि ❀ छबिसौंराजतनित्यबिहारनि१६
चिकुर चंद्रिका रुचिर बनाई ❀ गुहत गहर सौं रहे लुभाई १७
कैसे कहौं छबि जो उर माहीं❀ इन नैननि के रसना नाहीं१८
स्याम सुदेस सचिक्कन सोहैं ❀ लाँबे कच गूंथत मन मोहैं।१९
जानौ कमल बहुत इक ठौरैं ❀ पंकति बांधि भृङ्गमनो दौरैं ।२०
दोहा—गुननिधि अङ्ग सुवासनिधि, नवल छबीली नारि॥१।
सौरभ की मूरति मनौ, रची है रूप सँवारि ॥२१॥
सीस फूल छबियों उर आई ❀रवि सुहाग को प्रगट्यो माई २२
मनिमय बेंदी रुचिर बनाई ❀ रूप दीप मनो सोभा पाई २३
भाइनि भाइ भौंह सुकुँवारी ❀ पिय पुतरी जहां रहे रखवारी२४
श्रवननि तरल तरौना झलकै❀ निरखत लाल परतनहिंपलकैं२५
पतरी अलक एक छुटिआई ❀ पियमनकोजनो पासिखलाई२६
बंक बिशाल नैंन अनियारे ❀ उज्वल अरुन सहजकजरारे २७
सुठि सुढार पानिप मित नाहीं❀ चंचल अंचल में न समाहीं २८
नासा बेशरि जगिमगि रही ❀ छबिकी सींव परतनहि कही २९
अधर बिंब बंधूक पंवारी ❀दसनि झलकपर दामिनिवारी३०
दोहा—अति अनूप वर चिबुक पर, स्याम बिंदु सुखदेत।
मानौ मोहन मन मधुप, बदन कञ्ज रस लेत ॥३१॥
नीलांबर छबि ऐसी पाई ❀ रैनि मनो दिनके सँगआई३२
तामें अँगिया अरुन सुधारी ❀ यातें उपमा और विचारी ३३
मनो सिंगार मेरु रह्यो छाई ❀ जनुअनुरागधरयोविचआई ३४

कुंदन की दुलरी बनी गरे ❀ फबी पोत बिबि मोतिनुलरे ३५
रतननि खच्योपदिक अतिसोहै ❀ ताकी द्युतिपरदिनकर कोहै ३६
भुजमृनाल छबि उरज बखानौ ❀ रसफलरूपलतालगे मानौ ३७
चूरी श्याम करनि फबि रही ❀ तिनकी उपमा पावत नहीं ३८
पहुचिनि के लटकन बने ऐसे ❀ भ्रमतभँवर कमलनपर जैसे ३९
गोरी अंगुरिनु की छबि जोहै ❀ मिहदीरंगभीनी अतिसोहै ४०
दोहा—चन्द्रहार छबि कहा कहौं, पानिप मोतिनु हार।
मनो रूप अरु प्रेम की, आइ मिली द्वै धार ॥४१॥
सरसी नाभि सुदेस सुहाई ❀ पियमन हंसबसत तहांमाई ४२
त्रिवली प्रीतम प्रान अधारा ❀ मनो रूप रस गुन की धारा ४३
रोम राज सोभा यों दीनी ❀ मनो रेखा रतिपति की कीनी ४४
सूक्षम कटि पृथु जघन सुढारा ❀ अतिरोचिककिंकिनीझनकारा ४५
जेहर सुमिलि अनूप बिराजे ❀ नूपुर अद्भुतरागिनी बाजे ४६
तिनपर बंशी बारत प्यारौ ❀ हितध्रुवरीझि अपनपौहारौ ४७
चरन कमल जावक रंग भीनें ❀ प्रीतम चित्र प्यारसों कीनें ४८
परम रसिक रस में सहरावत ❀ कबहूँ ले हिय नैंनलगावत ४९
पियमन बसत रहत तेहि ऐंना ❀ अटक्यौ नागर नैननि सैंना ५०
कोक कला बरनी है जेती ❀ प्रिया चरन सेवत रहै तेती ५१
नखसिखलौंअतिकुंवरिसिंगारी ❀ मानो सोभा की फुलवारी ५२
देखि छबीली भांति लुभानें ❀ लालतहां बिनमोलबिकानें ५३
दोहा—बाढ़ी छबि सब भूषननि, अद्भुत भांति अनूप।
गहने को गहनौ भयौ, नवल नागरी रूप ॥५४॥
यातें अंगनि भूषन बाने ❀ ताके हेत दोऊ उरझाने ५५
चितवत लाल बिवस ह्वै जाई ❀ यातें राखे अंग दुराई ५६

दूजे सखियनि यौं पहिरावैं ❀ सेवा हितके सुखहिं बढ़ावैं ५७
अंगनि के भूषन यौं भये ❀ मनो मनिनं के ढपना दये ५८
रूप माधुरी सहजहि राजे ❀ छिन२ औरै और बिराजे ५९
दोहा—ऐसो रूप प्रकास तहां, नखकी सम नहिं भाँन ।
तेहिठाँ उपमा दीपकी, धरिबो बड़ो अयान ॥ ६० ॥
जहांलगिद्युतिअरुकांतिबखानी❀ कुँवरिअंगदेखत सकुचानी ६१
छबि ठाढ़ी आगे कर जोरैं ❀ गुनकी कला चौर सिर ढोरैं ६२
चित्रभई तेहिठाँ चतुराई ❀ पंग भई चितवत चपलाई ६३
छ्वै न सकत अङ्गनि मृदुताई ❀अतिसु कुंवार कुंवरि तनमाई ६४
यातें उपमा कछु उर आई ❀ बात खोज बिन जातन पाई ६५
रति इक-हेम छबिहि उर आनैं ❀ताहि समुझि सुमेर पहिचानै ६६
दोहा—अंग कांति की छबि छटा, ताकी छटा सुदेस ।
उपमां सब जग की भई, तेहि सोभा को लेस ॥ ६७ ॥
सहज माधुरी अंगनि बरषै ❀पल पल प्रीतम मन आकरषै ६८
देखत अद्भुत भांति अनूपहि ❀पियमन पर्यो प्रेम के कूपहि ६९
चितै रूपगुन अलकनि कारो❀हितसौं लाइ लयो उर प्यारो ७०
अधरनि रस सींच्यो जब प्यारी❀तनकी सुधिजब जाइसंभारी ७१
बढ़्यो केलि रस सिंधु अभंगा ❀ हाव भाव तहाँ उठत तरंगा ७२
पायो रूप अंबु निजु ऐंना ❀चंचल मीन फिरत तहां नैंना ७३
रंग भरे पट अंग बिसारे ❀रस बिनोद भीजे दोऊ प्यारे ७४
अति बिचित्र सबही बिधिदोऊ❀रस बिहार में घटि नहि कोऊ ७५
विद्या कोक कला जिती कही ❀ तेऊ तहाँ भूलि सब रही ७६
तेहि सुख रंग परे सुनि सजनी❀जानतनहिकितवासररजनी ७७

दोहा–मिटत न तृषा मनोज की, करत मधुर रस पान।
जैसे निवरत खेल नहि, जहाँ खिलार समान ॥७८॥
हाव भाव हीरा भये, हेम नील मनि अंग।
जरे जु कुंदन प्रेम ध्रुव, पानिप झलक अनंग ॥७९॥
षटरितु बरनो जुगल हित,बहु बिधि करत बिहार।
रितु रितु को सुख कहौं कछु, अपनी मति अनुसार ॥८०॥

॥ सवैया ॥

खेलत कामिनी कंत बसंत बढ़्यो मन मोद बिनोद अनंगा।
तैसो रह्यौ बन फूलनि फूल रंगे दोऊ प्रीतम प्रेम सुरंगा॥
प्रिया मुख चन्द्र की ओर किशोर चकोर भये पिवै रूप तरंगा।
सखी चहूँ कोद बिलोकत हैं ध्रुव आनन्द को सुखसार अभंगा ८१

॥ चौपाई ॥

रित बसंत आई सुख दाई ❀भयो आनंद सबनिमन भाई ८२
हरितु अरुन दल अंकुर नये ❀ जहाँ तहाँ फूल सुरंगित भये ८३
नवल जुगल सुख हेत बिचार्यौ ❀मानौ वृंदा विपिनसिंगार्यौ ८४
फूली बेलि तरुनि लपटानी ❀मानोतिय पियसौ रतिमानी ८५
तन मन फूल कही नहि जाई ❀ फूले फूल जहाँ तहाँ माई ८६
शुक पिकवानी सुखसौं सॉनी ❀ मानौ कहत हैं मैन कहानी ८७
इक द्रुम तौ सब फूलनि छाये ❀मानौ अतन वितान तनाये ८८
सुरंग सुगंध गुलाल उड़ायौ ❀मनोअनुराग सबनिपरछायौ ८९
तेहिठाँ खेल बढ्यौ अति भारी ❀चहूँदिससखीमध्यपियप्यारी ९०
छिरकतहँसत अधिक सुख देही ❀बिचबिच अधर सुधारसलेही ९१
कुंकुम अरगजा के रस भीने ❀ रस बिहार में परम प्रवीने ९२
कोमल सेज रची सुख सींवाँ ❀ तापर राजत दै भुज ग्रीवां ९३

झूलत दोऊ मिलि सुरत हिंडोरे ❀ चंचल चपल स्याम तन गोरे ९४
चितै रहत प्यारी मुख ओरे ❀ भाइनि भरी नैंन की कोरे ९५
छिनछिन प्रीतमकौ चित चोरै ❀ बाजत किंकिन थोरे थोरैं ।९६।
रति बिलास रस ऐसो कीनौ ❀ मनमथ कोटिमान हरिलीनौ ९७
दोहा—रूप सखी को धरे ध्रुव, सेवत दिनही बसंत ।
छिनि छिन रुचि लै दुहुँनि की, फूलत फूल अनंत ॥

॥ सवैया ॥

ग्रीषम की रितु जानि सहेलिनु कंज कपूर की कुञ्ज बनाई । चंदन चंद के खंभ रचे दल कोमल रङ्ग सुरङ्गनि छाई ॥ उज्जल सेज सुरङ्ग सुहावनी वारि गुलाब सौं लै छिरकाई । राजत हैं ध्रुव लाड़िली लाल बिनोद को मोद बढ़्यौ अधिकाई ॥९९॥

॥ चौपाई ॥

आई ग्रीषम सोभा ऐंना ❀ अंगनिछबिदेखतभरि नैंना १००
झीनेबसनझलकअतितनकी ❀ पूरन भई आस सब मनकी १०१
उज्वल फूलनि कुंज सुहाई ❀ उज्वल कोमल सेज रचाई १०२
फूलनि के रचि हार बनाये ❀ लै कपूर जल सौं छिरकाये १०३
जहांतहां उज्वल बसनबिछाये ❀ जलजनिके भूषन पहिराये १०४
दोहा—उज्वलता उज्वल सहज, उज्वल भाँति अनूप ।
बैठे उज्वल सेज पर, उज्वल प्रेम सरूप ॥ १०५ ॥
पुट कपूर दै चन्दन गारयौ ❀ नव गुलाब लै तामें डारयौ १०६
सबै सखी पहिरैं सित सारी ❀ तैसेई भूषन अति रुचिकारी १०७
बहत है सीतल मंद समीरा ❀ सीरो अदन पान वर नीरा १०८
दोहा—सियराई सेवा करैं चितवत नैंननि कोर ।
खान पान सीतल सबै, लिये रहत निसि भोर ॥१०९॥

॥ सवैया ॥

स्याम घटा उमड़ी चहूँ ओरनि पावस की रितु आई सुहाई।
नाचत मोर मयूरी बिनोद सौं आनंद की बरषा बरषाई॥
कौंधैं जहां तहां दामिनि कामिनि प्रीतम अंक रही दुरिमाई।
कैसे कही ध्रुव जात है सो छबि देखत नैंन रहे हैं लुभाई॥११०॥

॥ चौपाई ॥

पावस रितु जब आई तुलानी ❀ भांतिअनूपदुहुँनिमन मानी १११
स्याम सचिक्कन घटा सुहाई ❀उमड़िघुमड़ि चहूँ दिसतेआई ११२
चमकत चपला कही न जाई ❀सकुचि कुँवरि पिय उर लपटाई ११३
गरजनघनसुनिपवनझकोरनि❀आनंदबढ़्योमोरअरुमोरिनि ११४
रंग कुन्ज में सेज सहानी ❀रचिरचिसखियनिहेतसौंबानी ११५
सोभित भूषन बसन सहाने ❀दूलहु दुलहिनि रंग में साने ११६
नवकिशोर मन मन अनुरागे ❀मदन मोद आनंद रस पागे ११७
रिमिझिमि रिमिझिमि बूंदें परैं❀ रंग हिंडोरें झूलत खरैं ११८
तेहि छिन कुँवरिकछुकमन डरै ❀ लपटि जात प्रीतम के गरैं ११९
तिनके छल बल कहे न जाही ❀ अतिविचित्रदोऊविद्यामाहीं १२०
दोहा—कुँवरि रूप बरषत दिनहि, पिय चातिक न अघात।
कहा कहौं या प्रेम की, सुनि ध्रुव उलटी बात ॥१२१॥

॥ सवैया ॥

खेलत रास बिनोद बिहार निसा उँज्यारी महा सुख दैंनी।
सखीन के मंडल मध्य बने दोऊ गावत सुन्दर सारंग नैंनी॥
रागजम्यौ वजे भूषन अंगनि चंदहि भूली है आपनी गैंनी।
सखी रही भीजि तहां रंग में ध्रुव रैंनि भई मनो प्रेम की रैंनी॥१२२॥

॥ चौपाई ॥

सुखद सरस रितु सरद सुहाई ❀ सखियनि मानौंनिधिसीपाई १२३
फूले नील कमल सित राते ❀ भ्रमत मधुप सौरभ रसमाते १२४
कुञ्ज कुञ्ज गहवर बन खोरी ❀ देखत फिरत किशोरकिशोरी १२५
जहां तहां स्वच्छ भई धर ऐसी ❀ कीनी सिकल आरसी जैसी १२६
बनकी क्रांति कहांलौं कहियै ❀ सोभा देखि चकितह्वै रहियै १२७
रैंनि उँज्यारी देखि बिहारी ❀ रच्यो रास अतिही सुखकारी १२८
सेज मंडल मनि दीप बिराजै ❀ अंगनि भूषन बाजे बाजै १२९
पलक तार भौंहैं भई गाइनि ❀ निर्त्तत पुतरीसहज सुभाइनि १३०
सोभित अञ्जनरेख उपंगा ❀ मनो कटाक्ष तहांमधुरमृदंगा १३१
चितवनिसुलपचलनअंगअंगा ❀ कोक कलानि के उठत तरंगा १३२
हाव भाव बहु बिधि दिखरावत ❀ चुंबनदानरीझ तहां पावत १३३
दोहा—रति बिहार कौ रास दोऊ, खेलत परम प्रवीन ।
कोक कला घातें सहज, छिन छिन उठत नवीन ॥१३४॥

॥ सवैया ॥

लाड़िली लालहि भावत है सखि आनंद में हिमकी रितु आई। ऐसे रहे लपटाय दोऊ जन चाहत अंगमें अंग समाई ॥ हार उतार धरे सब भूषन स्वादी महा रस की निधि पाई। महा सुखको ध्रुवसार बिहार है श्रीहरिबंशकी केलि लड़ाई ॥१३५॥

॥ चौपाई ॥

हिमिरितु रंग कह्यौ नहि जाई ❀ लाड़िली लाल रहे लपटाई १३६
तहां लागत ऐसी सियराई ❀ चाहत अंग में अंग समाई १३७
ज्यौं ज्यौं प्यारी पिय उरलागैं ❀ मनो आनन्दके रसमें पागैं १३८

जाकौ सोच करत हे मनमें❀सहजहिबनिआईसोछिनमें१३९
हिमरितु अधिकलाल मनभाई❀जिनतौ ऐसी बात बनाई१४०
या रितुकौ गुन मानत भारी❀ऐसे रसिक लालपर वारी १४१
तन मन भये एक रस माही❀तेहिसुखपरसहचरिबलिजाही१४२
सावधान सब सखी सयानी❀हितकी सौंजधरी सबश्रानी१४३
जेहि जेहि छिन जैसी रुचिहोई❀हितसौं आनिखवाव तसोई१४४
हितमें हरषि सखी सुखकारी ❀ निरखतप्रीतिलेतबलिहारी १४५
मनकी रुचि लै सेवा करही ❀ सावधान सब ऐसे रहही १४६
अति सुकुँवार किशोर किशोरी❀ सहजहि बँधे प्रेम की डोरी॥१४७
ऐसो लालच बढ्यौ बिहारी ❀उरते प्रिया करत नहिं न्यारी१४८
अङ्ग अङ्ग ऐसे लपटाही ❀ भूषनहार न बीच समाही १४९
दोहा–अङ्ग अङ्ग सब रहे जुरि, अरु नैननि सौं नैंन ।
रीति दुहुँनि की यहै ध्रुव, तबही लौं चित चैंन ॥१५०॥

॥ सवैया ॥

ल्याई कछू सियराई सुगन्ध सौं वात बहै अतिही सुखदाई ।
कोमल फूल दुकूल सुरङ्गनि मंजु निकुन्ज में सेज बनाई ॥
बिलास कौ रसिक करै दोऊ हाँस मनो छबि कञ्ज रहे बिकसाई।
भोर अली सत आइ जुरी ध्रुव पीवत रूप परागहि माई॥१५१॥

॥ चौपाई ॥

आई सिसिर कछू सियराई ❀त्रिबिधिसमीरबहैसुखदाई १५२
मंजुल कुञ्ज में बनी निकुन्जा❀ तामें रची सेज सुख पुन्जा१५३
तापर रसिक रसिकनी सोहै ❀ सोछबिसखी नैंनभरिजोहै १५४
कबहूँ बातनि के रस परैं ❀ कबहूँ लटकि सेजपर ढरैं १५५

ऐसी सभा बनी सुखदाई ❀ आनंद हाँस परस्पर माई १५६
दम्पति रुचिलै दिनहिं लड़ावै ❀ हितध्रुवरतिरस मंगलगावै १५७
यह रस प्रेम को सागर आही ❀ मोमति पैर सके क्यों ताही १५८
जतन अजेक किये नहिं पावै ❀ सिंधु सीप में कैसे आवै १५९

दोहा–मो मति लव त्रिसरेनु सम, सोभा मेरु समान।
या मनके अवलम्ब हित, कही कछू उनमान ॥१६०॥
बरषा ग्रीषम नैंन सुख, सरद बसन्त बिलास।
लपटनको सुख हिय सिसिर, प्रेम सुखद सबमास॥१६१॥
रस मै रस हीरावली, पढ़िहै ध्रुव जो कोइ।
प्रेम कमल तेहि हीयतें, तबहीं प्रफुल्लित होइ ॥ १६२ ॥
और न कछू सुहाइ ध्रुव, यह जांचत निसि भोर।
याही रसकी चटपटी, लगी रहो हिय मोर ॥१६३॥
दोहा कबित्त अरु चौपाई, इकसत साठिरु दोइ।
जुगल केलि हीरावली, हिय गुन माला पोइ ॥१६४॥

॥ इति श्री रस हीरावली लीला संपूर्ण की जै जै श्री हित्त हरिवंश ॥ १६ ॥

॥अथ रस रतनावली लीला प्रारम्भ ॥

दोहा–प्रथम समागम सरस रस, वर बिहार के रङ्ग।
बिलसत नागर नवल कल, कोक कलन के अंग॥१॥
नमित ग्रींव छवि सींव रही, घूघट पटहि संभारि।
चरनन सेवत चतुरई, अति सलज्ज सुकुँवारि ॥२॥
जो अंग चाहत छुयो पिय, कुँवरि छुवनि नहिं देत।
चितवनि मुसकनि रस भरी, हरि हरि प्राननि लेत ॥३॥
चितवत औरै अंग पिय, छुयो चहत अंग और।
तऊ बनत नहिं चतुरई, कुँवरि चतुर सिरमौर ॥ ४ ॥

अलक सँवारन ब्याज कै, परस्यौ चहत कपोल।
मृदुल करनि डारति झटकि,रसमय कलह कलोल ॥५॥
बातनि लाई लाड़िली, बहु बिधि करि छल छन्द।
बुधि बल कै खोल्यौ चहत, नागर नीवी वन्द ॥६॥
नागरताई जहां लगि, कीनी नागर जानि।
रहे दीन ह्वै चितै मुख, हारि आपनी मानि ॥७॥
आतुर पिय रस में विवस, उर अधीर अकुलात।
कबहूँ गहत है पगनि कौ, कबहूँ हाहा खात ॥८॥
यह गति देखत लाड़िली, भई कृपाल तेहि काल।
हारेही रस पाईये, उलटी प्रेम की चाल ॥९॥
नैंन कपोलनि चूंबि के, लये अंक भरि लाल।
अधर सुधारस दै मनों, सींचत मैंन तमाल ॥१०॥
सुरत सिंधु सुखरस बढ़्यौ,अति अगाध नहिं पार।
लाज नेम पट दूरि कै, मज्जत दोऊ सुकुँवार ॥११॥
रस बिनोद विपरीति रति, बरषत प्यार को मेह।
चल्यौ उमड़ि भरि नेम की, तोरि मेंड़ जल नेह ॥१२॥
अंग अंग उरझानि की, सोभा बढ़ी सुभाइ।
मृदुल कनक की वेलि मनौं, रही तमाल लपटाइ ॥१३॥
बिच बिच बोलत बैंन मृदु,सुनि सुख होत अपार।
रोचक रस पोषक सदा, कल किंकिनि झुनकार ॥१४॥
प्रबल चौंप सरिता बढ़ी, कहत बनत कछु नाहि।
पियहि लाइ कुच घटनि सों, पैरावति तेहि माहि ॥१५॥
अति उदार मृदु चित्त सखी, प्रेम सिंधु सुकुँवारि।
विविध रतन सब अंग जे, देत संभारि संभारि ॥१६॥

निरखत तेई चिन्हनि पुनि, बढ्यो चतुर गुन काम ।
गही शरन चरननि तबै, जानि सुखद सुखधाम ॥२९॥
लई लाल जिनकी शरन, कोमल सुरंग सुदेस ।
कछुक कहत हौं जथा मति, तिनकी छबि कौ लेस ॥३०॥
कुँवरि चरन सुख पुंज में, अंबुज छबि हरि लैंन ।
चहूँ दिसि तापर भ्रमत रहैं, प्रीतम के अलि नैंन ॥३१॥
लाल सखी को भेष धरि, रचि अद्भुत सिंगार ।
प्रेम प्यार के चाव सौं, सेवत पद सुकुँवार ॥३२॥
करपर अंचल राखि के, तिन पर चरन अनूप ।
चितवत लीने मुकर ज्यौं, असित माधुरी रूप ॥३३॥
चूंवत छुवावत नैंन पिय जावक चित्र बनाइ ।
देखि अटपटी प्रेम की, गति नहि समुझी जाइ ॥३४॥
तेऊ पद सेवत रहत दिन, सहज पर्यौ यह नेम ।
चरन चारु कौ हार किय, पिय प्रवीन रस प्रेम ॥३५॥
चरन कंज कुन्दन बरन, झलमलात नख कांत ।
आइ मिली रस करन कौ, मनौ बिधुन की पांति ॥३६॥
मनिगन जुत झलकत रहे, पद अंबुज सुख दैंन ।
सहज सुभग रसनिधि सरस,प्रीतम चित अलि ऐंन ॥३७॥
सुमन सुखासन सेज पर, लटकी कुँवरि सुभाइ ।
पिय नैंननि के करन सौं, तहां पलोटत पाइ ॥३८॥
सब अंग नागर वैस सम, नेह, रूप गुन ऐंन ।
पिय अधीर आधीन तहां, बंधे नैंन फंद सैंन ॥३९॥
लोइनि भीने मदन रस, निरखत पानिप अङ्ग ।
कहि न सकत कछु बात पिय, वेपथ भये अङ्ग अङ्ग ॥४०॥

लाइ लये हितसौं हिये, गहि अधरनि मृदु दन्त ।
मैंन रसासब रह्यो भरि, रोंम रोंम प्रति कन्त ॥४१॥
प्रेम खेल बृन्दाविपिन, नृप दोऊ नवल किशोर ।
प्रेम खेल खेलत जहां, नहिं जानत निसि भोर ॥४२॥
अति स्वादी दोऊ लाड़िले, केलि पुन्ज सुखरास ।
रीझि रीझि बिच बिच करत, मधुर मन्द मृदुहांस ॥४३॥
ज्यौं ज्यौं मैंन तरङ्ग उठै, त्यौं २ सुख छबि कांति ।
कहा कहौं रुचि चाहकी, छिन छिन नव नव भाँति ॥४४॥
श्रम जल पीक सुरङ्ग कन, झलकत अमल कपोल ।
सुरत सिन्धुके मथत मनो, प्रगटे रतन अमोल ॥४५॥
यह सुख देखत सखिनुके, बाढ़यौ अति अनुराग ।
हितसौं देत असीस सब, अबिचल कुँवरि सुहाग ॥४६॥
रूप मदन गुन नेह जुत, ऐसो भयौ अनूप ।
सो रस पीवत छिनहि छिन, मिलि वृन्दाबन भूप ॥४७॥
तेहि सुखको रसमोद सखि, जो उपजत दुहुँ माहि ।
पल२पीवत दृगनि भरि, ललितादिक न अघाहिं ॥४८॥
रस निधि रस रतनावली, रसिक रसिकनी केलि ।
हितसौं जो उर धरै ध्रुव, बढ़ै प्रेम रस बेलि ॥४९॥
महा गोप्य अद्भुत सरस, चितत रहो मन माँहि ।
या रसके रसिकनि बिना, सुनि ध्रुव कहबो नाँहि ॥५०॥

। इति श्री रस रतनावली लीला सम्पूर्ण की जै जै श्रीहितहरिवंश ॥२०॥



॥ अथ प्रेमावलीलीला प्रारम्भ ॥

दोहा—प्रगट प्रेम कौ रूप धरि, श्री हरिबंश उदार।
श्रीराधा बल्लभलाल कौ, प्रगट कियो रससार ॥१॥
हरिबंश चन्द सब रसिकजन, राखे रसमें बोरि।
प्रेम सिन्धु बिस्तार कै, नेम मेंड़ दई तोरि ॥२॥
रूप बेलि प्यारी बनी, प्रीतम प्रेम तमाल।
द्वै मन मिलि एकै भये, श्रीराधा बल्लभ लाल॥३॥
लपटि रहे दोऊ लाड़िले, अलवेली लपटानि।
रूप बेलि विवि अरुझि परी, प्रेम सेज पर आनि ॥४॥
प्रेम रीति निज आहि जो, तामें लाल प्रवीन।
अङ्ग अंग सब हारिकै, रहे आप ह्वै दीन ॥५॥
अलबेली नागरि जहां, धरत चरन छबि पुंज।
पलकनि की करि सोहनी, देत कुँवर तेहि कुंज ॥६॥
धरत भाँवती पग जहां, रहत देखि तेहि ठौर।
को समुझै यह सुख सखी, बिना रसिक सिरमौर ॥७॥
भरि आये दोऊ नैंन जहँ, रहे नेह बस झूमि।
तेहि तेहि ठां काहे न भई, इन प्राननि की भूँमि॥८॥
देख प्रेम पियकौ सखी, नैंन भरे जल आइ।
समुझि दसा पियकी तबहि, पुतरिनु लियौ समाइ ॥९॥
लिये दीनता एक रस, महा प्रेम रँग रात।
ऐसी प्यारी पीय कौ, देखत हूं न अघात॥१०॥
जावक रंग भीने चरन, गौर बरन छबि सींव।
निरखत पिय अनुराग सौं, ढरी जात अधिग्रींव॥११॥

अंग अङ्ग सब लाल के, झुकत प्रिया की ओर ।
सहज प्रेम कौ ढार पर्यौ, बंधे नेहकी डोर ॥१२॥
जिनके है यह प्रेम रस, सोई जानत रीति ।
जो हारैं तौ पाईयै, नेह खेत में जीति ॥१३॥
मनके पाछे मन फिरै, नैंननि पाछै नैंन ।
यहै एक सुख लालकै, रह्यौ पूरि उर ऐंन ॥१४॥
नैंननि छूवावत फिरत पिय, पत्र फूल बन जेत ।
प्रान प्रिया द्रग छटा जल, सींचे सखि यह हेत ॥१५॥
नैंननि बाढ़ी त्रिषा अति, ज्यौं ज्यौं देखत रूप ।
पानी लागै प्यास जो, कहा करै ढिग कूप॥१६॥
बिटप डारि अवलंब पिय, ठाड़े चित नहिं चैंन ।
झलमलात भरे प्रेम रस, झलकत सुन्दर नैंन ॥१७॥
और सबै सुख देह के, पिय मनतें गये भूलि ।
अवलोकत मुख माधुरी, रहे प्रेम रस झूलि ॥१८॥
हेरि हेरि हियौ गहवरौ, भरि भरि आवैं नैंन ।
कौंन अटपटी मन परी, ध्रुव पै कहत बनैं न ॥१९॥
चितवनिसौं चित रँगिरह्यो,मुसिकनि रस बस मैंन ।
अंग अंग दीप अनंग मनौ,परत पतंग जु नैंन॥२०॥
अद्भुत अंगन की झलक, उठत तरंग सुभाइ ।
समुझि दसा पिय की प्रिया, रहत छिपाइ छिपाइ॥२१॥
प्रीतम प्यारे रूपके, सो रस कह्यो न जाइ ।
नैंन रूप ह्वै जाइ जो, प्यास न तऊ सिराइ ॥१२॥
अद्भुत रूप बिलास सुख, चितवत भूले अंग ।
सहज सिंधु सुख में परे, नखसिख प्रेम अभङ्ग ॥

नयौ नेह नेही नये, नयौ रूप सुख रासि।
नयौ चाव बिलसैं सहज, परे प्रेम की पासि ॥२४॥
सहज प्रेम के सिंधु में, दोऊ करत कलोल।
भरि भरि रस हुलसत हियो,सुख की उठत अलोल॥२५॥
रचि रचि बीरी देत पिय, महा प्रेम की रासि।
सर्वस है जिनके यहै, चितवनि कै मृदु हाँसि ॥२६॥
पिकदानी लीने कुँवर, चितवत मुखकी ओर।
रहे उगार की आस धरि,ज्यों प्रति चन्द चकोर ॥२७॥
मन बच काइक एक रस, धरैं महा व्रत प्रेम।
प्रान प्रियहि सेवत कुँवर, याही सुख को नेम ॥२८॥
प्यारी सर्वस लाल के, लाल प्रिया के प्रान।
सहज प्रेम दुहुँ में बन्यौ, फीके भये रस आनि। ।२६॥
मन्द मन्द मुसिकात जब, बेसर तरल तरंग।
चितै चित्रबत रहे पिय, सिथल भये सब अंग ॥३०॥
मुकर पानि लिये लाड़िली, बैठी सहज सुभाइ।
अनियारी अखियनि दियौ, अञ्जन रुचिर बनाइ ॥३१॥
सोचि रही तेहि छिन कछू, इतउत चितवत नाहि।
प्रीतम मनकी मृदुलता, गड़ी आइ मन माहि ॥३२॥
रूप कौ सुख सहज, सो ध्रुव कहत बनैं न।
जानै मन तेहि बिध्यौ, कै समुझै दोऊ नैंन ॥३३॥
नित्य सहज दुलहु कुँवर, दुलहिनि अति सुकँवारि।
नयौ चाव नित ही रहै, अद्भुत रूप निहारि ॥३४॥
नव किशोर उन्नत सदा, आनंद की निधि गोभ।
नई अटक की चौंप दिन, परे प्रेम के लोभ ॥३५॥

और भोग नहि प्रेम सम, सबको प्रेम सिंगार ।
तेहि अवलम्बे रसिक दोऊ, सकल रसनि कौ सार ॥३६॥
प्रेम मदन मद किये रद, और सकल सुख जेत ।
कुँवरि सुभाइनि रंग रंग्यौ, छिन छिन होत अचेत ॥३७॥
लाल नैंन भये लालके, रंगे रंगीली लाग ।
अन्तर भरि निकस्यौ चहत, इहि मग मनो अनुराग ॥३८॥
लै सुरंग जावक सुकर, चरननि चित्र बनाइ ।
मृदु अंगुरिनु की छबि निरखि, पुतरिनुसौं रहे लाइ ॥३९॥
दसन खण्ड अति रीझि के, पिय मुख बीरी दीन ।
सींवाँ दोऊ अनुराग की, भये एक रस लीन ॥४०॥
पट भूषन जेहि कुँवरि के, प्रीतम केते प्रान ।
अति अनन्य रस प्रेममें, परसत नहि कछु आन ॥४१॥
ते पट भूषन पहरि पिय, सहचरि को बपु वाँनि ।
फिरत लिये अनुराग सों कुसुम बीजना पाँनि ॥४२॥
प्रेम कुँवर कौ समुझिके, प्रेम वारि भरि नैंन ।
रही लपटि पियके हिये, सो सुख कहत बनैंन ॥४३॥
अमित कोटि जुग कलप लौं, राखे उरजनि माहि ।
ते सब लव त्रिसरैंनु सम, बीतत जाने नाहि ॥४४॥
प्रिया प्रेम आसव महा, मादिक रहे दिन रैंन ।
कैसे छूटै बिवसता, भरि भरि पीवत नैंन ॥४५॥
महा मोहनी मन हरयौ, तन डोलत तिन संग ।
बोलत नहि चितवत मनहि, बस्यो जाइ किहि अंग ॥४६॥
बिन देखे देखत न कछू, छवि छायो उर ऐन ।
कुँवरि राधिका लाड़िली, पिय नैंननि के नैंन ॥४७

जहां लगि सुख कहियत सकल,सुनि ध्रुव कहत बिचारि।
सहज प्रेम के निमिष पर, ते सब डारे वारि ॥४८॥
यह सुख समुझन को कछू, नाहिन आन उपाइ।
प्रेम दरीची जो कबहुं, सहज कृपा खुलि जाइ ॥४६॥
एकै प्रेमी एक रस, श्री राधा बल्लभ आहि।
भूलि कहै कोऊ औरठां, झूठौ जानौं ताहि ॥५०॥
तीन लोक चौदह भवन, प्रेम कहूँ ध्रुव नांहि।
जगि मगि रह्यौ जराव सो, श्रीवृन्दाबन मांहि ॥५१॥
प्रेमी बिछुरत नाहि कहूं,मिल्यौ न सो पुनि आहि।
कौंन एक रस प्रेम कौ, कहि न सकत ध्रुव ताहि ॥५२॥
ढूंढ़ि फिरै त्रैलोक जो, बसत कहूं ध्रुव नांहि।
प्रेम रूप दोऊ एक रस, बसत निकुंजनि मांहि ॥५३॥
नित्य भूमि मण्डल सहज, श्री बृन्दाबन ऐंन।
रतन जटित जगिमगि रह्यौ,रसिकनि मन सुख दैंन ॥५४॥
तरनि सुता चहूँ दिस बहै, सोभा लिये अथाह।
मनौं ढरयौ सिंगार रस, कुण्डल बांधि प्रवाह ॥५५॥
आवत उपमा और उर, अद्भुत परम रसाल।
बृन्दावन पहिरी मनो, नील मनिनि की माल ॥५६॥
हेम बरन अद्भुत धरनि, मनिनु खचित बहु रंग।
बिच बिच हीरनि की झलक, मानौ उठत तरंग ॥५७॥
मृगी मयूरी हंसिनी, भरी प्रेम आनन्द।
मत्त मुदित पीवत रहै, जुगल कमल मकरन्द ॥५८॥
कुन्ज कुन्ज प्रति झलमलै, आसन सेज सुदेस।
सहज सौंज छिन २ नई, कहि न सकत छबिलेस ॥५९॥

आनन्द बन बरषत कुँवरि, कुञ्जनि में जहां नित्य।
सुरंग लता द्रुम फूल फल, झूमि रहे जित कित्य॥६०॥
नेक होत ठाढ़ी कुँवरि, जेहि फुलवारी मांहि।
पत्र फूल तहां के सबै, पीत वरन ह्वै जाँहि॥६१॥
प्रेम रूप के मोद कौ, सोभा बढ़ी बिशाल।
सोई लड़ैती लालजी, कीनी है उर माल॥६२॥
रोम रोम प्रति लाड़िली, सहज रूप की खाँनि।
प्रीतम की जीवन यहै, सरस मन्द मुसिकाँनि॥६३॥
अति सलज्ज अनुराग भरे, अनियारे छबि ऐंन।
अरुन विशद सित सोहने, काजर भीने नैंन॥६४॥
श्रवनाइत बांके चपल, घूंघट पट न समात।
अवलोकत जेहि ओर कौ, छबि बरषा ह्वै जात॥६५॥
हाव भाव लावन्यता, कही सकल जे कोक।
निसि दिन करजोरे तहां, सेवत नैंननि नोक॥६६॥
अति सुदेस रह्यौ झलकिकै, बेंदा सुरंग रसाल।
मनौ सुहाग अनुराग कौ, प्रगट बिराजत भाल॥६७॥
नख सिख पट भूषन बने, कहि न सकत कछु रूप।
सीस फूल सिंगार कौ, मानौ छत्र अनूप॥६८॥
झलक कपोलनि कहा कहौं, मुख पानिप बहु भांति।
अखियां रपटत चितै तहां, डीठि नहीं ठहरात॥६९॥
नासा बेसरि फबि रही, सोभा की मिति नाँहि।
मनौ मीन तहां थरहरै, परचौ रूप जल मांहि॥७०॥
बनो कपोल पर असित तिल, अलक रही तहां आइ।
प्रगट लालकौ मन मनौ, परचौ फंद विच जाइ॥७१॥

नैंन अधर कुच कर चरन, झलकत नये तरंग।
कनक बेलि मनौ फूलिरही, नख सिख कमल सुरंग॥७२॥
प्रिया बदन बर कञ्ज पर, भ्रमत भृंग पिय नैंन।
छबि पराग रस माधुरी, पीवतहूं नहि चैंन॥७३॥
ठौर ठौर पिय रचत हैं, आसन कुसुम रसाल।
को जानैं कहां बैठि हैं, अलवेली नव बाल॥७४॥
समुझि हेत पियको जबहि, बैठी तहां मुसिकाइ।
पिय ग्रींवाँ भुज मेलिकै, अङ्ग अङ्ग रही लपटाइ॥७५॥
रची सेज मृदु दलनि लै, अरुनि पीत अरु सेत।
तापर राजत लाड़िली, इतनो मनको हेत॥७६॥
रंग रंग के सुमन पिय, लै रचि माल बनाइ।
तन मन को सुख को कहै, जब देखत पहिराइ॥७७॥
रूप माधुरी की झलक, निरखि रीझि सुख पाइ।
चहूँ दिस फिरि आपुनकुँवर, पगनि सीस रहे लाइ॥७८॥
रूप सिंधु में मन पर्‌यौ, ढरत नैंन दुहुँ नीर।
डगमगात सखियनि गहे, देखै लाल अधीर॥७९॥
लये अङ्क भरि लाड़िली, बिबस लालको जानि।
कही परत सखी कौंन पै, बिबि मनकी अरुझानि॥८०॥
प्रेम प्रेम मन मन समुझि, नैंन सजल झलकात।
मुख निसरत नहिं बैंनकछु, बिवस दोऊ ह्वै जात॥८१॥
पिय प्यारी दोऊ रंग भरे, ढरे सेज पर आनि।
बिवस सखी चितवत खरी, महा प्रेम लपटानि॥८२॥
परे प्रेम सुख रङ्ग में, दोऊ नवल किशोर।
इतनी नहि जानत सखी, निसा होत कब भोर॥८३॥

पीक कहूं अंजन कहूँ, मुक्तावलि रही टूटि ।
सिथिल बसन भूषन कहूं, अलकावलि रही छूटि ॥८४॥
श्रम जलकन छबि बदनपर,चितवत प्रीतम ताहि ।
पानिप को पानी मनौ प्रगट देखियत आहि ॥८५॥
अञ्जन तिल रह्यौ अधर पर, नैंननि पर लगि पीक ।
इत हद करी सिंगार की,उत दई प्रेम की लीक ॥८६॥
एक प्रेम बिवि मन हरे, अरुझी मृदु भुज ग्रींव ।
उभै सिंधु मिलि उमड़ि चले,रहत तहां क्यौं सींव ॥८७॥
पीवत सुख छबि माधुरी, व्याकुल रहैं दोऊ नैंन ।
रोंम रोम बाढ़ी त्रिषा, जहां प्रेम को मैंन ॥८८॥
रस रंगी रस रंग में, भीने सहज सनेह ।
परत प्रेम आनंद में, दोऊनि भूलि गई देह ॥८९॥
भये अचेत पुनि चेत कै, उठे कुँवर सुकुँवार ।
नैना प्यासे रूप के, पिवत डीठि भई धार ॥९०॥
कहि न सकत तिनकी दसा, छिन छिन नौतन नेह ।
एक प्रान ह्वै रहे तहां, देखन कों द्वै देह ॥९१॥
एक स्वाद ध्रुव एक रस, प्रेम अखंडित धार ।
इकछत प्रेम दसा रहै, सकल सुखनि कौ सार ॥९२॥
प्रेम तरंगनि में परे, छिन छिन प्रति यह केलि ।
महा मत्त घूँमत फिरैं, दोऊ कंठ भुज मेलि ॥९३॥
बिलसत नित्य विहार दोऊ, प्रेम खेलि तेहि ठौर ।
और कछू परसत नहीं, महा रसिक सिर मौर ॥९४॥
प्रेम पगी तैसी सखी, रंगी दुहुनि के हेत ।
सहज माधुरी रूप की, नैंननि भरि भरि लेत ॥९५॥

अद्भुत प्रेम सखीनु के, बिमल अखंडित धार ।
रसिक कुँवर दोऊ लाड़िले, करि राखे उर हार ॥९६॥
सहज प्रेम की सींव दोऊ, नव किशोर बरजोर ।
प्रेम को प्रेम सखीन के, तेहि सुखको नहि ओर ॥९७॥
हारि हारि जीत तदोऊ, जीति जीति रहे हारि ।
महा प्रेम देखत सखी, जहं तहं रही बिचारि ॥९८॥
नेक भौंहँ की मुरनि में, लाल दीन ह्वै जात ।
जल सूखे जलजात ज्यौं, बदन मृदुल कुँभिलात ॥९९॥
भरयौ हियौ अनुराग सौं, रहि न सकी अकुलाइ ।
लये लाइ पिय हीय सौं, अधर सुधारस प्याइ ॥१००॥
मान मनावन छुटिगयौ, परयौ लपटि तहां प्रेम ।
अंतर भरि बाहिर भरयौ, रहे लीन ह्वै नेम ॥१०१॥
सहज रूपको कंज मुख, तामें मुसिकन मंद ।
जीवनि पिय द्दग सखिनुके, सोई तहां मकरंद ॥१०२॥
अलबेली हँसिके जबहि, पियसौं कहै कछु बात ।
धनि २ कै मानत सखी, तेहि छिनकी बलिजात ॥१०३॥
रह्यौ झलकि वृन्दा विपिन, कुँवरि रूपके तेज ।
रहे कुँवर छकिकै तहां, धरि न सकत पग सेज ॥१०४॥
लीने कर गहि लाड़िली, लै बैठी बर अंक ।
बदन बदन यौं जुरि रहे, मनु मिले कंज मयंक ॥१०५॥
परम रसिक आसक्त दोऊ, भूली तिनहि निहारि ।
अङ्ग अङ्ग मिलि उरझि रहे, सकत नही निरवारि ॥१०६॥
प्रेम मदन कौ सुख जहां, सहज प्रेम सिंगार ।
आदि मध्य अवसानि इक, इक रस विमल विहार ॥१०७॥

वृंदावन सर वर भरयो, प्रेम नीर गंभीर ।
तामें मज्जत रसिक दोऊ, बिसरे नैंननि चीर ॥१०८॥
सहज सघन छबि हरन मन, श्रीवृंदावन बाग ।
रह्यो झूमि फलिके सरस, रससै फल अनुराग ॥१०९॥
प्रिया बदन तहां झलमलै, सहज रूप कौ चंद ।
विमल प्रकास अखंड भरयो, सुधा प्रेम मकरंद ॥११०॥
श्रवत सोई मकरंद दिन, प्रीतम नैंन चकोर ।
प्रेम अमी रस माधुरी, पान करत निसि भोर ॥१११॥
सघन निकुञ्जनि खोरि प्रति, सुखकौ सहज निवास ।
रही झूमि जहां फूलिकै, लता सुरंग सुवास ॥११२॥
परति दृष्टि जेहि सुमन पर, पिय प्रवीन यह जानि ।
धाइ कुँवर सोई फूल लै, देत कुँवरि कौ आनि ॥११३॥
बिहरत दोऊ अनुराग में, नवलासी लिये पानि ।
न्यारे तन देखत सखी, छुटति न मन लपटानि ॥११४॥
घटत न मनकी चाह ध्रुव, हारत नाहि दृग चाहि ।
तृषित तऊ पिय लाड़िलौ, कौंन प्रेम रसआहि ॥११५॥
प्रेम फूल प्यारी प्रिया, सुरंग सरूप सुवास ।
इक जीवन आसक्त पुनि, मधुप लाल रहें पास ॥११६॥
अति सुकुँवारी लाड़िली, धरत चरन तेहि ठौर ।
नैंन कमल के दल तहां, रचत रसिक सिर मौर ॥११७॥
प्रेम अंबु सर विपिनबर, अति अगाधि मिति नाहि ।
कमल कमलनी रसिक दोऊ, रहे फूलि तेहि माहि ॥११८॥
भ्रमत सखी भँवरी तहां, पीवत रूप पराग ।
पलु पलु प्रति बाढ़त रहै, मादिक नव अनुराग ॥११९॥

प्रेम खेत वृंदाविपिन, सुभट नागरी स्याम ।
हाव भाव आयुध लिये, करत सुरत संग्राम ॥१२०॥

॥ कुण्डलियां ॥

पिय नैंननि कौ मोद सखी, पिय नैंनन कौ मोद ।
रहत मत्त बिलसत दोऊ, सहजहि प्रेम बिनोद ॥
सहजहि प्रेम बिनोद रूप देखत दोऊ प्यारे ।
लोइनि मानत जीति दुहुँनि जद्दपि मन हारे ॥
परे नवल नव केलि सरस हुलसत हिय सैंननि ।
छिन२ प्रति रुचि होइ अधिक सुंदर पिय नैंननि ॥१२१॥

दोहा–नित्य नवल वृंदा विपिन, नित्य नवल घर हेम ।
नित्य नवल दोऊ लाड़िले, नित्य नवल तहां प्रेम ॥१२२॥
बृंदाविपिन बिसात पर, प्रेम कौ खेल अपार ।
निवरत नहिं छिन छिन बढ़ै, तैसेही खेलन हार ॥१२३॥
बिन रसिकनि वृंदाबिपिन, को है सकत निहारि ।
ब्रह्मकोटि ईश्वर्ज के, वैभव की तहँ वारि ॥१२४॥
पीवत सुख छबि माधुरी, व्याकुल रहै तन नैंन ।
रोंम रोंम बाढ़ी तृषा, जहां प्रेम कौ मैंन ॥१२५॥
श्रीराधा बल्लभ प्रेम की, प्रेमावलि गुहि लीन ।
हित ध्रुव जेतिक बुद्धिही, तासौं रांचि पचि कीन ॥१२६॥
घटि वढ़ि अक्षर होइ जो, तहां दृष्टि जिनि देहु ।
श्रीराधा वल्लभ लाल जस, यहै जानि उर लेहु ॥१२७॥
प्रेम सार ध्रुव कछु कह्यो, अपनी मति अनुमान ।
अति अगाध सुख सिंधु रस, ताको नाहि प्रमान ॥१२८॥

मन बच जो उर धारि है, प्रेमावलि को नित्य।
प्रेम छटा ध्रुव सहज ही उपजैगी तेहि चित्त ॥१२६॥
हित ध्रुव भई प्रेमावली सुनत जुगल दरसाहि।
सोलहसै इकहत्तरा श्रीवृन्दाबन माहि ॥१३०॥

॥ इति श्री प्रेमावली लीला संपूर्ण श्री जै जै श्री हित हरिवंश ॥ २१ ॥

॥ अथ श्रीप्रियाजी की नामावली प्रारम्भ ॥

श्रीराधे। नित्य किशोरी। वृन्दाबन बिहारनि। बनराज रानी। निकुञ्जेश्वरी। रूप रंगीली। छबीली। रसीली। रस नागरी। लाड़िली। प्यारी। सुकुँवारी। रसिकनी। मोहनी। लाल मुख जोहनी। मोहन मनमोहनी। रतिविलास बिनोदनी। लाल लाड़ लड़ावनी। रंगकेलि बढ़ावनी। सुरत चंदन चर्चिनी। कोटि दामिनी दमकनी। लालपर लटकनी। नवल नासा चटकनी। रसपुंजे वृंदावन प्रकासनी। रंग विहार बिलासिनी। सखी सुखद निवासनी। सौंदर्ज रासिनी। दुलहिनी। मृदु हाँसनी। प्रीतम नैंन निवासनी। नित्यानंद दर्सिनी। उरजांनि पिय परसिनी। अधर सुधारस बरसिनी। मानिरस सरसनी। रंग बिहारनि। नेह निहारनि पियहित सिंगार सिंगारनि। प्यार सौं प्यारे कौ लै उर धारनि। मोहन मैंन विथा निरवारनि। जान मवीन उदार सँभारनी। अनुरागसिंधे। स्यामा। वामा। भामा। भाँवती। जुवतिन जूथ तिलका। वृंदावनचंद्र चंद्रिका। हाँस परिहाँस रसिका। नवरंगिनी। अलकावलिछवि फंदिनी। मोहन मुसिकनि मंदिनी। सहज आनंद कंदिनी। नेह कुरंगिनी। महामधुर रस कंदिनी। नैंन विशाला। चंचलचित आकर्षिनी। मदनमान खंडिनी। प्रेमरंग रंगिनी। वंककटाक्षिनी।

सकलविद्या विचछने। कुँवर अंक बिराजनी। प्यारपट निबाजिनी। सुरत समर दल साजिनी। मृगनैंनी। पिकबैनी। सलज्ज अञ्चला। सहज चंचला। कोककलानि कुशला। हाव भाव चपला। चातुर्ज चतुरा। माधुर्य मधुरा। बिन भूषन भूषिता। अवधि सौंदर्य्यता। प्राणबल्लभा। रसिक रवनी। कामिनी। भामिनी। हंसकल गामिनी। घनस्याम अभिरामिनी। चंदविपिनी। मदन दवनी। रसिक रवनी। केलि कमनी। चित्तहरनी। ललन उर पर चरन धरनी। छबिकंज बदनी। रसिक आनंदिनी। रूपमंजरी। सौभाग्य रसभरी। सर्बांग सुंदरी। गौरांगी। रतिरस रंगी। विचित्र कोक कला अंगी। छबिचंद बदनी। रसिक लाल बंदिनी। रसिक रस रंगिनी। सखिनुसभा मंडिनी। आनँद कंदिनी। चतुर अरु भोरी। सकलसुख रासि सदने॥

दोहा—प्रेम सिंधु के रतन द्वये, अद्भुत कुँवरि के नाम।
जाकी रसना रटै ध्रुव, सो पावै बिश्राम॥१॥
ललित नाम नामावली, जाके उर झलकंत।
ताके हिय में बसत रहैं, स्यामा स्यामल कंत॥२॥

॥ इतिश्री प्रियाजीकी नामावलीलीला संपूर्णकी जै जै श्रीहितहरिवंश॥ २२॥

॥ अथ रहस्यमंजरी लीला प्रारम्भः॥

दोहा—करुना निधि, अरु कृपानिधि, श्रीहरिबंश उदार।
बृंदावन रस कहन कौं, प्रगट धर्यौ अवतार॥१॥

बृंदावन रस सबकौ सारा❀नित सर्वोपर जुगल बिहारा॥२॥
नित्य किशोर रूपकी रासि❀नित्य बिनोद मंद मृदु हासि॥३॥

नित ललितादि भरी आनंद❀नित प्रकास वृंदाबन चंद ।४।
कुंजनि सोभा कहा बखानौ❀छबि फूलनि सौं छाई मानौं।५।
राजत सुमन द्रुमन बहु रंगा❀मानो पहिरे बसन सुरंगा ।६।
नाचत हंस मयूरी मोर❀शुकसारिकपिकनाद चहूँओर ।७।
झलमलात महि कही न जाई❀चिंतामनि मय हेम जराई ।८।
सोभा दुतिय बढ़ी अधिकाई❀फूलनिकी जनौ अवनीबनाई।६।
छबि सौं जमुना बहै सुहाई❀मानौं आनंद द्रय चल्यौ माई१०
जहांतहांपुलिननलिनकलफूला❀फूले सबके मनोरथ फूला ।११।
फूले फिरत मधुप मद माते❀जलजन सौरभके रसराते ।१२।
सीतल मंद समीर सुवासा❀वृंदा कानन रंग हुलासा ।१३।
सुखकी अवधि प्रेमकौ ऐना।❀सेवत मैंननि की सत सैना ।१४।

दोहा—वृंदावन छबि कहा कहौं, कैसेहुँ कहत बनैं न ।
नैंननि के रसना नही, रसना के नहि नैंन ॥१५॥

विहरत तहां परम सुकुंवारा❀रूप माधुरी कौ नहि पारा ।१६।
प्रेम मगन अलबेली भाँति❀जगिमगिरह्योबनअंगनिकाँति१७
सखी सबै हितकी हितकारनि❀जीवनि जिनकेरंग बिहारनि।१८
तिनही के रंगसौं अनुरागी❀महा मधुर सेवा रसपागी ।१६।
रुचिलै रुचिसों दुहुँनि लड़ावैं❀पलु पलु सुखकौ रंग बढ़ावैं ।२०।
फूलसौं भाजन भरिमधु आनें❀फूल चंदोवा छवि सौं तानें ।२१।
फल सौं फूलनि सेज बनाई❀अतिसुगंध सौंधे छिरकाई ।२२।
तापर राजत रंग विवि ओर❀मुख जोवत ज्यौं चंद चकोर।२६।
नेक चितै तिरछै मुसिकानी❀लालहिसुधिबुधि सबै भुलानी२४

दोहा—बसी जु प्यारेलाल उर, वह चितवनि मुसिकानि ।
तबतें कबहूं छुटी नहि, चुभी जु उर में आनि॥२५॥

तिनको प्रेम औरही भाँति ❀ अद्भुत रीतिकही नहिजाँति२६
जो करुना करिबे उर आनैं ❀ तव रसना के कछुक बखानैं२७
जाको हियो सरस अति होई ❀ यह रस रीतहि समुझै सोई २८
सूक्ष्म प्रेम विरह सुखदाई ❀ दिन संजोगमें रहतहैं माई २९
देखत ही अनदेखी मानैं ❀ तिनकी प्रीतहिकहा बखानैं३०
प्रेम लालची लाल रंगीलो ❀ अवधिप्यारकीरसिकरसीलो३१
करअंगुरिनु भुज मूलनि परसै ❀ अधरपानरसको जियतरसै ३२
छुवैनसकतउरजनि कर काँपैं❀ चतुरकुँवरि अंचलसौं ढाँपैं ३३
सो वह छटा प्रेमकी न्यारी ❀ लालहिविवसकरतअतिभारी३४
तवहि संभारिलेत सुकुँवारी ❀ अधरकपोलनि चूंवतप्यारी३५
जब देखी अखियाँनि उघारी ❀ प्याइजिवाये अधर सुधारी३६
जबही उरसौं घुर लपटाँही ❀ तब नैंना बिरही ह्वै जाँही३७
छुटै जबही छबि देख्यो करैं ❀ विरह आनि अंगनि संचरैं ३८
भाँति अटपटी सों चित हर्यो ❀ जात नहीं उर धीरज धर्यो३९
छिन छिन दसा औरकी औरै ❀ थांभे रहत सखी सिर मौरै४०
दोहा—प्रेम अटपटी चटपटी, रही लाल उर पूरि ।
और जतन ताको न कछु, प्रिया संजीवनि मूरि ॥४१॥
बिरहसंजोगछिनहिछिनमाँही ❀ जदपि श्रींवनि मेले वाँही ४२
इहिविधि खेलतकलप बिहाने❀परम रसिक कबहूँ न अघाने४३
एकसमै मुखकी छबि पानिप ❀निरखत भूली सबै सयानिप ४४
चाह प्यारकी यौं फिर गई ❀ सोई आनि बिच अंतर भई ४५
कुंवरि छबीली मनधरिआगै ❀ विवसहोइपियबिलपनिलागै४६
चितवत चितवतलालबिहारी ❀ कहत यहै कहां२ सुकुँवारी ४७
प्रेम तरङ्ग कहे नहिं जाँही ❀ छिन२जे उपजत मनमाँही ४८

दोहा—कौंन प्रेमके फंद परे, मोहन नवल किशोर।
भूलि रही चितवत खरी, सखी माल चहूँ ओर ॥४६॥
रसनिधि रसिक प्रवीन पियारी ❀ लालहि राखत ज्यौं फुलवारी ५०
प्रेम प्यार जल सींच्यौ करही ❀ पल२ प्रति तिनके संग ढरही ५१
दोहा—फूल पान ज्यौं राखही, ढाँपि प्यार के चीर।
छिन छिन तिनकौ छिरकही, नेह कटाछनि चीर ॥५२॥
रसिकमोलिमनिलालबिहारी ❀ जिनके सर्बस प्राँन पियारी ५३
नैंन जोरि देखति पिय रूपहि ❀ मैंनमाधुरीझलक अनूपहि ५४
कौंन भाँतिसुखकीछबिकहियै ❀ चितवतसखी भूलहीरहियै ५५
भौंहनि भाइ कटाक्ष तरङ्गा ❀ गह्यो लालमन प्रेम अनंगा ५६
स्वेद कंप वेपथ अंग अंगा ❀ प्रानप्रिया भरिलेत उछंगा ५७
परसत हूं परस्यौ नहि जानै ❀ छिनछिन नईनई रुचिमानै ५८
सो गति चितै सखी मुसिकाही ❀ वारिफेरि अंचल बलिजाही ५६
प्रेम प्यार बन तन मन सरस्यौ ❀ औरस्वाद कबहूँ नहिपरस्यौ ६०
रूप रंग सौरभता तनकी ❀ जीवनयहैदिनाहिपियमनकी ६१
देखिवो जहाँ बिरह सम होई ❀ तहां कौ प्रेम कहा कहै कोई ६२
दोहा—अटपटी भाँतिको बिरह सुनि, भूलि रह्यौ सब कोइ।
जल पीवत है प्यास कौ, प्यास भयौ जल सोइ ॥६३॥
महा भाग सुखसार सरूपा ❀ कोमलसील सुभावअनूपा ।६४।
सखी हेत उदवर्तन लावै ❀ आनंद रससौं सवै न्हवावै ।६५।
सारी लाजकी अतिही बनी ❀ अंगियाप्रीतिहियैकसितनी ।६६
हाव भाव भूषन तन बने ❀ सौरभ गुनगन जातनगने ।६७
रसपति रसको रचिपचि कीनौ ❀ सोअंजन लै नैनन दीनौ ।६८।
मेहदी रंग अनुराग सुरंगा ❀ करअरुचरन रचे तेहि रंगा ।६६

बंक चितवनी रससौं भीनो ❀ मनोकरुना की बरषा कीनी।७०
झलमल रही सुहाग की जोती ❀नासाफबिरह्योपानिपमोती।७१
नेह फुलेल वार बर भीने ❀फूलके फूलनिसो गुहिलीने।७२।
मौरी रंग अनुराग की डोरी ❀तिय करवांध्योपियमनगोरी।७३
दोहा—हाँस झलक हारावली, अधर बिंब अनुराग।
त्रिवली सींवाँ रूप की, नवसत पोति सुहाग॥ ७४॥
ऐसी प्यारी पीय उर बसै ❀ज्यौंघनमेंदिनदामिनिलसै।७५।
अद्भुत वृन्दाबन रजधानी ❀अद्भुत दुलहिनि राधारानी।७६।
अद्भुत दूलहु नित्य किशोर ❀ अद्भुत रसके चन्द चकोर।७७।
अद्भुत जहाँ प्रेम को रंग ❀ अद्भुत बन्यौ दुहुनिकौसंग॥७८
अद्भुत रूप सहज सुकुँवारी ❀वृन्दाबन की मनि उज्यारी॥७९।
तिनको सेवत लाल बिहारी ❀ तनमनबचनरहे तहांहारी।८०।
अद्भुत प्रेम एक वृत लीनौ ❀छांड़िप्रियामनअनतनदीनौ॥८१
छिन छिन औरैऔर सिंगारा❀ गुहिफूलनि पहिरावतहारा॥८२।
ठाढ़े होइ रहत कर जोरैं ❀ लैं वलाइ वारत तृन तोरैं॥८३।
दोहा—चितवति जितही लाड़िली, तितही मोहनलाल।
सो ठाँ प्यारी ह्वै गई, देखौ प्रीति की चाल॥ ८४॥
तब मुसिकाइ लिये उर लाई ❀ रीझि प्रेममाला पहिराई।८५।
अद्भुत प्रेम बिलास अनंगा ❀अद्भुत रुचिके उठत तरंगा॥८६।
अद्भुत प्रेम कह्यौ नहि जाती❀रसिकरंगीलीतेहिरंगराती।८७।
ललित बिशाखा सखी पियारी❀दंपतिसुखमनसमुझनहारी॥८८।
सब सखियनि कौ दोऊ प्यारे❀ जीवनिप्रानचखनिकेतारे।८९।
दोहा—भुजसौं भुज उरसौं उरज, अधर अधर जुरे नैंन।
ऐसी विधि जो रहै तौ, कछुक होइ चित चैंन॥ ९०॥

या सुख पर नाहिन सुख औरै ❀ जेहि उर रचे रसिक सिरमौरै ९१
या रस सौं ध्रुव जो मन लावै ❀ ताको भाग कहत नहि आवै ९२
ऐसे अद्भुत भक्त अनूपा ❀ जिनके हिये रहत यह रूपा ९३
श्रीहरिबंश चरन उर धारै ❀ सो या रसमें ह्वै अनुसारै ९४
श्रीहरिबंशहि हितसौं गावै ❀ जुगल बिहार प्रेमरस पावै ९५
जापर श्रीहरिबंश कृपाला ❀ ताकी बाँह गहैं दोऊलाला ९६
श्रीहरिबंश हिये जो आनै ❀ताहि कुँवरिअपनो करिमानै ९७
यह रस गायो श्रीहरिबंश ❀ मुक्ता कौन चुनै बिन हंस ९८
रसद रहस्य मंजरी भई ❀ छिन छिन जोत होतहै नई ९९
दुहुनि मध्य सखियनि लै वई ❀ आनंद बेलि बढ़ी रसमई १००
श्रीहरिबंश प्रगट करिदई ❀ जाकौ भागतिनहिध्रुवलई १०१

दोहा—नित्यहि नित्य बिहार दोऊ, करत लाडिली लाल ।
वृन्दाबन आनंद जल, बरषत हैं सब काल ॥१०२॥
रूप रंगीली सभा सौ, प्रेम रंगीलो राज ।
सखी सहेली संग रंग, अद्भुत सहज समाज ॥१०३॥
यह सुख देखत कंठ दृग, रुकै न आनंद वारि ।
और अंग हारे सबै, नैंन न मानत हारि ॥१०४॥
सत्रह सै द्वै ऊन अरु, अगहन पछि उज्यार ।
दोहा चौपाई कहे, ध्रुव इकसत ऊपर चार ॥१०५॥

॥ इति श्री रहस्यमंजरी लीला सम्पूर्ण की जै जै श्रीहित हरिवंश ॥२३।

॥ अथ सुखमंजरीलीला प्रारम्भ ॥

दोहा—सखी एक हितकी अधिक, आनंद को समै पाइ ।
दसा कुँवर की प्रिया सौं, कहत बनाइ बनाइ ॥१॥

चाह मदन की विथा कौ, नाहिन है कछु और ।
पल पल पिय हिय में बढ़ै, यहै सोच मन मोर ॥२॥
सिथल अंग बल हीन सखि, कछुक भयौ तन छीन ।
करि उपाइ प्यारी प्रिया, तुम जल हौ वे मीन ॥३॥
सोरठा–मिटत नही यह रोग, तुमहो मूरि सजीवनी ।
बन्यौ आनि संजोग, अब विलंब कीजै न वलि ॥४॥
दोहा–उनके लछन कहौ कछू, चित दै सुनि सुकुँवारि ।
नारी मैं पिय प्रान बसैं, नारी नारि निहारि ॥५॥
जैसे बिथा बढ़ै नही, कीजै जतन बिचारि ।
देवै कौ कछु और नहि, दैहैं प्रानिनि वारि ॥६॥
सुनत सखी के बचन ये, करुना बढ़ी अपार ।
तबहि कुँवरि अति हेतसौं, करन लगी उपचार ॥७॥
प्रथमहि नारी देखिकै, हियपर कर धरयो आनि ।
रोंम रोंम आनंद भयौ, परस होत ही पानि ॥८॥
बहुत भांतिकी औषधी, चितवनि मुसिकनि भाइ ।
संभराये तेहि छिन सखी, अधर सुधारस प्याइ ॥९॥
कोक कलनिके रस विविधि, जानत परम उदारि ।
दियौ किशोरी प्यार सौं, अंग मृगांग संवारि ॥१०॥
नैंन कटाक्ष सुवास अंग, चितवनि प्यार की कीन ।
अति प्रवीन रस लाड़िली, लालहि पथ मन दीन ॥११॥
परिरंभन चुम्बन अधिक, करत विलास अहार ।
तुष्ट पुष्ट वल रुचि भई, बाढ़ी चाह अपार ॥१२॥
गरे पीताम्बर मेलि कै, चरननि पर धरयौ सीस ।
दयौ अपनपो रीझि तब, श्री वृन्दावन ईस ॥१३॥

पुनि पग परसे सखिनु के. कीनौ बड़ उपकार ।
तासौं इतनी कहि कुँवरि, पहिरायौ उरहार ॥१४॥
मदन छुधा पानिप त्रिषा, सरिता बढ़ी गंभीर ।
प्रेम मगन बिलसत रहैं, पावत नाहिन तीर ॥१५॥
बिबिधि बिहार बिनोद रंग, उठत है मदन तरंग ।
अंग अंग सब चपल भये, नृत्तत मनहु सुधंग ॥१६॥
हार वलय किंकिनि झनक, नूपुर की झुनकार ।
परे मीन मन दुहुनि के, रस प्रवाह की धार ॥१७॥
हाव भाव लावन्यता, अद्भुत प्रेम बिहार ।
केलि खेलि निवरत नहीं, तैसेई खेलन हार ॥१८॥
रूप रसासब पिवत दोऊ,नहि जानत दिन रैंन ।
पल कौ अंतर परत नहि, जुरे नैंन सौं नैन ॥१९॥
त्रिपित न कबहूँ भये हैं, जदिप मिले अंग अंग ।
रुचि न घटै छिन छिन बढ़ै, प्रेम अनंग तरंग ॥२०॥
छके रहत दोऊ लाड़िले, यह रस रंग बिहार ।
संभरावति छिन छिन सखी, तब कछु होत सँभार॥२१॥
ज्यौं ज्यौं करत बिहार दोऊ, बाढ़त चाह बिलास।
जल पीवत हैं प्यास कौ, सोई जल भयौ प्यास ॥२२॥
रहे लपटि आनंद सौं, आनंद कौ पट तानि ।
हित ध्रुव आनंद कुञ्ज में,रमि रह्यौ आनंद आनि॥२३॥
यह सुख निरखत सहचरी, जिनके यहै अहार ।
प्रेम मगन आनंद रस, रही न देह संभार ॥२४॥
अद्भुत बैदक मधुर रस, दोहा कहे पचीस ।
सुनत मिटै हद रोग ध्रुव, झलकहि उर बन ईस ॥२५॥

॥ इति श्री सुख मञ्जरी लीला सम्पूर्ण की जै जै श्रीहित हरिवंश ॥ २४ ॥

॥ अथ रति मंजरी लीला प्रारंभ ॥

दोहा—हरिबंश नाम ध्रुव कहत ही, बाढ़ै आनँद बेलि।
प्रेम रंग उर जग मगै, जुगल नवल रस केलि ॥१॥
श्री हरिबंश चन्द पद बंदिकै,करत बुद्धि अनुसार।
ललित बिशाखा सखिनु के, यह रस प्राँन अधार ॥२॥
एती मति मोपै कहां, सिंधु न सीप समात।
रसिक अनन्यनि कृपा बल,जो कछु बरन्यौ जात ॥३॥
प्रथमहि सुमिरौं श्री बृन्दावन❀जा देखत फूलै यह तन मन४
कुंदन रचित खचित धर बनी❀सो छबि कैसे जात है भनी ५
रज कपूर की झलकनि न्यारी❀हियौ सिराइ निरखि सोभारी ६
ललित तमाल लता लपटानी ❀कूँजितकोकिलअतिकलवानी७
तपन सुता छबि जात न बरनी❀रस पति रस ढारयौ मनुधरनी८
कुंज सुरंग सुदेस सुहाई ❀रति पति रचि रचि रुचिर बनाई९
दोहा—कुँकुम अंबर अगरसत, बेलि चंबेली फूल।
सखियनि सबको मोद लै, रची कुंज सुख मूल ॥१०॥
रूप पुञ्ज रस पुंज दोऊ, पौंढ़ै प्रेम प्रजंक।
बिलसत नवल बिहार निज, सब बिधि होइ निसंक ॥११॥
अब बरनौं निज रस सिंगारा❀सुखनिधिसरसनिकुंजबिहारा१२
नवल नाइका अति सुकुँवारी❀नाइक रसिक निकुंजबिहारी१३
अति प्रवीन रस कोक दोऊ ❀राज हंस गति घटि नहिं कोऊ१४
दोहा—रूप मदन रस मोद की, सहज जुगल बर देह।
बैठे प्यार की सेज पर, भरे मोद मृदु नेह ॥१५॥
एक रंग रुचि एक वय, एक प्रान द्वै देह।
पल पल पिय हुलसत रहत, अरुझे सरस सनेह ॥१६॥

सबबिधि नागर नवलकिशोरी❀सीलसुभाव नेहनिधि गोरी।१७।
अति गम्भीर धीर वर वाला ❀परम सलज्ज रूप की माला।१८।
नवल रंगीली राजत खरी ❀रंग लता रस भाइनि भरी।१६।
दोहा—कोमल कुंदन बेलि मनौ, सींची रंग सुहाग।
सुसिकनि लागे फूल फल, उरज भरे अनुराग ॥२०॥
बरषत छबि बरषा की माई ❀चातिक लाल न पिवत अघाई२१
आतुर पिय आधीन अधीरा ❀जाँचत रहत दसन वर चीरा २२
छिन छिन नई नई छबि औरै ❀ सुधि नहि रहन देत सिर मौरै२३
जेहि अंग ओर परै मन जाई ❀ छुटै न तहां ते रहत लुभाई २४
दोहा—ज्यौं ज्यौं सर में जल बढ़ै, कमल बढ़ै तेहि भांति।
ऐसे पिय की रुचि बढ़ै, निरखि प्रिया तन कांति ॥ २५ ॥
अद्भुत सहज माधुरी अंगा ❀चितै रीझि भरि लेत उछंगा।२६।
झटकनिलटकनिकीछबिन्यारी❀यह सुख जानत देखन हारी२७
चितई नेक चपल भ्रू भंगा ❀काँपतलाल सकल अंग अंगा२८
बचन सगर्ब सुनत हुङ्कारा ❀ प्रीतम देह रही न संभारा।२६।
बिवस भये विरहज दुख भारी❀ लटकि परे गहि चरन बिहारी३०
प्रेम प्यार की मूरत प्यारी ❀ लये लाल भरिके अङ्कवारी ३१
रही लाइ हित सौं उर ऐसे ❀ खची नीलमनि कंचन जैसे ३२
दोहा—बदन कमल सुठि सोहनो, रस भरे अधर सुरङ्ग।
पल पल प्यावति लाड़िली, उठत सुगंध तरङ्ग ॥३३॥
अधरनिरस सीच्योजबबाला ❀ फूल्योमनमनु मैंन तमाला ३४
अति सुकुँवारकेलिरंग भीने ❀ छिन २ उपजत भाइ नवीने३५
प्रबल चोंप बाढ़ी दुहुँ माँही ❀ रस समतूल कोऊ घटनाँही ३६
सुरत समुद्र परे दोऊ प्यारै ❀ अंबर लाज दूरि करि डारै ३७

भूषन सब दूषन करि जानैं ❀ तन मन एक होइ लपटानैं ३८
दोहा—सुख वारिध में परत ही, गये छूटि पट नेम।
मेड तहां कैसे रहे, उमड़त है जहां प्रेम ॥३६॥
बढ़ी त्रिषा निज केलि की, रस लंपट न अघात।
चरन छुवत हा हा करत, रीझि रीझि बलिजात ॥४०॥
अति उदार नागरि सुकुँवारी❀पियरुचिजानिकेलिबिस्तारी ४१
रतिबिपरितबिलसतवर भाँती ❀ चुंबनअधरनैनमुसिकाँती ४२
रसके बस ह्वै रस में भूले ❀ बात नेमकी ते सब भूले ४३
बिरमिबिरमिबानी पिय बोलै ❀ श्रमितजानिअंचलझकझोलै ४४
दोहा—नाइक तहां न नाइका, रस करवावति केलि।
सखी उभै संगम सरस, पियत नैंन पुट झेलि ॥४५॥
तजि मर्याद बिलास जु करहीं❀रतिजुतमदनकोटिदुतिहरहीं ४६
आलिंगन चुंबन जब दये ❀अंगनि के भूषन अंग भये ४७
अंजनिअधरपीकलगी नैंननि❀सुखमें कहत अटपटे बैननि ४८
आनंद मोद बढ़्यो अधिकाई❀बिचबिचलालबिवसह्वै जाई ४६
दुहुँ मन रुचि एकै ह्वै जबहीं ❀ सुखकीबेलि बढ़ै ध्रुव तबहीं ५०
गौरश्याम अंग मिलि रहे ऐसे❀सीस रङ्ग झलकत तन जैसे ५१
रसकी अवधि इहाँ लौं माई ❀विवि तनमन एकै ह्वै जाई ५२
दोहा—एक रङ्ग रुचि एक वय, एकै भाँति सनेह।
एकै सील सुभाव मृदु, रसके हित द्वै देह ॥५३॥
अरिल्ल—चहूँ ओर रही छाइ प्रेम के प्यार सौं।
पिय हिय सौं रही लाइ हिये के हार सौं॥
तिनके रसकी बात कही नहिं जात है।
हरिहां जानत नाहिन राति किधौं ध्रुव पात है॥५४॥

मादिक मधुर अधर रस प्यावै❀नैंन चूंमि नासा चटकावै ५५
ऐसे जतननि पियहि जगावै ❀रति नागरि रति केलि बढ़ावै५६
अधरन दसन लगे जब जानैं ❀रोंम रोंम रतिपति रस सानैं ५७
देखिरसिक रतिरीझि भुलानी❀हियो खोलिपियहियलपटानी५८
दोहा–प्यावति प्यारी प्यार सौं, प्रेम रसा सब सार।
त्यौं त्यौं प्यारेलाल के, बाढ़त त्रिषा अपार ॥ ५६ ॥
सुख सरिता उमड़ी चहूँ ओरे❀झलमलात सोभा तन गोरे६०
कंचुकि दरकि तनी सब टूटी ❀सगबगी अलकें सोभितछूटी६१
श्रम जलकन द्युतिकहाबखानौं❀छबिके मोती राजत मानौं ६२
रति बिलास की उठत झकोरैं❀चंचल द्दग अंचल चलकोरैं ६३
सुख सरमें दोऊ करत अलोलै❀मानौं छबिके हंस कलोलै ६४
ऐसे उमड़ि महा रस ढरी ❀मानौं प्यार की बरषा करी ६५
रस फिरि गयौ दुहुँनिपर माई❀भूली तनगति रति न भुलाई६६
दोहा–लाल त्रिषा कौ सिंधु है, प्रेम उदधि सुकुँवारि।
इक रस प्यावत पिवत दोऊ, मानत नहिं कोऊ हारि॥६७॥
होत बिवस तबही पिय प्यारी❀सावधान तहां सखीहितकारी६८
कुँवरिअधर पियअधरनि लावै❀रूप बदन नैंननि दरसावै ६६
पियके कर लै उरज छुवावै ❀ मनौं मैंनकौ खेल खिलावै ७०
उरसौं उर मिलि भुजनि भरावै❀चरन पलोट सेज पौंढ़ावै ७१
ऐसी भाँति नव लाड़ लड़ावैं ❀ताहीसौं अपनो जिय ज्यावै ७२
दोहा–प्रेम रसासब छके दोऊ, करत विलास विनोद।
बढ़त रहत उतरत नहीं, गौर स्याम छबि मोद ॥७३॥
मेड़ तोरि रस चल्यौ अपारा ❀रही न तनमन कछु सँभारा ७४
सो रस कहो कहां ठहरानौं ❀सखियनिके उर नैंन समानौं ७५

तेहि अवलम्ब सबै सहचरी ❀ मत्त रहत ठाढ़ी रंग भरी ७६
या रस की जाके रुचि रहै ❀भागपाइ सो कछु इक कहै ७७
सखियनि सरनि भावधरि आवै ❀सो यह रसके स्वादहि पावै ७८
छांड़ि कपट भ्रम दिन दुलरावै❀ताको भाग कहत नहिं आवै ७९
रति मंजरी रंग लागै जाकै ❀प्रेम कमल फूलै हिय ताके।८०
यह रस जाके उर न सुहाई ❀ताको संग बेगि तजि भाई ८१
दोहा—या रस सौं लाग्यौ रहै, निसि दिन जाको चित्त।
ताकी पदरज सीस धरि, बंदत रहौ ध्रुव नित ॥ ८२ ॥

॥ इतिश्री रतिमंजरी लीला संपूर्णकी जै जै श्रीहितहरिवंश ॥ २५ ॥

॥ अथ नेह मंजरी लीला प्रारम्भः ॥

वृन्दावन सोभा की सींवा ❀बिहरत दोऊ मेलि भुज ग्रींव १
राजत तरुन किशोर तमाला ❀ लपटी कंचन बेलि रसाल २
अरुन पीतासित फूलनि छाये ❀मनो बसन्त निज धाम बनाये३
बरन बरन के फूलनि फूली ❀जहां तहां लता प्रेमरस झूली ४
तीन भांतिके कमल सुहाये ❀जलथल विकसि रहे मन भाये ५
बहुत भाँति के पंछी बोलैं ❀मोर मराल भरे रस डोलैं ६
त्रिविध पवन संततजहां रहहीं❀जैसी रुचि तैसी ही बहहीं ७
हेम बरन अद्भुत धर माई❀हीरनि खचित अधिक झलकाई८
रज कपूर की तहां सुहाई ❀ सौरभ मय संतत सुखदाई ९
तरनसुताचहुँदिशिफिरिआई ❀मनो नीलमणि माल बनाई १०
श्रीवृन्दावन की छबि है जैसी❀कापै कही जात है तैसी ११
दोहा—फूल जहां तहां देखिये, श्री वृन्दावन माँहि।
द्रुम बेली खग सहचरी, बिना फूल कोऊ नाहिं ॥१२॥
सुन्दर सहज छबीली जोरी❀सहज प्रेम के रंग में बोरी १३

खेलत फिरत निकुंजनि खोरी ❀ एक बैस पिय कुँवरि किशोरी १४
तैसीयै संग सहचरी भोरी ❀ बंधी बंक चितवनि की डोरी १५
बिन प्राननि डोलत संग लागी ❀ प्रेम रूप के रंग अनुरागी १६
महा प्रेम की रासि रंगीले ❀ चित्त हरन दोऊ छैल छबीले १७
जहां जहां चरन धरत सुखदाई ❀ झर झर रूप परत तहां माई १८
जो तेहि ठां ह्वै देखै आई ❀ तन की ताहि भूलि सुधि जाई १९
नव किशोर बरनैं क्यौं जाँही ❀ प्रेम रूप की सींवा नाँही २०
तिनकौ रूप कहन को पारै ❀ जो देखै सो पहिलै हारै २१
ऐसे दोऊ आप में राते ❀ अहनिसि रहत एक रस माते २२
अंगअंगबिवस औरसुधिनाही ❀ प्रेम रसासव पान कराही २३
अद्भुत रस पीवत हैं दोऊ ❀ तिन मैं त्रिपित होत नहिकोऊ २४
दोहा—मत्त परस्पर रहत ध्रुव, एक प्रेम रङ्गरात।
अति सुरंग लोइनि रहे, दिन अनुराग चुचात ॥२५॥
हाव भाव गुन सींव रंगीली ❀ मुखपर पानिप झलक छबीली २६
बैठे कुँवर सोई छबि देखैं ❀ लोभी नैंन न परत निमेषैं २७
रहै चकित ह्वै रसिक बिहारी ❀ रूप छटा नहि जात संभारी २८
सहजही प्रेम ढार ढरि जाँही ❀ तेहिं रस जानत घाम न छाँही २९
छिनछिन प्रति रुचि बाढ़ै भारी ❀ रही भूलि सो प्रेम निहारी ३०
कबहूं लै मृदु कुसुम सुरंगनि ❀ गुहि भूषन बानत सब अङ्गनि ३१
बारि बारि पीवत पिय पानी ❀ चितै कुँवरि कछुइक मुसिकानी ३२
छबि सींवाँ भुजलतनि पियारी ❀ छबि तमालपिय भरे अंकवारी ३३
महा मधुर रस जुगल बिहारी ❀ जहांलगि प्रेम सबनिकौ सारा ३४
रहत लीन ह्वै दोन रंगीलौ ❀ नखसिख सुन्दर रसिक रसीलौ ३५
तिनके प्रेम प्रेम बस कीनी ❀ सखी सौं सखी कहत रंग भीनी ३६

दोहा—जद्यपि मन चंचल हुतौ, मोह्यौ अद्भुत रूप।
बिसरि गई सब चतुरता, परत प्रेम के कूप ॥३७॥
प्रिया बदन सुंदर अति राजै❀सहज रूप कौ चंद बिराजै॥३८॥
मुसिकनिमंददसनद्युति न्यारी❀तापरदामिनि कोटिकवारी॥३९॥
झलक कपोलन की चिकनाई❀अँखियारपटिगिरततहाँमाई ४०
अरुणअसित सितनैंन सलौनें❀छ्वैछ्वै जातहैं कानन कोनें४१
सहज चपल इत उतहि निहारैं❀बरषत मनो अनुरागकी धारैं४२
दोहा—रंग भरे अरु रस भरे, सरस छबीले नैंन।
सींचत पिय हिय कमल कौ, नेह नीर मृदु सैंन ॥४३॥
अति अनूप बेंदी जगमगै❀चितैचितै पियपाइनि लगै ४४
नासा बेसरि मोती झलकै❀मनो रूपकी आभा छलकै ४५
अद्भुत रूप मेह सौ बरसै❀तऊकुँवर चातिक ज्यौं तरसै४६
छबि डोलै चरननि सौं लागी❀उपमा सबै देखि यह भागी४७
अद्भुत सहज रूप की माला❀ऐसी कुँवरि किशोरी बाला ४८
पहिर कुँवरछिनछिनहिसंभारै❀ ऐसो लोभ न नेक उतारै ४९
कुँवर प्रेम कौ सागर राजै❀ प्रियाप्रेम तहँ भँवर बिराजै ५०
ज्यौंसबजलफिरिफिरतहांपरही❀ऐसे लाल प्रिया दिसढरही ५१
सो०—प्राननि हूँ के प्रान, पियकी सर्वस लाड़िली।
तिनके नहिं गति आँनि, देखि देखि जीवत सखी ॥५२॥
लालहिप्रिया लगत अति प्यारी❀तापर प्रान करत बलिहारी ५३
जहँ जहँ चरन धरत सुकुँवारी❀सोठां चूँबत लाल बिहारी ५४
प्रेम अटक की अटपती रीती❀जानै सो जाके उर बीती ५५
कहिबे को नहि प्रेम के बैना❀मन समुझै के दोऊ नैंना ५६
जेहिजेहि सुमन सुरंगकी ओरैं❀चितवत नेक नैंन की कोरैं ५७

धाइ कुँवर तेहि फूलहि लावै ❀ मन सेवाके प्रियहि रिझावै ५८
प्रीति रीति को जानै माई ❀जिनपियकुँवररसिकसुखदाई५६
भये दीन यों तजी बड़ाई ❀ पुनि ताकी बातै न सुहाई६०
मानत है धनि भाग बड़ाई ❀ ऐसी कुँवरि किशोरी पाई६१
अब मोकौंकछु और न चहियै ❀ नैननि में अंजन ह्वै रहियै६२
ऐसे नैंन लगै सखि प्यारे ❀ कैसे रहें आप ते न्यारे६३
ऐसी न होइ तो यह उर धरही ❀ सोही तन वे चितयो करही ६४
धन्य सोई छिन पल सखि मेरे ❀ कुँवरि नैंन भरि सोतन हेरे६५
दोहा—कोटि काम सुख होत हैं, हँसि चितवति पिय ओर।
भूलि जात तनकी दसा, परसे प्रेम झकोर ॥६६॥
कुँवर प्रेम जब मन में आयौ ❀बचन किशोरी कहनन पायौ६७
भरि हीयौ अतिही अकुलानी ❀पियकिशोर के उर लपटानी६८
फिरि गयौ प्रेम दुहुंनि पर माई❀ अपनीअपनी सुधि बिसराई ६६
पियपियप्रिया कहति सुकुँवारी❀ रहि गये ऐसे भारे अङ्कवारी७०
प्रेम नीर उर अञ्चल भीने ❀चितवत नैंन चकोरहि कीनें७१
दोहा—सहज रंगीली लाड़िली, सहज रंगीलो लाल।
सहज प्रेम की बेलि मनों, लपटी प्रेम तमाल ॥७२॥
देखि सखी तहँ सबै भुलानी ❀एक रही मनो चित्रकी बानी७३
एकनि के नैंननि जल ढरही ❀ मनो प्रेम के झरना झरही७४
एक गिरी धर अति मुरझाँनी❀ रहिगई एक लता लपटानी७५
भई अचेत पुनि चेत निहारै ❀तबसबहिनिमिलिआइसँभारै७६
देखे दोऊ उर में उरझाने ❀ तबसबहिन के नैंन सिराने७७
सोरठा—जुगल रसिक सिर मौर,सब सखियनि के प्राँन हैं।
नाहिन है गति और, तिनही के सुखसों रंगी ॥७८॥

महा प्रेम गति सब तें न्यारी ❀ पिय जानै के प्राँन पियारी ७९
अरुझे मन सुरझत नहि केहूँ ❀ जेहि अङ्ग ढरत होत सुख तेहूँ ८०
एकै रुचि दुहुँ मैं सखि बाढ़ी ❀ परिगई प्रेम ग्रंथ अति गाढ़ी ८१
देखत देखत कल नहि माई ❀ तिनको प्रेम कह्यौ नहि जाई ८२
सहज सुभाइ अनमनी देखै ❀ निमिषन कोटि कलपसम लेखै ८३
हँसि चितवत जब प्रीतम माँही ❀ सोई कलप निमष ह्वै जाँहीं ८४
खेलन हँसन लाल को भावै ❀ नेह की देवी नितही मनावै ८५
कौतुक प्रेम छिनहि छिन होई ❀ यह रस समुझै बिरला कोई ८६
ज्यौं ज्यौं रूपहि देखत माई ❀ प्रेम तृषा की ताप न जाई ८७
दोहा—प्रेम तृषा की ताप ध्रुव, कैसे हूँ कही न जाइ।
रूप नीर छिरकत रहैं, तऊ न नैंन अघाँइ ॥८८॥
बिच बिच उठत हैं प्रेम तरङ्गा ❀ खेलत हँसत मिलत अङ्ग अङ्गा ८९
नवल राधिका बल्लभ जोरी ❀ दूलहु नित्य दुलहिनी गोरी ९०
सोभित नित्य सहाने बागे ❀ नये नेह के रस अनुरागे ९१
खेलत खेलत तहाँ मन भाये ❀ यह कौतुक कबहूं न अघाये ९२
नेह मञ्जरी सहजहि भई ❀ हरी एक रस छिन छिन नई ९३
सींचत चाह चौंप के जलसौं ❀ लगि रहे दृग कमलनि के दलसौं ९४
सोरठा—श्रीराधाबल्लभलाल, रसिक रंगीले विवि कुँवर।
परे प्रेम के ख्याल, रुचत न तिनकौ और कछु ॥९५॥
नव निकुञ्ज रंगरंग चित्रसारी ❀ राजत नवल कुँवरि सुकुंवारी ९६
रस विहार की चौंपर खेलै ❀ दोऊ प्रवीन अंसनि भुज मेलै ९७
सखियनि तलप बिसात बनाई ❀ कहि न जाइ सोभा कछु माई ९८
पासे नैंन कटाछनि ढारै ❀ हाव भाव रंग रंग की सारै ९९
जो अंग लालहि परस्यो भावै ❀ समुझि किशोरी ताहि दुरावै १००

घात अनेक मन में उपजावै❀हँसैकुँवरिजबनहिबनिआवै१०१
हारि मानि पग परत बिहारी❀रसिकसिरोमनिकीबलिहारी१०२
नैंननिसैंन कछुक मुसिकानी❀मैंन खेल रस रैंन न जाँनी१०३
उरज कपोल झलक छवि छाई❀ चितवतलालविवसह्वै जाइ
तबहिकुंवरिभरिलियेअंकवारी❀करुनाकरिदियौअधरसुधारी
दोहा—नागरि कोक कलानि में, बिलसत सुरत बिहार।
रोचक रव रसना तहां, अरु नूपुर झनकार ॥१
नवल निकुंज रंगीले दोऊ ❀ तेहिठाँ सखीनाहिनै कोऊ
रसिकलाल ऐसे रंग भीने ❀ तनमन प्राँनप्रियाकरदीने
कबहूँ रूप सखी को धरही ❀ रुचिलैसबबातनिकौकरही
नख सिखलौं सिंगार बनाबै ❀ याही सेवा में सुख पावै
अद्भुत वैंनी गूथि बनाई ❀ मनोअलिनुकी सैनी आई
दोहा—विच विच फूल सुरंग दै, गूथी कवरि बनाइ।
मिलि अनुराग सिगार दोऊ, गहीसरनमनौआइ ॥१
नैंननि अंजन रेखा दीनी ❀तबहिकुंवरिकरआरसीलीनी
रीझि अंक लालन भरिलीनौ❀अतिहितसौंअधरामृतदीनौ
समुझि सनेह नैंन भरिआये❀मनौकंज आनंद जलछाये
बिवस होइ तब उर लपटानै❀वीते कलप न नेक अघानै
रहत यहै भ्रम पिय मनमाँही ❀प्राँनप्रियामोहिमिलीकिनाँही
दोहा—देखत देखत हँसत ही, गये कलप बहु बीति।
पल समान जाने नहीं,बिलसत दिन यह रीति ॥१
कौंन प्रेम तेहिठाँ को कहियै ❀दुहुँकोदचितवतसखिरहियै१
नित्त प्रेम एक रस धारा ❀अतिअगाधतेहिनाहिनपारा
महा मधुर रस प्रेमको प्रेमा ❀पीवतताहि भूलिगये नेमा १

तैसी सखी रहै दिन राती ❀हितध्रुवजुगलनेहमदमाती १२२
दोहा–रसनिधि रसिक किशोरविवि,सहचरि परमप्रवीन ।
महा प्रेम रस मोद में, रहत निरंतर लीन ॥१२३॥
प्रेम बात कछु कही न जाई ❀ उलटीचाल तहां सब माई१२४
प्रेम बात सुनि बौरा होई ❀ तहा सयान रहै नहिकोई१२५
तनमन प्रान तिही छिन हारै ❀ भलीबुरी कछुवै न बिचारै१२६
ऐसो प्रेम उपजिहै जबही ❀ हित ध्रुवबात बनैगीतबही१२७
ताको जतन न दीसत कोई ❀ कुँवरिकृपातें कहा न होई१२८
बृंदाबन रस सबते न्यारो ❀ प्रीतम तहांअपुनपौ हारो १२९
श्रीहरिबंश चरन उर धरई ❀ तव या रसमें मन अनुसरई१३०
मोमति कवन कहै यहवानी ❀हरिबंशचरनबलकछुकबखानी१३१
जुगल प्रेम मनही में राखै ❀अनमिलिसोकबहूँनहिभाषै१३२
दोहा–पिय प्यारी को प्रेम रस, सकहि तौ मनमें राखि ।
या रसके भेदी बिना, काहू सौं जिन भाषि ॥१३३॥
प्रेम बात आनंद मय माई ❀ताहिसुनतहिय नैननसिराई १३४
जहाँलगिसुखकहियतजगमाँही❀प्रेम समान औरकछुनाही १३५
यहरसजाके उर नहि आयौ ❀तेहिजगजनमलैवृथागमायौ १३६
सब रस मै देखै अवगाही ❀सबको सार प्रेम रस आही १३७
प्रेम छटा जेहि उर पर परई ❀सो सुखस्वादसबै पर हरई१३८
दोहा–जेहि सुख सम नहि और सुख,सुखकी गति कहै कौन ।
वारि डारि ध्रुव प्रेम पर, राज चतुर्दश भौंन ॥१३९ ॥
जहां लगिउज्वल निर्मलताई ❀सरससनिग्धसहजमृदुलाई १४०
मादिक मधुर माधुरी अङ्ग ❀दुर्ल्लभता के उठत तरङ्ग १४१
नौतननित्यछिनहिछिनमाही ❀इकरसरहतघटतरुचिनाही १४२

अतिहिअनूपमसहजस्वछंदा ❀ पूरनकला प्रेम बर चंदा १४३
सबगुनते ताकी गति न्यारी ❀ जाकेबस भये लालबिहारी १४४
दोहा-कहि न सकत रसना कछू, प्रेम सार आनंद ।
को जानै ध्रुव प्रेम रस, बिनु बृन्दाबन चंद ॥१४५॥
प्रेमकी छटा बहुतविधि आही ❀ समुझिलई जिनजैसीचाही १४६
अद्भुत सरस प्रेम निज सोई ❀चित्तचलनकीजेहिगतिखोई १४७
रसिक रसिकनी गुन अनुरागे ❀ एक प्रेम दंपति मन पागे १४८
इकछत सार प्रेम रस धारा ❀जुगलकिशोरनिकुंजबिहारा १४९
यह बिहार जाके उर आवै ❀ ताहि न बात दूसरी भावै १५०
औरो भजन आहि बहुतेरे ❀ ते सब प्रेम भजन के चेरे १५१
दोहा-नारदादि सनकादि सब, उद्धव अरु ब्रह्मादि ।
गोपिनको सुख देखि किये, भजन आपनौ बादि ॥१५२॥
तिन गोपिनु ते दुर्ल्लभ माई ❀ नित्य बिहारसहज सुखदाई १५३
शिवश्रीपतिजद्दपि ललचाही ❀ मन प्रवेस तिनहूंको नाही १५४
ऐसे रसिक किशोर बिहारी ❀ उज्वल प्रेम बिहार अहारी १५५
अति आसक्त परस्पर प्यारे ❀ एक सुभाव दुहुँनि मन हारे १५६
रस मै बढ़ी नेहकी बेली ❀ तेहि अवलंबे नवल नवेली १५७
दोहा-हित ध्रुव दुर्ल्लभ सबनि तें, नित्य बिहार सरूप ।
ललितादिक निजसहचरी, सोसुख लहति अनूप ॥१५८॥
दुर्ल्लभ कौ दुर्ल्लभ अति माई ❀ वृंदा विपिन सहजसुखदाई १५९
बेलि फूलफल ललिततमाला ❀ प्रेम सुधा सींचत सबकाला १६०
मृगी विहंगी सखी अपारा ❀ सबकै यहि ठाँ यहै अहारा १६१
नित्य किशोर एकरस भीनें ❀ तन मनप्राँन नेह बस कीनें १६२
इहिबिधिबिलसतप्रेमहिसजनी❀जानतनहिकितबासररजनी १६३

नेह मंजरी हित ध्रुव गावै ❀ दंपति प्रेम माधुरी पावै१६४
दोहा—प्रेम धाम वृन्दाविपिन, मध्य मधुर बरजोरी।
सरिता रस सिंगार की, जगमगात चहूं ओर ॥१६५॥
सोरठा—प्रेम मई दोऊ लाल, प्रेम मई सहचरि जहां।
सेवत हैं सब काल, प्रेम मई वृन्दा विपिन ॥१६६॥
दोहा—वैभव सब ईश्वर्यता, ठाढ़ी सेवत दूरि।
परसन पावत कबहूँ नहि, श्री वृन्दाबन धूरि ॥१६७॥
ब्रह्म जोति कौ तेज जहां, जोगेश्वर धरैं ध्याँन।
ताही कौ आवरन तहाँ, नहिं पावै कोऊ जान ॥१६८॥
नेह मंजरी मंजु रस, मंजुल कुन्ज बिलास।
जेहि रस के गावत सुनत, रसिकन होत हुलास ॥१६९॥
रूप रंगकी बेलि मृदु, छबि के लाल तमाल।
नेह मंजरी दुहुँनि में, हरी रहत सब काल ॥१७०॥

॥ इति श्री नेहमंजरी लीला संपूर्ण की जै जै श्री हित हरिवंश ॥ २६ ॥

॥ अथ श्रीवनविहार लीला प्रारम्भ ॥

दोहा—रसिक नृपति हरिवंश जू, परम कृपाल उदार।
श्रीराधा बल्लभ लाल जस, प्रगट कियौ रस सार ॥१॥
वन बिहार छबि कहा कहौं, सोभा बढ़ी विशाल।
मानौ ब्याहन चढ़े हैं, श्रीराधा बल्लभ लाल ॥२॥
मौरी मौर जराव के, और मोतिनु के हार।
दुलहिन दूलहु अति बने, रूप सींव सुकुँवार ॥३॥
फूलनि के बने सेहरे, झलकत प्रकट सुहाग।
वसन सहाने फबै तन, मनु पहिरो अनुराग ॥४॥

नख सिख लौं भूषन सजे, फबे छबीली भांति।
झलमलात अंग अंग प्रति,मनि रतननि की कांति॥५॥
कहा कहौं बानिक बनक, सुन्दर परम उदार।
चरननि तर लोटत बिवस, निरखि रूप सिंगार॥६॥
जुरी बरात सखीनु की, कोटिन जूथ अपार।
उमड़े छबि के सिंधु मनु, मधि दुलहु सुकुँवार॥७॥
सबके सीसनि रही फबि, सीस फूलनि की पांति।
मनो छत्र सिंगार के, झलकि रहे बहु भांति॥८॥
किंकिनि धुनि मनो दुंदुभी, बाजत है चहूँ ओर।
कहा कहौं कहि सकत नहि, आनंद बढ्यौ न थोर॥९॥
अंगनि छबि भूषन झलक, फैल रही बन मांहि।
ससि सूरज दुति जहाँ लगि,निरखत सबै लजांहि॥१०॥
छाड़त छबि की फूलझरी, मदन हवाई दार।
निसि ते मानो दिन भयौ, कोटि भान उजियार॥११॥
छुटत अलौकिक भौंचँपा, जहाँ तहाँ फैली जोति।
कञ्चन की बरषा मनौ, बृंदावन में होति॥१२॥
कुञ्ज कुञ्ज ऐसी बनी, मानो मत्त मतंग।
लागत ही जनो पवन के, निर्त्तत लगा तुरंग॥१३॥
फूले द्रुम फूली लता, फूले जहाँ तहाँ फूल।
बहुत रंग बृंदा विपिन, पहिरे मनो दुकूल॥१४॥
उज्वल परम सुरंग अति, नव कपूर की धूरि।
बढ़ी धूंधि कहत न बनै, रह्यौ अकास सब पूरि॥१५॥
वरिषा रूप सुहाग की, बरषत वन चहूं ओर।
जहाँ तहाँ आनंद भरि, निर्त्तत मोरी मोर॥१६॥

रितुराज पखावज लियैं कर, बीना शरद प्रवीन ।
ग्रीषम ताल रसाल धरैं, पावस छाया कीन ॥१७॥
कीर कपोती भँवर पिक, करत मधुर सुर गाँन ।
भीजे सब आनंद में, उपजत नव नव ताँन ॥१८॥
उड़्यौ गुलाल सुरंग बहु, सब बन छयौ सुहाग ।
मानो द्रुम द्रुम तें भयौ, प्रगट रङ्ग अनुराग ॥१६॥
कोलाहल सब द्विजनि कौ, तहाँ नाहिने थोर ।
श्रवननि सुनियत नाहि कछु, ऐसो ह्वै रह्यौ सोर ॥२०॥
चौंर चलत सखियनि करनि, धुज पताक बहुरंग ।
सोभा कौ सागर बढ्यौ, मानो उठत तरंग ॥२१॥
फूलि फूलि फूली फिरैं, देखत जहां तहाँ फूल ।
झलमलात दीपावली, मनि मय जमुना कूल ॥२२॥
कुञ्ज कुञ्ज उजियार मनो, कोटिक भान प्रकास ।
मंद सुगंध समीर बहै, सब बन भयौ सुवास ॥२३॥
बंदीजन सब खग मनो, कहत हैं बिरद रसाल ।
गावत रागिनी रागमिलि, गुहि रागिनी की माल ॥२४॥
चतुरई चित्र करत फिरत, भीने रङ्ग अनुराग ।
उज्जलता को संग लिये, बंधी प्यार के ताग ॥२५॥
कुञ्ज महल रतननि खच्यौ, कीने चित्र रसाल ।
चहूँ ओर रही झलकि कै, झालरि मोतिनु माल ॥२६॥
झूँमि रही फूलनि लता, बहु विधि रङ्ग अनेक ।
फूले आनंद रङ्ग भरि, निर्त्तत केकी केक ॥२७॥
ललितादिक निज सहचरी, जुरी तहाँ सब आनि ।
कोलाहल आनंद कौ, कहां लगि सकौं बखानि ॥२८॥

बेदी सेज सुदेस रचि, फूलनि आसन वानि ।
नव दूलहु दुलहिनि नवल, बैठाये तहाँ आँनि ॥ २६ ॥
सखियनि अंचल दुहुनि के, ले गठजोरो कीन ।
मिलवाई ग्रीवनि भुजनि, छबिसौं भाँवरि दीन ॥३०॥
सोभा ध्रुव तेहि समै की, बरनै ऐसो कौन ।
रसना कोटि धरै सरस्वती, तऊ ह्वै रहै मौंन ॥ ३१ ॥
झीनें अंचल मैं चपल, कजरारे कल नैंन ।
निरखत पिय व्याकुल भये, गह्यौ आइ मन मैंन ॥३२॥
अतिसलज्ज सुकुँवरिरही,नखसिखलौं अंगढांपि ।
छुयौ चहत छ्वै सकत नहि,उठत नवलकर कांपि ॥३३॥
सखियनि के उर फूल भई, दूधा भाती हेत ।
ऐसी बैठी सुरि कुँवरि, अंचल छुवन न देत ॥३४॥
सखियनि कीने जतन बहु, जुरवाये चखचारि ।
रहिगये चितवत चित्रसे, मोहन वदन निहारि ॥ ३५ ॥
निरखत छबिकौ ससिबदन, बाढ़ी फूल अपार ।
सुन्दर मुख दिखरावनी, पहिरायो हित हार ॥ ३६ ॥
घूंघट पटके छुवतही, सुरि बैठी सुकुँवारि ।
रसिकलाल पाइनि परत, सकत न धीरज धार ॥ ३७ ॥
समुझि दसा पियकी तबहि,चितई कछु मुसिकार ।
फूल्यौ पियको हियकमल, सो सुख कह्यौ न जाइ ॥३८॥
नेकही घूँघट के खुलत, भयो प्रकासित चन्द ।
भई किशोर चकोर गति, परे प्रेम के फन्द ॥ ३९ ॥
रतननि के भाजन विविधि,धरे सेज ढिग आँनि ।
मधु मेवा फल अमृत मय, धरि धरि राखे वाँनि ॥४०।

सोंधो पाँन सुगंध सब, रचि रचि धरे बनाइ।
सखियनि कौ सुख कहा कहौं,तेहिरस रही समाइ ॥४१॥
मंगल रैंन सुहाग कौ, गावत सखी प्रवीन।
प्रथम बिलास अनंग रस, बाढ़्यौ रंग नवीन ॥ ४२ ॥
लई लाड़िली अंक भरि, कहा कहौं आनंद।
मानौ छबि की चंद्रिका, लीनी गहि छबि चंद ॥ ४३ ॥
बढ़ि गयौ ऐसो प्रेम रस, बिदा लाजकी कीन।
चितवनि मुसिकनि सहजकी,बतियनि माँहि प्रवीन ॥४४॥
कोक बिलास कलान में, दोऊ प्रिय समतूल।
कहा कहौं तेहि समय की बाढ़ी जो उर फूल ॥ ४५ ॥
बर बिहार रस रंग में, नागरि परम उदारि।
सींचत पिय हिय प्यार सौं, लालच लाल निहार ॥४६॥
नबल रंगीली रंग भरी, रंग भर्‌यो मोहनलाल।
बढ़ी दुहुनि के हीयतें, केलिकी बेलि रसाल ॥ ४७ ॥
बतबतात मुसिकात दोऊ, अति छबिसौं लपटात।
गौर स्याम तन रहे मिलि, अंग अंग झलकात ॥ ४८ ॥
दसनांचल अञ्जन लग्यौ, पलक पीक रस सार।
दयौ बदलि अनुराग के, अधरनि को सिंगार ॥ ४९ ॥
बारनिहारनि की अरुझ, तन मनकी अरुझानि।
मानौं हाँसि सिंगार दोऊ,मिली आपु में आनि ॥ ५० ॥
निसि बीती सब रङ्ग में, उठे भोर सुकुँवार।
सखी सबै अति सोहनी, राजत संग अपार ॥ ५१ ॥
सुरङ्ग सहानी तिलक पर, सुरंग चूनरी पाग।
बांहां जोरी फिरत दोऊ, भीने रस अनुराग ॥ ५२ ॥

लै लै फूल सुरंग पिय, प्रियहि बनावत जात ।
अंगनि उरजनि छुवनि कौ,अति आतुर अकुलात ॥५३॥
देखि विपिन जमुना पुलिन, ढरे कुटी की ओर ।
सोभा आवनि चलनि फिरि,जो ध्रुव कहै सो थोर ॥५४॥
दोहा कहे पचास पर, चारि विचार निहारि ।
श्रीराधा बल्लभ लाल जस,पल पल ध्रुव उर धारि ॥५५॥
बन बिहार लीला कही, जो सुनि है करि प्रीति ।
सहजहि ताके उपजिहै, श्रीबृन्दावन रस रीति ॥५६॥

॥ इति श्री बन विहारलीला संपूर्ण की जै जै श्री हित हरिबंश ॥२७॥



॥ अथ रंगबिहार लीला प्रारंभ ॥

दोहा—राजत छबिसौं रंगमगे, रंगमग्यौ सहज सिंगार ।
बैठे रंगमगी सेज पर, रंगमग्यौ रूप अपार ॥१॥
सखी एक दई आरसी, ललित लाड़िली पाँनि ।
तेहिछिन पियको मन परयो,द्वै छवि के बिच आनि ॥२॥
बढ़ी अधिक सोभा झलक, कुन्ज भवन रह्यौ छाइ ।
मानो कोटिक रूपके, चंद उदै भये आइ ॥३॥
निरखि माधुरी सहजकी, नैंन न मानत हार ।
बढ़ी जहां रुचिकी नदी, धीरज कूल विदार ॥४॥
पिय प्रवीन रस प्रेम में, चितवत भौंहनि भाइ ।
जेहि छिन जैसी होत रुचि, जानत त्योंही लड़ाइ ॥५॥
छिन छिन औरै औरछवि, पलपलमें गति और ।
नागर सागर रूपके, परम रसिक सिर मौर ॥६॥

कबहूँ लाड़िली होति पिय, लाल प्रिया ह्वै जात।
नहिजानत यह प्रेमरस, निसिदिन कितहि बिहात ॥७॥
सुरंग चूनरी एक में, रंग भीने सुकुँवार।
लपटे ऐसी भाँति सौं, नहि समात बिच हार ॥८॥
इंद्रनील मनि पिय प्रिया, कोमल कुंदन बेलि।
लसति छबीली भाँति सो, सुरत समर रस केलि ॥९॥
लाल मगन सुख सेज पर, लटकत रही न सँभारि।
रति नागरि अधरनि सुधा, प्यावत बदन निहारि ॥१०॥
नैंन कटोरी रूपकी, भरी प्रेम सद मोद।
अद्भुत रुचि पीवत बढ़ीं, आनंद रंग दुहुँ कोद ॥११॥
अङ्गनिकी छबि माधुरी, निरखत हूँ न अघांहि।
नैंन भँवर भूले फिरैं, रूप कमल बन मांहि ॥१२॥
ऐसो छिन ह्वै है कबहि, कुंवरि अङ्क भरि लेहि।
दसन खंड अति हेत हँसि, पिय मुख बीरी देहि ॥१३॥
यह सोचत रहै चित्त में, भूषन बसन बनाइ।
पहिराऊँ अपने करनि, रहौं रीझि सुख पाइ ॥१४॥
जदपि पिय देखत रहै, मन की सोच न जाइ।
कैसे हूँ एक बार ये, देखै नैंन अघाइ ॥१५॥
अति आसक्त सनेह बस, मोहन रूप निधान।
तजि स्यानप राख्यो न कछु, अपने तन मन प्राँन ॥१६॥
सौरभता सुकुँवारि की, जब पावत सुकुँवार।
फैलि परत जनु प्रेम रस, रहत न देह संभार ॥१७॥
अतिहि बिवस ह्वै जात पिय, ऐसी भांति अनूप।
सुनि सखि तब ह्वै है कहा, जबहि देखिहै रूप ॥१८॥

अधरनि अंगनि परसिबौ, तिनको यहै उपाइ ।
चितवनि अति अनुराग की,लेत है पियहि जगाइ ॥१६॥
छिन छिन माहि अचेत ह्वै,पल पल माहि सचेत।
नहि जानत या रंग में, गये कलप जुग केत ॥२०॥

॥ कुण्डलिया ॥

एक लाड़िली लाल में, अद्भुत सरस सनेह ।
रुचि तरंग पल पल बढ़ै, बरषत रस को मेह ॥
बरषत रस को मेह बढ़ी सुख सरिता भारी ।
मुसिकनि मनु छबि कमल अंग फूली फुलवारी ॥
हाव भाव अंकुर नये उपजत रंग अनेक।
हित ध्रुव हितसौं बात करैं तन मन भये दोऊ एक ॥२१॥

दोहा–अलक लड़ी सुख लाड़िली, अद्भुत रूप निधान ।
मोहि रहे मोहन निरखि, भूले सबै सयान ॥२२॥
तिनके रूपहि कहनि कौ, कितकि बुद्धि है मोर ।
रस गुन सींवा रूप की, बँधे नैंन की कोर ॥२३॥
अति सुरंग मोतिनु सहित, बनी मंग रस दैंन ।
मनौ हँसि अनुराग मिलि, राजत रसपति ऐंन ॥२४॥
फबि रही गौर ललाट पर, बेंदी की झलकानि ।
मणि अनुराग सुहाग की, मानौ प्रगटी आनि ॥२५॥
उज्वल स्याम सुरंग दृग, सने सनेह सलौंन ।
बार बार परसत रहैं, चञ्चल श्रवननि कौंन ॥२६॥
कहि न सकत नासा बनिक, उन्नत समिलि अनूप ।
चितवत मोती की छबिहि, भूल्यो रूपहि रूप ॥२७॥

मधु मय अधर सुरंग मृदु, छबि सींवा सुकुँवारि।
दसननि पंकति जोतिपर, दामिनि अगनित वारि॥२८॥
उपमा सुंदर चिबुककी, सकत न उरमें आनि।
सोभा निधि अद्भुत मनौ, हरिमन हीरा खानि॥२९॥
मुसिकनि आनंद फूल मनौ, चितवनि सुखकी सींव।
द्वै लर मोतिन पोति छबि, झलक रही मृदु ग्रींव॥३०॥
उरजन की छबि कहा कहौं, तैसी झलकनि हीय।
भूलत नहि मनके करनि, धरे रहत है पीय॥३१॥
तन सौं सारी मिलि रही, सोंधे सनी सुरंग।
मानौ सोभा छाइ रही, झलमलात अंग अंग॥३२॥
रसभीनी झीनी बनी अंगिया गोरे गात।
अति सुदेस गाढ़ीकसनि, लसनि ललित उरजात॥३३॥
प्रीतमको चित मीन मनौ, परयौ नाभि हृदि मांहि।
अति स्वादी सुख स्वाद रस, कैसेहूँ निकसत नाहिं॥३४॥
नखसिखलौं दोऊ उरझि रहे, नेकहूँ सुरझत नांहिं।
ज्यौं ज्यौं रुचिबाढ़ै अधिक, त्यौं त्यौं अति उरझाँहि॥३५॥
जेहरि रीझे नूपुरनि, निमिष न छाड़त पाइ।
पाइल सुखकी रासि तहँ, ते हरि रहे लुभाइ॥३६॥
चरननि हित जावक लियै, ललन रहे अतिसोहि।
चित्र करत चित चित्र भयौ, छबि चरित्र रहे जोहि॥३७॥
चाहि रहे व्छावत चरननि, बढ्यौ, प्रेम कौ प्यार।
रुचि प्रवाह में परयौ मन, चूँबत बारंबार॥३८॥
रस भरी चितवनि नेहकी, रंगभीनी मुसिकानि।
जीवन कौ सुख सहज फल, यहै लेत पिय मानि॥३९॥

नेक कुँवरि मुरि सखी सौं, बात कही लगि कान ।
पिय की गति औरै भई, कोटिक बिरह समान ॥४०॥
पुनि पुनि प्यारी प्यार सौं, रँकि लिये उर लाइ ।
देखत मुख हिय दुख भयौ, नैंननि जल भरै आइ॥४१॥
गहि कपोल सुंदरि करनि, नैंननि नैंन मिलाइ ।
अधरनि रस प्यावत पियहि, लाज नेम बिसराइ॥४२॥
छुटी मूरछा चेत भयौ, चितवत मुखकी ओर ।
रटत पपीहा तृषित मनो, व्याकुल तृषित चकोर॥४३॥
चरन कमलकौ निज महल, तहां बसत मन प्राँन ।
इतनौ नातौ मानि कै, देहु अधर रस पाँन॥४४॥
हारी प्यारी देत रस, पिय पीवत न अघात ।
देखि लाड़िली लालरुचि, रीझि रीझि मुसिकात॥४५॥
करुनानिधि मृदु चित्त अति, उरजनिसौं रही लाइ ।
लज्जित ह्वै रहे बिवस तहां, मदन कोटि सिर नाइ ॥४६॥
सोरठा–पिय सौं कहै जु बात, अलबेली अति फूलसौं ।
हँसि मृदु उर लपटात, पिय के जीवन यहै सुख ॥ ४७ ॥
दोहा–प्रेम रासि दोऊ रसिकवर, एकै बैस रस एक ।
निमिष न छूटत अङ्ग अङ्ग, यहै दुहुँनि की टेक ॥ ४८ ॥
अद्भुत गति सखि प्रीति की, कैसेहूं कहत बनैंन ।
थोरेहूँ अन्तर निमिष को, सहि न सकत पिय नैंन ॥४९॥
अद्भुत रुचि सखी प्रेमकी, सहज परस्पर होइ ।
जैसे एकैही रंग सौं, भरिये सीसी दोइ ॥ ५० ॥
स्याम रंग स्यामा रंगी, स्यामा के संग स्याम ।
एक प्रान तन मन सहज, कहिवे कौ द्वै नाम ॥ ५१ ॥

सखियनि के नैंना रंगे, नवल बिहार सुरंग ।
माती नेह आनन्द मद, दम्पति केलि अनंग ॥ ५२ ॥
प्रेममदन मद नैंन भरे, हियौ भर्यो आनंद ।
सुरत रंग के रंग रंगे, बिबि वृन्दाबन चंद ॥ ५३ ॥
रस समुद्र दोऊ लाड़िले, नवनव भाव तरंग ।
तामें मज्जन करत रहु, ध्रुव दिन मनहि अभंग ॥५४॥
अद्भुत रंग बिहार जस, जो सुनिहै चित लाइ ।
रसिक रंगीले बिबि कुँवर, तेहि उर झलकै आइ ॥५५॥
छप्पन दोहा कहे ध्रुव, रंग बिहार अनंग ।
या रससौं जे रंग रहे, तिनही सौं करि संग ॥ ५६ ॥

॥ इतिश्री रङ्गबिहार लीला संपूर्णकी जै जै श्रीहितहरिवंश ॥ २८ ॥

॥ अथ रसबिहार लीला प्रारम्भः ॥

दोहा—रूप नदी करिया मदन, नवल नेह की नाव ।
चढ़े फिरत दोऊ लाड़िले,छिन छिन उपजत चाव॥ १ ॥
रसबिहार कछु प्रगट कहौं, सुनहु रसिक चितलाइ ।
नावनि चढ़ि वन बिहरिवो, यह उपजी उर आइ॥ २ ॥
कंचन की रतननि खची, रची अनेक अनंग ।
जमुना जल में झलकि रही, गुमटी ना ना रंग ॥ ३ ॥
मनि मय छत्री सबनि पर, रही अधिक झलकाइ ।
कहूँ कहूँ फूलनि की लता, रहिगई सहज सुभाइ ॥ ४ ॥
नाव बनाव जु कहन को, ऐसी मति धरै कौंन ।
कुन्दन के हीरनि खचे, दुखने तिखने भौंन ॥ ५ ॥
लै लै कंज गुलाव दल, आसन सेज रचाइ ।
अम्बर अरगजा सौं छिरकि, राखी सखिनि बिछाइ ॥६॥

तापर रसिकनी रसिक दोऊ, नागर नवल किशोर।
अवलोकत मुख माधुरी, जैसे चंद चकोर ॥७॥
ललितादिक निज सहचरी, तेई राजत पास।
आनंद के अनुराग रंगी, लूटत सुख की रासि ॥८॥
और सतेसन पर चढ़ी, लीने सौंज सिंगार।
चंदन बंदन अगरसत, और विविधि उपहार ॥९॥
एकनि कर पानन डबा, एकनि के कर चौंर।
रस सुगंध भीजे सबै, भ्रमत चहूँदिश भौंर ॥१०॥
जहाँ जहाँ जल में झलमलैं, अंगनि भूषन जोति।
मानौ बरिषा रूपकी, कालिंदी पर होति ॥११॥
भूलि रही नहिं कहि सकत, मतिकी गतिभई पंग।
कोटि भानससि कमल मनौ, जुरे आइ इक संग ॥१२॥
अति प्रवीन सब सहचरी, रंगी राग के रंग।
कोऊ बीना कोऊ सारंगी,कोऊ लिये हुडक मृदंग ॥१३॥
एक लिये किन्नरि मुरज, एक तार कठतार।
सरस एक तें एक सखी, गुनकी अवधि अपार ॥१४॥
एक मधुर सुर गावहीं, अद्भुत बांकी तान।
रीझि लाड़िली लाल दोऊ, देत सबनि कौ पान ॥१५॥
चलनि फिरनि छबि कहा कहौं, नैंना रहे लुभाइ।
मानौ रूप छटानि के, लई रविजा सब छाइ ॥१६॥
सुरंग सुगंध गुलाल अति, सखियनि दियौ उड़ाइ।
अंबर मनौ अनुराग कौ, तेहि छिन लियौ उढ़ाइ ॥१७॥
कुसुमनि के गेंडुक लिये, खेलत दोऊ सुकुँवार।
आलिंगन चुंबन चपल, छुवत उरज उर हार ॥१८॥

हाव भाव चितवनि चपल, बिच २ मृदुमुसिकानि ।
अति बिचित्र घटि नाहिकोऊ, कोककलनिकी खाँनि ॥१६॥
जबहि कुँवर नीवी गहत, भौंह भँग ह्वै जात ।
वे पथ बात न कहि सकत, पद कमलनि लपटात ॥२०॥
देखि दीन आतुर पियहि, ह्वै कृपाल रस ऐंन ।
अधर सुधा प्यावत पियहि, जुरे नैंन सौं नैंन ॥२१॥
रस बिहार के सुनत ही, उपजे जिनके रंग ।
हित ध्रुव तौ जाँचत यहै, तिनही सौं ह्वै संग ॥२२॥

॥ इति श्री रसबिहार लीला संपूर्ण की जै जै श्री हित हरिवंश ॥ २६ ॥



॥ अथ रंग हुलास लीला प्रारम्भ ॥

दोहा—सखी सबै सेवा करैं, जिनके प्रेम अपार ।
जैसी रुचि है दुहुँनि की, तैसे करत सिंगार ॥१॥
सौरभ सौं तन उबटि कै, मंजन कियौ सुकुँवारि ।
अंगनि की छवि कहा कहौं, मतिसरस्वती रही हारि ॥२॥
मुख तंबोल की अरुनई, झलकनि सहज सुहाग ।
मनो कमल के मध्य तें, प्रगट भयौ अनुराग ॥३॥
रची सचिकन चंद्रिका, फबि रही मंग सुरंग ।
मनु अनुराग सिंगार की, सींवाँ रची अनंग ॥४॥
वेंदी नथ अरु तिलक पर, सुरंग चूनरी सोहि ।
निरखत धीरज धरैं सखी, तऊ रही सब मोहि ॥५॥
चिलकनिकचचमकनिदसन, चितवनिमुसिकनिफूल ।
झरत रहैं पिय लाल पर, सुख निधि आनंद मूल ॥६॥

कजरारे उज्वल सुरंग, अनियारे दोऊ नैंन।
उपमा और कहा कहौं, मोहन मन हरि लैन ॥७॥
अधरनि की छबि कहा कहौं, रस मय मधुर सुरंग।
सींचत पिय हिय लोचननि, पानिप वारि तरंग ॥८॥
अति सुंदर बर चिबुक पर, साँवल बिंदु सलौंन।
मनहु स्याम मन अलप ह्वै, बैठ्यो तहां धरि मौंन ॥९॥
कैसे कै बरनौ सखी, सहजहि भाँति अनूप।
चलै ढरकि मन मैंन ज्यौं, लागति छबि रवि धूप ॥१०॥
पांनिप झलक कपोलपर, छुटि रही अलक रसाल।
वेसरि कौ मुक्ता चपल, चंचल नैंन बिशाल ॥११॥
बिविधि भाँति भूषन बसन, प्रतिविंवित अंग अंग।
रूपनि मनि गन मैं मनो, झलकत उठत तरंग ॥१२॥
झलकनि झमकनि कहा कहौं, सोभा बढ़ी सुभाइ।
मानौ कोटिक दामिनी, छबिसौं चमकी आइ ॥१३॥
मिहदी परम सुरङ्ग सौं, रचे रचन मृदु पाँनि।
मनौ रैनी अनुराग की, रंगे कमल दल वानि ॥१४॥
नैंननि अंजन देत सखी, कांपत कर अरु हीय।
अति विशाल चंचल चितै, विवस होत हैं पीय ॥१५॥
अति प्रवीन सब अंग में, रूप सींव सुकुँवारि।
बाढ़त है छबि अधिक तव, लालहि लेत सँभारि ॥१६॥
प्रेम प्रिया कौ कहा कहौं, राखे छबिसौं छाइ।
पिय के सर्बस लाड़िली, रहे बिन मोल बिकाइ ॥१७॥
उरजन छवि हारावली, लालन रहे निहारि।
तृपित न कबहूं भये हैं, पिवत प्रेम रस वारि ॥१८॥

नख सिख मोहनी सोहनी, बारी रति श्री कोटि ।
जदपि पिय मोहनहु ते, रहे चरन तरि लोटि ॥१६॥
सखियनि मंडल मैं खरी, तैसीयै झलक सिंगार ।
मनु सेवत छबि चंद कौ, रूप के कमल अपार ॥२०॥
अब सुन प्यारे लाल की, रुचिको रच्यौ सिंगार ।
बेसरि सारी कंचुकी, बेंनी गुही सुढार ॥२१॥
वेंदी दई अति प्यारसौं, हँसि लाड़िली सुकुँवारि ।
बाढ़ी ऐसी फूल उर, सकत न लाल सँभारि ॥२२॥
कुंदन के रतननि खचे, बने तरौना कान ।
मानौ छबि के कमल ढिग,झलकत छबि के भान ॥२३॥
जहां लगि भूषन कुँवरिके, पहिरे तेई बनाइ ।
कौन भांति अति लाज सौं, चितई मुरि मुसिकाइ ॥२४॥
वेष प्रिया कौ करत ही, पानिप वढ़ी अनूप ।
मनो सबके मन हरन कौ, प्रगटी मूरति रूप ॥२५॥
नवल सखी छबि नई नई, अंग अंग झलकंत ।
मनु सुहाग अनुराग की, सींव सुरंग सीमंत ॥२६॥
अति बिशाल चंचल दृगनि, अंजन दियौ बनाइ ।
रेख सेख कोरहि लगी, चित्तहि लियौ चुराइ ॥२७॥
नासा बेसरि फबि रही, थिरकनि मुक्ता मंग ।
मनहु खिलावत विधु बुधहि, हितसौं लिये उछंग ॥२८॥
वनी सहेली साँवरी, सोभा रही सुभाइ ।
उपमा और कहा कहौं, लाड़ली रही लुभाइ ॥२६॥
चितवनि अति अनुरागकी, रंगभीनी मुसिकानि ।
देखि छबीली छबहि छबि, पाइनि में परी आनि ॥३०॥

मोहन तें भई मोहनी, लई सखी सब मोहि ।
अति सुठौंन बानिक बनक, रही कुँवरि सुख जोहि ॥३१॥
बीन कुँवरि कौ लियौ कर, बजई बांकी तॉंन ।
अति प्रवीन लीनी रिझै, गाई सुर बंधाँन ॥३२॥
रीझि लाड़िली अंकभरि, लीनी उर सौं लाइ ।
द्वै सरिता छबिकी मनौ, मिली आप में आइ ॥३३॥
बाढ़ी रुचि या वेष पर, उपज्यौ नौतन चाव ।
मिटी न मनकी चपलता, भले और सुभाव ॥३४॥
पियहि प्रिया कौ वेष रुचै, प्यारी कौ पिय वेष ।
हियतें हिय छूटत नही, परगई प्रेम की रेख ॥३५॥
ठाढ़ी जुवती जूथ में, छबि की उठत झकोर ।
मानौ चंदहि घेरि रहे, सबके नैंन चकोर ॥३६॥
करि सिंगारि सहचरि सबै, रूपहि रही निहारि ।
बैठे कुञ्ज सिंगार में, सेज सिंगार संवारि ॥३७॥
राजत नवल निकुञ्ज में, नव किशोर चित चोर ।
सखी सहेली सहचरी, झमकि रही चहूँ ओर ॥३८॥
प्रेम मदन रसको सदन, रदन अदन धरे पीय ।
रस समुद्र में परे दोऊ, जुरे नैंन अरु हीय ॥३९॥
लटकनि ललित सुहावनी, सो तौ बसि रही हीय ।
जब लावत उर प्यारसौं, हँसि हँसि प्यारी पीय ॥४०॥
कजरारे सुठि सोहने, उज्वल स्याम सुरंग ।
नैंननि छबि पर वारि सत, खंजन कंज कुरंग ॥४१॥
जिहिजिहिचितवनिचितहर्यौ,तेहिचितवनिकीआस।
रसिकलाल छाड़त नहीं, निमिष लाड़िली पास ॥४२॥

॥ दोहा ॥

कुँवरि चाल सखी देखिकै, कुँवरहि भूली चाल ।
रहिगये ठाढ़े चित्र से चितवनि नैन विशाल ॥४३॥
जौ फिरि चितवै लाड़िली, ठाढ़ी यमुना कूल ।
फिरि आई अति प्यार सौं, लीने गहि भुज मूल ॥४४॥
अद्भुत जोरी रूपनिधि, नवल लाड़िली लाल ।
ऐसे रहे ध्रुव हीय में, जैसे कंठ की माल ॥४५॥
जोरी गोरी स्याम की, सोभा निधि सुकुँवारि ।
अटके दोऊ आप में, उमड़ी प्रेम की धार ॥४६॥
तेहि धारा की बूंद इक, कैसे बरनी जाइ ।
और जतन कछु नाहिं ध्रुव, रसिकन संग उपाइ ॥४७॥
मदन मोद मद रस मगन, रहत मुदित मनमाँहि ।
दरसत परसत उरज उर, लपटत हूँ न अघाँहि ॥४८॥
कुँवरि कटाछनि की छटा, मनु अनियारे बाँन ।
पिय हिय में ध्रुव लगत रहैं, सोई ह्वै गये प्राँन ॥४९॥
प्रीतम के जीवनि यहै, नैंन कटाछनि पात ।
त्यौं त्यौं पियकी सीससखि, चरननि तर ढरयौ जात ।५०।
ऐसे रस में परै मन, जनम सफल ध्रुव होइ ।
नैंन सैंन मुसिकनि रतन, हिय गुन सौं लै पोइ ॥५१॥
लाड़िली लाल के प्रेम कौं, जिनके रहै बिचार ।
सुनि ध्रुव तिनकी चरन रज, वंदन करि सिर धार ।५२।

इति श्री रङ्गहुलास लीला संपूर्ण की जै जै श्री हित हरिवंश ॥ ३० ॥



॥ अथ रंगबिनोद लीला प्रारम्भ ॥

दोहा—प्रथमहि चितवनि लाज की, द्वितिय मधुर मृदु बैंन ।
तृतिय परस अंगनि सरस, उरजनि छबि सुख दैंन ॥१॥
परिरंभन चुम्बन चतुर, पंचम भाइ तरंग ।
षट रस विंजन स्वाद जिमि, उठत अनंग तरंग ॥२॥
विविधि भांति रति केलि कल, सप्त समुद्र अपार ।
बचन रचन अष्टम नवम, रस निधि रंगबिहार ॥३॥
क्रम सौं कहे ध्रुव नव रसहिं, मिटत न कबहुँ हुलास ।
ऐसो लाड़िली लाल कौ, अद्भुत प्रेम विलास ॥४॥
अब वरनौ ज्यौंनार कछु, रस मै रस सिंगार ।
प्रीति रसोई अति बनी, प्रीतम जेवन हार ॥५॥
विविधि भांति विंजन सरस, भए जु बहुत प्रकार ।
पानी पानिप अंग द्युति, पीवत बारम्बार ॥६॥
अधर सुधा मादिक मधुर, पुट कपूर की हाँसि ।
बीच सलौंनी चितवनी, बढ़वत रुचि सुखरासि ॥७॥
चाह सुधा रसना नयन, प्यास त्रिषा नहि थोर ।
परसत रति अति चौंप सौं, छबि स्वादहि नहि ओर ॥८॥
आलिंगन वर कलप तरु, सुरत रंग सुख मूल ।
इक रस फूल्यौ रहत दिन, चितवनि मुसिकनि फूल ॥९॥
अति सुगंध बचनावली, वीरी सुख अनुराग ।
पौंढ़े सेज परजंक पर, ओढ़े चीर सुहाग ॥१०॥
वृन्दावन द्वै प्रेम के, फूले फूल अनूप ।
लोइनि अलि ललितादिकनि, पीवत सौरभ रूप ॥११॥

परम रसिक नागर नवल, श्रीराधाबल्लभ लाल।
मुसिकनि मन हरिलेत हैं, चितवनि नैंन बिशाल ॥१२॥
नव किशोर चित चोर दोऊ, अलबेले सुकुँवार।
भीने रंग सुरंग में, रचि रहे प्रेम बिहार ॥१३॥
दुलहिनि दूलहु रस मसे, प्रेम रूप की रासि।
नवल रंगीली सेज पर, करत हाँस पर हाँसि ॥१४॥
अतिहिं छबीले कुँवर दोऊ, करत रसीली बात।
मर्म भिदी कहि कहि कछू, हँसि हँसि उर लपटात ॥१५॥
कजरारे चंचल नयन, छबि की उठत झकोर।
को समुझै घन मेघ सुख, बिना रसिक वर मोर ॥१६॥
रदन चिन्ह रति के सुरंग, सोभित सुभग कपोल।
मनहु कमल के दलनि पर, झलकत रतन अमोल ॥१७॥
सुरत रंग पर सुख नहीं, बातनि ऊपर बात।
अधर पान पर रस नही, परसनि पर उर जात ॥१८॥
लटकनि लपटन रंग की, चितवनि हाँसि बिनोद।
यह सुख समुझै को सखी, जो उपजत दुहुँ कोद ॥१९॥
कोमल फूली लतनि में, करत केलि रस माँहि।
तहाँ तहाँ की बल्ली सबै, सकुचि बिवस ह्वै जाँहि ॥२०॥
वृन्दावन की लता द्रुम, कुञ्ज सबै चिद्रूप ॥।
झनक झनक बिहरत तहां, दंपति सहज सरूप ॥२१॥
सौरभ अंगनि कहा कहौं, स्वाँस सुवास अनूप।
रोंम रोंम आनन्द निधि, देखिवौ पानिप रूप ॥२२॥
फूलनि में दोऊ फूल से, सौरभ रूप सुरंग।
ललितादिक पाछैं फिरैं, भीनी तिनके रंग ॥२३॥

धन्य धन्य सखियनि सुकृत, देखति ऐसी भाँति।
जबहि लाड़िली लाल तन,प्यार सौं मृदु मुसिकाँति॥२४॥
जब देखी रस रंग ढरी, बाढ़्यौ आनंद हीय।
रचि बनाइ मृदु आंगुरीनु बीरी खवावत पीय ॥२५॥
बिचहि लाल चाहत छुयौ,कुच कच अरु भुज मूल।
अति प्रवीन मनमें समुझि,ढाँपति नील दुकूल ॥२६॥
आतुर पिय अनुराग बस, कहि न सकत कछु बात।
फिरि फिरि पाइनि में परत,मृदु मुख हाहा खात ॥२७॥
अति सनेह के रंग भरी, रहि न सकी अकुलाइ।
लये लाइ उरजन तबहिं, अधर सुधारस प्याइ ॥२८॥
कहा कहौं या प्रेम की, बात कही नहिं जाइ।
प्यारी मानौं पियहि लै, राखे प्यार सौं छाइ ॥२९॥
देखि प्रिया को प्रेम पिय, मुख तन रहे निहारि।
नैंन सजल अति बिवस ह्वै,रहे प्राँन वपु हारि ॥३०॥
वृन्दाबन में सिंधु द्वै, उमड़े रहत अपार।
प्रेम मदन रस सौं भरे, रंगत रंग सिंगार ॥३१॥
मध्य पुलिन सेज्या बनी, सुन्दर सुभग सुढार।
बिलसत स्यामा स्याम तहां,सोभा निधि सुकुँवार॥३२॥
प्रेम नेम रति रंग सुख, दिनहि परस्पर होत।
पल पल नव नव दसा फिरै,सहजहि ओत प्रोत ॥३३॥
मदन लहरि के उठतहीं, बाढ़त सुरत बिहार।
प्रेम लहरि में परतही, रहत न देह सँभार ॥३४॥
अद्भुत जुगल किशोर रस, छिन छिन औरै औेर।
प्रेम मगन बिलसत दोऊ, रसिकनि मनि सिरमौर ॥३५॥

रंगम संगम सागरनि, बढ़्यौ रुचि कौ तोइ।
या रस में ललितादिकनि, राखे नैन समोइ ॥३६॥
सखियनि को सुख कहा कहौं, मेरी मति इती नाँहि।
यह रस उनकी कृपा तें, जो रहै ध्रुव मनमाँहि ॥३७॥
भाग पाइ ठहराइ जौ, यह रस पारौ प्रेम।
ताके उर झलकत रहैं, गौर नील मनि हेम ॥३८॥
मेरी मति तौ कौन है, यह रस परस्यौ जाइ।
एक लाड़िली लाल की, सक्तिहि लेत बनाइ ॥३९॥
दोहा रंग बिनोद के, रचि कीने चालीस।
सुनै गुनैं हित सहति ध्रुव, तेहि पद रज धरि सीस ॥४०॥

॥ इति श्री रङ्गबिनोद लीला संपूर्ण की जै जै श्री हित हरिवंश ॥२१॥

॥ अथ आनन्द दसाबिनोद प्रारम्भ ॥

॥ दोहा ॥

प्रथमहि श्रीगुरु कृपा तें, नित्य बिहार सुरंग।
वरनौं कछु इक जथामति, दंपति केलि अनंग ॥१॥
नाइका तीन प्रकार की, वरनी कोक कलानि।
प्रिया चरन उर में धरैं, ठाड़ी जोरैं पानि ॥२॥
नौढा मध्या अति चतुर, प्रौढ़ा परम प्रवीन।
कुँवरि चरन नखचंद्रिकनि, सेवत ज्यौं जल मीन ॥३॥
एकै वय क्रम नाहिं कछु, सहज अलौकिक रीति।
विलसत विविधि विनोद रति, उपजावत निज प्रीति ॥४॥
अपनी अपनी समै सब, रुचिलै करैं अनुसार।
फिरत रहैं छिन छिन नई, आनंद दसा बिहार ॥ ५ ॥

कहा कहौं छबि माधुरी, छिन छिन चाह नवीन ।
अद्भुत सुख मै मधुर मृदु, प्रेम मदन रस लीन ॥ ६ ॥
पल पल औरै और विधि, उपजत नाना रंग ।
सब अंगनि कौ देत सुख, यह कौतुक बिन अंग ॥ ७ ॥
प्रेम सिंधु उमड़े रहैं, कबहूँ घटत जु नाँहि ।
तेहि सुख कौ सुख कहा कहौं, जो उपजत दुहुँ माँहि ॥ ८ ॥
प्रथमहि नौढा की दसा, रुचि लै प्रगटी आइ ।
नख सिख अम्बर लाज कौ, मानौ लयौ उढ़ाइ ॥ ९ ॥
नमित ग्रींव छबिसींव रही, अंग छुवन नहिं देत ।
आतुर पिय अनुराग बस, मृदु भुज भरि भरि लेत ॥१०॥
चाहत उरजनि छुयौ जब, उठत नवल कर काँपि ।
समुझि लाड़िली जोर भुज, कर कमलनि रही ढाँपि ॥११॥
परम चतुर चंचल सहज, अंचल में दोऊ नैंन ।
रोंम रोंम पिय के बढ़्यौ, निरखि प्रेम रस मैंन ॥१२॥
भये अधीर आधीन अति, कहि न सकत कछु बात ।
फिरि फिरि पाइनि में परत, मृदु मख हाहा खात ॥१३॥
यह गति देखत पीय की, चितई कछु मुसिकाइ ।
करुना करि चूँवत मुखहि, अधर सुधारस प्याइ ॥१४॥
लटकि लाल उरसौं लगी, उपजे अगनित भाइ ।
बचन रचन सुख कहा कहौं, प्रीतम रहे लुभाइ ॥१५॥
हाव भाव में अति चतुर, रति विलास रस रासि ।
चंचल नैंननि चितवनी, करत मंद मृदु हाँसि ॥१६॥
राखैं लै अति प्यार सौं, उरजनि मधि भुज मूल ।
रुचि प्रवाह में परे दोऊ, तजिकैं लाज दुकूल ॥१७॥

प्रेम मदन रस रंग करि, भरे रहत बिबि हीय ।
लपटे ऐसी भाँति सौं, द्वै तन मन इक कीय ॥१८॥
अंग अंग मन मन मिले, प्रेम मदन रससार ।
ऐसे रंग बिहार पै, ध्रुव कीनौं बलिहार ॥१९॥
बिवस लाल सुख रंग में, रही न देह सँभार ।
प्रगट भई प्रौढा दशा, जाके प्रेम अपार ॥२०॥
लये अंक भरि प्यार सौं, उरजन सौं रही लाइ ।
सावधान कीनै जबै, नासा पुट चटकाइ ॥२१॥
परिरंभन चुंबन अधिक, आलिंगन बहु रीति ।
रति बिपरित बिलसत बिविधि, लये मीत रस जीति ।२२।
बंक कटाक्षिनि हरत मन, बिच बिच मृदु मुसिकाति ।
पियके उर पर लसत मनौ, छबि दामिनि झलकाति ।२३।
श्रम जलकन मुख गौर पर, अंजन लसत सुदेश ।
कहा कहौं छबि सहज की, खुलि रहे सगबगे केश ॥२४॥
पीक कपोलनि फबि रही, कहुं कहुं अंजन लीक ।
मनु अनुराग सिंगार मिलि, चित्र रचे रति नीक ॥२५॥
जेती कोक कला कही, अद्भुत प्रेम अनंग ।
छिन छिन औरै और बिधि उपजत अंगनि अंग ॥२६॥
प्रेम चाह रस सिंधु में, मगन रहत दिन रैन ।
उरसौं उर अधरनि अधर, जुरे नैंन सौं नैंन ॥२७॥
रस समुद्र गहरे परे, त्रिपित होत तऊ नाहिं ।
नैंन मीन ललितादिकनि, तिरति फिरति तेहि माँहि ।२८।
न्यारी न्यारी दशा कही, एक स्वाद हित जाँनि ।
जैसे एकै बात के, कीने बिजन बाँनि ॥२९॥

रति विलास रस सींव करैं, मदन बिनोद बहु भाँति ।
आतुरता पिय दृगनि की, निरखि कुँवरि मुसिकाँति ॥३०॥
निरखि निरखि ऐसे सुखहि, सखी सबै बलिजात ।
तिनहूँ तैं फूली अधिक, आनंद उर न समात ॥३१॥
सहजहिं शील सुभाव मृदु, रहैं प्रसन्न सब काल ।
एक लाल सुख स्वाद हित, करैं बिलास नव बाल ॥३२॥
प्यारी भौंहनि चिते रहे, परम रसिक सिर मौर ।
चलत भाँवती रुचि लिये, रुचत नहीं कछु और ॥३३॥
रुचि रुचि रसके रचे रुचि, मानों प्यारी पीय ।
सहज प्रेम के रंग रंगे, द्वै तन मन इक जीय ॥३४॥
देवे कौं राख्यौ न कछु, अति उदार सुकुँवारि ।
अधर सुधा प्यावत पियहि, मुख छबि रही निहारि ॥३५॥
अति प्रवीन सब अंग में, जानत बहुत लड़ाइ ।
सुख समुद्र में लाड़िली, लिये जनु लाल न्हवाइ ॥३६॥
रुचि फुलवारी फूलि रही, प्रीतम के उर ऐन ।
सींचत प्यारी प्यार जल, चितवनि मुसिकनि सैन॥३७॥
अलक लड़ी पिय पर लटकि, प्यार सौं रही भुज डारि ।
याते चित्र से ह्वै रहे, जिनि भुज लेहि उतारि ॥३८॥
अंग अंग छबि माधुरी, निरखत पिय न अघाइ ।
देखि लाल के लालचहि, लालच रही ललचाइ ॥३९॥
कहा कहौं या प्रेम की, पियके गति नहिं आँन ।
एक लाड़िली संगही, जिनके जीवन प्राँन ॥४०॥

॥ कवित्त ॥

अलबेली सुकुँवारी नैननि के आगें रहै, जव लगि प्रीतम

प्रीतम के प्राँन रहैं तन में। यह जिय जान प्यारी रंचको न होत न्यारी, तिनही के प्रेम रंग रंगि रही मन में ॥ परम प्रवीन गोरी हाव भाव में किशोरी, नये नये छबिके तरंग उठैं छिन में। हित ध्रुव प्रीतम के नैन मीन रस लीन, खेलबौ करत दिन प्रति रूप बन में ॥ ४१ ॥

दोहा—स्थूल मदन रस कछु कह्यौ, अब सुनि सूक्षम रूप।
जहां बिराजत एक रस, रहत हैं प्रेम सरूप ॥४२॥
भीने दोऊ आसक्त रस, तन मन रहे अरुझाइ।
एक प्यार ही दुहुँनि पर, रह्यौ सहज ही छाइ ॥४३॥

॥ कबित्त ॥

प्यारही की कुञ्ज और प्यारही की सेज रची, प्यार ही सौं प्यारेलाल प्यारी बात करहीं। प्यारही की चितवनि मुसिकनि प्यारही की, प्यारही सौं प्यारी जू कौं प्यारौ अंक भरहीं ॥ प्यार सौं लटकि रहे प्यारही सौं मुख चहैं, प्यारही सौं प्यारो प्रिया अंक भुज धरहीं। हित ध्रुव प्यार भरी प्यारी सखी देखैं खरी, प्यारै प्यार रह्यौ छाइ प्यार रस ढ़रहीं ॥४४॥

दोहा—चितवनि मुसिकनि सौं रंगे, प्रेम रंग रस सार।
छके रहत मद मत्त गति, आनंद नेह सिंगार ॥४५॥
दरसत परसत उरज उर, छुवनि कचनि भुज मूलि।
पहिरैं पट दोऊ प्रेम के, बिसरे नेम दुकूल ॥४६॥
बूड़्यौ मन रस प्रेम में, धीरज धरि सकैं नाँहि।
नैंन कमल हरुवे हुते, तिरत रूप जल माँहि ॥४७॥
फूल सुरंग अनुराग के, उर उर में रहे फूलि।
मनहु भँवर मन दुहुनि के, छबि सुगंध रहे भूलि ॥४८॥

जीवनि मुसिकनि चितैवौ,अधर सुधा रस स्वाँस ।
लेत मधुप मन पिय मनौ, कोमल कमल सुवास ॥४९॥
पहिरैं दोऊ अति फूल सौं, फूल बिलास कौ हार ।
केलिहुँ तहाँ भारी लगत, ऐसे दोऊ सुकुँवार ॥५०॥

॥ कबित्त ॥

माधुरी की कुञ्ज ताके मोदकी लै सेज रची, तेहि पर राजैं अलबेले सुकुँवाररी । रूप तेज मोद के जुगल तन जग मगै, हाव भाव चातुरी के भूषन सुढाररी । नेह नीर नैंननि की सैंननि में रहे भींजि, कौंन रङ्ग बाढ्यौ जहां वोलिबोऊ भाररी । अतिहीं आसक्त सखी रही मोहि जोहि, हित ध्रुव प्राँननि कौ यहै है अहाररी ॥ ५१ ॥

दोहा—रसही की मूरति दोऊ, रसिक लाड़िली लाल ।
रस ही सौं चितवत रहैं, रस भरे नैंन बिशाल ॥५२॥
पिय परसत भुज मूल करि, और उरज हिय हार ।
बूड़ि जात मन रूप में, रहत न देह सँभार ॥५३॥
प्रेम नेम की दशा जिती, उपजत आनहि आन ।
रस निधान बिलसत रहैं, सुख कौ नाँहि प्रमाँन ॥५४॥
और न कछु सुहाइ मन, यह जाँचत निसि भोर ।
या सुख धन सौं लगे रहौ, ध्रुव लोइन दिन मोर ॥५५॥
यह सुख निरखत सखिन के, आनन्द बढ़्यौ न थोर ।
हेम लता फूली मनो, झूमि रही चहूँ ओर ॥५६॥
छप्पन दोहा कहे ध्रुव, आनंद दशा बिनोद ।
रूप माधुरी रंग रंगे, पगे प्रेम रस मोद ॥५७॥

इति श्री आनन्द दसा विनोद लीला संपूर्ण की जै जै श्री हित हरिवंश ॥ ३२ ॥

॥ अथ रहस्य लता लीला प्रारंभ ॥

दोहा—जौ कह्यौ श्री हरिबंश रस, बिरलौ समुझन हार ।
एक दोइ जो पाईयै, खोजत सब संसार ॥१॥
नवकिशोर सुकुँवार तन, मृदु भुज मेले अंस ।
जोरी सनी सनेह रस, प्रगट करी हरिबंश ॥२॥
नव दूलह नव दुलहिनी, एक प्रान द्वै देह ।
बृन्दाबन बरषत रहैं, नवल नेह कौ मेह ॥२॥
कहा कहौं पानिप मुखनि की,छवहि नाहि कहुँ ओर ।
राजत ऐसी भाँति मनौ, द्वै ससि चतुर चकोर ॥३॥
सीस फूल सिखि चंद्रिका, छबि की उठत झकोर ।
मानौ छबि सिंगार ढिग, निर्तत आनंद मोर ॥४॥
विवि भालनि विवि बरन की, बेंदी दई अनूप ।
मनु अनुराग सिंगार की, जोरी बनी सरूप ॥५॥
सोरठा—लोचन परम रसाल, कजरारे सुठि सोहने ।
चंचल नैंन बिशाल, अनियारे मन मोहने ॥६॥

॥ अरिल्ल ॥

देखत आप में रूप न कबहूँ अघात हैं ।
दोऊ एक रस रीति न प्रेम समात हैं ॥
पल पल में रुचि बढ़ै सखी मुसिकात हैं ।
हरि हाँ मुख रहे जोरि तऊ ललचात हैं ॥७॥
दोहा—झलकनि वेसरि दुहुँनि की, उपमा कही न जाइ ।
स्वाँस पवन मुक्तनि डुलनि,सो छबि रही उर छाइ॥८॥

कहा कहौं छबि नासकनि,शुक तिल फूलनि डारि ।
अधर सुरंग बंधूक तें, बिंब पँवारनि वारि ॥६॥
चिबुक मध्य बनो सहजही बिंदुकन अतिहि अनूप ।
पिय सावल कौ मन मनौ, परयौ रूप के कूप ॥१०॥
वंक चितवनी रस भरी, बेधे प्रीतम प्राँन ।
जदपि सूर प्रवीन हैं, भूले सबै सयाँन ॥११॥
रूप छटा छबि की छटा, उमड़ी रहत अनेक ।
कैसें सकै सँभारि सखि, पिय मन चातिक एक ॥१२॥
छुटे वार सोंधे सने, श्रम जलकन मुख जोति ।
मानौं सींव सिंगार की, बनी कंठ पर पोति ॥१३॥
जलज हार हीरावली, रतनावली सुरंग ।
अनुराग सरोवर में मनौ, उठत हैं रूप तरंग ॥१४॥
पानिप झलक कपोल पर, अलक रही सुठि सोहि ।
रसिक लाल पाइनि परत, छिन छिन यह छवि जोह ॥१५॥
कहि न सकत अंगन प्रभा, मेरी मति अति हीन ।
चंद्र सीमंतक दामिनी, जंबू नद रद कीन ॥१६॥
मोतिन की लर बीच बीच, कराठ गुराई रेष ।
निरखि फब्यौ मन मोद फंद, बिसरयौ मोहन वेष ॥१७॥
कुच कमलनि की छवि निरखि,रहे लाल ललचाइ ।
अति बिशाल अँखियनि निरखि,चितई मुरि मुसिकाइ॥१८॥
अति सुदेश अंगिया बनी,कसनि कसी छवि देत ।
भुज मूलनि की गोरता, पिय प्राँननि हरि लेत ॥
सोभा की सरिता उदर, नाभि भँवर रस ऐन ।
परे तहाँ निकसत नहीं, प्रीतम के मन नैन ॥

बसन सहाने अति सुरंग, चुनि पहिराये बाँनि ।
महिदी परम सुरंग सौं, रचे चरन मृदु पाँनि ॥२१॥
प्रेम बेलि दुहुँ में बढ़ी, फूली फूल बिलास ।
निसि दिन पहिरे रहत उर, दंपति हार हुलास ॥२२॥
पिय नैंननि में प्रिया बसै, प्रिया नैंननि में पीय ।
हिय सौं हिय लागे रहैं, मिलि रहे जिय सौं जीय ॥२३॥
दरसत परसत हँसतही, बीते कलप अनेक ।
कबहुँ न आई पिय हियें, मिलि बैठे घरी एक ॥२४॥
अति उदार सुकुँवार दोऊ, रसिक सूर रस माँहि ।
छिन छिन बाढ़त चौंप नई, नेक सुरत मन नाँहि ॥२५॥
रसिक रंगीले रंग भरे, अतिही रसीले आहि ।
अद्भुत छबि की माधुरी, जीवत हैं दोऊ चाहि ॥२६॥
बदन किशोरी चंद मनो, भये किशोर चकोर ।
पल न परत निरखत रहैं, नवल नैंननि की कोर ॥२७॥
वंक भृकुटि अति सोहनी, बिच बिच मुसिकनि मंद ।
कैसें निकसै परयौ मन, रचे जहां इते फंद ॥२८॥
देखि दसा पिय लाल की, रही वाम तन घूँमि ।
कोमल हिय अति हेत सौं, लागी पिय हिय झूँमि ।२९।
सोरठा—अद्भुत प्रेम बिहार, रह्यौ प्यार ध्रुव छाइ के ।
तैसेई दोऊ सुकुँवार, और सखीनु गति एकही ॥३०॥
दोहा—पिय कौ मन प्यारी प्रिया, प्यारी को मन लाल ।
पहिरे पट तन तन बरन, चलत एकही चाल ॥३१॥
शील सुभाव सनेह गुन, वय अरु रूप समान ।
रंगे परस्पर एक रंग, अति प्रवीन रस जान ॥३२॥

छिन छिन बाढ़त नेह नव, पल पल रूप तरंग ।
इक रस प्रेम छके रहैं, भीने रंग अनंग ॥३३॥
मोहे मोहन मैंन रंग, चितवनि भौंहनि भाय ।
कबहूँ विवस चेतत कबहूँ, प्यारी प्यार उपाय ॥३४॥
खेलत रहस्य निकुञ्ज में, अतिहि रहसि निज केलि ।
लपटी प्रेम तमाल सौं, मनौ रूप की बेलि ॥३५॥
नूपुर भूषन मनि झलक, किंकिनि शब्द अपार ।
सखियनि हियौ सिरात सुनि, झनक २ झनकार ॥३६॥
कबहूँ बात मुसिकात बिच, फिरि फिरि फिरि लपटात ।
ऐसे रंग बिहार में, तदपि न सखी अघात ॥३७॥
रीति दुहुँन की एक ही, हारत नाहिन कोइ ।
जो छिन आवत है सखी, चौंप चौगुनी होइ ॥३८॥
लागे आनन्द बेलि सौं, चितवनि मुसिकनि फूल ।
लाज बसन तजिकै मनौ, पहिरैं फूल दुकूल ॥३९॥
नैंन कटाक्षनि की चलनि, चितै रहे मुसिकाइ ।
तबहिं कुँवरि दै अधर रस, लीने उर सौं लाइ ॥४०॥
पिय के औषद यहै है, अधर सुधारस पाँन ।
एक लाड़िली सहज हीं, जिनके जीवनि प्राँन ॥४१॥
अंगनि की छबि चितैवौ, यह जीवनि पिय जीय ।
और भुजनि भरि हेत सौं, रहत लाइ जब हीय ॥४२॥
रसपति रतिपति भूलि रहे, देखत अद्भुत रीति ।
घटत न कबहूँ बढ़त रहे, छिन छिन नव नव प्रीति ॥४३॥
हँसि चितवति जब लाड़िली, डगमगात सुकुँवार ।
अति प्रवीन रस नागरी, थांमि लेत तेहि बार ॥४४॥

बिवस होत जब दोऊ प्रिय, माते प्रेम अनंग।
रहत सहेली सहचरी, सावधान तिन संग ॥४५॥
अधर अधर हियसौं हियौ, उरजनि सौं पिय पाँन।
अंगनि छ्वावत चेत भये, समुझत सखी सुजाँन ॥४६॥
कबहूँ प्रिया पट पीय के, पिय प्यारी के बास।
पहिरें दोऊ आनंद में, निर्त्तत रास बिलास ॥४७॥
हाव भाव निर्त्तत मनौ, चितवनि सुलप सुदेस।
उरप तिरप झटकनि भुजनि, खुले सगबगे केस ॥४८॥
अधरनि की जुरी मंडली, करनि फिरनि सुख मूल।
नैंन सैंन दे सीस रस, मुसिकनि बरषत फूल ॥४९॥
राग बचन धुनि भूषननि, बाजे बजत अनंग।
सखी मृगी रही मोहि कै, जिनकें प्रेम अभंग ॥५०॥
निसि दिन है अवलंब यह, अद्भुत जुगल बिहार।
ललितादिक निज सहचरी, छिन छिन करत सिंगार ॥५१॥
यह रस तौ कछु सुगम नहि, तन मन ते अति दूरि।
जानत तेई रसिक जन, जिनके जीवनि मूरि ॥५२॥
ब्रह्मादिक मुकटनि सहित, जिनकौं घँसत है सीस।
प्रिया चरन जावक रचत, तेई वृंदाबन ईस ॥५३॥
यह बिलास जौ चिंतवत, चिंता मन मिटि जांहि।
आनंद कौ दीपक दिपै, निसि दिन तेहि उर मांहि ॥५४॥
यह रस परस्यो नाहि जिन, तिनहि न नेंक जताइ।
जैसें धन कौ धनी ध्रुव, राखत दूरि दुराइ ॥५५॥
सहज अलौकिक प्रेम वर, दंपति रहे लुभाइ।
लौकिक रसना कै कहौ, कैसे बरन्यौ जाइ ॥५६॥

वृंदाबन वर कल्पतरु, सर्वोपरि ध्रुव आहि।
मनहूँ के जो चितवत, देत तबहिं फल ताहि ॥५७॥
दोहा रहस्य लतानि के, अष्ट ऊपर पंचास।
सुनत सुनावत बढ़त उर, हित ध्रुव प्रेम बिलास ॥५८॥

॥ कुंडलिया ॥

बार बार तौ बनत नहिं, यह संयोग अनूप।
मानुष तन वृंदाबिपिन, रसिकनि संग विविरूप ॥
रसिकनि संग विवि रूप, भजन सर्वोपर आही।
मनदै ध्रुव यह रंग, लेहु पल पल अवगाही ॥
जो छिन जात सौ फिरत नहीं, करहु उपाइ अपार।
सकल सयानप छाड़ि भजि, दुर्ल्लभ है यह बार ॥५६॥

॥ इति श्री रहस्य लता लीला संपूर्ण की जै जै श्री हितहरिवंश ॥ ३३ ॥

॥ अथ आनंद लता लीला प्रारंभ ॥

दोहा—आनन्द को रंग नित जहाँ, सोच न दुचितई लेस।
इकछत विलसत राज रस, वृंदाविपिन नरेस ॥१॥
खेलत फूलनि कुञ्ज में, बाढ़्यो रंग आनन्द।
आनन्द मै सब सहचरी, आनन्द के विवि चन्द ॥२॥
बास रंगीली लाड़िली, फूल रंगीलौ पीय।
नेह देह नागर नवल, नागरि आनन्द हीय ॥३॥
आनन्द द्रुम आनन्द लता, फूले आनन्द फूल।
आनन्द रस जमुना बहे, मनिमय आनन्द कूल ॥४॥
सर्वोपरि आनन्द निधि, वृंदावन सुख पुञ्ज।
द्रुम द्रुम बोलत खग मधुर, कुंज कुंज अलि गुञ्ज ॥५॥

जहाँ तहाँ फूले कमल बर, और फूल चहूँ ओर ।
फूले फूले फिरत तहाँ, रस मै मधुपनि दोर ॥६॥
राजत हैं दोऊ रंग भरे, रूप सींव सुकुँवार ।
तन मन अरुझे प्रेम रंग, आनंद रंग सिंगार ॥७॥
मदन हुलास बिलास रंग, आनन्द रस को कंद ।
कहा कहौं चहूँ ओर सखि, लुटत फिरत आनन्द ॥८॥
नव किशोरता माधुरी, छबि विद्या सब आनि ।
प्रिया चरन सेवत रहैं, ठाढ़ी जोरे पाँनि ॥९॥
अधर जुरनि उर उर घुरनि, मुरनि अंग कोऊ भाँति ।
सो छबि अद्भुत सहज की, कैसे बरनी जाति ॥१०॥
छुवनि कुचनि मन मन रुचनि, प्रीतमकर धरैंआंनि ।
कंचन के श्री फल मनौ, ढँके कमल दल वांनि ॥११॥
उरज कलस कुंदन बने, मानौ मंगल साज ।
कुँवरि रूप के नगर कौ, पिय पायौ सुख राज ॥१२॥
कजरारे चंचल नैंन, निरखत अति सुख होइ ।
मानौ छबि के कंज पर, खेलत खंजन दोइ ॥१३॥
नैंन जुरनि भौंहनि मुरनि, संधि छबीली ठौर ।
कैसे निकसे परयौ जहँ, चित्त रसिक सिर मौर ॥१४॥
प्यारी तन प्यारौ सबै, करत नैंन मग पाँन ।
अधर नाभि भुज मूल कुच, तहां बसत पिय प्राँन ॥१५॥
ललित लड़ैती कुँवरि की, चलनि छबीली भाँति ।
विवस लाल पाछे फिरत, अवलोकत तन काँति ॥१६॥
जहं जहं मनि मय धरनि पर, चरन धरति सुकुँवारि।
तहं तहं पिय दृग अंचलनि, पहिलहिं धरहिं सँवारि ॥१७॥

सो०—श्री बृंदाबन मौंहि, आनंद सिंधु तरंग उठैं।
घन अनुराग चुचाँहि, फूले छबि के फूल द्वै ॥१८॥

॥ सवैया ॥

रूप को फूल रसीली बिहारनि मैंन को फूल रसीलौ बिहारी।
फूल रहे अनुराग के बाग में राग को रंग बढ्यौ रुचिकारी॥
भावै यहै पियके मन को सुख खेलैं हँसैं रसमें सुकुँवारी।
सखी चहूँओर बिलोकत हैं ध्रुव आनंदवारि किधौं फुलवारी।१६।

दोहा—भुजनि भरत मन मन हरत, करत रंग रस केलि।
आनन्द स्याम तमाल सौं, लपटी आनन्द बेलि॥२०॥
नखसिख भूषन झलकि रहे, प्रति विंबित अंग अंग।
झल मलात अगनित मनो, दर्पण दीप अनंग॥२१॥
अद्भुत रङ्ग अनङ्ग रस, बिच बिच प्रेम तरङ्ग।
इहि कौतुक न अघात कोऊ, जदिप मिले अंग अंग॥२२॥
श्रम जलकन मुख गोर पर, छुटे बार अरु हार।
लपटि परे पट सहजहीं, सोभा बढ़ी अपार॥२३॥
यह सुख निरखत सहचरी, भरी रङ्ग दुहुँ ओर।
अँखियां तो दुचिती भई, परी रूप झकझोर॥२४॥
नैंन श्रमित मुद्रित मनौं, प्रीतम रहे छवि जोहि।
मानौं कञ्चन कमल में, छवि के अलि रहे सोहि॥२५॥
निरखत छबि मुख माधुरी, बाढ्यौ प्रेम अनङ्ग।
जैसे सिंधु तरंग उठैं, बिधु तन अतिहिं उतंग॥२६॥
तबहिं लाड़िली लाल तन, हँसि चितवति मुख ओर।
मानौ प्यावत प्यार सौं, प्रेम रसा सब घोर॥२७॥
निरखत मोहन रूप तन, छिन छिन होत अचेत।

प्याइ अधर रस माधुरी, करवावत हैं चेत ॥२८॥
सोरठा—रुचि कौ यहै अहार, प्यारी की उनहारि सखि ।
जीवत तेहिं अधार, प्रान प्रिया हिरदैं वसैं ॥२९॥
दोहा—परम रसिक नागर नवल, और न कछू सुहात ।
कै भावै छबि देखिवौ, कै सुन्यौ चाहत बात ॥३०॥
पाँनिप कौ पानी पियत, त्रिपित होत नहि नैंन ।
उमड्यौ रहत है एक रस, प्रेम रंग उर ऐंन ॥३१॥
जब जब मुख देखत रहैं, कज्जल नैंननि कोर ।
पिय लोइनि निर्त्तत मनौं, आनन्द के द्वै मोर ॥३२॥
मेघ महल परदा फुही, राजत कुंज निकुंज ।
बैठे नेह की सेज पर, करत केलि सुख पुंज ॥३३॥
अतिहिं लालची लाल पिय, निरखत हूँ न अघात ।
प्रिया रूप तन बिपिन मैं, रहे नैंन उरझात ॥३४॥
फूलनि देखत फिरत हैं, तदाकार इहि भाइ ।
प्रिया चरन पावत जहां, तहँ तहँ रहत लुभाइ ॥३५॥
महा भाव गति अति सरस, उपजत नव नव भाव ।
मोहन छबि निरख्यौ करत बढ्यौ प्रेम कौ चाव ॥३६॥
राजत अंक में लाड़िली, प्रीतम जानत नाँहिं ।
बिलपत रुदन बढ्यौ जहां, महा भाव उर माँहिं ॥३७॥
अति प्रवीन सब सहचरी, जानत रसकी रीति ।
अंगनि व्छावनि करनि पिय, होत न तऊ प्रतीति ॥३८॥
हँसि लागी जब कंठ सौं, लये जगाइ अनुराग ।
मानौ दीनौं रीझिकै, आनंद हार सुहाग ॥३९॥
एक समै भ्रम प्रेम कौ, बढ्यौ दुहुनि के हीय ।

पीय कहत हौं ही प्रिया, प्रिया कहत हौं पीय ॥४०॥
अटपटी चाल है प्रेम की, को समुझै यह बात।
रंगे परस्पर एक रंग, अदल बदल ह्वै जात ॥४१॥
उपजत अंगनि अंग रंग, छिन छिन औरै और।
अति प्रवीन बिलसत रहैं, परम रसिक सिर मौर ॥४२॥
वृन्दाबन आनंद की, वारि सुदृढ़ ध्रुव आहि।
माया काल प्रपंच की, पवन न परसत ताहि ॥४३॥
दुखः निसानी नेकु नहिं, इक छत सुख कौ राज।
मत्त भये खेलत दोऊ, सखियनि संग समाज ॥४४॥
छवि विताँन आनन्द कौ, वृन्दाबन रह्यौ छाइ।
सोच धूप की ताप तहां, कबहूँ न परसत आइ ॥४५॥
वृन्दाबन छबि झलक की, उपमा नहि कछु आँन।
जेहिं आगे ससि भाँन दोऊ, होत है तिमिर समान ॥४६॥
भूली छबि श्रीमोहनी, सोहनी रहि गई पाँनि।
झनक भनक श्रवननि परी, नैंननि मृदुमुसुकाँनि ॥४७॥
भजन आहि बहु भांति के, नहिं आवत उर ऐंन।
जुगल रूप वन बिपिन तन, तहां उरझ्यौ ध्रुव नैंन ॥४८॥
दोहा तीस उन्नीस कहे, आनंद लता अनंग।
सुनत हिये ध्रुव प्रेम कौ, फूलै कमल सुरंग ॥४९॥

इति श्री आनन्दलता लीला संपूर्ण की जै जै श्री हित हरिवंश ॥ ३४ ॥

॥ अथ अनुराग लता लीला प्रारम्भ ॥

प्रेम बीज उपजे मनमाही ❀ तब सब विषै वासना जाही ॥१॥
जग तें भयौ फिरै बैरागी ❀ वृन्दावन रस में अनुरागी ॥२॥

सो अनुराग परम सुखदाई ❀ तेहि बिन ताहि न और सुहाई ३
नवल प्रेम रस अटक्यो जोई ❀ धनि बैराग ताहि को होई ४
निस्प्रेही होइ देह तें न्यारो ❀ जहां मन लाग्यो सोई प्यारो ५
ताही के रस घूँमत डोलै ❀ भरे नैंन जल मुख नहि बोलै ६
दोहा—तीन लोक को राज सुख, देखो तुला चढ़ाइ ।
निमिष प्रेम सुख गरुव अति, तेहि आगे घटिजाइ ॥७॥
याही रस जाको मन भीनो ❀ देह धरे को तेहि फल लीनो ८
रहे भूलि विधि रूप मंझारी ❀ छिन छिन चाह बढ़ै अतिभारी९
या रस को साधन नहिं कोई ❀ एक कृपा तें जो कछु होई १०
कहो कृपा उपजे किहि भाँती ❀ रसिकनिसंगफिरै दिनराती११
भक्त कृपा संग एकै मानो ❀ बृछबीज फल भिन्न न जानो१२
बहुत कहत विस्तारहि करई ❀ प्रेम कथा में अंतर परई १३
मान अपमान न मनमें आनै ❀ चित्तजुगल छबिरसमें सानैं १४
रुदत हँसत नाचत कछु गावै ❀ प्रेममगन दोऊलाल लड़ावै १५
इहि विधि को जब ह्वै बैरागी ❀ तेहिसमनाहिकोऊबड़भागी १६
दोहा—बिन नैंननि लै मुकुर अरु, बिना लवन रस साग ।
बिन पिय तिय सिंगार सजि, बिना प्रेम बैराग ॥१७॥
ऐसी विधि कब फिरि है बनमें ❀ तनअतिछीन प्रेमरंगमनमें १८
जहँ लगि स्वादकहे जगमाहीं ❀ सहजहि ते फीके ह्वै जाहीं १९
जुगल रूप उर अंतर सचई ❀ निसिदिनएक प्रेमरंग रचई २०
बिना नेम जहां प्रेम बिराजै ❀ सो निहकाम एकरस गाजै २१
राई सम जो नेम मिलाई ❀ कांजी दूध प्रेम ह्वै जाई २२
गोपिनु के सम भक्त न आँही ❀ उद्धवविधि तिनकी रजचाही२३
तिनमन कछू सकामता आई ❀ तातें बिच अंतर पर्यो माई २४

दोहा–दुखकौ मूल सकामता, सुखकौ मूल निहकाम।
बिरह बियोग न तहां कछु, रस मैं ध्रुव सुख धाम ॥२५॥

अब सोइ ठांव कहौं सुनि लीजे ❀ तहां सुप्रेम एक रस पीजे २६
वृन्दाबिपिन एक रस ऐना ❀ तहां सेवत मैंननिकी सैंना २७
नवल लता द्रुम नवल सुहाये ❀ सुमन सुरंग सुवासनि छाये २८
तामे बिहरत नवल बिहारी ❀ संग प्रिया प्राँनन तें प्यारी २९
जेहि द्रुम फूल बेलि तन हेरैं ❀ मनो मदन रस सींचत फेरैं ३०
चितवनिमुसिकनिसहजसुहाई ❀ जीवनि यहै दुहुँनि की माई ३१
प्रेम मदन के मद में माते ❀ मनो गयंद अपने रंग राते ३२

दोहा–तेज पुञ्ज रस पुञ्ज दोऊ, रूप पुञ्ज सुकुँवारि।
मंजुल कुञ्ज निकुञ्ज तर, रचि रहे प्रेम विहार ॥३३॥

परे प्रेम एक रस फन्दा ❀ विवि वृन्दाबनचंद स्वछंदा ३४
अतिरस बढ्यौ कह्यौ नहिजाई ❀ देखत देखत कल नहि माई ३५
तिनके प्रेम रंग रस भरी ❀ डोलत संग लगी सहचरी ३६
प्रेम मगन तन नेम बिसारे ❀ सखियनिप्राँनप्राँनदोऊप्यारे ३७
छिन छिन नवल रूप रसरंगा ❀ तहाँ प्रेम कौ राज अभंगा ३८

दोहा–प्रेम रासि दोऊ रसिक वर, बिलसत नित्य विहार।
ललितादिक निज लेत हैं, तेहि रस कौ सुखसार ॥३९॥

नित्य किशोर रूप की रासी ❀ बिलसत प्रेम निकुञ्ज विलासी ४०
ऐसे दोऊ रस में भीनें ❀ चंद चकोर नैंन मन कीनें ४१
एक प्रान द्वै देह विहारी ❀ तिनके बीच प्रेम अधिकारी ४२
सहजहि ताके रस बस प्यारे ❀ एक सुभाइ दुहुँनि मन हारे ४२
तेहि रस कौ सुख अद्भुत आही ❀ ललितादिकदिन लेतहैंताही ४४

दोहा—अनुराग लता लागे सुफल, ललित लाड़िली लाल।
ललितादिक दिन लेत है, तेहि रस सुरस रसाल ॥४५॥
प्रीति की रीति सबनि ते न्यारी ❀ को समुझै बिन लाल बिहारी ४६
तृण सम जहां राखी जु बड़ाई ❀ तेहि रस आप गही सेवकाई ४७
छिन छिन नवसत नवल बनावै ❀ रचि रचि बीरी आप खवावै ४८
चरननि जावक चित्र सुहाये ❀ चतुर चतुरई सौं जु बनाये ४६
ऐसो रूप बिचारत आही ❀ मेरी डीठि लगौ जिन ताही ५०
यातें साँवल सरस सलौना ❀ सुन्दर मुखपर दियौ दिठौंना ५१
पुनि लै मुकर ठाड़े कर जोरे ❀ चितवत नवल प्रिया दृग कोरे ५२
तिनकी प्रभुता देखि भुलानी ❀ चितवत दूरि भई बिलखानी ५३
जो कछु प्रीति लाल की गाई ❀ तातें अधिक कुँवरिकी माई ५४
दोहा—प्रिया प्रेम के सिंधु में, पैरत नवल किशोर।
रहे हारि यातें तहाँ, पावत नहिं कहू ओर ॥
शुक सनकादि न जानत भेवा ❀ जदपि करत बहुतविधि सेवा ५६
वैभवता में सब अरुझानें ❀ नित्य बिहारी नहि पहिचानें ५७
यहरस जो समुझै सो जानें ❀ औरभजन बिधिमननहिआनैं ५८
प्रेम सुभाव जाहि उर आवै ❀ ताहि न बात दूसरी भावै ५६
नवल राज नित रूप नवेला ❀ तेहिं ठाँ राजत प्रेम अकेला ६०
बिना भाग अनुराग न आवै ❀ बिनअनुराग तिनहि क्योंपावै ६१
दोहा—नागर दोऊ अनुराग बस, नवल नेह रंग रात।
अनुरागे तिनके भजन, और न दूजी बात ॥ ६२ ॥
माया भ्रम सब जग जंजाला ❀ जात न जान्यौ दुर्लभकाला ६३
जगत सगाई साँची जाँनी ❀मतिपितुतियसुतसौंअरुझानी ६४
जैसे चित्र पेखना पेखै ❀ जग के सुख सब ऐसे देखै ६५

जेतिक द्योस जिवै जग माँही ❀ ते वितवै वृन्दाबन छाँही ६६
तेई भये जगत ते न्यारे ❀ जिन वृन्दाबन चंद संभारे ६७
परम धन्य तिनही की देही ❀ जिन भजे दंपति परम सनेही ६८
यह अनुराग लता जो गावै ❀ निश्चै सो अनुरागहि पावै ६९

॥ दोहा ॥

अनुरागे जिनके भजन, जुगल किशोर बिहार ।
तिन रसिकनि की चरन रज, लै लै ध्रुव सिरधार ॥७०॥
अनुरागे जिनके भजन, ते तौ पैयत थोर ।
जिनके हीये झूल मलै, रस मय मधुर किशोर ॥७१॥
अनुरागे जिनके भजन, दूजी बात न और ।
तिन रसिकनि की चरनरज, ध्रुव के सिर कौ मौर ॥७२॥
भाग पाइ जु पाईये, ऐसे रसिक रसाल ।
जिनके हिय तें टरत नहि, श्रीराधा बल्लभ लाल ॥७३॥
परम सनेही जुगल बर, जानत प्रीति की रीति ।
मन बचकै ध्रुव जिन भजे, तेई गये जग जीति ॥७४॥

॥ इति श्री अनुराग लता लीला संपूर्ण की जै जै श्री हित हरिवंश ॥३५॥

॥ अथ प्रेम लता लीला प्रारम्भ ॥

प्रथमहि शुभ गुरुपद उर आनौं ❀ बात प्रेम की कछुक बखानौं १
और कृपा रसिकनि की चाहौं ❀ तब या रस कौ सर अवगाहौं २
लाल लाड़िली जो उर आनी ❀ तैसी मोपै जात बखानी ३
घटि बढ़ि अक्षर जो कहूँ होइ ❀ लेहु बनाइ कृपाकरि सोइ ४
रसिक रसिकनी कौ जस जानौं ❀ और कछू जिय जिन उर आनौं ५
कही प्रेम की गति ध्रुव यातें ❀ सुनतहि सरस होत हिय तातें ६

अरु रस रीति पंथ पहिचानै ❀ तब या रस के स्वादहि जानै ७
दोहा—जिन नहिं समुझ्यौ प्रेम रस, तिनसों कौंन अलाप ।
दादुर हूं जल में रहै, जानै मीन मिलाप ॥८॥
खान पान सुख चाहत अपनै ❀ तिनको प्रेम छुवत नहिंसपनै ९
जो या प्रेम हिंडोरे झूलैं ❀ तिनको और सबै सुख भूलैं १०
प्रेम रसासब चाख्यौ जबहीं ❀ औरै रंग चढ़ै ध्रुव तबहीं ११
या रस प्रेम परै मन आई ❀ मीन नीर की गति ह्वै जाई १२
निसि दिन ताहि न कछु सुहाई ❀ प्रीतम के रस रहै समाई १३
जाको है जासौं मन मान्यौ ❀ सो है ताके हाथ बिकान्यौ १४
अरु ताके अंग संग की बातैं ❀ प्यारी लगत सबै तेहि नातैं १५
रुचै सोई जो ताको भावै ❀ ऐसी नेह की रीति कहावै १६
जो रस लाल लड़ैती माँही ❀ ऐसो प्रेम और कहूँ नाही १७
दोहा—बृज देविन के प्रेम की, बंधी धुजा अति दूरि ।
ब्रह्मादिक बांछित रहैं, तिनके पद की धूरि ॥१८॥
तिनहूं को मन तहां न परसै ❀ ललितादिकजेहि ठां छबिदरसै १९
नित्य बिहार अखंडित धारा ❀ एक बैस रस मधुर बिहारा २०
नित्य किशोररूपनिधि सींवाँ ❀ बिलसत सहजमेलिभुज ग्रीवाँ २१
तिन बिच अंतर पल को नाँही ❀ तऊ तृषित प्रीतम मन माहीं २२
अद्भुत सहज रंग सुखदाई ❀ तहां प्रेम की एक दुहाई २३
पिय गज मत्त न अंकुसके बस ❀ परम स्वछंद फिरत अपने रस २४
देखतहीं तिनकी परछाँहीं ❀ मदन कोटिव्याकुल ह्वै जाँहीं २५
ते मोहन बस कीने गोरी ❀ राखे बांधि प्रेम की डोरी २६
छुटत न क्योंहूं ऐसे अटके ❀ प्रान हारि चरननि तर लटके २७
प्रीति की रीति लालही जांनैं ❀ तजिप्रभुताबिनमोलबिकांनैं २८

तैसीय रसिक प्रवीन किशोरी ❀रसनिधि नेहके सिंधु झकोरी २६
पिय कौं राखत नैंननि आगे ❀ हुलसिहुलसि प्रीतम उरलागे३०
अवधि प्रेम की सहजहि प्यारे❀परवस प्रेम दुहुँनि मन हारे ३१
एक रंग रुचि है सब काला ❀ उज्वल प्रेम लाड़िली लाला३२
दोहा–तन मन रूप सुभाव मिलि, ह्वै रहे एकै प्राँन।
जीवनि मुसकनि चितैवो, अधर रसासव पाँन ॥३३॥
वृंदाबन घन राजत कुंजे ❀ बिहरत तहाँ रसिक रस पुंजे३४
एक प्रान विवि देह है दोऊ ❀ तिन समान प्रेमी नहि कोऊ३५
सब पर अधिक जान यह प्रेमा❀ताके बस भये तजि सब नेमा३६
या सुख पर नाहिन सुख कोई❀ जानै सो जो भेदी होई ३७
दोहा–अद्भुत नित्य अभूत रस, लाल लाड़िली प्रेम।
छिन छिन नख मनि चंद्रकनि, सेवत हैं सुख नेम ॥३८॥
प्रेम मई रस मैंन बिनोदा ❀नव नव उपजत है दुहुँ कोदा३६
तेहि बिहार रस मगन बिहारी❀जानतनहिकितद्योसनिसारी४०
जो कोऊ कोटिक भांति बखाँनैं❀बिनस्वादी या रसहिन जांनैं ४१
रहत है दिनहि प्रेम सरसाई ❀ तहाँ मान की नाहि समाई४२
सूछम प्रेम न मनमें आवै ❀ स्थूल रूप सबहीं कौं भावै४३
महा मधुर रस सब ते न्यारौ ❀जिहिंठाँ दुहुनिअपुनपौ हारौ४४
तिनहि देखि आसक्तहू भूली ❀ ह्वै आसक्त सुरस में झूली४५
दोहा–लाल लाड़िली प्रेम तें, सरस सखिनु कौ प्रेम।
अटकी हैं निज प्रीति रस, परसत तिनहि न नेम ॥४६॥
सखियनि के सुख परसुख नाहीं❀आनंद मोद रंगी मन माँहीं४७
रूप रसासव यहै अहारा ❀तन मनकी कछुनाहि सँभारा४८
एकै रस नित भीजी रहहीं ❀ साँझभोररसमुद्दयौनहिकहहीं४६

सो रस करत रहत नित पानैं ❀निसिवासर बीतत नहिं जानैं ५०
या रस सौं जाको मनमान्यौ❀सोइध्रुवरसिकनिप्रानसमान्यौ ५१
दोहा—छिन छिन नवल बिहार में,करत हैं नवल सिंगार।
रुचि तरंग पल पल तहाँ, बाढ़त रहत अपार ॥५२॥
करि सिंगार जबै दोऊ निवरे❀छबिसौं नव निकुञ्जते निकरे ५३
भयोप्रकाशनखमनिद्युति ऐसी ❀कोटि चंद आभा नहि तैसी ५४
तिनके रूप न बरने जाहीं ❀ मोहत मैंन देखि परछाहीं ५५
हित की सींव सहेली सोहैं ❀ चहुं दिसिमनोचकोरी जोहैं ५६
अंगनि की निज सौरभ ताई ❀ जहँ तहँ पूरि रही बनमाई ५७
सो सुवास जो नेकहि पावै ❀प्रेमविवसतन सुधि बिसरावै ५८
परे प्रेम के फंद मंझारी ❀ सर्बसु प्रान रहे तहाँ हारी ५९
तेहि बिन ताहि न और सुहाई❀ बिन देखै हीयौ अकुलाई ६०
सुनत श्रवन भूषन झनकारा ❀खगमृगचकितथकितजलधारा ६१
मिहिंदी रंग पद अंबुज बनै ❀धरतअवनि पर छबिको गनै ६२
लटकि लटकि अलबेली भांति❀लपटिलालउर मृदुमुसिकाति ६३
ऐसी छबि ध्रुव नैंननि माँझ ❀रहो निरंतर भोर और साँझ ६४
प्रेम बेलि वृंदावन फूली ❀पियतमाल अंसनि पर झूली ६५
देखि महा छबि सुधि बुधिभूली❀सबसखियनिकीजीवनमूली ६६
तिनसखियनि की कृपासनाऊँ❀या रस का कनिका जो पाऊँ ६७
दोहा—निसि दिन तो जाचत रहौं, वृंदावन रस रैन।
छिन छिन दंपति छबि छटा, छाइ रहौ ध्रुव नैंन ॥६८॥

॥ इति श्री प्रेम लता लीला संपूर्ण की जै जै श्री हित हरिवंश ॥ ३६ ॥

—❀❀❀—

॥ अथ रसानन्द लीला प्रारम्भ ॥

दोहा—हरिवंश हंस उदित दिनहि,परम रसिक रस रासि ।
उभै प्रेम रस किरन मनो, करी जु जगत प्रकासि ॥१॥

प्रथम चरण हरिवंशजी ध्याऊँ ❀ तातें कछुक प्रेम रस पाऊँ २
प्रेमा रस तबही पहिचानै ❀ श्री हरिवंश नाम गुन गानै ३
नित्य बिहार तबहि तौ जानै ❀ श्रीहरिवंश पदनि उर आनै ४
जो रस श्री हरिवंश जुगायौ ❀ सो रस तौ काहू नहिं पायौ ५
निगम अगमकी कौन चलावै ❀ महा बिष्णु के मननहि आवै ६
या रस को तबही अधिकारी ❀ करहि कृपा श्रीराधा प्यारी ७
कृपा नागरी तबहीं करैं ❀ श्रीहरिवंश सु कर सिर धरैं ८

सो०—भजि रे मन दिन रैन, श्री हरिवंश जु पद कमल ।
देखौ भरि जुग नैंन, तेहि प्रताप तें जुगल छबि ॥९॥

यहउपजीमनअतिअभिलाषा ❀ करहु कृपा जु करौं कछुभाषा १०
मोपै है अबहि मति थोरी ❀ कैसे बरनो यह रस जोरी ११
दीजे मोहि बुद्धि परकासा ❀ यह पुरवौ तुम मेरी आसा १२
रसिक अनन्य चरन रज पाऊँ ❀ सहज केलि नव दंपति गाऊं १३

दोहा—अगम ते अगम अगाधि अति,पहुँचत नहि मन वेद ।
श्री हरिवंश प्रताप बल, पावत सुगम सुभेद ॥१४॥

श्रीवृंदाबनरसअतहिअगाधा ❀ तहाँनित्यकेलिमोहनश्रीराधा १५
वृंदा बिपिन करैं नित केली ❀ पिय मोहन अरु प्रियानवेली १६
सोभित कंचन भूँमि सुहाई ❀ हंससुता छबि कही न जाई १७
मनिनजटितबिविकूलबिराजे ❀ नवमराल नव कुंज सुराजे १८
अति कमनीय बने नव कुञ्जा ❀ मधुकर तहां करत मधुगुञ्जा १९

बिचबिचकनककंजछबिन्यारी❀अतिअनूप झलकत सोभारी २०
बल्लिनु कुसुम बने बहु भाँती ❀बरन बरन सुन्दर इक पाँती २१
बृंदा सकल रची बन संपति❀निरखिनिरखिआनंदमनदंपति २२
फूले सुमन विविधि नव रंगा❀अतिअनुराग होत प्रिय संगा २३
त्रिबिधि पवन तह बहै सुहाई❀शुक कपोत कोकिल कुहकाई २४
दोहा—सहज कुंज अतिही बनी, मधुप करत गुंजार।
सकल सुगंधनि लै रच्यौ, अद्भुत मदन अगार ॥२५॥
सखियनि सेज्या रुचिर बनाई❀विविधि भाँति सौरभ बुरकाई २६
तापर बैठे नवल दंपती❀सखियनि हितसुखसदासंपती २७
अंसनि भुजा परस्पर धारी❀मोहनलाल राधिका प्यारी २८
ईषद हाँस दोऊ मुसिकाँही❀अति अनुराग भरे मनमाँही २९
दोहा—मोहन जू निज पाँनि, प्रिया अंग भूषन सजे।
सुभग मनोहर ठांनि, विविधि कुसुम बेंनी गुही ॥३०॥
सोरी सीस सुरंग सुहाई❀मोतिन मांग रची सुखदाई ३१
वैंनी फूल देखि छबि न्यारी❀मनो मनमें प्रगटी उजियारी ३२
मृगमद तिलक भालपर कीयौ❀मधिबिंदुका कुमकुमकौदीयौ ३३
खुटिला खुभी श्रवन झलकाई❀बने नैंन प्रतिविंवकी झाई ३४
दोहा—नैंन सुरंग अनूप अति, चंचल वंक बिशाल।
रुचिर रेख अंजन बनी, चितवनि चपल रसाल ॥३५॥
वाम कपोल स्याम बिंदु सोहै❀अलप अलक मोहन मनमोहै ३६
चितवनि चंचल परम सुहाई❀खंजन मीन तजी चपलाई ३७
वेसरि झलक अधिकछबिपाई❀मुसिकनि बरषत सुंदरताई ३८
अरुन अधरदसननिकीसोभा❀निरखिनिरखिमोहनमनलोभा ३९
चिवुक मध्य स्यामल बिंदुकनी❀कहि न जात जैसी छवि बनी ४०

कंचुकिकसुंभि विराजतप्यारी❀नील वसन सोभित तनसारी ४१
कुंदन दुलरी कंठ सुहाई❀मनो रूपकी सींव बनाई ४२
तापरझलकत मोतिन माला❀बीचपदिक जगमगतरसाला ४३
भुजनि वलय अंगद सुठिसोहै❀रतन खचित पहुँची मनमोहै ४४
झलकि रही गोरी मृदु अंगुरी❀रंग रंग की सोभित मुंदरी ४५
त्रिबली उदर नाभि हृद जहां❀मीन रहत मोहन मन तहां ४६
कटि राजत रसना रस ऐनी❀झुनकतपियमनकौ सुखदैनी ४७
पाइल नूपुर सी धुनि सोहै❀गति पर गज मराल मनमोहै ४८
चरननि जावक चित्र सुरंगा❀छवि लागी डोलत तेहिसंगा ४९
सुंदर नवल नखनिके आगैं❀अतन रतन विधु फीकेलागैं ५०
दोहा—रूप रासि अति नागरी, भूषन अंग रसाल।
निरखि नैंन मोहन फसे, मनो मीन छबि जाल ॥५१॥
कछुदृगसजलदेखिनिजरूपहि❀पियचितपरयौ प्रेमके कूपहि ५२
निरखिनिरखि सोभा सुंदरवर❀प्रेम विवस लटके सिज्यापर ५३
तव प्रियलै मोहन उर लायौ❀होइदयालअधरन रस प्यायौ ५४
रतिविपरित चुंबन इकसंगा❀करतविविधिनवकेलि अनंगा ५५
नूपुर रव किंकिन रुचिदाई❀उठत तरंग मैन अधिकाई ५६
कोक कला में निपुन बिहारी❀केलि वेलि रति की विस्तारी ५७
रति रण रंग रह्यौ अतिभारी❀वढ़ी चौंप जद्यपि सुकुँवारी ५८
दोहा—सुरत रंग विवि बदनपर, श्रमजलकन रहे सोहि।
रसिकसखी ललितादिसव, छवि अनूप रही जोहि ॥५९॥
कोमल अंचल पवन डुलावैं❀अतिआसक्त नैंन भरिआवैं ६०
एक वैस सव सखी सहेली❀मानौ नेह वाग की वेली ६१
सींची नवलकटाक्षनि जलसौं❀फूलीचाह फूलफल दलसौं ६२

एक रूप तन मन अनुरागी ❀ जुगलहेत हित रससौं पागी ६३
तिनमें आठ सखी मन भाई ❀ देखत रूप न कबहूँ अघाई ६४
ललित बिशाखा बृंदा स्यामा ❀ चंद्रासुदिता नंदिनि भामा ६५
अपनी अपनी टहल कराही ❀ प्रेम मगन आनन्द रहाही ६६
ललिता लड़िलीलालल‍ड़ावै ❀ मधुरवचनकहितिनहिहँसावै ६७
जुगलमिलनसुखअतिहीभावै ❀ नेह बदन की बात चलावै ६८
सखी विसाखा मनकी प्यारी ❀ कबहुँ न होत संगते न्यारी ६९
पाननि बीरी रुचिर बनावै ❀ लटकिकुँवरितेहिपरढरिआवै ७०
वृंदावन कौ दिनहि सिंगारै ❀ सोभा भरिभरि नैंन निहारै ७१
बहु विधिदल फलफूल सुहाये ❀ सुमन सुरंग दुहुँनिमनभाये ७२
स्यामा चीर विविध नवरंगा ❀ लियेरहत अनुराग अभंगा ७३
अंचल कचनि सँभारयौ करई ❀ षटरस विंजन आगे धरई ७४
चंद्रा चंदन ठाढी लीये ❀ औरअरगजा मृगमदकीये ७५
अंगनि चित्र विचित्र बनावै ❀ फूलनिमाल फूल पहिरावै ७६
सुदिता मदन मोद उपजावै ❀ हितसौं चरनकमलसहरावै ७७
विचविच कहत है प्रेम पहेली ❀ हँसिहँसिससुरुतनवलनवेली ७८
नन्दनि अति आनन्द बढ़ावै ❀ मधुरमधुर सुर बीनवजावै ७९
विच विच मंद मंद सुरगावै ❀ सुनत हिये के श्रवन सिरावै ८०
कुसुम बीजना मृदु कर लीयै ❀ करतपवनहुलसतअतिहीयै ८१
भामा भूषन दिनहि सिंगारै ❀ सोभा भरि भरि नैंन निहारै ८२
यहसुखनिजसहचरी दिखाही ❀ वारिवारि अंचल वलिजाही ८३
दोहा—श्रीराधा वल्लभ नव कुँवर, करत निंकुज विहार।
प्रबल चौंप तन मन बढ़ी, रससें दोऊ सुकुँवार ॥८४॥
खेलत नवल नागरी नाइक ❀ चौंपर खेल महा सुखदाइक ८५

इक इक सखी भई दुहुँ कोदा ❀ बढ्योजुगलमनमेंअतिमोदा ८६
अंगनि भूषन दाव लगावै ❀ कहुँकहुँझगरतअति छविपावै ८७
हारत लाल लगावत जोई ❀ त्यौं त्यौं चौंप चौगुनी होई ८८
हारे मोतिनु हार विहारी ❀ तवकटितें किंकिनी उतारी ८९
पीत वसन वसी पुनि हारी ❀ छविसौंहँसतमधुरसुकुँवारी ९०
छकेलाल सुखछबिहि निहारी ❀ चलतहिछकिपरसारविसारी ९१

दोहा—नैंना तौ अटके रहैं, अद्भुत रूप निहारि।
परस कछू खेलत कछू, छ कही छाड़त सार ॥९२॥

हित ध्रुव प्रेम खेल के आगे ❀ और खेल सब फीके लागे ९३

दोहा—प्रेम स्वाद कैसे कहूँ, नाहिन कछू समान।
भूषन पट की को कहै, रहे हारि तहां प्रान ॥९४॥

नवल कुँवर दोऊ वाहाँ जोरी ❀ विहरतनिपट साँकरी खोरी ९५
अति सुदेस भूषन झनकारा ❀ सुनतश्रवनसुखहोतअपारा ९६
सुभग मंदगति कमलफिरावै ❀ विचविचसरसचारुकलगावै ९७

दोहा—एक प्रान द्वै सहज तन, गौरस्याम निज रूप।
वृंदावन आनंद सदन, विलसत विविधि अनूप ॥९८॥

कोमल वेलिद्रुमनि लपटानी ❀ डोलत मृगी परम सुखदानी ९९
मोतिनु दुलरी कंठ वनाई ❀ विचविचमनिअनूपपहिराई १००
अति आनन्द फिरै वनमाहीं ❀ करतकलोलद्रुमनिकीछाहीं १०१
नवल विपिन में सुमनसुरंगा ❀ निरखत फिरैं दोऊइकसंगा १०२
मान सरोवर जवही आये ❀ नाचतमोर देखि मुसिकाये १०३
ठाढ़े भये सरोवर तटहीं ❀ कोकिलकीरमधुरसुर रटहीं १०४
अरुन असित सित अंबुजसोहें ❀ चलत मराल मंदगति मोहें १०५

॥ कुंडलिया ॥

नवल नवल मोहन वनें, नव राधे नव नारि ।
नव वसंत तहाँ नित रहै, नवल पहुप नव डारि ॥
नवल पहुप नव डारि रसिक मधुकर लपटाहीं ।
करत गुञ्ज अति चारु राग सौरभ मन माहीं ॥
सुनत श्रवन रुचि होत रहत फूलत आनंद मन ।
परम रसिक जुग चंद सदा विहरत मोहन वन ॥१०६॥
खेलत फाग तहाँ रस सागर ❀ नव राधे नव मोहन नागर १०७
ताल मृदंग मधुर धुनि वाजे ❀ सखियनिवृंदमाहिदोऊराजै १०८
चंदन वंदन और अवीरा ❀ सुरंगित भये दुहुनि के चीरा १०९
एकनि डफ इक वीन बजावै ❀ एक गुलाल सुरंग उड़ावै ११०
निर्त्तत फिरत किशोरकिशोरी ❀ मधुर वचन कहि होहो होरी १११
ज्यौं ज्यौं दोऊ तारी पटकैं ❀ अतिसुदेस पहुँचीकरलटकैं ११२
यह सोभा मनही तौ जानै ❀ वलिवलिदेहिदासिनिजप्रानै ११३
सोरठा—एक प्रान द्वै देह, नवल रसिक अरु रसिकनी ।
अति आसक्त सनेह, रंगे परस्पर प्रेम रंग ॥११४॥
कंचन रुचिर हिंडोरा बन्यौ ❀ मनिमयजटितमनोहरठन्यौ ११५
झूलत रसिक राधिका मोहन ❀ निरखिनैंनभावतादिनजोहन ११६
भूषन दुति अंगनि दमकाई ❀ नील पीत अंचल फहराई ११७
सखियनि नैंन निमेष भुलाये ❀ निरखतरूपअंबु भरि आये ११८
दोहा—सहज इंदु दंपति वदन, सखियनि नैंन चकोर ।
निरखि रूप इक टक रहैं, बंधे प्रेम दृढ़ डोर ॥११९॥
तिनको रूप कहत नहि आवै ❀ जो देखै तन सुधि विसरावै १२०
प्रेम के फंद मंझारी ❀ सर्बसु प्रान रहे तहाँ हारी १२१

निसि दिन ताहिन और सुहाई❀ बिन देखै हीयौ अकुलाई१२२
यह रस जो मन वचकै गावै ❀ निश्चै सो सहचरि पद पावै१२३
इनहीं नैंननि सब सुख देखै ❀जनमसफलअपनौकरिलेखै१२४
नव मोहन श्रीराधा प्यारी ❀हितध्रुवनिरखिजाँइबलिहारी१२५
दोहा–दंपति वारिधि रूप के, उठत तरंग जु मैंन।
दृग अगस्त नहि तृपितहीं, पान करत दिन रैंन ॥१२६॥
आज बनी अति सुंदर जोरी ❀ पियमोहन अरु राधागोरी१२७
नवल कुँवर नटवर वपु कीने ❀सीसमुकट अंजनदृग दीने१२८
नासा जलज अधिक छबिपाई❀सुसिकनिवरषतसुन्दरताई१२९
प्रिया सुभग काछनी कटि सोहै❀कज्जल नैन रेख मन मोहै१३०
बेसरि सुभग मंद गति डोलै ❀ईसद हँसनि सरस मृदुबोलै१३१
वदन कमल छबि कहीनजाई❀सखियनिअलिदृगरहेलुभाई१३२
नील पीत पट तरल सुहाई ❀भूषनझलकवरनिनहिजाई१३३

॥ कुण्डलिया ॥

दंपति रूप अनूप अति, भूषन झलकत अंग।
तरल झलक प्रतिबिंब छबि,निरखि होत दृग पंग॥
निरखि होत दृग पंग सुभग अति सुंदरताई।
सहज माधुरी अंग चितै छिन पलक न लाई॥
पानि सरस फेरत कमल राजत परिमल रूप।
मंद हाँस चितवनि चपल मोहत दंपति रूप ॥१३४॥

पाँवन सुभग कलिंदी तीरा ❀कंचनरासिखचितमनिहीरा१३५
कनक कंज तेहि मध्य विराजै ❀सोभानिरखिकोटिरविलाजै१३६
चहूँ दिसि फूल रही फुलवारी ❀तैसी सरद निसा उजियारी१३७
आनन्द कौ घन वनमें बरषै❀खगमृगसबसखियनिमनहरषै१३८

दोहा– सहज चंद निसि सहजही, सहज वृंदावन रास ।
सहज पवन सुख सहजही, दंपति सहज विलास ॥१३९॥
खेलत रास तहाँ दोऊ नागर ❀ निपुनसुधंगकलारससागर १४०
विविधिवाद्यनिजुसहचरिसाजे ❀ एकहि ताल मधुरधुनि बाजे १४१
एक वीन लिये एक उपंगा ❀ एकताललिये मधुर मृदंगा १४२
अतिकल मधुरदोऊमिलिगावैं ❀ हस्तक भेद अनेक दिखावैं १४३
उघटत शब्द थेई थेई बोलै ❀ नासाविचवेशरिअतिडोलै १४४
लटकनिअंग सुभग अतिसोहै ❀ वंकविलोकनि मनकोमोहै १४५
यह सोभा निज सखी निहारैं ❀ प्रेम विवस प्राननि को वारैं १४६
दोहा–जेतिक अंग सुधंग के, अरु संगीत प्रमान ।
औरै विधि निर्त्तत नवल, नवल नवल सुरगान ॥१४७॥
अलगलाग जहांलेहि परस्पर ❀ अधिकचौंपसौंदोऊसुघरवर १४८
निपटविकटगतिलेत पियारी ❀ निरखत रहे लजाइ विहारी १४९
करहि जतन वहलागनआवै ❀ त्यौंत्यौंहंसिहंसिप्रियावतावै १५०
अति आनंद भरे मन माहीं ❀ कमल दलनपर निर्त्तकराहीं १५१
निर्त्तनश्रमित भयेअति भारी ❀ नवकिशोरनवला सुकुंवारी १५२
श्रमजलवूंदजुसुखहि विराजै ❀ मनोकनओस कमलपरराजै १५३
यह सुख तौ नैना ही जानैं ❀ रसनाहित ध्रुव कहा वखानैं १५४
सोरठा–रसना कोटिक पाइ, कोटि कलप लौं जीजियै ।
तऊ वरन नहि जाइ, सहज माधुरी वदनकी ॥१५५॥
श्रीमान सरोवर निर्मल नीरा ❀ कंचनमनिमयजटितसुतीरा १५६
क्रीड़त तहाँ नवल पिय प्यारी ❀ छिरकत हँसत वढ़ी सोभारी १५७
सखियनि प्रिया सैंनजवपाई ❀ छिरकतलालहिअतिअधिकाई १५८
अंवुधार छूटत अति भारी ❀ परम सुगंध रुचिर सुखकारी १५९

गजकरनी ज्यौं केलि कराहीं ❀ प्रेममगन क्रीड़त जलमाहीं १६०
दोहा—सहज सरोवर सुभग में, नव नागर विवि चंद ।
खेलत अति आनन्द मन, दोऊ परम सुछंद ॥१६१॥
मंदिर कनक मध्य अति सोहै ❀ निरखतचित्र सुचित्रहिमोहै १६२
तापर लता मुंजु नव कुंजा ❀अति अनूप सुंदर सुखपुंजा १६३
परम रुचिर वहैत्रिविधिसमीरा ❀गुञ्जत भृङ्ग रटत पिक कीरा १६४
किशलय दलनि सुरंग सुहाई ❀ रचित सैन कोमल सुखदाई १६५
दोहा—सहज कुंज सुख पुंज में, रची कंज दल सैंन ।
रहत दिनहि सेवत तहाँ, वृन्द कोटि कुल मैंन ॥१६६॥
करिजलकेलि तहाँ दोऊ आये ❀ अंगनि चीर सुरंग बनाये १६७
सरस सुगंध माहि दोऊ भीने ❀ लटकतहँसत अंसभुजदीने १६८
अतिविचित्र दंपति मनमाँही ❀छिनछिनप्रतिनवकेलिकराँही १६९
पलटि वेष पिय भये सुकुँवारी ❀ भूषन पहिरि सुरंगतनसारी १७०
वेसरिखुभी झलक अतिचमकै ❀ दुलरी जलज कंठपर दमकै १७१
मुसिकनिकछुकलाजकी सोहै ❀चमकनिदसनचपलमनमोहै १७२
खेलत हँसत किशोर किशोरी ❀ मानसमिथुनलेतछविचोरी १७३
वीरा खंड दसन वर गोरी ❀ देत परस्पर प्रीति न थोरी १७४
सखी भाँवती यह सुख देखैं ❀ नैंन सफल अपनो करलेखैं १७५
दोहा—रसिक कुँवर दंपति सदा, वसत रहौ मम चित्त ।
प्रेम सजज भ्रुव नैंन दोऊ, रहे निरखि छवि नित्त ॥१७६॥
ऐसी भांति नवल विविनागर ❀करतविहारदिनहिसुखसागर १७७
वृंदाविपिन प्रेम निज धामा ❀ संतत राजततहँ श्रीस्यामा १७८
जो यह रस मन रुचिकै गावै ❀ प्रेम प्रसाद सहजहीं पावै १७९
जो या रस में दिन अनुरागी ❀ परम धन्य तेई बड़ भागी १८०

यह रस तो मनही में राखौ ❀ भक्तिहीनसौं कबहूं न भाषौ १८१
जथा बुद्धि तौ यह रस गायौ ❀ रसिक कृपाते जो उर आयौं १८२
रसानन्द याको नाम कहावै ❀ कहतसुनत आनन्दरसपावै १८३
संवत सै षोड़स पंचासा ❀बरनतजसध्रुवजुगलबिलासा १८४
दोहा—यह रसतौ अति अमल है, कह्यौ बुद्धि अनुमान ।
पंछी उड़ै अकास कौं, जाहि सक्ति परमाँन ॥१८५॥

॥ इति श्री रसानन्द लीला संपूर्ण की जै जै श्री हितहरिवंश ॥ ३७ ॥

॥ अथ ब्रज लीला प्रारम्भ ॥

एक समै विहरत बन माँहीं ❀ कियौ मतौबिवि द्रुमकीछाँहीं १
यह निज रस कीजे बिस्तारा ❀ रसिकजननिकौअतिहीप्यारा २
नन्दलाल वृषभान किशोरी ❀ रसिकनिहितप्रगटी यहजोरी ३
नित्य केलि दिन ऐसे करहीं ❀ अति आनन्द प्रेम रस ढरहीं ४
रस निधि लीला ब्रज प्रगटाई ❀ रसिकजननिकौअतिसुखदाई ५
प्रथममिलन विधिजो उरआई ❀ जथा बुद्धि जैसी कछु गाई ६
रस विहून के मन नहिं भावै ❀ पाहन चित्तहि को समुझावै ७
नवल नेह रस अद्भुत आही ❀ रसिकनि बिन को समुझैताही ८
दोहा—रसिकनि हित बिवि कुँवरबर, भये प्रगट ब्रजआंनि ।
प्रथम मिलन सुख कहतहौं, जहँ लगि बुद्धि प्रमांनि ॥९॥
वैस किशोर भये मन मोहन ❀ अंगअंग सुन्दरअति सोहन १०
छवि तरंग कछु कहे न जाहीं ❀ मदनकोटिलुटैचरननिमाहीं ११
इहि दिसि श्रीवृषभान दुलारी ❀ वैस किशोर भई सुकुँवारी १२
अद्भुत रूप कुँवरिकौ माई ❀ सखी एक पियपै कह्यौजाई १३
अतिसुकुँवारिनवीन किशोरी ❀ जुवतिनके मन लेतहै चोरी १४

अंग अंग वानिक कही न जाई ❀ जित चितवत वरषत छबि माई १५
रति कमला देवङ्गना नारी ❀ पद नख की द्युति ऊपर वारी १६
याकौ रूप जु देखै आई ❀ सोऊ रूपवंत ह्वै जाई १७
वट संकेत अनूप विराजै ❀ ताके निकट सरोवर राजै १८
सुन्दर ठौर सघन वन आही ❀ फूलि रही वहु जूही जाही १९
कवहुं कवहुं तहाँ खेलन आवै ❀ खेलत खेल जोई मन भावै २०
दोहा—कुँवरि रूप की बात सुनि, परम रसिक सिर मौर।
अंग अंग सब सिथल भये, चित्त रह्यौ नहिं ठौर ॥२१॥
सुनत चौंप पिय मन भई भारी ❀ किहि विधि देखियै नवल कुंवारी २२
ताही तक अब लागे रहहीं ❀ काहू सौं यह बात न कहहीं २३
नित उठि बरसाने तन जाँहीं ❀ जित संकेत सघन वन माँहीं २४
सघन कुञ्ज इक हुती सुहाई ❀ बैठे लाल तहाँ अरगाई २५
उत देख्यौ इक कौतुक भारी ❀ सुन्दर सर अंबुज छवि न्यारी २५
तहां देखे जुवतिन के वृन्द ❀ मानो कोटि उदित भये चंद २७
तिनमें नवल किशोरी सोहैं ❀ मोहन मन लाये छवि जोहैं २८
पहिरे नील वरन तन सारी ❀ मोतिन माँग वनाइ सँवारी २९
अति विशाल लोइन अनियारे ❀ उज्वल अरुन सहज कजरारे ३०
फगुवा सुभग सुरंग विराजै ❀ तापर मृगमद वदी राजै ३१
झलकि रह्यौ वेसरि कौ मोती ❀ फीके भये धरे जे जोती ३२
ईखद हँसन दसन अति झलकै ❀ छुटि रही कहुं कहुं मुख पर अलकै ३३
चंचल चितवनि परम सुहाई ❀ मुख पानिप कछु कही न जाई ३४
सहज नवेली अति अलवेली ❀ तैसी सोभित संग सहेली ३५
सखियन खेलि रच्यौ सुखकारी ❀ एकतें एक रहैं द्युति न्यारी ३६
चली दुरन तिहि ठाँ सुकुँवारी ❀ बैठे हे तहाँ कुञ्जविहारी ३७

दोहा—अद्भुत कौतुक अधिक इक, बढ्यौ सहज सुखपुञ्ज।
चली दुरनि तेहि लाड़िली, हुते लाल जेहि कुञ्ज ॥३८॥
कुंवरि तहां अनजानत आई ❁ जहां लाल ह्वै रहे लुभाई ३६
चारों नैंन एक भये ऐसे ❁ बिछुरे खंजन मिलत हैं जैसे ४०
सकुचि कुँवरि जव घूंघट कीनो ❁ नवललाल तिनके रंग भीनो ४१
पियमनमीनपरयौछविजाला ❁ व्याकुल देह सनेह विशाला ४२
नेकही चितवति रूप रसाला ❁ मूर्छा आय गई तेहि काला ४३
तबही लाल गिरे धरमाई ❁ सो ठौं मनों प्रेमकी छाई ४४
दोहा—रूप सिंधु में मन परयौ ढ़रत नैन दोऊ नीर।
डग मगाइ धरनी परे, रही न सुधि जु शरीर ॥४५॥
पियकौमनआपुन हरिलीनौं ❁ अपनौचित प्रीतमकौ दीनौं ४६
मनरह्योउहींकुँवरिफिरिआई ❁ औरन कछुवे बात सुहाई ४७
नैंननि छाई पियकी सोभा ❁ सुधितन न रहिफिरैउहलोभा ४८
दोहा—देखि बात आश्चर्जकी ❁ भूलि रही सुकुँवारि।
सहजहि बाढ्यो प्रेमरस ❁ ह्वै गई नई चिन्हारि ॥४६॥
भूल्यौ खेल कुँवरि को तबही ❁ नवलनेह रस उपज्यौ जबही ५०
यह सहचरि किनहूँ नहिलेखी ❁ कुँवरि कुँवरकी देखा देखी ५१
दोहा—चली सखी मिलि भवनको, लीनी कुँवरि सँभारि।
येई सबके प्राँन हैं, अलवेली सुकुँवारि ॥५२॥
पियकीगतिसुनि अबमोपाही ❁ नैंननि नोक चुभी मन माही ५३
भूले सुधि बुधि मूर्छा आई ❁ छबि अनूप नैंननि उर छाई ५४
घरी चारि सुखमाहि बितानी ❁ पुनि चितचेतसुरतिउरआनी ५५
कहाँ देखौ जिनि दई दिखाई ❁ हरिलियेप्राँन देह अकुलाई ५६
वह सहचरिमनमें अतिमानी ❁ जिनियहछबिमोपैजुबखानी ५७

दोहा—जो कछु रूप कह्यौ हुतौ, ताते सतगुन आहि।
वार वार तेहि सखी कौ, लालन उठत सराहि ॥५८॥
तबते मोहन रहत उदासा ❀ प्रेम खटक तें भरै उसाँसा ॥५९॥
रूप छटा करकै हिय माँहीं ❀ छिनछिनमाहिविकलह्वै जाँहीं ६०
तन की गति ऐसी भई माई ❀ ज्यौंजलविनवारिज कुभिलाई ६१
भोजन पान कछू न सुहाई ❀ हृदै ध्यान नव प्रिया रहाई ॥६२॥
अतिही छीनजु भयौ सरीरा ❀ दिनहि नैनभरि आवै नीरा ६३
दोहा—नैंन सरोवर से भरे, नवल नेह के नीर।
ढरि ढरि मुक्ता से परत, रहे भीज तन चीर ॥६४॥

॥ चौपाई ॥

सीस चंद्रिका धरी न भावै ❀ सौरभ परसत अतिदुखपावै ६५
रुचै न उर वैजंती माला ❀ मारुतभई पावक सम ज्वाला ६६
पीत वसन वंसी बिसराई ❀ बाढ्यौ प्रेमकह्यौ नहिं जाई ६७
बरसाने तन चितवत रहहीं ❀ मौनधरे कछु वे नहिं कहहीं ६८
उहदिसितेजुपवनसखिआवै ❀ सोरजअधिक लालमनभावै ६९
मन अरु नैंन कुंवरिके पासा ❀ देह रहे मिलवे की आसा ७०
कल नपरततन व्याकुल भारी ❀ जब ते स्यामास्याम निहारी ७१
प्रेम की बात निपट अटपटी ❀ सोईजानै जेहि लगैचटपटी ७२
दोहा—प्रीति रीति अति कठिन है, कहे न समझै कोइ।
प्रेम बान जेहि उर लगै, निसि दिन जानै सोइ ॥७३॥
इतहि अनमनी रहैं किशोरी ❀ चित्त परयौ पियप्रेमकी डोरी ७४
छुटि गई नैंननि तें चपलाई ❀ उपजी अंग अंग सिथलाई ७५
चितै रहैं अवनी तन ठाढ़ी ❀ नेह वेलि उर अंतर बाढ़ी ७६
जे सखी साथकी खेलन हारी ❀ ते उन मनते सबै बिसारी ७७

दोहा–भूल्यौ हँसिवौ खेलिबौ, भूल्यौ अंग सिंगार।
निसि दिन रहैं या सोच में, रुचत नहीं उर हार ॥७८॥
हितकीसखीअधिकअकुलानी ❋ देखीकुँवरिकछुककुभिलानी ७९
गद गद कंठ नेह रस सानी ❋ बोली तहाँ कछुक मृदुबानी ८०
चलहु लाड़िली प्रिया नवेली ❋ जाहि सरोवर कहे सहेली ८१
नाँक सँकोर स्वाँस अतिलेही ❋ सहचरि को उत्तर को देही ८२
प्रेम विवस कछु वैन सुहाई ❋ मोहन सूरति हदै बसाई ८३
बढ़िगई प्रीतिकहतनहि आवै ❋ विसरतनहिजेतकविसरावै ८४
मन परचो प्रेम पेंच में जाई ❋ वलकियेकैसे निकसतमाई ८५
ठाढ़ी नखन अवनि कौ खनै ❋ फिरत न कैहूँ फेरत मनै ८६
नैंना अतिही सजल रहाहीं ❋ प्रीतम प्रेमजानि मनमाहीं ८७
दोहा–अति विशाल लोइन सुरंग, सहज रसीले आहि।
प्रेम लाज जलसौं भरे, रही अवनि तन चाहि ॥८८॥
और सखी ढिगते जब आई ❋ आठौ रही कुँवरि मन भाई ८९
ललिता कहै श्रीराधा प्यारी ❋ मोसों बात कहौ सुकुँवारी ९०
मैं हूँ तौ मनकी कछु पाई ❋ सो तुम मोहि कहो समुझाई ९१
अपनें सौं दुराव नहिं कीजे ❋ दिन दिन देखत देही छीजे ९२
जानी प्रिया सखी सुखदाई ❋ तब मन में की बात चलाई ९३
एक द्योस खेलत बन माँहीं ❋ सखियन संग सरोवर पाहीं ९४
अतिही सघन कुंज है जहां ❋ नवलकुँवर इक देख्यौ तहां ९५
सावल वरन पीत उपरैंना ❋ बडड़े आहि सलौने नैंना ९६
अरुनअधरमुसिकनिछबिराजे ❋ मोर चंद्रिका सीस विराजै ९७
नासा वनिरह्यो जलजसुढारा ❋ कंचन दुलरी मोतिनु हारा ९८
मुखपर पानिप झलक सुहाई ❋ नेह रूप मानो प्रगट चुचाई ९९

मो तन चितें गिरे मुरझाई ❀वहखसिपरननविसरतमाई१००
तेहि छिन तें जु गयो मन मेरो ❀को सुधि कहै न कीयो फेरौ१०१
हौं नहिं बोली लाज की लई ❀तेहि पाछे धौं कौन गतिभई१०२
वहै करक तबतें मन माही ❀खटकतपलपलनिकसतनाही१०३
इतनो कहत हियो भरि लीनौं ❀बहुरि न कछुवै उत्तर दीनौं१०४
दोहा–प्रेम सुरति पिय की हियै,तेहि छिन करकी आइ।
मुख निसरत नहि वैन कछु,रही कुँवरि सिर नाइ॥१०५॥
यह गति देखत सखी भुलानी ❀भरिआयेदोऊ लोइन पानी१०६
पुनि धरिधीरविचारनि लागी❀नवलकुँवरिकेहितअनुरागी१०७
करों जतन नंदलालहि लाऊँ ❀ पिय प्यारी में रंग बढ़ाऊँ १०८
मिलहि दोऊ रस बाढ़ै भारी ❀विरहबिथाविचतेहोइन्यारी१०९
दोहा–सहचरिमन आनंद बढ़्यो,सुनत बचन अति चार।
प्रेम मगन आनंद भयो, मिलवन नंद कुमार ॥११०॥
नंदगाम तेही छिन आई ❀मन मोहन को सैंन जनाई१११
सैंन बूझ लालन उठि आये ❀ललितादेखिकछुकमुसिकाये११२
बूझत सखी चतुर तब बाता ❀ काहे मोहन हो कृस गाता११३
तब मोहन मनकी सब कही ❀ जो जो पाछे ही गति भई११४
ललिता एक किशोरी देखी ❀ मानौं रूप की सींवा पेखी११५
कौनभांतिमुखकीछबि कहियै ❀चितवत सखी चित्रह्वै रहियै११६
कहा कहौं अंग अंग निकाई❀छिनकमाहिलियोचित्तचुराई११७
मनो मोहनी और ठगोरी ❀ तीन लोककी करिइकठौरी ११८
नव किशोरता कछुक भुराई❀लाजभरींअखियनिमुसिकाई११९
रूपहिकहत विवस भयोप्यारो ❀ प्रेम नीर नैननि तें ढारो१२०

दोहा—नख सिखतें अति सोहनी, नाहिन कछु सम तूल ।
रूपलता लागे मनो, चितबनि मुसिकनि फूल ॥१२१॥
अबतौ जतन करो वरनारी ❀ मिलै मोहि वृषभानदुलारी १२२
तिनकी छबि उर नैननि छाई ❀ अटपटी भांति चटपटी लाई १२३
तेहि छवि पावक प्रीति जरावै ❀ चतुरसोईजोप्रियामिलावै १२४
दोहा—मैं तौ यह जानी सखी, हितू न तोहि समान ।
यह गुन तेरौ मानि हौं, जब लगि घट में प्राँन ॥१२५॥
जा दिनतें मोहि दई दिखाई ❀ चकितचित्तकछुवै नसुहाई १२६
अब लगितौ दिनवितये ऐसे ❀ अवधौं प्राँन रहैंगे कैसे १२७
दोहा—गहवर आई सहचरी, सुनत लाल की बात ।
प्रेम दुहुँनि कौ समुझिमन, रीझि रीझि वलिजात ॥१२८॥
ललिता कहै सुनौ नंदलाला ❀ मिलऊँआज तुमैंनववाला १२९
इतनी सुनत सरस ह्वै आये ❀ बिछुरेप्राँन फेरिमनौ पाये १३०
सुनत बचन आनंद न समाई ❀ पगललिताकेसिरधरयौजाई १३१
दोहा—रसिक सिरोमनि रसिक पिय, जानत रसकी रीति ।
प्रभुता राखी दूरिकै, भये दीन वस प्रीति ॥१३२॥
सखी मोहनसौं जव वदि लई ❀ तव भीतर जसुदा पै गई १३३
पकर चरन बैठी ढिग जाई ❀ घरीएक पाछे वातचलाई १३४
कीरतिजू पाइलागन कहियौं ❀ कुँवरहिन्योतनपठइमईयौं १३५
पुनिमनमेंकछुआहि विचारी ❀ देख्यौ चाहतकुँवरविहारी १३६
भूषन वसन वनाइ सवेरै ❀ अवही संग देहु तुम मेरै १३७
दोहा—मुदित महरि अति चाव सौं, भूषन वसन सुरंग ।
नवललाल अति बानिकै, दयौ सहचरी संग ॥१३८॥
अधिक आनंदवढ्योमनमाँहीं ❀ बैठेजाइ निकुञ्जनि छाँहीं १३९

सहचरितवमन करतबिचारा ❀ सोच नदी तहाँ बढ़ी अपारा १४०
अबकिहि विधि बरसानेजैये ❀ जो न लखै सोई जु बनैये १४१
गुरजन भीर तहां अति भारी ❀ सबके प्राँन बहै सुकुंवारी १४२
फनिमनि ज्यौंलिये रहैसँवारी❀ जीवत हैं सब ताहि निहारी १४३
ऐसी कठिन ठौर सुनि प्यारे ❀ तेहिठाँ लागे नैंन तिहारे १४४
सुनत सखी की बानी मानी ❀ प्यासौं माँगै पानी पानी १४५
सब बिधि मोहिं भरोसो तेरौ ❀ पूरन करौ मनोरथ मेरौ १४६
एक बार कैसेहूँ दिखावौ ❀तौललितामोहिजीवजिवावौ १४७
नासा अग्र प्रान रहे आई ❀ बुधिबलकरिकछुवेगिउपाई १४८
ऐसे बचन सुनत गहवरी ❀ सहचरि सोच कूपमें परी १४९
धीरज धरहु जाँऊ बलिहारी ❀ तुमतेंमोहिअधिक दुखभारी १५०
वचन करौं तुमसौं दे तारी ❀ मिलऊँगीवलिप्राँनपियारी १५१
तजिकै लोक वेद की लाज ❀ देहौं प्रान तिहारे काज १५२
दोहा—नैंन भरैं धीरज धरैं, मनमें थापि विचारि ।
पलटि वेष लै जाइयै, जहां कुँवरि सुकुँवारि ॥१५३॥
तबललिताइकमतौबिचारयौ ❀ पियकौतियकौवेषसिंगारयौ १५४
भये चावसों सखी विहारी ❀ देखन हित श्रीराधा प्यारी १५५
पहिरी लाल कसूंभी सारी ❀ गुहिवेनी कल मांग संवारी १५६
लाल भालपर वेंदी फवी ❀ त्रिभुवनकी सोभा सब दवी १५७
नासा वेसरि अतहि सोहनी ❀ प्रान हरनकौ मनौ मोहनी १५८
नैंननि अंजन दियौ बनाई ❀ चिबुकबिंदुअतिही सुखदाई १५९
कंचन मोतिनकी गर दुलरी ❀तेहिछबिकौकोउनाहिनतुलरी १६०
कंचुकि उरज बनाइ संवारे ❀ मानौं श्रीफल नौतन धारे १६१
जेहि विधिके भूषन गुनगाये ❀ सुमिलि सुदेस सोई पहिराये १६२

साजि लिये जबसब सिंगारा ❀निरखिरूप सुखभयो अपारा १६३
नवलसखीनवअधिक बिराजै ❀जुवतिनिबृन्द देखिसबलाजै १६४
दोहा—स्याम अंग पर अति बनी, सारी कसुँभी सुरंग ।
नखसिख भूषन तियनि के, भूषित मोतिनु मंग ॥१६५॥
तब ललिता बरसाने आई ❀ सखी संग लै परम सुहाई १६६
जब प्रवेस रावल में कीनौं ❀सकुचसहितमुखअंचलदीनौं १६७
बूझत सकल जुवति जनहेरै ❀ यहको आई सखी संग तेरै १६८
ललितापरमचतुर अतिस्यानी ❀ उत्तर दियो वेगि मृदुवानी १६९
यह उपनंद गोपकी बेटी ❀ मोकौं खोरि साँकरी भेटी १७०
जान अवार संग लै आई ❀ कहिकै वचनताहि समुझाई १७१
गई लिवाइ तहां कर जोरै ❀ राजति जहांकुंवरितन गोरै १७२
ललितादेखिकुंवरिमुसिकाँनी ❀ सखी चतुरई मन में जानी १७३
निरखि परस्पर आनंद भारी ❀ विरहविथाविचतें भईन्यारी १७४
सखी दोइ आई संग लागी ❀अटक्यौ चित रूप अनुरागी १७५
कछुकव्याजललितातव कीनौ ❀नवलप्रिया प्रीतमसुखदीनौ १७६
उठी वेगि जानै नहि कोई ❀ लीनी संग सहचरी दोई १७७
कहतिहै तिनसौंवचन बनाये ❀ करहु न टहल आजमनभाये १७८
माला सुमन सुरङ्ग बनावौ ❀ चित्रविचित्र गूंथिलै आवौ १७९
ऐसी चतुर चतुराई कीनी ❀ टहल व्याजसवहीकौं दीनी १८०
मिले मोहन श्रीराधा प्यारी ❀हितध्रुवनिरखिजाइवलिहारी १८१
दोहा—नवललाल नव लाड़िली, नवल केलि सुखरासि ।
नवल प्रीति नव नव बढ़ी, करत मंद मृदु हासि ॥१८२॥
बचन रचनसुख कह्यो न जाई ❀ बाढ़्यो प्रेम सिंधु अधिकाई १८३
मनोज रंग कीने पिय प्यारी❀मनमनसुखवाढ़्योअतिभारी १८४

नासा वेसरि नथ बनी, सोहत चंचल नैंन।
देखत भांति सुहावनी, मोहे कोटिक मैंन ॥ ६ ॥
सुन्दर चिबुक कपोल मृदु, अधर सुरंग सुदेस।
मुसिकनि वरषत फूलसुख, कहि न सकत छवि लेस ॥ ७ ॥
अंगन भूषन झलकि रहे, अरु अंजन रंग पान।
नव सत सरवर तें मनौ, निकसे करि अस्नान ॥ ८ ॥
कहि न सकत अंगनि प्रभा, कुन्जभवन रह्यो छाइ।
मानौ वागे रूपके, पहिरे दुहुँनि बनाइ ॥ ९ ॥
रतनागढ़ पहुँची बनी, वलया वलय सुढार।
अंगुरिनु मुंदरी फवि रही, अरु मिहिदी रंग सार ॥१०॥
चन्द्रहार मुक्ता वली, राजत दुलरी पोति।
पानि पदिक उर जग मगै, प्रति बिंबित अंग जोति ॥११॥
मनिमय किंकिनि जालछवि, कहौं जोई सोइ थोर।
मनौ रूप दीपावली, झलमलात चहुँ ओर ॥१२॥
जेहरि सुमिलि अनूप बनी, नूपुर अनवट चारि।
और छाड़िकै या छबिहि, हियके नैंन निहारि ॥१३॥
बिछुवनिकी छवि कहा कहौं, उपजत रव रुचि दैन।
मनौ सावककल हंस के, बोलत अति मृदु वैन ॥१४॥
नख पल्लव सुठि सोहने, सोभा बढ़ी सभाइ।
मानौ छवि चन्द्रावली, कंज दलन लगी आइ ॥१५॥
गौर वरन सांवल चरन, रचि मिहदी के रंग।
तिन तरवनि तर लुठत रहैं, रति जुत कोटि अनंग ॥१६॥
अति सुकुँवारि लाड़िली, पिय किशोर सुकुँवार।
इक छत प्रेम छके रहैं, अद्भुत प्रेम बिहार ॥१७॥

अनूपम स्यामल गौर छवि, सदा बसौ मम चित्त ।
जैसे घन अरु दामिनी, एक संग रहैं नित्त ॥१८॥
वरने दोहा अष्ट दस, जुगल ध्यान रसखान ।
जो चाहत विश्राम ध्रुव. यह छवि उर में आन ॥१६॥
पलकनि के जैसे अधिक, पुतरिनसौं अति प्यार ।
ऐसे लाड़िली लाल के, छिन छिन चरन सँभार ॥२०॥

॥ इति श्री जुगलध्यानलीला संपूर्ण की जै जै श्री हित हरिवंश ॥३६॥

॥ अथ निर्त्त बिलास लीला प्रारम्भ ॥

एक समै नागरि नव नागर ❀ प्रेम रूप गुनके दोऊ सागर १
परम प्रवीन सखी संग रहहीं ❀ छिन छिनप्रतिनवनवसुखलहहीं २
मंडल जोरि चहूँ दिसि ठाढ़ी ❀ प्रेम चितेरे चित्रसी काढ़ी ३
राजत मान सरोवर तीरा ❀ आवत परम सुगंध समीरा ४
सारस हंस चकोर चकोरी ❀ निर्त्तत फिरत वरहि संग मोरी ५
देखिमुदितभईनवल किशोरी ❀ आनंद में झलकतछवि गोरी ६
उपजी बात एक मन माहीं ❀ सकुचतहैं पियकहि न सकाहीं ७
कबहूँ नूपुर धाइ बनावै ❀ याही मिसि चरननि छ्वै आवै ८
कबहूँ सुन्दर बीन बजावै ❀ नवल प्रिया मनरुचिउपजावै ६
निरखतसुखकहिसकतनप्यारो ❀ हेत लालको प्रिया विचारो १०
परम प्रवीन मुकट मन प्यारी ❀ निर्त्तकला गुनकी विस्तारी ११
तिरप बांधि कमलन पर चली ❀ निरखत थकित रही है अली १२
अद्भुत कमल मध्य सरमाहीं ❀ ताके सिरपर निर्त्त कराहीं १३
दोहा—निर्त्त बिलासहि देखि सखि. रही सोच विस्माइ ।
निर्त्त जु मूरतिवंत ही, ठाढ़ी लेत बलाइ ॥१४॥

हुड़क रवाव गजक बहु बाजै ❀ सखियनिअतिआनंदसौं साजै १५
किन्नर सुरज मृदंग बजावै ❀ गतिमें गति नव नव उपजावै १६
अतिसुकुंवारिनिर्त्त रंगभीनी❀ भाइ भेद गति लेत नवीनी १७
जो गति सुनी न देखी कबही❀ नौतन प्रगट करी ते अबहीं १८
अलग लाग हुरमई जु लीनी ❀ प्रगटकला निजगुनकी कीनी १६
परत आइ मान जेहि दलपर❀ वैसेई रहत चरन के तरहर २०
लाघवता सौं पग रहे ऐसे ❀ परस न होत दूसरे जैसें २१
सुलप अनूप चारु चल ग्रींवाँ ❀ सहज सुधंग बिलास की सींवाँ २२
थेई थेई कहत मोहनी वानी ❀ सखियनि नैंन चले ह्वै पाँनी २३
मुसिकनि मधुर चित्तकों हरही❀ चितवनि पासि दूसगी परही २४
दोहा–निर्त्त सुधंग कला जिती, कही प्रगट परमाँन ।
छुई न तिनमें एकही, उपजी आनही आँन ॥२५॥
पुनि केशरि पर लसत रंगीली ❀ झलकत वेशर परम छबीली २६
कछुक अलापमधुरधुनिकीनी❀मति बुधि सबही की हरि लीनी २७
कबहुं सुनी न राग धुनि ऐसी❀ कीनीअबहि कुंवरि सखिजैसी २८
राग रागिनी जूथ लजाये ❀ खोजि रहे ते सुर नहिं पाये २६
भृंगी मृगी सुनत मृदु वानी ❀थक्योपवन अरुचलत न पाँनी ३०
श्रवत द्रुमनि तें रस की धारा ❀ आनंद प्रेम कियो बिस्तारा ३१
राग पुंज बरषत बरषासी ❀ हित ध्रुव गुन सींवाँ सुखरासी ३२
दोहा–सुनत राग अनुराग धुनि, मोहे नागर लाल ।
सक्यौ न धीरज धरि सखी, मरम लग्यौ सर वाल॥३३॥

॥ कुंडलिया ॥

लाल बिवस सहचरि सबै, मोरी मृगी बिहंग ।
गावत रस मे नागरी, नव नव तान तरंग ॥

नव नव तान तरंग सप्त सुर सौ मन ढरहीं ।
ऐसी को सखी आहि सुनत जो धीरज धरहीं ॥
नव नव गुन की सींव सब अति प्रवीन वरवाल ।
नागर कुल मनि तैसेई श्रोता सुंदर लाल ॥३४॥

अति बिह्वल ह्वै गये बिहारी ❀ भूषन पट सुधि देह बिसारी ३५
रही सँभारि सखी हितकारी ❀ नैंननि होत प्रेम बरषारी ३६
प्रिया प्रिया रव मुख ते निसरै ❀ नाम रूप गुन कबहूँ न बिसरै ३७
यह गति देखि लाल की प्यारी ❀ नेह रंग मगी अति सुकुँवारी ३८
महा प्रेम समुझत उर घूँमी ❀ तेहि छिन आइ लाल पर झूमी ३९
देखत बिवस भुजनि भरि लीनौं ❀ चितै बदन नैंना भरि दीनौं ४०
महा प्रेम सौं उर लपटानी ❀ तिनकी प्रीति न जात बखानी ४१
भरि अनुराग लाल उर लायौ ❀ अधर सुधा जीवन रस प्यायौ ४२
खुलि गये नैंन प्राँन घट आये ❀ प्रिया प्रेम झक झोर जगाये ४३
ललित लाल डोलत संग लागे ❀ प्रिया प्रेम नखसिख लौं पागे ४४

दोहा—नख सिख लौं सखि पगि रहे, प्रीतम प्रेम सुरंग ।
तेही भांति पुनि लाड़िली, रंगी लाल के रंग ॥४५॥

॥ कुण्डलिया ॥

नागरि नित्त बिलास जस, जे अवगाहत नित्त ।
हित ध्रुव अद्भुत प्रेम सौं, सरस रहै दिन चित्त ॥
सरस रहै दिन चित्त और कछु सुन्यौं न भावै ।
बिन बिहार रस प्रेम और उर में नहि आवै ॥
अद्भुत सुख की सींव सकल अंगनि गुन आगर ।
प्रीतम मन हरि लेत सहज, रस में नव नागरि ॥४६॥

दोहा—युगल प्रेम रस सार सर, रसिक हंस अवगाहि।
जगत काक बक बिमुखजे, पलकहु पहुँचत नाहि ॥४७॥

॥ इति श्री नित्त विलास लीला संपूर्ण की जै जै श्री हितहरिवंश ॥ ४० ॥



॥ अथ मान लीला प्रारम्भ ॥

दोहा—रची कुञ्ज मनि मय मुकर, झलकत परम रसाल।
राजत हैं दोऊ रंग में, ह्वै गयो बिच इक ख्याल ॥१॥
देखि प्रिया प्रतिबिंब छबि, चकित ह्वै रही लुभाइ।
तेहि छिन बैठी लाड़िली, मान कुंज में जाइ ॥२॥
रहे सोच बिस्माइ तब, तनकी गति भई आँन।
लेत स्वाँस दीरघ बचन, कहत कहाँ प्रिया प्राँन ॥३॥
कौंन चूक मोतें परी, गई कहाँ दुख पाइ।
हे सखी मैं समुझी नही, इतनी सुधि लै आइ ॥४॥
बार बार सोचत यहै, मैं तो कह्यो कछु नाहि।
मन दे नीके समुझ तू, कहा आई जिय माहि ॥५॥
कहा कहौं अब प्रान ये, नैंननि में रहे आइ।
जो गति देखी जाति है, तैसी जाइ सुनाइ ॥६॥
सो०—को समुझै यह बात, कहा कहौ हिय चटपटी।
प्रान चले ये जात, रहि न सकत हैं प्रिया बिनु ॥७॥
सुनत बचन पिय के सखी, भरि आये दृग नीर।
रहि न सखी व्याकुल भई, चली प्रिया के तीर ॥८॥
आवत देखी सखी जब, मुरि बैठी सुकुँवारि।
भौंह रुखाई मौन धरि, नीचे रही निहारि ॥९॥

दोहा—जब जान्यौ कछु मन भयौ, चतुर चित्तकी पाइ।
ल्यावन प्यारेलाल कौ, तेहि छिन आई धाइ ॥२१॥
सुनहु लाल नववाल वलि, वैठी अति हठ ठाँन।
मौंन धरे नैना भरै, दै कपोल तर पाँन ॥२२॥
पाइन पर तृन दंत धरि, कीने जतन अनेक।
लाल तिहारी लाड़िली, छाड़त नहि हठ टेक ॥२३॥
बहुत जतन विनती करी, बातें अधिक बनाइ।
चलियै अब पिय प्रियाकौ, लीजे वेगि मनाइ ॥२४॥
मनतौ कछु कोमल भयौ, बातें लगी सुहान।
मान छूटि है जातहीं, यह पायो उनमान ॥२५॥
आय लाल ठाढ़े भये, आगे दोऊ कर जोर।
सुनि सुनि प्यारे बचन मृदु, रही कुँवरि मुख मोर ॥२६॥
सुहृद अली अति हेत सौं, वातें कहत निहोर।
रसिकलाल वलि प्रेम सौं, बंधे तिहारी डोर ॥२७॥

॥ श्री प्रियाजी के बचन ॥

दोहा—कै तव स्याम सनेह मै, समुझावत सखि तोहि।
अंतर सित वाहिर सुरंग, हियके नैंननि जोहि ॥२८॥
जाके उर कछु प्रीति है, कहत न अधिक बनाइ।
जैसे लहरि समुद्र की, फिरि फिरि तहीं समाइ ॥२९॥
रति लंपट रस हेत ही, अति अधीन ह्वै जाइ।
मधुर बचन सब कपट के, कहत बनाइ बनाइ ॥३०॥
अबतौ कीनौ नेम यह, चलौं न तिनकी गैन।
कैसौ हँसिबो बोलिबौ, सनमुख करौं न नैंन ॥३१॥

॥ श्री लालजी के वचन–दोहा ॥

तुम प्रवीन सब अंग में, ऐसी जिय न विचार ।
तासों ऐसी चाहिये, तन मन जो रह्यौ हार ॥३२॥
कैसे कै सहि जात है, नेक रुखाई भौंहँ ।
याते नाहिन और दुख, प्यारी तेरी सौंहँ ॥३३॥
जो जानत अपराध कछू, दीजे दंड विचारि ।
भुजन बांधि रद अधर धरि, नख छद करि सुकुँवारि॥३४॥
तुम जीवन भूषन प्रिये, तुम ही हो निज प्राँन ।
और करहु जो रुचै सब, विचि जिनि आनौ माँन ॥३५॥
सोरठा—मेरे है गति एक, तुम पद पंकज की प्रिये ।
अपने हठ की टेक, छाड़ि कृपा करि लाड़िली ॥३६॥
दोहा—मोहन के मोहन वचन, सुनि मोहनी मुसिकाइ ।
प्यारो प्यारी प्यार सौं, ढरकि लियो उर लाइ ॥३७॥
जब देखै खेलत हँसत, रसमें दोऊ सुकुँवार ।
हित ध्रुव तेहि छिन सखी सब, करत प्राँन बलिहार ॥३८॥

इति श्री मान लीला संपूर्ण की जै जै श्री हित हरिवंश ॥ ४१ ॥

॥ अथ श्री दान लीला प्रारंभ ॥

दोहा—एक समैं उर सखिनि कैं, बाढ़्यौ आनंद मोद ।
देखैं लाड़िली लाल की, लीला दान विनोद ॥१॥
वंशीवट तट हंसजा, सघन कुञ्ज की खोरि ।
दानी ह्वै ठाढ़े भये, नागर नवल किशोर ॥२॥
भांति रंगीली सखिनु जुत, नवल छबीली बाल ।
आइ गई तेहि छिन तहाँ, मत्त गयंदनि चाल ॥३॥

सरकि लाल ठाढ़े भये, ललिता लई बुलाइ ।
दान हमारौ लगत कछु, कहौ प्रिया सौं जाइ ॥४॥
ललिता ललित प्रवीन अति, बीचहि उत्तर दीन ।
नई रीति कबतें गही, यह सिखवलि किन दीन ॥५॥
कहौ दान कबही भयौ, कहत न आवत लाज ।
यह वन राधा कुँवरि कौ, इक छत राजत राज ॥६॥
उलटी कैसे होत है, छाड़हु अधिक सयान ।
ठकुराइत जिनकी तहाँ, तिन पै माँगत दान ॥७॥
दान दान तुम कहत हौ, सुन्यौ न कबहूँ काँन ।
इहि ठाँ विन कुंजेश्वरी, नहि काहू की आन ॥८॥
बहुत मोल की सौंज ले, इहि मग आवत जात ।
यह तौ हम साँची कही, तुम काहे अनखात ॥९॥
ललिता तुम मानत नहीं, जे हम कहत जु बैंन ।
नवल किशोरी रूप के, दिनही दाँनी नैंन ॥१०॥
इक इक मुक्ता मांग के, झलकत विमल अमोल ।
नासा पर वेसरि लसै, कुण्डल तरल कपोल ॥११॥
हीरा हार हमेल वर, मुक्तनि माल रसाल ।
अंगद पहुँची मुद्रिका, कटि तट किंकिनि जाल ॥१२॥
जेहरि पाइल अति बनी, बिछिया अनवट नीक ।
झलकि रही नख चंद्रिका, ह्वै गये बिधु सत फीक ॥१३॥
नैंन सिखा नासा श्रवन, लै आये दिन दाँन ।
अब तू विच ह्वै धाइ सखि, राखि हमारौ मान ॥१४॥
तब ललिता हँसिकै कह्यौ, सुनहु रसिक मन जाँन ।
यह रस तौ तब पाइयै, जौ हारौ निज प्राँन ॥१५॥

चरन गहौ विनती करौ, आगे दोऊ कर जोरि।
अति भोरी है लाड़िली, लेहु लाल मन ढोरि ॥१६॥
पिय प्रवीन रस प्रेम में, कह्यौ सहचरि कौ कीन।
दान मान बल छाड़िकै, सीस पगन तर दीन ॥१७॥
लये अंक भरि लाड़िली, मृदु भुज ग्रींवां मेलि।
फूले कुञ्जनि कुञ्ज में, करत रंगीली केलि ॥१८॥
विविधि भांति रति दान दै, पोषे पिय के प्राँन।
अति उदार मुसिकाइकै, देत अधर रस पाँन ॥१९॥
जुरि मुरिकै उरसौं घुरी, सोभित सहज सिंगार।
मानौ पिय पहिरयौ हियै, रति विलास कौ हार ॥२०॥
जो रस उपजत दुहुँनि में, प्रेम रंग सुकुँवार।
प्रेमी रंगी निज सहचरी, निरखत प्रेम विहार ॥२१॥
नित उठि जो गावै सुनै, यह लीला रस रूप।
हित ध्रुव ताके हिय कमल, उपजै प्रेम अनूप ॥२२॥

॥ इति श्री दान लीला सम्पूर्ण की जै जै श्रीहितहरिवंश ॥४२॥

इति श्री हित गोपीनाथ गोस्वामीजी के कृपापात्र श्री ध्रुवदासजी कृत
बयालीस लीला सम्पूर्ण की जै जै श्री हित राधे ॥



॥ विषयानुक्रमणिका ॥

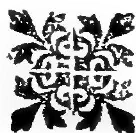
॥ कवित्त ॥

जीवदसा गाय सब जीवनकी अविद्या ढाय, वैदक सुनाय भव रोग सो नसाये हैं। पुष्टतादै मनशिक्षा भाषी है भाषा बृहद, बावन पुरान नित्य वस्तु परसाये हैं॥ सिद्धांत विचार भक्त नामावलि हियेधारि, प्रीति चौवनी अष्टक जुगल लखाये हैं। भजन कुंडलिया त्यौं भजन सतहू तैसें, वृंदावन सत हित ख्याल हुलसाये हैं॥ १॥

सिंगार सतहित सिंगार मणि सिगार, आनंद दसा रसानंद रंग हुलसायो है। रसमुक्तावली रसरत्नावली प्रेमावली, रसहीरावली सभा मंडल रचायो है॥ निर्त्तविलास रहसमंजरी मंजरी रतिनेह मंजरी यों मञ्जरी सुख बढ़ायो है। रंगविनोद रंगविहार त्यौं बन विहार, रस विहार जुगल ध्यान मन भायो है॥ २॥

आनंदलता रहस्यलता अनुरागलता प्रेमलता, प्रियाजू के नामन की माला है। दानलीला मानलीला ब्रजलीला ऐसे मिलि, बयलीस लीला पद्यावलिहू रसाला है॥ टीका हितवानी की सुवानी ध्रुवदासजू की, वृंदावन बसिवे कौ बानक विशाला है। करत निहाला सद प्रीति की प्रनाला हद, परमकृपाला सब जग प्रतिपाला है॥ ३॥

॥ इति विषयानुक्रमणिका ॥



❀ श्रीराधावल्लभोजयति ❀

श्रीध्रुवदासजी कृतपद्यावली

॥ राग ललित ॥

प्रगटित श्रीहरिवंश सुधाकर। प्रचुरित विशद प्रेम करि दिशि दिशि नसत सकल कर्मादिक तिरपर ॥ विकसत कुसुद सुयश निज संपति सरस रहसि युत अमीं अवनि पर। करत पान रस रसिक भृंगहवै हित ध्रुव मन आनंद उमगि भर ॥ १ ॥

॥ ललित ॥

श्री व्यास सुवन तन मन बच भजिरे। लोक ग्यात कुल वेद कर्म व्रत साधन सकल धर्म तू तजिरे ॥ अद्भुत अनुपम श्रीबृन्दा-वन तिनमें वसौ लसौ नित गजिरे। नव निकुंज में दंपति संपति नीकें लै अघाय ध्रुव सजिरे ॥ २ ॥

॥ श्रीप्रियाजीकी नामावली ॥

॥ राग गौरी ॥

ललित रँगीली गाईये। तातें प्रेम रंगरस पाईये ॥टेक॥ राधा गोरी मोंहनी नवल किशोरी भांम। नित्य विहारनि लाड़िली अ-लवेली वर वांम ॥१॥ श्यामा प्यारी भांवती नागरि परम उदार। वृंदा विपिन विनोदनी कुंजनि मणि सुकुंवार ॥ २ ॥ मृगनैनी गजगामिनी पिकवैनी नववाल। अति सुंदर मृदु हासनी चंचल नैन विशाल ॥ ३ ॥ कुंज कामिनी भामिनी छवि दामिनी अ-नूप। पिय हिय मोद प्रकासनी चंद वदनि रसरूप ॥४॥ रसिक

रँगीली रँगभरी रही लाल उर पूरि । पियहि लडावनि सुख लड़ी प्रीतम जीवन मूरि ॥५॥ मन हरनी सुठि सोहनी नवल छबीली भांति । वृन्दावन जगमग रह्यो अंगनि की छबि कांति॥६॥कुंज विलासनि दुलहिनी आनंद रूप निधान । सखियनि मोद बढ़ावनी पिय प्राननि के प्रान ॥७॥ हित ध्रुव यह नामावली जो करि है उरमाल। ताके हियें दिनही बसैं नेही मोहनलाल ॥८॥३॥

॥ श्रीलालजी की नामावली ॥

॥ रागगौरी ॥

लाल रँगीलो गाईये । तातें प्रीत रँगीली पाइये ॥ टेक ॥ श्री राधावल्लभ लाडिलो दूलह नित्य किशोर । कुंजबिहारी भांवतो सुख प्यारी चंदचकोर॥१॥ रसरँगी राधा धनी राधाधव सुकुंवार। कुंज रवन शोभा भवन बर सुन्दर सुघर उदार ॥ २ ॥ रसिक रँगीलो रँगमग्यो श्रीबृन्दावन चंद । विपिन विलासी छबि चहा पिय राधा आनँद कन्द ॥ ३ ॥ रसिक मौलि आनन्द मणी मोहन कृष्ण कृपाल । सहज सलोनो सांवरो अंबुज नैन बिशाल ॥ ४ ॥ हित ध्रुव यह नामावली मन गुनसों लै पोइ। ताही की रसना रटै कुंवरि कृपा जब होइ ॥ ५ ॥ ४ ॥

॥ राग भैरों ॥

सोवत भोर लाडिली लाल। भूषण शिथल भए अँग अँग के अरुझि रहीं कंठनि पर माल ॥१॥ अंचल नील बदन विवि ऊपर निरखत लोचन हियो सिरांत । तन न सँभार रैन सब जागे सुरति केलि कीनी बहु भांत॥२॥ यह सुखसार निहार नैंन भर वेपथ

भई सखीं सब गात। हित ध्रुव कंठ प्रेम जल रोक्यौ सुख निसरत नांहिन कछु बात ॥ ३ ॥ ५ ॥

॥ राग बिलावल ॥

भोर मृदुल तलप ऊपर बैठे उठि दोऊ रति विलास चिन्ह निरखि नैंननि मुसिकाने। सुरंग पीक गंडनि पुनि अंजन पिय अधर और उरजनि फबि रहे अंक नवल नख निवाने॥ भूषन पट शिथल अंग बिथुरे कच कछुक मंग रही अरुण नैंन बैंन आरस रस साने। यद्यपि निशि इहि विहार सार सुखमैं वितई सब हित ध्रुव उर दंपति तऊ नाहिन्ने अघाने ॥ ६ ॥

राजति कुँवरि परम सुकुँवारि। भोर कुञ्ज तें निकसि खरी भई रुचिर बाहु पिय अंशनि डारि ॥ १ ॥ कवरी शिथल सकल अंग भूषण लटकि रही प्रीतम उर लागि। सुरत सरस रंगभरी लाडिली आरस मैं राखी मनो पागि ॥ २ ॥ मुद्रित होत नैन छिनही छिन रैंन जगी तातें अधिक जँभाति। हितध्रुव यह सुख निरखि मुदित मन सहचरि दै चुटकी बलिजाति ॥ ३ ॥७॥

भोर खरी आरस अरसानी। रसिकलाल के उर लपटानी ।१। अरभि अलक बेशरि सौं सोहै। पिय किशोर नैंननि छबि जोहै ॥ २ ॥ अंग अंग सुरत रंग रस पागे। अरुन नैंन घूमत निशि जागे ॥३॥ कंचुकी दरकि रही बंद टूटे। गिरत कुसुम राजत कच छूटे ॥ ४ ॥ अधरनि अंजन पीक सुरंगा। लगी है कपोल सुकेलि अनंगा ॥५॥ छिन छिन मुरि मुरि लेत जँभाई। हित ध्रुव दै चुटकी बलिजाई ॥ ६ ॥ ८ ॥

आवत लाल प्रिया भुज जोरें। डगमगात आरस रसभीने अति सुरंग नैंननि की कोरें॥ चितवनि सहज चारु अति चंचल

मुसिकनि मंद मिथुन चित चोरें। हितध्रुव निरखि रसिक ललितादिक डारति वारि प्रान त्रण तोरें ॥ ६ ॥

प्यारी लाल ठाढ़े हैं आरस भीने हँसत नैंननि निशि के चिह्न देखैं। परे हैं पलटि पट भूषण अंगनि राजत उर नख रेखैं॥ गंडनि पीक सोहत कहुँ अंजन छूटे वार हार अरुझे रुचि बाढ़त पेखैं। हित ध्रुव अवलोकत सहज सुख दोऊ लागत पल न निमेखैं १०

॥ चर्चरी ॥

विहरत वरजोर भोर नवल कुन्ज सघन खोरि खिसत नील पीत छोर लसत अंगरी। पागे रस रंग मैंन जागे निशि अरुण नैंन रही गंड पीक लीक अति सुरंगरी॥ गहैं लाल मनु मृणाल प्रिया बाहु मृदु रसाल चलत मंद मंद चाल ज्यौं मतंगरी। आरस अतिही जँभाति हित ध्रुव द्रुति दसन पांति निरखि निरखि हियो सिरात छवि तरंगरी ॥ ११ ॥

रूपराशि करत हासि समर सहज निशि विलास नवल कुंज कुंज तरैं विवि किशोररी। पागे रति अंग अंग उठत अधिक छवि तरंग अधर पीक भए सुरंग नैंन कोररी॥ बिथुरी अलकें रसाल खंडित उर जलज माल शिथल नीवी तिलक भाल लसत थोररी। निरखि निरखि बदन झलक लागत नहिं नेक पलक मोहित ध्रुव सहचरि भई गति चकोररी ॥ १२ ॥

॥ राग टोडी ॥

रँग मगे रंग महल तें आवत भोरहीं रति विहार सुख कियें। चलत डिगत घूमत प्रीतम दोऊ अति उनमत्त महारस पियें॥ कछु मुसिकात आरस भरे नैंननि सुमिर समर अंशनि भुज

दियें। यद्यपि सुख जामिनि जगि विलसे हित ध्रुव तृपिति नाहिं तऊ हियें ॥ १३ ॥

॥ राग रामकली ॥

रति के रंग तरंगनि मैं सखि भीजे लालबिहारी । मुख पानिप अवलोकि प्रियाकी गहि गहि चिबुक कहत हाहारी ॥१॥ चंचल नैंन नासिका मोती सब अंग चंचलतारी । श्रम जलकन तन मानौ रसकी प्रगट भई वरषारी ॥२॥ अंचल पवन करत अपने कर जानी कुंवरि श्रमित सुकुंवारी । हितध्रुव तिहिं छिनकी सोभा पर सहचरि प्रान करति बलिहारी ॥ ३ ॥ १४ ॥

॥ राग विभास ॥

अलक लड़े दोऊ नवल किशोर । अलक लडी गति आवत सखीरी सघन नवीन कुंज तें भोर ॥ १ ॥ विथुरे वार हार उर अरुझे शिथल पीत नीलांचल छोर । सहजही रूप पुंज मन मोहन अति प्रवीन प्राननि के चोर ॥ २ ॥ रही लटकि सखी सुरंग पाग पर सुभग चंद्रिका मोर । झलकत सीसफूल नकवेसरि वदन मिथुन सोभा नहिं थोर ॥३॥ छिन छिन रोम रोम छबि नौतन तृषित नैंन चितवत विवि ओर । हित ध्रुव नवल कुँवर रस रंगी अद्भुत गौर स्याम वर जोर॥ ४ ॥ १५ ॥

॥ इति श्री मङ्गला समय ॥

॥ अथ शृंगार समय स्नान को पद ॥

॥ राग आसावरी ॥

कौन भांति मुसिकात रँगीली दुरि प्रीतम तिहिं छबिहि निहारत । निरखत रूप प्रकाश माधुरी रीझि प्रान तन मन

धन वारत ॥ १ ॥ चहुँ दिशि सखी सहचरी जे निज सादों कछु सिंगार विचारत । प्रेम चाइके रंग रंगी सब एक हार अरुझे निरवारत ॥ २ ॥ इक सोधो फुलेल लियें ठाढ़ीं एक फूलसों केश सँवारत। मज्जन करि पहिरे पट भूषण छिन छिन प्यार सों पियहि सँभारत ॥ ३ ॥ हिय को प्रेम समझि रस नागर चरणनि चूंवत अखियनि लावत। हित ध्रुव प्रीति परस्पर ऐसी ये उनकों वे इनहिं लड़ावत ॥ ४ ॥ १६ ॥

कुञ्ज सदन में प्यारो प्रिया की बैनी गूंथत माई। फूले अधिक समात न तन मन टहल भांवती पाई ॥ १ ॥ रचि रचि सुमन गहर सों वानत जैसें पहुंचन जाई। परम चतुर वर नवल रसिक पिय तिहिं रस रहे लुभाई ॥२॥ सहचरि एक मुकर लै ठाढ़ी बाढ़ी झलक सुहाई। हित ध्रुव यह सुख अखियां हीं जानत कैसे कहौं समझाई ॥ ३ ॥ १७ ॥

रंग महल में बैठे प्रीतम करत सिंगार प्रिया को माई। रचि रचि मंग सुरंग तिलक बिच बेंदी लाल अनूप बनाई ॥१॥ रतन खचित ताटंक श्रवन युग नाशा पुट मृदु वेशरि वानी। चिबुक कपोल स्याम बिंदु दीनौ तापर अलक भेद सौं आनी ॥ २ ॥ चंचल नैननि अंजन दै पिय अनी रेख रचि पचिकैं कीनी। निरखि मुकर हँसि रीझि प्रिया तव नवल लाल मुख वीरी दीनी ॥ ३ ॥ नख सिखलौं भूषण पहिराए चरण चित्र जावक के कीने। हित ध्रुव सीस परसि पद कमलनि निरखत रूप मुदित रस भीने ॥ ४ ॥ १८ ॥

॥ राग टोडी ॥

सुरंग कसूंभी सारी पहिरें रँगीली प्यारी आजकी छबीली

छबि जात न बखानी है। सोंधे सगबगे बार बन्यौ है सादौ सिंगार जगमग रह्यौ वेंदी स्याम सखी बानी है। वेशरि कौ मोती सोहै चितवनि मन मोहै वरषत सोभा फूल जब मुसिकानी है। हित ध्रुव प्रेम पगे तिनही के रंग रँगे ठाढ़े हैं बिहारीलाल लियें पीक दानी है ॥ १९ ॥

॥ राग सारंग ॥

श्रीराधावल्लभलाल की आरती। रतन जटित कंचन की मणिमय हितसौं सहचरि वारती ॥ अंग अंग की आभा झलकत अद्भुत रूप निहारती। हित ध्रुव सखी प्रेम की सींवा कैसेहूं पलक न टारती ॥ २० ॥

आरती राधिकालाल पर वारौं। सहज अति चारु प्रति अंग भूषण झलक माधुरी रूप नैंननि निहारौं ॥ कोटि रति काम विवि रूप अभिराम पर कोटि रति इन्दु पग नखनि पर टारौं। दिनहि सुख राशि मृदु हासि ध्रुव निरखिकै सहज ह्वै नैन मन वारि तन डारौं ॥ २१ ॥

॥ राग धनाश्री ॥

हँसि हँसि कुँवरि कुँवर मन मोहै। सहज सुदेश सुरंग अधर छबि दसन स्याम चौका सित सोहै ॥१॥ झलकत कनक कंज मुख प्यारी नव सत अंगनि अंग सँवारे। अति कोमल नाशा पुट सोभित मुक्ता तरल नैन अनियारे ॥ २ ॥ अलक चिबुक सांवल बिंदु ऊपर भए लट्टु पिय पट नैन विसारे। नव नव छबि निरखत मनमोहन हित ध्रुव प्रान प्रिया कर हारे ॥ ३ ॥ २२ ॥

सीतल भए नैंन छबि हेरें। हँसत कुँवर दोऊ रँगे प्रेम रँग निकसे आय निपटही नेरें ॥ चाहन चपल कमल दल नैंननि

त कंज कर फेरें । सुनत श्रवन नूपुर ध्वनि जहां जहां ७।१।। मयूर हंश कल टेरें ॥ २ ॥ अंग अंग सोभा अवलोकत रही न तन मन कछु सुधि मेरें । नहिं सुहात सखि और निसि दिन यह हितध्रुव अखियनि माहि रहे रें ॥ ३ ॥ २३ ॥

॥ राग काफी ॥

लाडिलीलाल रसाल रँगीले विहारहीं । अद्भुत रूप अनूप सखी जु निहारहीं ॥ १ ॥ निर्त्तत रास विलास मोंहन संग मोंहनी । राख्यौ रंग अपार छबीली सोंहनी ॥२॥ रीझिलाल रस भीजि महा सुख पावहीं । हित ध्रुव सर्वसु वारि पगनि सिर लावहीं ॥ ३ ॥ २४ ॥

॥ राग सुघराई ॥

आज बने नव रंग बिहारी । सकल अंग भूषन प्यारी के पहिर सुरँग तन सारी ॥ १ ॥ श्रुति ताटंक मांग मोतिनु युत कुम् कुम् आड सँवारी । अंजन नैंन लसै नक बेशरि चिबुक बिंदु छबि न्यारी ॥ २ ॥ दुलरी जलज पीत उर अँगिया करनि बनी बलि-यारी । हँसत मंद अंचल मुख दीयैं आरसी जबहिं निहारी ॥३॥ निरखत अंग अंग की सोभा नैंन निमेष विसारी । हितध्रुव भई अधिक छबि तनकी करत वेश सुकुमारी ॥ ४ ॥ २५ ॥

॥ राग नट ॥

लालहि और न कछू सुहाई । निरख्यौ चाहत दिनहि प्रियाकौ सुन्दर मुख सुखदाई ॥ १ ॥ जे पट भूषण कुमरि उतारत तेई पहिरे भावत । वीरी खंड देत जब नागरि तबहीं पै सचु पावत ॥ २ ॥ परिमल उवट अंग जो वाचत सोई आप लगावत । जिहि मग चलति लाडिली राधे लोचन अवनि बनावत ॥ ३ ॥ इहि रस

मगन रहत सुनि सजनी और न मन उर आवत। हितध्रुव विकट बात अति प्रेमकी बिन मोहन को जानत ॥ ४ ॥ २६ ॥

लाल कैं यह मन ललकि रहै। कबहूं प्रिया प्रसन्न बदन ह्वै मोतन नेक चहै ॥१॥ अरु युग चरण चारु जावक के चित्र सुरंग बनाऊं। पुनि अनुराग कमल मुखतें जब वीरी खंडित पाऊं ॥२॥ अपनें ही करकै नख सिखलौं भूषन बसन बनाऊं। हितध्रुव अह निशि यहै बिचारत कैसेहुं प्रियहि रिझाऊं ॥ ३ ॥ २७ ॥

देख पिय नैन भरे आनंद। प्रिया बदन अंबुज तें पीवत मनौ मधुप मकरंद ॥१॥ रहित निमेष इकटक ह्वै चितवत इंदु सहस छबि ओर। करत पान रस सुधा माधुरी मानो उभय चकोर ॥२॥ इहि विधि मुदित प्रेमरस भीने छिन छिन रुचि उपजात। हितध्रुव मनहु रूप स्वांति जल चातिक चख न अघात ॥ ३ ॥ २८ ॥

॥ राग सारङ्ग ॥

अति विचित्र नवल कुँवर राजत हैं दोऊरी। सघन कुंज मैं खेलत ढिग सहचरि नांहि कोऊरी ॥१॥ कहि कहि कछू बात हँसिजात मुदित रँग भीनेरी। झलकत विवि वेशरि छबि प्राँन चोर लीनेरी ॥२॥ कुँवर उरज परसन हित जबहिं उर बिचारेंरी। कुँवरि अति प्रवीन तबहि नीलपट सँभारेंरी ॥ ३ ॥ इहि विधि घन लतनि रंध्र मगन सखी देखैंरी। हितध्रुव तिहिं सुखमै मगन नैंन सफल लेखैंरी ॥ ४ ॥ २६ ॥

सोभित आज छबीली जोरी। सुंदर नवल रसिक मन मोहन अलवेली नव वैस किशोरी॥ वेशरि उभय हँसन में डोलत, सो

छबि लेत प्रान चित चोरी। हित ध्रुव फंदी मीन ये अखियां निरखत रूप प्रेमकी डोरी ॥ ३० ॥

तैं जु लाल कैं बेंदी दीनी रचि रुचिसौं रँग भीनी। मणि अनुराग भाग की मानो प्रगट भाल पर कीनी॥ मुकर निहारि रीझि हँसि प्रीतम प्रिया अंक भरि लीनी। हित ध्रुव रस बस नागर दोऊ छिन छिन प्रीति नवीनी ॥ ३१ ॥

नवल चंद प्रिया बदन अनूप रूप सदन हँसन नवल मंद चपल चितवन सुखदाई। नवल अधर सरस लाल दसन झलक छबि रसाल छिन छिन छबि होत नवल मनहि ठहराई॥ निरखत सोभा गंभीर बिसरे पिय नैन चीर मनहु कमल रहे फूलि तरणि उदय माई। नवल प्रिया नव किशोर नवल सखी चहूँ ओर नवल विमल प्रेम ऊपर हित ध्रुव बलि जाई ॥ ३२ ॥

राजत बदनारबिंद लसत चिबुक चारु बिंदु निरखि सरस हास मंद हियो सिरांतरी। भूषण दुति अंग अंग मनहु रूप दधि तरंग अधरनि तें भये सुरंग दसन पांतरी ॥१॥ गूंथित अति रुचिर केश लटकत बेनी सुदेस सुन्दर छबि सहज वेश कहि न जातिरी। चंचल लोचन बिशाल कुण्डल मणि जटित लाल गंडनि पर बनी रसाल तरल कांतिरी ॥२॥ झलकत आनंद रूप नासा छबि जलज भूप डोलत अतिहीं अनूप रुचिर भांतिरी। हित ध्रुव अलि लाल नैंन पायो सुख कमल ऐंन वसत अहरु रैन होत छिनन हांतरी ॥३॥३३॥

हौं निज सखियनि की बलिहारी। युगल प्रीति अरु रूप जिनहिं के जीवन यहै सुधारी॥१॥ नैंननि मग ह्वै पान करत छिन तिहिं रस मैं रहें लीन। सहि न सकत पल पलक न अंतर

जैसें जल तें मीन ॥२॥ छिन छिन नवल पिया सुख चाहत और न मन कछु भावत। हित ध्रुव जिहिं बिधि रुचि प्यारी मन तिहिं तिहि भांति लड़ावत ॥३॥३४॥

रसिक रँगीले मन हरयो श्रीराधा बल्लभ लाल। सखीरी युगल यूथिका की बनी उर वैजन्ती माल ॥ १ ॥ भीने रंग सुरंग मैं दोऊ नवल किशोर। खेलत नवल निकुञ्ज में चोरत चित चख चोर ॥ २ ॥ सखी री नील पीत पट अति बने सोभित भूषण अंग ॥ लसत सीस पर चंद्रिका दमकत मोतिनु मंग ॥ ३ ॥ कुण्डल खुभी बिराजहीं श्रवणनि अति छबि देत। झलकत ओप कपोल की सुन्दर अलक समेत ॥ ४ ॥ बेशरि उभय सुभग बनी झलकत जलज सुदेश। नैंन तृपिति नहिं मानहीं निरखत मोहन वेश ॥ ५ ॥ झलकत कटि तट किंकिनी मोहत मृदु गति चाल। हँसनि मंद मन बसि रही चितवन चपल रसाल ॥ ६ ॥ मृदुल अंग बर सुन्दरी गहैं कुँवर भुज मूल। विहरत अति अनुराग सों दिन मणि तनया कूल ॥७॥ मधुर चारु स्वर गावहीं सुन्दर बर सुकुँवार। खग कुरंग सब मोहिये ढरत नैंन जलधार ॥ ८ ॥ नवल सखीं सब सोहईं प्रेम मत्त रस लीन। मिथुन रूप रस सिंधु में रहत दिनहि ज्यों मीन ॥ ९ ॥ अति अपार छबि अंग की बरनत बनै न बैन। हित ध्रुव सुख मुख कंजको जानत हैं अलि नैंन ॥१०॥३५॥

॥ राग धनाश्री ॥

राजति राधा नागरी सुन्दरता की रासि। निरखत पिय मोहे सखी सहज मंद मृदुहासि ॥ हो रसिक रँगीली सोहनी मेरी नवल छबीली मोहनी ॥टेक॥ अंग अंग भूषण बने सुन्दर

नील निचोल। रतन कनक कुण्डल खचे तरलित रुचिर कपोल॥१॥ लटकत ललित सुहावनी वेंनी गूंथिन केश। मृग मद तिलक जु अति लसै बेंदा मध्य सुदेश ॥ २ ॥ नैंन चपल अति सोहई उज्वल स्याम सुरंग। चितवन पर वारौं सखी खंजन मीन कुरंग ॥ ३ ॥ अलक जलद छबि ऊनई दसन वीज चमकाँत। अधर स्वांति रस बरषई पिय चातिक न अघात ॥४॥ नासा पुट बेशरि बनी झलकत जलज सरूप। दसन बसन प्रतिविंव तें सोभित सुरंग अनूप ॥ ५ ॥ चिवुक स्याम विंदु सहजहीं निरखत अति सुख देत। मनो मधुप मन पीय कौ बदन कंज रस लेत ॥ ६ ॥ कंठ वृन्द मुक्तावली सोभित नग मणिलाल। कर वलया कटि किंकिनीं अंगद बाहु मृनाल ॥ ७ ॥ त्रिबली उदर तरंगनी नाभि रूप रस ऐंन। नवल रसिक पिय लाड़िलौ करत पान दिन रैंन ॥८॥ जेहर पायल अति बनी नूपुर युति अभिराम। चलत रुचिर सुनि राव पर बंशी वारत स्यांम॥९॥ इंदु कोटि नख सम नहीं कहां लग कहौं बखान। सहज सुभगता अंग की बनत न उपमा आन ॥ १० ॥ चरण चारु विवि सोहने चित्रित जावक रंग। हित ध्रुव नैननि में बसो सो छबि दिनहि अभंग ॥ ११ ॥ ३६ ॥

॥ राग ईमन ॥

प्रीतम के प्रान प्यारी प्यारी जीके प्रान पिय प्रेम रासि एक रस दोऊ छबि देखहीं। तृपित न होत क्यों हूं बढ़त अधिक रुचि छिन छिन चौंप नई लागै नैनन निमेष ही। रीझि रीझि रँग भरे उमगि लोइन ढरैं अंक अंक रहे भरि

बिवस बिशेष हीं। हित ध्रुव यह गति हेरि कै मगन भई सखी सब ऐसें रहीं मानौं चित्र रेख हीं ॥ ३७ ॥

राधिका बल्लभ प्यारी सोहै तन नील सारी सोंधे भीजी अंगिया सुदेश कसिकै तनी। अंग अंग सुमिलि सुभूषण सुदेश अति नील मणि पदिक की सोभा कंठ ते बनी ॥ नवल चपल अनियारे कजरारे नैंन महा मैन मन हरयौ नेकहीं की चितवनी। लटक्यौ मुकट और खसि परयो पीतपट हित ध्रुव अंक भरे गज गति गवनी ॥ ३८ ॥

राधिका बल्लभ प्यारी सहजहीं सुकुँवारी अंग अंग गुण निधि रूपरासि रसकी। सलज सुरंग सित असित दीरघ दृग चितवन सहजहीं सुखद सरसकी ॥ सारी नील रही फबि भूषण झलक छबि हरै दुति दामिनी अरु भान कोटि दसकी। प्रीतम किशोर जूके लोइन चकोर भए चितवन हित ध्रुव सोभा नख ससिकी ॥ ४० ॥

नवल चपल कजरारी अँखियनि चितै हँसी सुरिकै कछु पिय तन। सरस कनक अंबुज विकसतहीं निकसत अलि मुद्रित मनौ तिहिं क्षन ॥ रहे चकित लाल बाल मुख चितवत पल पल प्रति उपजत सोभा गन। हित ध्रुव दिनहीं लाल रासि रस लोभी तिहिं बिन और सुहात न कछू मन ॥ ४१ ॥

तेरे नैंन देखत नैंन भूले उपमा कही न जाय। मोहि रहे बिसरी सुधि तनकी रूप तरंग रहे हिय छाय ॥ परम प्रवीन प्रेम रँग सींवा रुचि लियें चितवत मोहन भाय। हित ध्रुव रीझि रसिक रँग भीने पाय पाय सुख चुम्बत पाय ॥ ४२ ॥

॥ राग केदारौ ॥

नवल कुँवरि मुख कमल रूप रस करत पान नागर नैंना अलि। त्रिपित होत नहिं नव नव भाइनु अटके सकत न इत उत कहूं चलि ॥ परत न पलक अलक छबि निरखत बेंदी भाल कंठ मुक्तावलि। हित ध्रुव चाहत यहै रहै अब नाशा मूल कपोल चिबुक रलि ॥ ४३ ॥

प्रिया मुख निरखत नवल किशोर। मनहु सहज राकेश असी प्रति चितवत चकित चकोर ॥ छिन छिन नई नई छबि उपजत पल पल मैं रुचि और। हित ध्रुव बसौ कुँवर उर ऐसैं परम रसिक सिर मौर ॥ ४४ ॥

॥ राग मारू ॥

एरी हौं दंपति रंग रँगी ॥ प्यारौ प्यारी के प्रेम रँग्यौ रहै रूप लुभाई। विकच कनक कंज बदन निरखत न अघाई ॥१॥ अलक एक वेशरि सौं अरभी जब आई। अवलोकतहीं प्राण वारत नवल रसिक राई ॥२॥ पिय किशोर ओर जबहि चितवति मुसिकाई। बिवस होइ रहत सीस चरणनि सौं लाई ॥३॥ अति अभूत दशा देखि भरे अंक धाई। मिथुन कुँवर नेह सखी कैसे हूं कह्यौ न जाई ॥ ४ ॥ भई अधीर चितै सखी सुख समुद्र पाई। रह्यौ प्रेम नीर सबहिनु के नैननि झलकाई ॥५॥ धरैं धीर क्यों न चित्त निरखौ छबि माई। हित ध्रुव भई मगन आप सखियनि समझाई ॥ ६ ॥ ४५ ॥

जब चितई कजरारे नैंननि ॥ बिवस भये मनमोहन घेरे चहूं ओर तें प्रेम के मैंननि। मुसिकनि मंद रहे चितवत हीं

वस किये लाल मधुर मृदु बैननि ॥ हित ध्रुव रज बंदत अति प्यार सौं धरति चरण प्यारी जिहिं गैंननि ॥ ४६ ॥

॥ राग बिहागरौ ॥

मनमोहन मनमोहनी ॥ चितवन मुसिकनि सहज रँगीली अतिही छबीली सोहनी । कहा कहौं रँग प्रेम की सींवा पियतन प्यार की जोहनी ॥ हित ध्रुव मनहु सुधारस ढारत आनन्द सौं पति रोहनी ॥ ४७ ॥

॥ राग बसंत ॥

राजत श्रीबृंदाबन श्रीनव निकुञ्ज । तहां मधुप करत अनुराग गुञ्ज ॥ टेक ॥ गोर श्याम छबि नवल रास । आई ऋतु बसंत भयो हिय हुलास ॥ चंदन बंदन मथि सुवास ॥ दोऊ छिरकत हँसि हँसि करैं बिलास ॥१॥ नवल नवल सखी यूथ संग । कर एकनि बीना डफ मृदंग ॥ लियें एक गुलाल सुरंग रंग । भए सुरंगित बसन सुदेश अंग ॥ २ ॥ निर्त्तत रसिक किशोर जोर। छबि निरखि थके चहूँ ओर मोर ॥ वंशी रव सुनि श्रवन थोर। खग कुरंग बँधे प्रेम डोर ॥३॥ कुम कुम जल कन तन सुदेश। फबि रहे कुंचित रुचिर केश ॥ हित ध्रुव निरख अनूप वेश । कछु कहि न सकत छबि छटा लेश ॥ ४ ॥ ४८ ॥

॥ राग आसावरी ॥

देख सखी नव कुञ्ज राधा लाल बनेरी । रङ्गमगे अंगनि चीर प्रेम सुरङ्ग सनेरी ॥१॥ मोर चंद्रिका सीस बेंनी ललित गुहीरी । वरन वरन बहुरंग मेदिनी चंप जुहीरी ॥ २ ॥ कुम कुम तिलक सुचारु मृग मद आड़ करीरी । बेंदी मध्य सुदेश मोतिनु मांग

भरीरी ॥ ३ ॥ कुंडल कल तांटंक गंडनि झलक सुहाई। बरषत मनो छबि रङ्ग अधरनि की अरुनाई ॥४॥ नाशा जलज अनूप वेशरि सुभग बनीरी। चंचल नैंन बिशाल अंजन रेख ठनीरी।५। करि खोडश सिंगार सखियनि अधिक बनाए। भांतिभांति के लाड़ लाड़िली लाल लड़ाए ॥६॥ खेलत दोऊ जन फाग अति अनुराग भरेरी। करत चारु कलगान मानस मृगनि हरेरी ॥७॥ सोभित सखियनि वृंद मध्य किशोर किशोरी। छिरकत कुमकुम नीर हँसि हँसि पिय दिशि गोरी ॥ ८ ॥ बाजत मधुर मृदंग किंकिनि रुचिर सुनीरी। ताल वीन सुहुचंग वंशी मधुर धुनीरी ॥ ९ ॥ कंचन डफ लियें हाथ बोलत हो हो होरी। डोलत भरे आनंद दोऊ जन वाहां जोरी ॥१०॥ लटकत पहुँची चारु पटकत ज्यौं ज्यौं तारी। भीने रस अनुराग प्रीतम नवल प्रियारी ॥११॥ यह सुख अद्भुत देखि चित्त न नेक टरैरी। हित ध्रुव आनंद वारि नैंननि तें जु ढरैरी ॥ १२ ॥ ४६ ॥

॥ राग गौरी ॥

प्रथम नवल वृंदावन गाऊं अतिहीं रसाल। रंग भीने जहां खेलत राधा बल्लभलाल ॥१॥ नवल प्रिया मन उपज्यौ अतिहीं आनंद मोद। कछुक सखी न्यारी कै दीनी प्रीतम कोद ॥२॥ नवल विनोद रच्यौ है नवल तरणिजा कूल। जान फाग रितु वाढी सबहिनु के मन फूल ॥३॥ मृगमद चंदन कुम कुम वंदन अतिहीं सुरङ्ग। कनक कलशियन भरि २ लीने हैं बहु रङ्ग ॥४॥ प्रियहि भरन हित नागर आए निकटही धाय। सखियनि अंचल ओटि क लीनी कुँवरि वचाय ॥ ५ ॥ चहुँदिशि तें तव सबहिनु दियो गुलाल उड़ाय। फिरि पाछें ह्वै जव गहे रहे कुँवर सिर

नाय ॥ ६ ॥ सखी एक पिचकारी आनि प्रिया कर दीन । भरे लाल बहु भांतिनु मन भायौ सोइ कीन ॥ ७ ॥ वसन भीज लपटाने सोभा बढ़ी सुभाय। मनहु रूप रस सिंधु तें निकसे हैं दोऊ न्हाय ॥८॥ तारी तार डफ किन्नरी स्वर मंदर सुहुचंग । एकही स्वर बाजें सवै वीना मधुर मृदंग ॥ ६ ॥ नवल नवल गति निर्त्तत सहचरीं सरस सुधंग । विच लटकत दोऊ लाड़िली रंग भरे अंग अंग ॥ १० ॥ अति सुदेश पहुँचिनु के लटकन रहे सखि सोहि। ऐसी को जु न मोहै प्रानंनि यह छबि जोहि॥११॥ अति अभूत रस बाढ्यौ करत हासि परिहास । हितध्रुव नवल रँगीले दंपति सुख की रासि ॥ १२ ॥ ५० ॥

खेलत लाड़िली लाल होरी । मृगमद चंदन बंदन डारत अरु सुरंग कुमकुम घोरी ॥१॥ डफ मृदंग वीन मिलि बाजत सुदेश वंशी रव थोरी । चहुँ दिशि सखियनि मंडली निर्त्तत विच लटकत दोऊ बाहां जोरी॥२॥ अलक हार छूटे पट भूषण छुटि रही कवरी की डोरी । अति अनुराग मगन नहिं जानत श्रमित भई कछु नवल किशोरी ॥३॥ भरि लई अंक रसिक मन मोहन करत पवन निज अंचल छोरी । हित ध्रुव प्रेम सिंधु रस बाढ्यौ सहज ही मेंड़ नेम की तोरी ॥४॥५१॥

खेलत फाग अधिक छबि पावैं । नवल किशोर किशोरी रंग भरे सुरंग सुगंध गुलाल उड़ावैं ॥१॥ ताल मृदंग हुड़क डफ वीना सुघर सखीं चहुँ ओर बजावैं । लटकनि झटकनि पटकन करननि बचननि होहो होरी गावैं ॥२॥ चंदन कुमकुम मृगमद सौं मथि आपुन में छिरकैं छिरकावैं । हितध्रुव ज्यौं ज्यौं प्यारी की रुचि त्यौं त्यौं हित सौं लाड़ लड़ावैं ॥४॥५२॥

॥ राग काफी ॥

लाल लड़ैती जू खेलहीं आज होरी कौ त्यौहार हो। फूलीं संग सखीं सवै निरखत प्रेम बिहार हो ॥१॥ प्यारी पहिरें सारी केशरी दियें बेंदी लाल गुलाल हो। मोहे मोहन मोहनी चितवनि नैंन विशाल हो ॥ २ ॥ अद्भुत उड़नि गुलाल की पिचकारी धार निहारि हो। मानौ घन अनुराग के वरषत आनंद वारि हो ॥३॥ लटकनि ललित सुहावनी पद पटकनि करनि सुदेश हो। झटकनि उर हारावली ध्रुव कहि न सकत छबि लेश हो ॥४॥५३॥

॥ राग विहागरौ ॥

रंग भरे राधालाल अति रस फूले। खेलत फिरत होरी रविजा के कूले ॥१॥ गोरी गोरी सखी जेती तिन मधि गोरी। सांवरी सहेली भईं सांवरे की ओरी॥२॥ चंदन अगरुसत कुमकुमा कौ नीरा। सुरंग सुगंध बहु भांतिनु अबीरा ॥३॥भाजन विबिधि रंग भरि भरिलीने। छिरकैं घातनि तकि रसमें प्रवीने ॥४॥सुरंगित भए सो हैं अंगनि के चीरा। रंगनि की बूदें बनी सुभग सरीरा ॥ ५ ॥ हुड़क गजक बीना मृदंग स्वर साजैं। किंकिनी नूपुर ध्वनि एक स्वर वाजैं ॥६॥ निर्त्तत सुधंग अंग निज न्यारी न्यारी। गोरी औ सांवरी सखी वदि वदि वारी ॥७॥ सरस अलग लाग लेत निरधारीं। जीतीं जेहैं प्यारी तन सखीं स्यामहारीं ॥८॥ उड्यौ है गुलाल वहु रह्यो नभ छाई। छलसौं चतुर सखी लालहिं गहिलाई ॥६॥ आगें आनि ठाढ़े कीने रहे ग्रीवाँ नाई। देखत लडैंती ऐसी मुसिकाई॥१०॥वंशी पीतपट छीन चूनरी उढ़ाई। नैंननि अंजन दीनो नथ पहिराई

॥११॥ हितध्रुव अंक भरि लीने हैं किशोरी । हित सौं अधर रस देति सुख जोरी ॥१२॥५४॥

॥ राग सारंग ॥

झूलत लाड़िली लाल झुलावत देखो सखी सुख आई । नवल कुँवर प्रान प्रियहि रिझावत हैं मधुर ताननि गाई॥१॥ झोटनि कें देत माल तरल होत भूषण छबि कहत कही न जाई। नागरि अनुराग मृदुल श्रमित जान बल्लभ तब लई कंठ लाई ॥२॥ पुहुप वृष्टि करत लता मुदित हंश मोर नाचत आनंद रस पाई । मुकट मंग झलक निरखि नील पीत अंचल ध्रुव नैन रहे लुभाई ॥३॥५५॥

॥ उत्थापन समय ॥

॥ छंद चारि ॥ रागगौरी ॥

बृन्दावन सुखदाई लाल । अवनी कनक सुहाई लाल ॥ अवनी कनक सुरंग चित्र छबि कालिंदी मणि कूले । लतनि रहे बहुरंग फूल नव कंचन द्रुम मूले ॥ जलज थलज रहे विकस जहां तहां वरन वरन छबि छाई । सहज ऐंन रुचि दैंन विराजत वृन्दावन सुखदाई ॥ १ ॥ राजत नवल निकुंजें । निरखि होत सुख पुंजें ॥ निरखि होत सुख पुंज कंज दल रची है सुंदर सैंन । वहत समीर त्रिविधि गुण लीयें आकरषत मन मैंन ॥ नाचत केकी कीर पिक बोलत जित तित मधुपनि गुंजें । रतन खचित फूलनिसौं फूली राजत नवल निकुंजें ॥ करत निकुंज विहारा । सखियनि प्रान अधारा ॥ सखियनि प्रान अधार रसिक वर नवल किशोर किशोरी । हँसि सुख चित चोरति प्यारे को

सब अँग नागरि गोरी ॥ रति बिलास नव नव रुचि उपजत वलय किंकिनि झुनकारा। अति प्रवीन रति कोक कलनि मैं करत निकुंज विहारा ॥ ३ ॥ निरखि निरखि बलिजाहीं। श्रम जलकन झलकाहीं ॥ श्रमजलकन रहे झलकि वदन विवि कहुँ कहुँ पीक जु सोहै। यह छवि निरखि अनूप माधुरी ऐसी को जु न मोहै ॥ चितै चिन्ह रजनी के सजनी नैननि में मुसिकाहीं। हित ध्रुव सखीं सरस रस भीनी निरखि निरखि वलि जाहीं ॥ ४ ॥ ५६ ॥

॥ राग विहागरौ ॥

सघन कुंज के द्वारें सोभा बहु बाढ़ी। अति अलवेली भांति अलवेली ठाढ़ी ॥ १ ॥ सहज आपने उर अंचल विसारें। रूप पानिप देखैं सखी प्राण वारें॥२॥ तैसेई चंचल अलवेले दोऊ नैंना। वेशरि वेंदी की छवि कहत बनैना ॥ ३ ॥ सखी अंश पर रही मृदु भुजदीने। सुरँग फूलनि की नौलासी कर लीने ॥४॥ हँसनि छबीली छटा कहां लौ विचारौं। मुख छबि पर कोटि चंद कंज वारौं ॥ ५ ॥ सनमुख चितै रहे लालनु विहारी। भूले पट भूषण सुधि देहकी बिसारी ॥६॥ अतिहीं विवस पिय जाने प्राणप्यारी। रहि न सकी भरि लीने अंकवारी ॥ ७ ॥ चाहि रही मुख ओर मन मृदु कीनौ। लाड़िले की दशा देखि हियौ भरि लीनौ ॥८॥ अधर सुधा प्याइ सावधान कीने। परम प्रवीन दोऊ केलि रंग भीने ॥९॥ ऐसी गति देखैं सखी चित्रसी ह्वै रहीं। आनँद के रङ्ग रँगी ठाढ़ीं जहीं तहीं ॥१०॥ रसनिधि गुननिधि नेहनिधि गोरी। हित ध्रुव वसभए वँधे प्रेम डोरी ॥ ११ ॥ ५७॥

छबीली छबि सौं रँगीले दोऊ राजत यमुना तीर। अंग अंग

भूषण प्रतिबिंबित स्यामल गोर सरीर ॥ गावत मोर मराल भँवर पिक संग सखिनु की भीर । हित ध्रुव रूप माधुरी निरखत ह्वै गये सवै अधीर ॥ ५८ ॥

नवल रँगीले लालहि लाडिली संग सुहावनौ । और कछू नहिं भावई हो देखि रूप मन भावनौ ॥ १ ॥ कुंज कुंज सुख पुंजनि डोलत अंश भुजा दियें । परिरंभन रस सौं करत मोद विनोद वढौ हियें ॥२॥ कहुँ कहुँ सेज वनाइकें मोहन चरण पलोटहीं । मंद मंद मुसिकानी हो नीलांबर दै ओटही॥३॥ परयौ है लाल मन जाइ तिहिं छबि के सिंधु कलोलही । चंचल परम प्रवीन रुचि लै कंचुकी खोलहीं ॥४॥ सुरति सारकौ सार तिहिं सुख मांहि अलोलहीं । नवल कुँवर बलिजाइ जबहि कुँवरि मृदु बोलहीं ॥५॥ सखी रहीं सब चाहि लै अंचल झक झोलहीं । हित ध्रुव चखन रजा कियें रूप दुहुँनि कौ तोलहीं ॥६॥५९॥

॥ राग सारंग ॥

प्रेम की बात अटपटी माई । रुक आई प्यारे लालन सौं मन में रह्यौ न जाई ॥१॥ गहि रहे चरण और दश अंगुलि मुखधर हाहा खाई । रहे मनाइ बहुत नाहिं मानी अवनि परयौ अकुलाई ॥२॥ तोसौं कही सखी तू प्यारी याते नाहिं दुराई । उनकी सोच रहत मन मेरैं दुख पैहै अधिकाई ॥३॥ इतनी कहत आइ गए मोहन तब सहचरि तन मुरि मुसिकाई । हित ध्रुव लई अंक भरि मानौ रंक महा निधि पाई ॥४॥६०॥

॥ राग नट ॥

देखौ अद्भुत प्रीति की चालहि । सुनि सखि पियहि प्यार सौं प्यारी राखति ज्यौं उर मालहि ॥ ह्वै ह्वै जात विवस मन

मोहन निरखि नैंन नव वालहि। हित ध्रुव सरस मधुर अधरामृत प्याइ जिवावति लालहि ॥६१॥

॥ राग विहागरौ ॥

रस भरे लाल रस भरी राधे रस भरी सखी अवलोकत रंगहि। मदन हुलास बढ्यौ प्रीतम मन अतिहि चावसौं भरत उछंगहि॥ अद्भुत कोक कलनि की उपजनि लज्जित करत अनंगहि। हितध्रुव चतुर शिरोमणि दोऊ विलसत प्रेम तरंगहि ॥६२॥

॥ अथ वन विहार समय ॥

॥ विहागरौ ॥

प्रेम की राशि सांवरो प्यारौ। नेक चितै दृग कोर कुँवरि की भूले अंगनि अंग संभारौ ॥१॥ वृंदावन अद्भुत रजधानी संपति सहित अपुनपौ हारौ। जहाँ जहाँ चरण धरति सुकुमारी सो मग दृग अंचलनि सँवारौ ॥ २ ॥ भए दीन रस रसिक शिरोमणि रंग मनोरथ करत विचारौ। नेक प्रसन्न होइ रति नागरि विच विच मोलन करहि तिहारौ ॥ ३ ॥ रुचि लियें भौंहनि भाइ विलोकत एकौ पल रहि सकत न न्यारौ। हित ध्रुव हार सिंगार बनावत याही तें वांकौ व्रत धारौ ॥४॥६३॥

खेलत नवल किशोर किशोरी नव निकुञ्ज मैं सजनी। त्रिविध समीर वहै सुखदैनी सोहत राका रजनी ॥१॥ लालन ललित सुमनि मय भूषण रचि रचि प्रियहि बनावैं। तिनही की रुचि लियें रँगीलौ नव नव भांति लड़ावैं ॥२॥ रूप सिंधु गंभीर गौर तन नाभि भँवर सुखदानी। रहत लाल दृग मीन भए तहां त्रिपित तऊ नहिं मानी ॥३॥ निरखि निरखि छवि वदन माधुरी नैंन

अंबु कन झलकैं। लटक्यौ मौलि शिखंड प्रेमवस परत तऊ नहिं पलकैं॥४॥अतिहीं मृदुल मन स्यामा प्यारी कुंवर अंक भरि लीनौ। जान अधीर विवस मन मोहन अधर सुधारस दीनौ॥५॥ विलसत सुरत विहार अमित विधि निपुन दोऊ पियप्यारी। यह सुख अवलोकत निज सहचरि द्वारे द्वरि सघन लतारी॥६॥ सब सुखको रस सार यहै है दिन आनंद बढ़ावैं। हित ध्रुव सुख सखियनि कौ कैसे रसना पै कहि आवै॥ ७ ॥ ६४ ॥

॥ राग गौरी ॥

देखरी नैंन भरि वैस किशोर वर राजत अनूप सरस रूप जोरी। सघन लतनि मोरी आवत गावत नवल रँगीलौ लाल रँग भरी गोरी॥ चकित मृगज खग विसरे गवन मग ढरत लोचन वन वँधे प्रेम डोरी। हंसि हंसि लेत तान हरें सखियनि प्राण हित ध्रुव जाइ वलि चितै छवि ओरी॥ ६५ ॥

राधा दुलहिनि दूलहु लाल। तैसिये रूप माधुरी अँग अँग तैसेई दुहुंनि के नैन विशाल॥ १ ॥ तैसिये लटकनि लपटनि अटकनि तैसिये हंस हंसिनी चाल। तैसिये चतुर सखी चहुँ ओरैं गावत राग सुहाग रसाल॥२॥ यह रस जो सुनि है अरु गावै मन लावै सब काल। हित ध्रुव धन्य धन्य तेई जन भजन दीपमणि दिपै जिहिं भाल॥ ३ ॥ ६६ ॥

रसिक कुंवर दंपति छवि सींवाँ वंशीवट के तीर। खेलत कुसुम गेंद कर लीयें संग सखिनु की भीर॥१॥ नित्त न करत सुधंग कला सब अँग अँग गुणनि गंभीर। भूषण रव सुनि रहे रटत तें हंस केकि पिक कीर॥२॥ भए श्रमित बन रहे स्वेद कन कोमल सुभग सरीर। इहि हित कमल तरनिजा परसैं आवत मंद समीर॥३॥

रुचिर स्वेद सौरभ जल भींने नील पीत तन चीर। हित ध्रुव निरखि मगन भईं सहचरि रहे नैंन भरिनीर ॥ ४ ॥ ६७ ॥

॥ राग सारङ्ग ॥

वंशीवट मूल खरे दंपति अनुराग भरे गावत हैं साराँग पिय सारंग वर नैंनी। उमहि कुंवरि करति गान सिखवत पिय विकट तान सप्त स्वर सौं मधुर मधुर लेति कोकिल वैनी ॥१॥ चित्रित चंदन सुअंग भूषण फूलनि सुरंग दशन वसन सहज रंग वेसरि छबि दैंनी। लसत कंठ जलज माल स्वेद कन रसाल दीरघ वर लोचन मषि रेख वनी पैंनी ॥ २ ॥ चहूं दिशि सखियनि भीर सकल प्रेम रस अधीर उभय रूप राग रंग सुख अभंग लैंनी उमड्यो जल प्रेम नैंन रहित भए रसन वैंन इहिं गति रहौ मत्त चित्त हित ध्रुव दिन रैंनी ॥ ३ ॥ ६८ ॥

॥ राग मल्लार ॥

गरजनि घन अरु दमकनि दामिनी चातिक पिक शुक बोलत मोरनि। स्यामघटा काजर हूं तें कारी उमडि उमडि आई चहुं ओरनि ॥ नान्हीं नान्हीं वूंदनि वरषनि लाग्यौ तैसिये रोचक पवन झकोरनि। हित ध्रुव प्यारी प्यारसौं झूलति पियहि झुलावति नैंननि कोरनि ॥ ६९ ॥

काम रस भीजे हैं दोऊ लाल। पानिप रूप वढ़ी कछु औरै घूमत नैंन विशाल ॥ छूटी अलक टूटी हारावली श्रम जलकन वने भाल। सुरत समर सर तें नहिं निकसत हित ध्रुव उभय मराल ॥ ७० ॥

आज छवि वरषत हैं अंग अंग। मनौ अलक राजत घन दामिनि दशन धनुष वरमंग ॥ १ ॥ मोतिनुमाल वुलाक चंद्रवधू

सोभित अधर सुरंग । श्रमजल फुहीं रहीं कछु सुखपर जीति समर पिय संग ॥ २ ॥ भूषन रव कूजत खग मानौं अति अनुराग अभंग। प्रफुलित रोम रोम पिय तरु तन भीजे रति रस रंग ॥३॥ हितध्रुव निरख सहज छवि सींवाँ भए सखिनु चख पंग । ज्यौं श्रुति सुनत गान रस मोहित चकित ह्वै रहत कुरंग ॥४॥७१॥

आज सखी नाचत हैं वन मोर । निरखि निरखि सोभा घन दामिनि गौर स्याम तन ओर ॥१॥ वरषत रूप अमित वर बीथिनु विकसत सुमन सुरंग। अति अनुराग मुदित वन बोलत द्रुम द्रुम लतनि विहंग ॥२॥ डोलत हंस हंसजाके तट वाढ़त आनंद मोद । हितध्रुव रहीं भीज सुख मैं सखीं चितै मिथुन मुख कोद ॥ ३ ॥ ७२ ॥

स्यामा जू के चरणनि की वलिहारी । जे हैं वसत किशोर लाल के प्राणनि मध्य सदारी ॥१॥ बिहरत कुसुम पराग लगत जव पीत वसन लै झारत। लुठत मयूर चंद्रिका तिन तर अद्भुत छविहि निहारत ॥ २ ॥ जावक चित्र वनाइ सँवारत करनि सफल तव मानत । हितध्रुव ते दुर्ल्लभ सवहिनु तें रसिक मरम पै जानत ॥ ३ ॥ ७३ ॥

ललित लतनि तरैं नान्हीं नान्हीं बूंद परैं भीजत रँगीले दोऊ प्रीतम प्यारी । हँसि हँसि वातें करैं भुज मूल अंश धरैं लाग्यौ पीतपट तन सुरङ्ग कसूंभी सारी ॥ विवि वदननि छवि रही कछु फुहीं फवि उपमा न जात कछू मनमैं विचारी। रसिक उभय उदार गावत राग मलार हितध्रुव सुनि तान देत प्राणवारी ॥ ७४ ॥

॥ राग कान्हरौ ॥

रस भरे सुभग हिंडोरें झूलत । अति सुकुमार रूपनिधि दोऊ

सो छवि देखि परस्पर फूलत ॥ १ ॥ नवल तरुनता अँग अँग भूषण लसत सुभग उरजनि मणिमाल । उभय सिंधु मनौ बढ़े रूप के बिच बिच झलकत रंग रसाल ॥२॥ रुचिर नील पटपीत पवन वस उड़त उठत मनौ लहरि उतंग । हितध्रुव दिनहि मीन सखियनि दृग तृषित फिरत रसमैं तिन संग ॥ ३ ॥ ७५ ॥

॥ राग कल्याण ॥

छबीली छविसौं लाल छबीली आवत गावत वेष एकही कीने । अरुन पीत सारी रसाल बनी कंचुकी हरित लाल कर नौलासी लीने ॥ सोभित भूषण अंग अंग लसत सीसनि मुकता मंग हँसत मुकर देखि देखि प्रेम रङ्ग भीने । हितध्रुव सुख सहज अनूप निरख नवल बानिक रूप प्राण न्यौछावर दीने ॥७६॥

॥ राग केदारो ॥

खेलत रास प्रेमरस भीने। ललन वसन प्यारी के पहिरें प्रिया वेष प्रीतम कौ कीने ॥१॥ मंग सुरङ्ग रही फबि सजनी झलकनि मुकट कहत नहिं आवै। कुंडल खुभी अरुन सारी तन गौरांवर अतिहीं छवि पावै ॥ २ ॥ अति आनंद विकच मन दोऊ लटकनि अंग ललित सुखदाई। काछनी सुदेश किंकिनी सोभित उर बनमाल रही बनिमाई ॥ ३ ॥ सहचरि एक लियें करबीना एकनि सुभग मृदंग सज्यौरी। एकही ताल उठत भूषण धुनि वाढ़्यौ रंग अनंग लज्यौरी ॥४॥ नाचत अंग सुधंग लियें दोऊ गावत राग मिले स्वर गौरी। अति नागर लावन्य सिंधु में भृकुटिनु भाव वढ़त छिन सौरी ॥ ५ ॥ थेई थेई कहत मंद गति लीयें चलत सुलप प्रीतम पिय प्यारी। ललिताहि साखि दै दै पुनि बिच बिच

लागि लेत दोऊ वदि वदि वारी ॥६॥ सुन्दर मुख कमलनि पर सोभित श्रम जल कें अलकैं झलकारी । या सुखकों छवि निरखि निरखि कें हितध्रुव सव सहचरि वलिहारी ॥७॥७७॥

जाचत रहत यहै दिन रैन । बोलौ हँसौ लाडिली मोपर करहु कुटिल कवहुं जिनि नैंन ॥ १ ॥ परम रसिक सुन्दर मन मोहन चितवत छवि इतनी कह बात । अति आसक्त सनेह रंग मैं भए जलज लोचन जलजात ॥ २ ॥ परम उदार मृदुल श्रीस्यामा रुचिर अंक लीने भरि स्याम । हितध्रुव उभय उरज मैं राखे दयौ परम सुन्दर सुख धाम ॥ ३ ॥ ७८ ॥

॥ राग गौरी ॥

नवल लाल संग वाल निर्त्तत गति चंद चाल मोहित भए शिखि मराल छवि निहाररी । गावत स्वर एक ताल भूषण रव अति रसाल सुनत श्रवत मृगज पवन थकित वारि री ॥ लटकत सव अंग अंग होत नैन मैन पंग श्रम जलकन बदन बने रुचिर चारुरी । बाढ्यौ रस अति अपार नवल कुँवर विवि उदार निरखत ध्रुव सहचरी हित नित विहारुरी ॥ ७९ ॥

॥ राग सारङ्ग ॥

यह छवि निरख जाऊं वलिहारी । राजत रसिक रँगीलौ मोहन संग रंगीली राधा प्यारी ॥१॥ लसत सीस शिखि पिच्छ मनोहर जलजनि युत सीमंत सँवारी । वंशी कनक कमल कर सोभित पिय पट पीत नील तन सारी ॥ २ ॥ अंग अंग छवि सहज विराजत भूषण की द्युति न्यारी । श्रमति झलक बाढ़त नैंननि पै हित ध्रुव नांहिन जात सँभारी ॥ ३ ॥ ८० ॥

। अथ ब्याहुलौ ।

॥ राग बिलावल ॥

सखियनि के उर ऐसी आई। ब्याह बिनोद रचैं सुखदाई ॥ यहै बात सबके मन भाई। आनन्द मोद बढ़्यौ अधिकाई ॥ बढ़यो आनन्द मोद सबकैं महा प्रेम सुरङ्ग रँगीं। और कछु न सुहाइ तिनकौं युगल सेवा सुख पगीं ॥ निशि द्यौस जानत नांहिं सजनी एक रस भीजी रहैं। गोप गोपिनु आदि दुर्ल्लभ तिहिं सुखहि दिन प्रति लहैं ॥१॥ यह नव दुलहिनि अति सुकुमारी। ये नव दूलहु लाल बिहारी ॥ रंग भीने दोऊ प्राण पियारे। नवसत अंगनि अंग सिंगारे ॥ नवसत सिंगारे अंग अंगनि झलक तनकी अति बढ़ी। मौर मौरी सीस सोहैं मैंन पानिप सुख चढ़ी। जलज सुमन सु सेहरे रचि रतन हीरे जग मगैं। देखि अद्भुत रूप मनमथ कोटि रति पायनि लगैं ॥२॥ सोभा मंडफ कुञ्ज द्वारें। हित कीं बांधी वंदन वारें ॥ कुम कुम सौं लै अजिर लिपायौ। अद्भुत मोतिनु चौक पुरायौ ॥ पुराय अद्भुत चौक मोतिनु चित्र रचना बहु करी। आय दोऊ ठाढ़े भये तहां सबनि की गति मति हरी ॥ सुरङ्ग महदी रङ्ग राचे चरण कर अति राजहीं। विविधि रागनि किंकिनी अरु मधुर नूपुर बाजहीं ॥३॥ वेदी सेज सुदेश सुहाई। मन दृग अंचल ग्रन्थि जुराई ॥ रीति भांति विधि उचित बनाई। नेह की देबी तहां पुजाई ॥ पूजि देवी नेह की दोऊ रति बिनोद बिहारहीं। तिहि समै सखी ललितादि हित सौं हेरि प्राणन वारहीं ॥ एक बैस सुभाव एकै सहज जोरी सोहनी। एक डोरी प्रेम की ध्रुव बँधे मोहन मोहनी ॥ ४ ॥ ८१ ॥

॥ राग बिहागरौ ॥

श्री वृन्दावन धाम रसिक मन मोहई । दूलह दुलहिनि व्याह सहज तहां सोहई ॥ १ ॥ नित्य सहाने पट अरु भूषण साजहीं । नित्य नवल सम वैस एक रस राजहीं ॥ २ ॥ सोभा को सिर मौर चंद्रिका मोर की । बरनी न जाइ कछू छबि नवल किशोर की ॥ ३ ॥ सुभग मांग रँग रेख मनो अनुराग की । झलकत मौरी सीस सुरंग सुहाग की ॥ ४ ॥ मणिनु खचित नव कुन्ज रही जग मग जहां । छबि को बन्यौ बितान सोई मंडप तहां ॥ ५ ॥ बेदी सेज सुदेस रची अति बानिकै । भांति भांति के फूल सुरँग बहु आनिकै ॥ ६ ॥ गावत मोर मराल सुहाए गीतिरी । सहचरि भरीं आनन्द करति रस रीतिरी ॥ ७ ॥ अलबेले सुकुँवार फिरत तिहिं ठांवरी । दृग अंचल परी ग्रन्थ लेत मनभांवरी ॥ ८ ॥ कंगना प्रेम अनूप कबहुं नहिं छूटही । पोयो डोरी रूप सहज सो न टूटही ॥ ९ ॥ रचि रहे कोमल कर अरु चरण सुरंगरी । सहज छबीले कुँवर निपुन सब अंगरी ॥१०॥ नूपुर कंकण किंकिणी बाजे बाजहीं । निर्त्तत कोटि अनंग नारि सब लाजहीं ॥ ११ ॥ बाढ्यो है मन माहिं अधिक आनन्दरी । फूले फिरत किशोर वृन्दाबन चन्दरी ॥ १२ ॥ सखियनि किये बहु चार अनेक बिनोद री । दूधा भाती हेत बढ्यो मन मोदरी ॥ १३ ॥ ललित लाल की बात जबहि सखियनि कही । लाज सहित सुकुमारि ओट पट दै रही ॥ १४ ॥ नमित ग्रींव छबि सींव कुँवरि नहिं बोलहीं । बुधि बल करत उपाय घूंघट पट खोलहीं ॥१५॥ कनक कमल कर नील कलह अति कल बनी । हँसति सखीं सुख हेरि सहज

सोभा घनी ॥ १६ ॥ वाम चरण सौं सीस लाल को लावहीं। पानी वारि कुँवरि पर पियहि पिवावहीं ॥ १७ ॥ मेलि सुगंध उगार सौं बीरी खवावहीं। समझि कुँवरि मुसकाइ अधिक सुख पावहीं ॥ १८ ॥ और हाँस परिहास रहसि रस रँग रह्यो। नित्य बिहार विनोद यथा मति कछु कह्यो ॥१६॥ अंचल ओट असीस सखी सब देंहिरी। पल पल बढ्यो सुहाग नैंन सुख लेंहिंरी ॥ २० ॥ जैसें नवल बिलास नवल नवला करैं। मन मनकी रुचि जान नेह बिधि अनुसरैं ॥२१॥ बैठी है निज कुञ्ज कुँवरि मनमोहनी। झलकत रूप अपार सहज अति सोहनी ।२२। चाहि चाहि सो रूप रसिक सिर मौररी। भरि आए दोऊ नैन भई गति औररी ।२३। अति आनंद को मोद न उरहि समातरी। रीझि रीझि रस भीजि आपु बलिजातरी ॥ २४ ॥ अरुझे मन अरु नैंन बढ्यौ अनुरागरी। एक प्राण द्वै देह नागर अरु नागरी ॥२५॥ यौं राजत दोऊ प्रीतम हँसि मुसिकातरी। निरख परस्पर रूप न कबहूं अघातरी ॥२६॥ तिनही के सुख रंग सखीं दिन रँग मँगीं। और न कछू सुहाइ एक रस सब पगीं ॥२७॥ उभय रूप रस सिंधु मगन जहां सब भए। दुर्लभ श्रीपति आदि सोई सुख दिन नए ॥२८॥ हित ध्रुव मंगल सहज नित्य जो गावही। सर्वोपर सोई होइ प्रेम रस पावही ॥२९॥८१॥

॥ राग बिहागरो ॥

राजत नव निकुञ्ज पिय प्यारी। चहुँ दिशि दीप मणिनु के सखियनि रचि रचि धरे निशि जान दिवारी ॥१॥ भूषण लाए परस्पर खेलत नवकिशोर नवला सुकुमारी। हारत लाल लगावत जो कछु त्यौं त्यौं चौंप बढ़ी अति भारी ॥ २ ॥ अंगद हार हारि

पहुँची पट तब कटि तें किंकिणी उतारी। सोऊ जीति लई मृग नैनी नमित ग्रींव करि रहे बिहारी ॥३॥ पुनि लिये दाव बदलि मनमोहन बहुरयौं खेलि चंद्रिका हारी। जब जान्यौ नहिं दाव परत कछु तब मुसिकाइ सोरहीं डारी ॥४॥ भूषण पट कैसें कै धाए सकुचौ जिनि बलि कहैं ललितारी। फूली कुँवरि हँसति आनन्द भरि हित ध्रुव तिहिं सुख की बलिहारी ॥५॥८२॥

दुलहिनि मनमोहनी दूलहु रसिक लाल। रची है सेज सुहावनी दल लै लै कंज गुलाल॥ रँगीली भामिनी॥ टेक॥१॥ चंचल नैननि चितवनी विच भौंहनि की भंग। हुलसि हुलसि पिय कौ हियौ भरयौ रंग अनङ्ग ॥२॥ कबहुँ कबहुँ लपटि जात दशन बसन जोरि। पीवत रस माधुरी दोऊ नागर नवल किशोर ॥३॥ सुरत रंग के तरंग उपजत अंग अंग। हितध्रुव बलि जात सखी निरखि सुख अभंग ॥ ४ ॥ ८४ ॥

॥ राग राइसो ॥

सोहै कुञ्ज सुहाग में सेज सुदेश सहानी ॥टेक॥ दुलहिनि दूलहु राजहीं कोक कला कल ठानी। लाल लड़ेंती रङ्ग भरे सब सखियनि सुखदानी ॥ १॥ महदी कौ रँग अति वन्यौ भूषन वसन सहाने। सुन्दर मुख पाननि भरे अँग अँग नव सत वाने ॥२॥ वाढ्यौ रङ्ग अनङ्ग कौ लोइनि रूप लुभाने। भीने प्रेम सुरङ्ग मैं रजनी द्यौस न जाने ॥३॥ मोहे मोहन मोहनी चितवनि नैंन विशाल। सोई प्यारी उर यौं लसै हितध्रुव रूप की माल ॥ ४ ॥ ८५ ॥

॥ राग गूजरी ॥

देखि सखी नवल निकुञ्ज विहार। राजत रसिक सेजपर दोऊ रूप सींव सुकुँवार ॥१॥ परम चतुर वृंदावन रानी करति अंक

पिय सैंन। निरखत सहज अंग छबि मोहन भए सजल पिय नैंन ॥ २ ॥ यह गति जान प्रिया प्रीतमकी परम मृदुल मन कीनौं। जिहिं विधि रुचि प्यारे लालन की तिहिं तिहिं विधि सुख दीनौं ॥ ३ ॥ मुदित सखीं अवलोकन जिनकैं यह सुख जीवन माई। इहि रस पगीं और कछु सपने हित ध्रुव मन न सुहाई ॥ ४ ॥ ८६ ॥

आज अति सोभित नवल निकुञ्ज। लता मंजु नव कंज विविध रँग रची सहज सुख पुंज ॥ १ ॥ त्रिविधि समीर बहै सुखदाई बोलत पिक मधु बैंन। अति सुरङ्ग कोमल दल कमलनि रची तहां सखि सैंन ॥ २ ॥ तापर रसिक राधिका मोहन विलसत सहज विलास। करत विहार सुरत नानाविधि विचविच ईषद हास ॥३॥ सो सुख सार परम निज दासी वर विहार वढ़वति दुहुं ओरी।
सो सुख सार परम निज दासी वर विहार वढ़वति दुहुँ ओरी।
हितध्रुव रही एक टक जोहत ज्यौं प्रतिचंद चकोरी ॥४॥८७॥

॥ राग आसावरी ॥

देखौ प्रेमकी अधिकाई। निरखत रूप प्रिया कौ मोहन तऊ नाहिं कल माई॥ १ ॥ बैठे एक सेज पर दोऊ तृपिति हियें नहिं आई। चाहत हौंन नैंन में नैंना अंगन अंग समाई ॥२॥ अति अनुराग रँगे मन मोहन पलक निमेष भुलाई। छिन छिन होत चौंप चौगुनीं अति निरखत अंग निकाई ॥ ३ ॥ यौं आधीन सनेह विवस पिय और न कछू सुहाई। चरण जान सर्वस प्यारी के राखे उर मृदुलाई ॥४॥ और कहांलग कहौं सखीरी रुचत न रंच वड़ाई। मानत दीन दिनहि आपुन पौ हितध्रुव वलि वलि जाई ॥ ५ ॥ ८८ ॥

॥ राग बिहागरो ॥

मोहनता की रासि किशोरी। जे मोहन मोहन सबको मन बँधे बंक चितवन की डोरी ॥ अंगनि पट भूषण सिंगार, चितै रहे सुन्दर मुख ओरी। हित ध्रुव चैन लिये नवहीं तौं जब लग देखत नैननि गोरी ॥ ८८ ॥

मेरी लाड़िली राजति रंग भरी। अधिक प्यार सों मृदु भुज प्यारी हँसि पिय अंश धरी। चित्र से ह्वै रहे नागर नागरी कौंन भाग तें इहिं रस ढरी। हित ध्रुव अवधि प्यार की दोऊ लगीं अखियाँ शुभ घरी ॥ ८९ ॥

मेरी अखियां रूप के रंग रंगी। युगल चंद अरबिंद बदन छबि तिहिं रस माहिं पगीं। नव नव भाइ बिलास माधुरी रहि सुख स्वाद लगीं। हित ध्रुव और जहां लगि रुचिहीं ते सब छांड़ि भगी ॥ ९० ॥

आज सखी निरख रूप भरि नैंन। लता ऐंन रचि सैंन मिथुन बर बोलत अति मृदु बैंन। हँसत जबहि दोऊ लसत दशन दुति सोभा कहत बनैंन।·हित ध्रुव निरखि सहज छबि, सींवाँ मैंन होत मन मैंन ॥ ९१ ॥

नवल निकुंज रँगीले दोऊ करत रँगीली बात। अति आनन्द बिकच मन सजनी हँसि हँसि उर लपटात ॥१॥ परसत कुंवर जबहि उरजनि कर कछु भृकुटी चढ़ि जात। गहैं चिबुक तब रसिक लाड़िलौ मृदु सुख हा हा खात ॥२॥ मनजु बिबस प्रीतम नहिं बूझत प्यारी अधिक लजात। मनको हेत जान तब सहचरि उठी कछुक मुसिकात ॥३॥ अति प्रवीन रति रंग

कलनि में उठत नवल नव घात। हित ध्रुव यह सुखसार निहारत अब क्यों और सुहात ॥ ४ ॥ ९२ ॥

रँगीली करत रँगीली बात। सुनि सुनि नवल रसिक मन मोहन फिरि फिरि फिरि ललचात। चितै चितै मुख मधुर माधुरी उरजनि सौं लपटात। हित ध्रुव रसको सिंधु उमड़ि चल्यौ पिय के हिय न समात ॥ ९३ ॥

॥ राग भैरौं ॥

श्रीराधाबर भज श्रीराधाबर भज। और सकल धर्मनि कौं तू तज ॥१॥ होइ अनन्य एक रस गाहो। रसिकनि संग जु सदा निबाहो ॥२॥ आन धर्म व्रत नेम न कीजै। युगलकिशोर चरण चित दीजै ॥३॥ श्री वृन्दाबन घन कुंज निहारौ। हित ध्रुव तेहिं ठां बास बिचारौ ॥ ९४ ॥

॥ राग धनाश्री ॥

नित्य किशोरी नित्य किशोर। नित वृन्दाबन नित निशि भोर ॥१॥ नित्य सहचरीं नित्य विनोद। नित आनन्द वरषत चहुँ कोद ॥२॥ नित्य मयूरी हंशचकोर। नित रस भीने नाचत मोर ॥३॥ शुक सारौ पिक रँगे अनुराग। गावत लाड़िलीलाल सुहाग ॥४॥ नित्य हंसजा निर्मल नीर। सीतल मंद सुगंध समीर ॥५॥ नित राजत राजित वहु रंग। मधुप मते गुंजत नित संग ॥६॥ कोमल लतनि बहुत रँग फूल। झूम रहीं यमुना के कूल ॥७॥ कंचन मणिमय अवनि सुढार। झलमलात छबि झलक अपार ॥८॥ जहां प्रेम की अतिहीं भीर। खेलत सांवल गोर शरीर ॥ ९ ॥ नित्य चितवनी मृदु मुसिकानि। नितहीं अद्भुत उर लपटानि ॥१०॥ नित्य विहार नितहिं सिंगार। पल

पल पावत सुख कौ सार ॥११॥ नित्य सखिनु कैं यहै अहार। नित्य सुरत रस करत बिहार ॥१२॥ कुञ्ज कुञ्ज नित केलि अनंत। करत फिरत कामिनि वर कंत ॥१३॥ अतिहीं रसिक छबीली जोर। कहा कहौं कछु सुखहि न ओर ॥१४॥ यह रस अद्भुत जो उर आयौ। श्रीहरिवंश कृपा तें गायौ॥१५॥हितध्रुव हितसौं सुनै सुनावै। प्रेम माधुरी सहजहीं पावै ॥१६॥६६॥

॥ राग कान्हरौ ॥

सुन सखी दशा होत जब प्रेमकी। ज्ञान कर्म विधि वैभवता सब नहिं ठहरात ब्रत नेम की॥१॥ रहत अधीर ढरत नैननि जल मिटत सकल चंचलता मनकी। परत चित्त आनंद सिंधु में लजि तजि जात लाज गुरजन की ॥२॥ निद्रा आदि लगत सब नीरस घटत विषय तृष्ना सब घटकी। रहत मगन औरै रस सजनी जब एही दोऊ अखियां अटकी॥३॥ रुचत न रसन स्वाद षट रस के अरु कछु होत छीन गति तनकी। हितध्रुव रहत एक सुख नैननि छिन छिन चौंप युगल दरसन की ॥४॥६७॥

ऐसो और सनेही कौंन। रँगै एकही रंग रंगीली तजिकैं बिभो चतुर दस भौंन ॥१॥ छिन छिन चरण कमल सहरावत कबहुँ करत पट पीत सौं पौंन। ऐसौ प्रेम कहा कोऊ बरनै जहां सकल सुख गौंन ॥२॥ अद्भुत रूप माधुरी निरखत भरि भरि लोइनि दौंन। हितध्रुव तजि मर्याद बड़ाई ह्वै रहे सब बात मैं मौंन ॥३॥६८॥

प्राण दियें यह प्रेम न पैयै। ऐसौ महगो आहि सखीरी कहधौं सो कैसें कै लैयें। लाल लाड़िली कौ यह सर्वसु तिहिं

रसकौं ललचैयै। अद्भुत विवि छबि रस की धारा ध्रुव मन तहां न्हबैयै ॥६६॥

॥ राग विहागरौ ॥

सनेही एक विहारी विहारनि। एक प्रेम रुचि रचे परस्पर अद्भुत भांति निहारनि ॥ तन सौं तन मन सौं मन अरझ्यो अरुझ निवार निहारनि। यह छबि देखतहीं ध्रुव चितकौं भूली देह संभारनि ॥१००॥

आराधहि मन राधा दुलहिनि जिहिं आराधत लाल विहारी। कुंज कुंज डोलत सँग लागे कृपा कटाक्ष करैं सुकुमारी ॥ रुचिलै नैननि भौंहनि जोवत छिन छन नवसत करत संभारी। हितध्रुव अद्भुत प्रीति निहारत देत सखीं सब प्राणनि वारी ॥१०१॥

अवधि प्रेमकी दोऊ प्यारे। तन मन नैन रहे एकै ह्वै कबहूँ होत न न्यारे ॥ रुचि रुचिसौं रचि रहे दोऊ जन ज्यौं नैननि के तारे। हितध्रुव रीझि परस्पर छवि पर तन मन देत हैं वारे॥१०२॥

खेलत चौंपर मैंन की माई। हाँस सिंगार भाव अनुराग की सारें वनी सुखदाई ॥१॥ रूप विसात प्रेम के पासे नैंन युगनि की चलनि सुहाई। चाह चाह की सखी सखी मन रुचि कौ रंग कह्यौ नहिं जाई ॥ २ ॥ पिय प्रवीन प्यारी रस भोरी अधर पान की वाजी लाई। हितध्रुव जीतें हारे कौतुक दुहूँ भांति पिय की बनि आई ॥ ३ ॥ १०३ ॥

॥ इति श्री हित ध्रुवदास जी कृत पद्यावली संपूर्ण ॥

—:❀❀❀:—

मिलने का पता:—बाबा तुलसीदास
श्री राधावल्लभजी का मन्दिर, वृन्दावन।